एक ऐसी काल्पनिक दुनिया जो सच हो जाये तो...
एक क्लासिक

उन्नीस सौ चौरासी (Nineteen Eighty Four) इंग्लैंड के महान उपन्यासकार जॉर्ज ऑरवेल (George Orwell) का दुनियाभर में चर्चित कालजयी उपन्यास है। यह अपने प्रकाशन के तत्काल बाद ही सफल उपन्यासों में गिना जाने लगा।

ऑरवेल की भविष्य की दिल दहला देने वाली इस कल्पना में समाज का नियन्त्रण 'बड़े भाई' के हाथों में है। ज़िन्दगी के छोटे-से-छोटे पहलू पर टेलीस्क्रीन से नज़र रखी जाती है और 'बड़े भाई' के विरोध में उठने वाली आवाज़, या कहें कि क्षणमात्र के विचार को भी पुलिस द्वारा जड़ से उखाड़ दिया जाता है।

इस तरह जॉर्ज ऑरवेल ने कथा के नायक विन्स्टन के चरित्र में उतरकर वर्षों बाद आने वाले समय की काल्पनिक कहानी लिख डाली, लेकिन वह तस्वीर सच्ची थी, सजीव और रोमांचकारी थी। मानवीय करुणा का विलक्षण दस्तावेज़ थी। भविष्य के सामाजिक व राजनीतिक जीवन की ऐसी अनोखी कल्पना कहीं और नहीं मिल सकती।

आवरण डिज़ाइन : स्केनसेट

उपन्यास

ISBN 978-9-353-49618-0
9 789353 496180
MRP ₹199 (incl. of all taxes)
www.penguin.co.in

उन्नीस सौ चौरासी

जॉर्ज ऑरवेल

1984
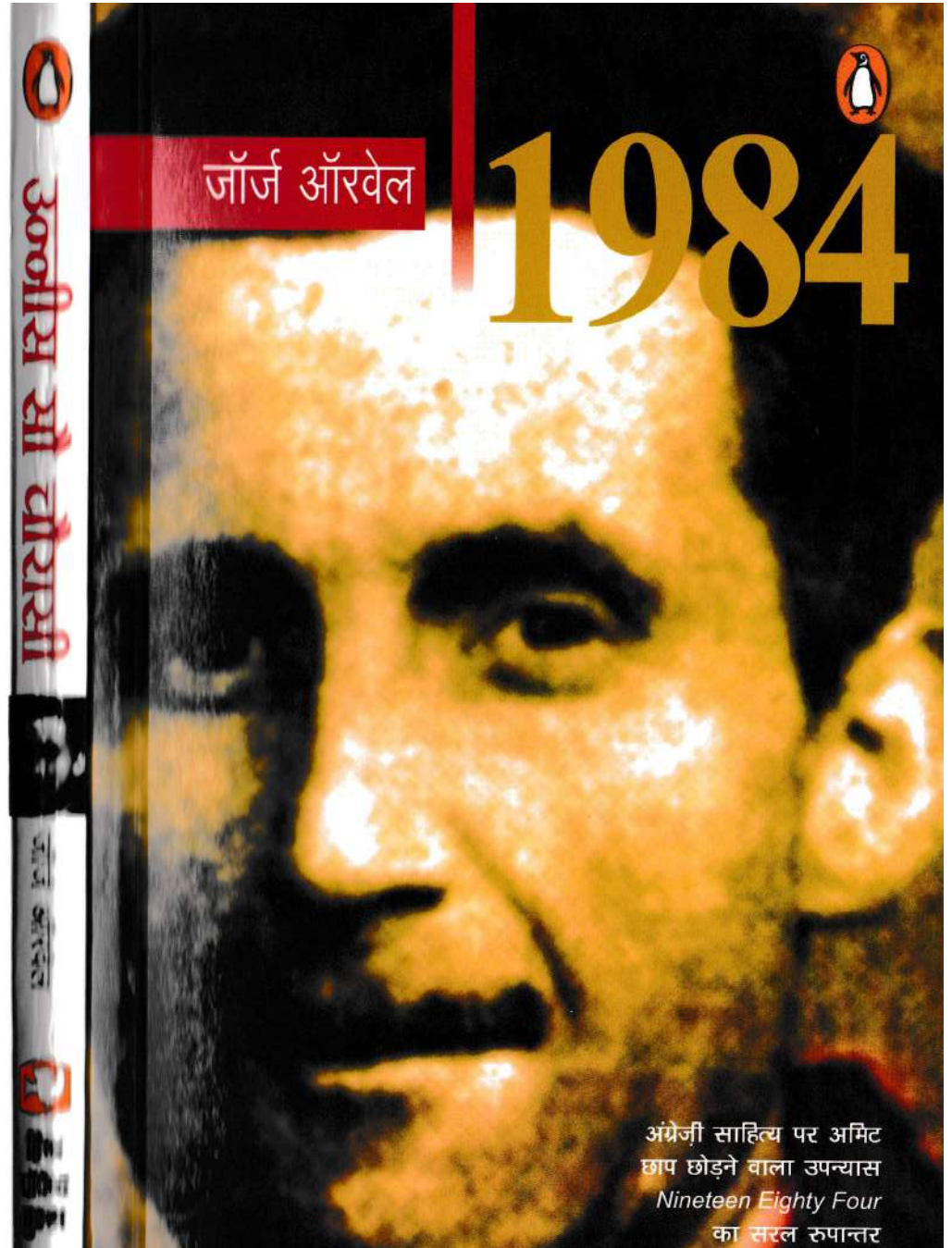
अंग्रेज़ी साहित्य पर अमिट छाप छोड़ने वाला उपन्यास *Nineteen Eighty Four* का सरल रुपान्तर

हिन्द पॉकेट बुक्स

उन्नीस सौ चौरासी

जॉर्ज ऑरवेल का जन्म 25 जून 1903 को भारत में बिहार के मोतिहारी नामक स्थान पर हुआ था। उनके पिता ब्रिटिश राज की भारतीय सिविल सेवा के अधिकारी थे। ऑरवेल का मूल नाम एरिक आर्थर ब्लेयर था। उनके जन्म के साल भर बाद ही उनकी मां उन्हें लेकर इंग्लैण्ड चली गयी थीं, जहां सेवानिवृत्ति के बाद उनके पिता भी चले गए। वहीं पर उनकी शिक्षा हुई। जॉर्ज ऑरवेल राजनीति को केंद्र में रखकर साहित्य रचने वाले दुनिया के कुछ गिने-चुने लेखकों में से एक थे। *टाइम मैगजीन* ने साल 2014 में 1945 के बाद के 50 सबसे महत्वपूर्ण ब्रितानी लेखकों की सूची तैयार की थी, जिसमें जॉर्ज ऑरवेल को दूसरे स्थान पर रखा गया था।

उन्नीस सौ चौरासी

जॉर्ज ऑरवेल

पेंगुइन रैंडम हाउस इम्प्रिंट

हिन्द पॉकेट बुक्स

यूएसए | कनाडा | यूके | आयरलैंड | ऑस्ट्रेलिया
न्यू ज़ीलैंड | भारत | दक्षिण अफ्रीका | चीन

हिन्द पॉकेट बुक्स, पेंगुइन रैंडम हाउस ग्रुप ऑफ़ कम्पनीज़ का हिस्सा है,
जिसका पता global.penguinrandomhouse.com पर मिलेगा

पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया प्रा. लि.,
चौथी मंजिल, कैपिटल टावर -1, एम जी रोड,
गुड़गांव 122 002, हरियाणा, भारत

पेंगुइन
रैंडम हाउस
इंडिया

प्रथम हिन्दी संस्करण हिन्द पॉकेट बुक्स द्वारा 2005 में प्रकाशित
यह हिन्दी संस्करण हिन्द पॉकेट बुक्स में पेंगुइन रैंडम हाउस द्वारा 2021 में प्रकाशित

10 9 8 7 6 5 4 3 2

ISBN 9789353496180

मुद्रक: रेप्रो इंडिया लिमिटेड

www.penguin.co.in

उन्नीस सौ चौरासी

अप्रैल का महीना था। दिन ठंडा था लेकिन धूप खिली थी। घड़ियां तेरह (दिन का एक) बजा रही थीं। विन्स्टन स्मिथ ने अपनी ठोड़ी छाती की ओर झुका रखी थी। सर्द हवा के थपेड़ों से मुंह को बचाने के लिए। वह तेज़ी से विजय भवन के दरवाज़े खोलकर अन्दर घुस गया। परन्तु फिर भी दरवाज़ा खुलते ही विन्स्टन के साथ धूल-भरी हवा का झोंका भी मकान के अन्दर आ गया।

हॉलवाले रास्ते से ऊपर जाते हुए उबली बन्दगोभी और गन्दे गूदड़ों की गन्ध उसकी नाक में घुस गई। दीवार पर एक बहुत बड़ा पोस्टर चिपका हुआ था। दीवार छोटी थी और पोस्टर बड़ा, इसलिए वह दीवार पर समा नहीं रहा था। पोस्टर पर बहुत बड़ी शक्ल बनी थी, कोई एक मीटर चौड़ी। शक्ल किसी ऐसे आदमी की थी, जिसकी उमर कोई पैंतालीस वर्ष की होगी। उसकी घनी काली मूंछों और भाव-मुद्रा से परिपक्वता झलकती थी। विन्स्टन सीढ़ियों की ओर बढ़ा। लिफ़्ट की तरफ़ जाना बेकार था। वैसे भी लिफ़्ट शायद ही कभी चलती हो, और इस समय तो बिजली ही नहीं थी। दिन का उजाला था न! घृणा-सप्ताह की तैयारियां हो रही थीं। इसलिए मितव्यय के लिए दिन में बिजली काट दी जाती थी। विन्स्टन का फ़्लैट सातवीं मंज़िल पर था। उसकी उमर उन्तालीस वर्ष थी। उसके दाहिने पैर के टखने की नस पर फोड़ा था। इसलिए वह धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ पाया। रास्ते में उसे कई बार आराम करना पड़ा। हर मंज़िल पर लिफ़्ट के उस पार दीवार में चिपके पोस्टर की शक्ल, ऐसा लगता था, उसकी ओर देख रही है। यह ऐसी तस्वीर थी, जिसकी

आंखें इस तरह बनाई गई थीं कि जब भी कोई चले, उसे लगे कि वह उस पर बराबर दृष्टि रखे हुए है। तस्वीर के नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था, 'बड़े भाई तुम्हें देख रहे हैं।'

कमरे के अन्दर से आवाज़ आ रही थी। यह आवाज़ दाहिनी ओर की दीवार में जड़े धातु के पर्दे के पीछे से आ रही थी। उसका रंग ऐसे शीशे जैसा लगता था जो कुछ बदरंग हो गया हो। विन्स्टन ने स्विच घुमा दिया, इससे आवाज़ कुछ धीमी हो गई। इस यन्त्र की (जिसे टेलीस्क्रीन कहा जाता था) आवाज़ कम की जा सकती थी, किन्तु उसे बिलकुल बन्द नहीं किया जा सकता था। वह खिड़की के पास चला आया। वह ठिगने क़द का दुबला-पतला आदमी था। वह नीला ओवरकोट पहने था जो पार्टी की निर्धारित पोशाक थी। उसके अधिकांश बाल सफ़ेद हो गए थे, पर उसका चेहरा लालिमापूर्ण था। चेहरे की ख़ाल सस्ते साबुन और भुथरे रेज़र-ब्लेडों के कारण सख़्त हो गई थी।

बाहर, बन्द खिड़कियों के शीशों के पार की सारी दुनिया में ठंडक छाई हुई थी। सड़कों पर तेज़ हवा थी। इन झोंकों के भंवरों में धूल और फटे काग़ज़ों की बिन्दियां गोल-गोल घूमती हुई ऊपर उठ जाती थीं। धूप खिली थी, आसमान गहरा नीला था, लेकिन बाहर कोई रंगीन चीज़ नहीं थी। रंग था तो केवल पोस्टरों में, जो चारों तरफ़ लगे थे। हर कोने के पोस्टर से घनी काली मूंछोंवाली शक्ल घूर रही थी। विन्स्टन की खिड़की के सामने जो इमारत थी उस पर भी बहुत बड़ा पोस्टर लगा था। काफ़ी दूरी पर एक हैलीकॉप्टर उड़ रहा था। वह छतों के बीच था। कुछ देर के लिए वह एक मकान की खिड़कियों की ओर झुका और फिर तिरछा होकर चला गया। यह पुलिस का गश्ती दल था जो खिड़कियों से देखता फिरता था कि लोग मकानों में क्या कर रहे हैं। लेकिन इन गश्ती दलों की कोई चिन्ता नहीं थी। असली भय तो उस पुलिस से था जो विचारों पर नियन्त्रण रखती थी। उसका नाम था — विचार नियन्त्रक पुलिस।

विन्स्टन के पीछे अब भी टेलीस्क्रीन की आवाज़ आ रही थी। कच्चे लोहे के उत्पादन के आंकड़े दिए जा रहे थे और बतलाया जा रहा था

कि नवें तीन-वर्षीय आयोजन में लक्ष्य से अधिक उत्पादन हुआ है। टेलीस्क्रीन की खासियत यह थी कि वह कमरे के दृश्य को ग्रहण कर दूसरी तरफ़ प्रसारित कर सकता था और दूसरी ओर से प्रसारित ध्वनि और दृश्य को कमरे में देखा-सुना जा सकता था। विन्स्टन फुसफुसाहट की ध्वनि से ज़रा भी ऊंचा बोला कि टेलीस्क्रीन के पीछे 'माइक' उसकी आवाज़ पकड़- कर दूसरी तरफ़ भेज सकता था। ऐसा उस समय तक होता था, जब तक कि वह उस धातु के पर्दे की दृष्टि-सीमा में रहता था। विचार नियन्त्रक पुलिस कब किसको देख रही होगी — इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती थी। परन्तु इसमें तो सन्देह ही नहीं था कि वह जिस समय जिसे चाहें उसे देख सकती थी। लोगों को जीना है, जीते भी हैं, क्योंकि जीवन का अभ्यास पड़ गया है, परन्तु उनकी हर आवाज़ को सुना जाता है, अंधेरे के अलावा हर समय वे क्या करते हैं, यह बराबर देखा जाता है।

विन्स्टन टेलीस्क्रीन की तरफ़ बराबर पीठ किए था। ऐसा करना अधिक सुरक्षित था, किन्तु बिलकुल सुरक्षित नहीं, क्योंकि कभी-कभी पीठ देखकर भी यह अनुमान किया जा सकता है कि आदमी क्या कर रहा है। कोई एक किलोमीटर की दूरी पर विन्स्टन के कार्यालय की इमारत थी — जिसे 'सत्य मन्त्रालय' कहते थे। इमारत काफ़ी ऊंची और बिलकुल सफ़ेद थी। कुछ विरक्तिपूर्वक विन्स्टन सोच रहा था, यह लन्दन है, एयरस्ट्रिप नम्बर 1 का मुख्य नगर। एयरस्ट्रिप नम्बर 1 ओशनिया का सबसे घनी आबादीवाला प्रान्त था। वह अपने बचपन को याद कर रहा था और सोच रहा था कि क्या लन्दन पहले ऐसा ही था? क्या पहले भी उन्नीसवीं शताब्दी में इसी तरह के मकान थे? दीवारों पर लकड़ी चढ़ी हुई, खिड़कियों में पट्ठा लगा हुआ और छतों में लोहे की नालीदार चादरें लगी हुईं और बाग़ों की चहारदीवारी चारों तरफ़ फैली हुई। इधर-उधर बमवर्षा के कारण बने खंडहर और मलबे पर उड़ती हुई धूल। जहां बम ने पुराने मकानों को बिलकुल साफ़ कर दिया था, वहां नए मकान बन गए थे। ये लकड़ी के थे और ऐसा लगता था कि मुर्ग़ियों के दरबे हों। क्या पहले भी ऐसा ही था? लेकिन कोई लाभ नहीं – सोचने से कोई लाभ नहीं, उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा था। उसे कोई-कोई दृश्य याद आ जाता था, जो

बिलकुल एक-दूसरे से असम्बद्ध थे और उसकी समझ में कुछ भी नहीं आता था।

जो दृश्य दिखलाई पड़ रहा था उसमें सत्य मन्त्रालय, जिसे नई भाषा में 'सत्मन्त्र' कहते थे, की इमारत बिलकुल भिन्न थी। सफ़ेद कंकरीट की वह पिरामिडनुमा इमारत थी। वह मंज़िल-पर-मंज़िल चढ़ती चली गई थी और यह क्रम तीन सौ मीटर तक ऊपर चला गया था। विन्स्टन को पार्टी के तीन नारे स्पष्ट लिखे दिखलाई पड़ रहे थे। ये नारे इमारत पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखे थे :

युद्ध ही शान्ति है!

दासता ही स्वतन्त्रता है!

अज्ञान ही शक्ति है!

सत्य मन्त्रालय की ऊपर की सारी मंज़िलों में लगभग तीन हज़ार कमरे थे। इतने ही कमरे ज़मीन के नीचे भी थे। लन्दन-भर में ऐसी तीन इमारतें और थीं। इनके सामने अन्य सारे मकान बौनों की तरह छोटे और साधारण प्रतीत होते थे। इन इमारतों में चार सरकारी मन्त्रालयों के दफ़्तर थे और इन्हीं मन्त्रालयों में सारा सरकारी कामकाज बंटा था। इनमें पहला मन्त्रालय था सत्य का। इस मन्त्रालय का सम्बन्ध समाचार, मनोरंजन, शिक्षा और ललित कलाओं आदि से था। इसके बाद था शान्ति मन्त्रालय। इसका काम युद्ध-व्यवस्था करना था। तीसरा मन्त्रालय था प्रेम का। इसका काम शान्ति तथा व्यवस्था कायम करना था। इसके बाद समद्धि मन्त्रालय था। इसका सम्बन्ध आर्थिक मामलों से था। नई भाषा में इनको – 'सत्मन्त्र', 'शान्तमन्त्र', 'प्रेममन्त्र' और 'सम्मन्त्र' कहते थे।

प्रेम मन्त्रालय वाकई भयानक था। उसमें कहीं कोई खिड़की नहीं थी। इसमें केवल सरकारी काम से ही अन्दर जाना हो सकता था, अन्यथा प्रवेश असम्भव था। अन्दर घुसने के लिए कांटेवाले तारों का घेरा, लोहे के दरवाज़ों, छिपी मशीनगन की बुर्जियों को पार करना पड़ता था। जो गलियां इस इमारत के पास जाती थीं, उन तक में काली वर्दी पहने, गुरिल्लों जैसी शक्लों के सैनिक बराबर पहरा देते रहते थे।

विन्स्टन अकस्मात घूम पड़ा। उसने अपने चेहरे पर आशावादी मुद्रा अंकित कर ली। टेलीस्क्रीन के सामने इस तरह की मुद्रा होना ज़रूरी था। उसके बाद वह बग़ल के रसोईघर में चला गया। इस वक़्त सरकारी दफ्तर को छोड़कर उसे कैंटीन में मिलनेवाले भोजन से वंचित रहना पड़ा था। उसे यह मालूम था कि रसोई में इस वक़्त काली रोटी के टुकड़े के अलावा और कुछ भी नहीं होगा और वह भी कल सुबह के नाश्ते के लिए बचाकर रखना ज़रूरी है। उसने अलमारी में से एक बोतल उतारी। इस पर विक्टरी जिन का लेबिल चिपका था। वह रंगहीन नशीला पेय था। बोतल चाय के प्याले में उंडेलकर ख़ाली की। इससे तेल जैसी गन्ध आ रही थी। गन्ध नाक में पहुंचते ही उबकाई आने लगती थी। थोड़ी देर वह उसे देखता रहा, इसके बाद नाक बन्द कर प्याले को चढ़ा गया, जैसे वह कोई दवा हो।

शराब का प्याला पीते ही उसका मुंह नीला पड़ गया और आंखों से पानी बहने लगा। शराब क्या थी तेज़ाब था। इसके गले से नीचे उतरते ही ऐसा लगता था कि किसी ने रबड़ के हंटर से ज़ोर से गर्दन के पीछे से प्रहार किया हो। दूसरे ही क्षण पेट में होनेवाली जलन शान्त हो गई और दुनिया कुछ बदली-सी दिखलाई पड़ने लगी। परिवर्तन प्रसन्नतादायी था। उसने जेब से सिगरेट का दबा हुआ पैकेट निकाला। इस पर भी विक्टरी सिगरेट लिखा था। एक सिगरेट निकालकर उसे सीधा किया। सिगरेट सीधा खड़ा करते ही उसका तम्बाकू ज़मीन पर नीचे आ गिरा। उसने एक और सिगरेट निकाली। इसके बाद वह कमरे के एक कोने में रखी मेज़ के पास चला गया। यह मेज़ टेलीस्क्रीन से बाईं तरफ़ थी। कुर्सी पर बैठकर उसने दराज़ से क़लम, दवात और बढ़िया जिल्द चढ़ी एक कॉपी निकाली।

इस कमरे में पता नहीं क्यों टेलीस्क्रीन ऐसी जगह लगा था, जहां से उसकी नज़र में वह भाग नहीं आता था जहां मेज़-कुर्सी रखीं थी। जब वह कमरा बना था तो ख़याल था कि इस कोने में, जहां मेज़ थी, किताबों की आलमारी रहेगी। लेकिन इस जगह दबकर बैठने से विन्स्टन

टेलीस्क्रीन की आंख से बचा रहता था। उसकी आवाज़ ज़रूर स्क्रीन के माइक तक पहुंच सकती थी, किन्तु यदि वह चुप रहता तो उसकी उपस्थिति का किसी को ज्ञान नहीं हो सकता था। विन्स्टन जो कार्य अब करने जा रहा था, उसका एक कारण कमरे का यह गुप्त कोना भी था।

विन्स्टन ने दराज़ से जो कॉपी निकाली थी, उस कॉपी ने भी उसे ऐसा कार्य करने को बाध्य किया था। यह कॉपी बड़ी ख़ूबसूरत थी। उसका काग़ज़ बड़ा चिकना था। अधिक समय बीत जाने के कारण काग़ज़ कुछ पीला अवश्य पड़ गया था। ऐसा काग़ज़ पिछले चालीस वर्षों से नहीं बना था। उसने इस कॉपी को शहर की गन्दी बस्ती की एक कबाड़ी की दुकान की खिड़की में पड़ा देखा था। देखते ही उसकी यह इच्छा हो उठी थी कि वह उसे ख़रीद ले। पार्टी के सदस्यों को साधारण दुकानों पर जाने की इजाज़त नहीं थी। इन दुकानों को खुला बाज़ार कहा जाता था। लेकिन इस नियम का कठोरता से पालन नहीं किया जाता था, क्योंकि बहुत-सी चीजें जैसे जूतों के फीते और रेज़र-ब्लेड खुले बाज़ार के अलावा अन्य कहीं से भी मिलने की सम्भावना नहीं थी। उसने सड़क पर पहले आगे-पीछे नज़र डाली थी और जैसे ही यह जान लिया कि कोई उसे देख नहीं रहा, वह लपककर कबाड़ी की दुकान में घुस गया और ढाई डॉलर में कॉपी ख़रीद ली थी। उस समय विन्स्टन के दिमाग़ में यह बात नहीं थी कि वह उस कॉपी का क्या करेगा। अपने छोटे थैले में छिपाकर वह कॉपी घर ले आया था। उसमें कुछ नहीं लिखा था, फिर भी कॉपी का पास पाया जाना कुछ कम ख़तरनाक नहीं था।

अब वह डायरी लिखना चाहता था। यह गैरकानूनी नहीं था। कोई क़ानून ही नहीं था, इसलिए किसी बात के गैरक़ानूनी होने का प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता था। किन्तु यदि वह इस कॉपी-समेत पकड़ लिया जाता तो यह निश्चित था कि उसे मृत्युदंड मिलता, या कुछ नहीं तो कम-से-कम पचीस वर्ष बेगार-शिविर में बिताने पड़ते। विन्स्टन ने क़लम में निब लगाई। क़लम का उपयोग इन दिनों बन्द था। कोई दस्तख़तों तक के लिए उसको काम में नहीं लाता था। उसे यह क़लम बड़ी कठिनाई से मिला था। वह चाहना था कि स्याहीवाली पेंसिल के बजाय इस सुन्दर कॉपी में क़लम

से लिखे। वस्तुतः अब उसे हाथ से लिखने की आदत ही नहीं रही थी। छोटे-मोटे नोट लिखने के अतिरिक्त बड़ी-बड़ी चीजें तो लेखनयन्त्र पर बोल दी जाती थीं जो अपने आप बोली गई चीज़ों को लिख लेता था। परन्तु इस समय उस यन्त्र का तो प्रयोग सम्भव ही नहीं था। उसने क़लम को स्याही में डुबोया। इसके बाद क्षण-भर उसका हाथ कांपा। उसके पेट में अजीब-सी खलबली मच गई थी। उसने जैसे-तैसे लिखा :

अप्रैल, 1984

इसके बाद वह कुर्सी से पीठ लगाकर बैठ गया। सबसे पहली बात तो यह थी कि उसे यही मालूम नहीं था कि यह सन् 1984 ही है। उसका ख़याल था कि साल क़रीब-क़रीब ठीक ही होगा। उसकी आयु कोई उन्तालीस वर्ष की थी। वह सन् 1944 या 1945 में पैदा हुआ था। लेकिन पिछले एक-दो वर्षों की ठीक-ठाक तारीख़ें बताना भी कठिन था।

लेकिन वह यह डायरी किसके लिए लिख रहा है? इसे कौन पढ़ेगा? भविष्य के लिए? भावी सन्तति के लिए? उसके दिमाग़ में कुछ देर कॉपी पर लिखी तारीख़ के बारे में ही विचार आते-जाते रहे। भविष्य से आप अपना सम्बन्ध ही किस प्रकार स्थापित कर सकते हैं? जो स्थिति अब थी, उसमें यह असम्भव था या तो भविष्य वर्तमान की भांति ही होगा और ऐसी अवस्था में वह उसकी बात ही नहीं सुनेगा, या वह भिन्न होगा और उसका आज का असमंजस निरर्थक होगा।

कुछ देर वह काग़ज़ पर दृष्टि गड़ाए बुद्धू की तरह घूरता रहा। टेलीस्क्रीन अब सैनिक धुन बजा रहा था। अजब हालत थी उसकी। वह न केवल अपने-आप को अभिव्यक्त कर पाने में असमर्थ पा रहा था, बल्कि अब उसे यह भी याद नहीं पड़ रहा था कि वह क्या लिखना चाहता था। उसके दिमाग़ में यह बात कभी नहीं आई थी कि लिखना आरम्भ करने के साहस के अलावा अन्य किसी बात की भी आवश्यकता पड़ेगी। जो बातें वर्षों से उसके दिमाग़ में घुमड़ रही थीं, उनका उसे अनुमान था। उसका ख़याल था, उन्हें वह उचित अवसर और सामग्री मिलते ही लिखना आरम्भ कर देगा। परन्तु अब वे स्वगत भी दिमाग़ से गायब हो

गए थे। उसके टखनेवाले फोड़े में बड़ी खुजली हो रही थी। वह उसे खुजला भी नहीं सकता था, क्योंकि खुजलाने से उसकी सूजन बढ़ जाने का ख़तरा था। उसे अपने सामने कॉपी के खुले पृष्ठ, कान-फोडू सैनिक धुन, फोड़े की खुजली और शराब से उत्पन्न थोड़े-से नशे के अलावा और किसी बात का ज्ञान नहीं था।

और अचानक, अचानक उसने लिखना शुरू कर दिया। उसे ठीक-ठीक यह मालूम भी नहीं था कि वह क्या लिख रहा है। बच्चों की तरह वह कॉपी पर टेढ़े-मेढ़े ढंग से लिख रहा था। वह वाक्यों में विराम भी नहीं लगा रहा था।

4 अप्रैल, 1984। कल सिनेमा गया था। सारी फ़िल्म लड़ाई की थी। दिखलाया गया था कि भूमध्यसागर में कहीं एक बहुत अच्छा और बड़ा जहाज़ चला जा रहा है। इसमें शरणार्थी भरे हैं। जहाज़ पर बमवर्षा की जा रही है। जहाज़ डूब रहा था और दर्शकों को यह देखने में बड़ा मज़ा आ रहा था कि एक मोटा आदमी तैर रहा है। उसके पीछे हैलीकॉप्टर था। पहले तो दिखलाया गया कि वह लहरों में ऊपर-नीचे जाते हुए हाथ-पैर मार रहा है। उसके बाद उस आदमी को हैलीकॉप्टर की उस जगह से दिखलाया गया जहां मशीनगन थी। उसके शरीर-भर में छेद हो गए। आसपास का पानी गुलाबी हो गया और ज्योंही इन छेदों में पानी भरा त्योंही वह आदमी डूब गया। दर्शक उसको डूबता देख ख़ूब ज़ोर-ज़ोर से हंस रहे थे। इसके बाद एक लाइफबोट दिखलाई गई। इसमें बहुत-से बच्चे भरे थे। ऊपर एक हैलीकॉप्टर उड़ रहा था। नाव के एक कोने में एक यहूदी अधेड़ महिला बैठी थी। उसकी गोद में तीन वर्ष का बच्चा था। बच्चा डर के मारे चीख़ रहा था और महिला की छाती से चिपका जा रहा था। यहूदिन ने भी उसे अपनी बांहों में लपेट रखा था और चुप करा रही थी। हालांकि डर के मारे वह स्वयं नीलीपड़ी जा रही थी। हैलीकॉप्टर ने नौका के बीचोबीच एक छोटा-सा बम फेंका दिया। एक साथ बिजली-सी चमकी और नाव ऐसी उड़ गई जैसे दियासलाई की तीलियों से

बना मकान। इसके बाद एक डूबते बच्चे का पानी से ऊपर निकला हाथ दिखलाया गया। हैलीकॉप्टर में लगे कैमरे ने यह शॉट लिया होगा। पार्टी-सदस्यों की सीटों पर बैठे लोगों ने ख़ूब तालियां पीटीं, लेकिन मज़दूरोंवाले हिस्से में बैठी एक औरत ने शोर मचाना शुरू कर दिया। वह कह रही थी, "बच्चों के सामने यह दृश्य नहीं दिखलाना चाहिए।" वह तब तक चिल्लाती रही जब तक पुलिस ने आकर उसे बाहर नहीं निकाल दिया। उस औरत का क्या हुआ, नहीं मालूम।

मज़दूरों की प्रतिक्रिया —

विन्स्टन ने लिखना बन्द कर दिया। वह नहीं जानता — किस धुन में वह यह सब लिख गया था। लेकिन लिखते-लिखते उसे एक ऐसी बात का ध्यान आ गया था, जिसे वह लिपिबद्ध कर डालना चाहता था। वह घटना ऐसी थी जिसके कारण वह दफ्तर से चला आया था और उसने निश्चय किया था कि वह आज ही से डायरी लिखना शुरू कर देगा।

यह घटना आज मन्त्रालय में हुई थी, यदि उसे घटना मान लिया जाए तो। क़रीब ग्यारह बजे थे। रिकॉर्ड विभाग में, जहां विन्स्टन काम कर रहा था, कमरों से कुर्सियां ला-लाकर सेन्ट्रल हॉल में जमा की जा रही थीं। इस हॉल में बड़ा-सा टेलीस्क्रीन लगा था। घृणा उत्पन्न करनेवाली दो मिनट की प्रचार-फ़िल्म दिखलाई जानेवाली थी। विन्स्टन बीच की पंक्तिवाली कुर्सियों में से एक पर बैठा, तभी दो व्यक्ति हॉल में घुसे। इनकी शक्लों से तो वह परिचित था लेकिन उसे उनसे बात करने का अवसर कभी नहीं मिला था। इनमें से एक लड़की थी। इस लड़की से बरामदे में आते-जाते उसकी अक्सर मुलाक़ात हो जाती थी। वह उसका नाम नहीं जानता था, परन्तु उसे यह मालूम था कि वह लड़की फ़िक्शन विभाग में काम करती है। कभी-कभी उसके हाथ मशीन के काले तेल में रंगे होते थे और स्क्रू कसनेवाला औज़ार भी होता था, इससे विन्स्टन ने अन्दाज़ा कर लिया था कि वह कथा लिखनेवाली मशीन पर काम करती होगी। लड़की की उमर सत्ताइस साल की होगी। चेहरे से वीरता टपकती थी। उसके बाल घने और गहरे काले थे। उसके हर क्रिया-कलाप से चुस्ती

ज़ाहिर होती थी। उसकी कमर में नीली पट्टी कई घेरों में बंधी रहती थी और साथ ही वह सेक्स-विरोधी लीग का बैज भी लगाए रहती थी। नीली पट्टी से उसकी कमर कसी और अपेक्षाकृत पतली नज़र आती थी और कूल्हे पीछे की ओर अधिक आकर्षक ढंग से उभरे नज़र आते थे। विन्स्टन ने जब पहली बार उसे देखा था, तभी से वह उससे घृणा करने लगा था। वह इसका कारण भी जानता था। ऐसी लड़कियों में ही आवश्यकता से अधिक पार्टी-भक्ति होती थी। वे हर नारा लगाती थीं, जासूसी करती थीं और हमेशा यह देखती रहती थीं कि कौन पार्टी के विश्वासों और सिद्धान्तों पर दृढ़ नहीं है। उसका ख़याल था कि वह लड़की विशेष रूप से ख़तरनाक है। एक बार गलियारे से गुज़रते हुए उसने ऐसी तिरछी नज़र से विन्स्टन को घूरा था कि विन्स्टन सिर से पैर तक कांप गया था। विन्स्टन को ध्यान आया कि हो न हो यह लड़की विचार नियन्त्रक पुलिस की एजेंट हो। जब भी वह आसपास कहीं होती, विन्स्टन के मन में बेचैनी, डर और उसके विरुद्ध घृणा का भाव बराबर बना रहता।

दूसरा आदमी ओ'ब्रायन था। वह अन्तरंग पार्टी का सदस्य था। वह किसी महत्त्वपूर्ण पद पर था जिसका उसे तनिक-सा आभास ही था। काली पोशाक में अन्तरंग पार्टी के सदस्य को आते देख चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया। ओ'ब्रायन मोटा और लम्बे क़द का था। उसकी गर्दन बड़ी मोटी थी। चेहरे से क्रूरता, परिहास और रूखापन-सा टपकता था। इस तरह की भाव-भंगिमा होते हुए भी उसके आचार में कुछ आकर्षण था। वह अपनी नाक पर चश्मा इस प्रकार रखता था जो सामने बैठे आदमी को सकपका देने के लिए काफ़ी होता था। पिछले बारह वर्षों में लगभग दर्जन बार ही विन्स्टन ने ओ'ब्रायन को देखा था विन्स्टन को ओ'ब्रायन का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक लगता था। इसका कारण केवल ओ'ब्रायन की परिष्कृत शिष्टता और पहलवानों जैसा शरीर ही नहीं था। उसे कुछ-कुछ यह भी आभास था कि ओ'ब्रायन राजनीतिक दृष्टि से अन्य पार्टी-उच्चाधिकारियों की भांति कट्टर नहीं है। उसकी मुखमुद्रा पर कुछ-कुछ उक्ताशय का भाव बराबर बना रहता था। और शायद यह भाव राजनीतिक विश्वासों की निश्चलता का न होकर बौद्धिकता का था। लेकिन कुछ भी हो, उसके

मुख की चेष्टा ऐसी थी जिसे देखकर ओ'ब्रायन से बात करने को जी चाहता था। कठिनाई यही थी कि टेलीस्क्रीन से कैसे बचा जाए और उसके साथ एकान्त में किस प्रकार बैठा जाए। यदि टेलीस्क्रीन को धोखा दिया जा सकता और ओ'ब्रायन एकान्त में होता तो उससे आसानी से बातचीत की जा सकती थी। विन्स्टन ने अपने इस अनुमान की सत्यता को परखने के लिए ज़रा भी प्रयत्न नहीं किया था। तभी ओ'ब्रायन ने कलाई में बंधी घड़ी की ओर देखा। दिन के ग्यारह बजने को थे। इसीलिए उसने सोचा कि अब वह दो मिनट चलनेवाली पार्टी-प्रचार की फ़िल्म देखने के बाद ही रिकॉर्ड-विभाग से जाएगा। वह विन्स्टन वाली कुर्सी की पंक्ति में ही कुछ दूरी पर दूसरी कुर्सी पर बैठ गया। दोनों के बीच एक स्त्री थी। यह भी विन्स्टन के विभाग में ही काम करती थी। घने और गहरे काले बालोंवाली यह लड़की विन्स्टन के पीछे बैठी थी।

दूसरे ही क्षण टेलीस्क्रीन के पीछे से एक ऐसी मशीन चलने की आवाज़ आई जैसे कि वह बहुत पुरानी हो और बिना तेल के चल रही हो। यह आवाज़ इतनी कर्कश थी कि उसे सुनते ही आदमी के दांत भिंच जाते थे और पीठ तथा गर्दन के पीछे के रोम तक खड़े हो जाते थे। घृणा-प्रचार आरम्भ हो गया था।

हमेशा की भांति, जनता के दुश्मन, गोल्डस्टीन की शक्ल टेलीस्क्रीन पर सबसे पहले आई। सबके मुंह से धिक्कार की आवाज़ निकलने लगी। विन्स्टन की पंक्तिवाली कुर्सियों में से एक पर बैठी स्त्री के मुंह से डर और निराशा मिश्रित आह निकल गई। गोल्डस्टीन कायर और भगोड़ा था। बहुत समय पहले वह भी पार्टी में था और बड़े भाई की बराबरी का नेता था। परन्त बाद में वह क्रान्ति-विरोधी कार्य करने लगा, जिससे उसे मौत की सज़ा दी गई, लेकिन वह भाग गया और लापता हो गया। उसका भागना और लापता हो जाना अब भी रहस्य था। घृणा-प्रचार का कार्यक्रम प्रतिदिन दो मिनट के लिए होता था। हर बार फिल्म का कथानक भिन्न होता था, किन्तु ऐसी कोई फ़िल्म नहीं होती थी जिसमें गोल्डस्टीन मुख्य पात्र न होता हो। वह आदि विद्रोही था। वह पार्टी की पवित्रता को नष्ट

करनेवाला आदि अपराधी था। पार्टी के विरुद्ध किया जानेवाला प्रत्येक अपराध, विद्रोह, विध्वंसात्मक कार्य, पथभ्रष्टता आदि सब-कुछ गोल्डस्टीन की शिक्षाओं के ही फलस्वरूप होते थे। वह कहीं न कहीं छिपा था और बराबर साज़िशें करता रहता था। सम्भवतः वह समुद्र-पार किसी देश में था और अपने विदेशी स्वामियों से धन लेकर तरह-तरह के षड्यन्त्र रचा करता था। कभी-कभी यह भी अफ़वाह सुनाई पड़ती थी कि वह ओशनिया में ही छिपा था।

विन्स्टन का सारा बदन अकड़ गया था। वह गोल्डस्टीन की शक्ल की ओर बिना कष्टपूर्ण भावों के नहीं देख पा रहा था। गोल्डस्टीन की शक्ल लम्बी, दुबली, यहूदियों की-सी थी। सफ़ेद बाल थे और बकरे जैसी छोटी दाढ़ी। शक्ल से होशियारी टपकी पड़ती थी। फिर भी यह शक्ल देखते ही मन में घृणा के भाव उभर आते थे। गोल्डस्टीन पार्टीस्की हमेशा की तरह विषैली आलोचना कर रहा था। उसकी आवाज़ भेड़ों जैसी थी। नाक पर चश्मा टिका था। ऐसा लगता था जैसे कोई पागल बोल रहा हो। आलोचना इतनी अतिशयोक्तिपूर्ण थी कि उसे सुनकर बच्चा भी यह समझ जाए कि वह ग़लत है, गोल्डस्टीन बड़े भाई हो गालियां दे रहा था। वह पार्टी के नेताओं की निन्दा कर रहा था। वह कह रहा था कि यूरेशिया के साथ तत्काल शान्ति-सन्धि की जाए। वह भाषण की, समाचारपत्रों की, सभा करने की और विचारों की स्वतन्त्रता की मांग कर रहा था। वह कह रहा था कि क्रान्ति जिन उद्देश्यों से की गई थी, वे पूरे नहीं हुए। उसके बोलने का ढंग पार्टी नेताओं का था। भाषण में नई भाषा के भी शब्द थे — बल्कि अन्य पार्टी नेताओं के भाषणों में आनेवाले नई भाषाओं के शब्दों से भी अधिक। इसके साथ ही उसके सिर के पीछे यूरेशियन सेनाओं के अनगिनत सैनिक मार्च करते हुए दिखलाए जा रहे थे। एक के बाद एक सैनिक-पंक्ति स्क्रीन पर आती और लुप्त हो जाती। एक के गायब होते ही भावहीन मुखमुद्रावाले एशियाई सैनिक पर्दे पर आ जाते। उनके बूटों की आवाज़ गोल्डस्टीन के भाषण के साथ बराबर ताल देती थी।

अभी फ़िल्म को आरम्भ हुए कठिनाई से तीस सेकेंड भी नहीं हुए थे कि कमरे के आधे से अधिक व्यक्ति क्रोध से चिल्लाने लगे थे। गोल्डस्टीन का भेड़ों जैसा सन्तुष्ट चेहरा और यूरेशियन सैनिकों का आना दर्शकों की सहनशक्ति के बाहर था। इसके अलावा गोल्डस्टीन का चेहरा सामने आते ही लोगों में भय और क्रोध के भाव अपने आप उभर आते थे। वह यूरेशिया और ईस्ट एशिया दोनो से कहीं अधिक निरन्तर घृणा का पात्र था। ओशनिया बराबर यद्ध करता रहता था। कभी यरेशिया से तो कभी ईस्ट एशिया से। जब वह यूरेशिया से युद्ध करता तो ईस्ट एशिया से उसकी मैत्री होती और जब ईस्ट एशिया से युद्ध करता तो यूरेशिया से। लेकिन गोल्डस्टीन के सम्बन्ध में एक अजीब बात थी। उससे हर आदमी घृणा करता था। हर रोज़ और दिन में हज़ार बार सभाओं में, टेलीस्क्रीन पर, अखबारों में और पुस्तकों में उसकी निन्दा की जाती थी उसके सिद्धान्तों का खंडन किया जाता था, उसके तर्क काटे जाते थे, उसकी हंसी उड़ाई जाती थी और सब उसके भाषणों को हेय दृष्टि से देखते थे; परन्तु फिर भी गोल्डस्टीन का प्रभाव कम होता नज़र नहीं आता था। हमेशा कोई न कोई उसके फन्दे में फंसता ही रहता था। एक दिन भी ऐसा नहीं गुज़रता था जब विचार नियन्त्रक पुलिस उसके जासूसों और तोड़-फोड़ करनेवाले आदमियों को पकड़ती न हो। उसके पास बहुत बड़ी गुप्त सेना थी, असंख्य षड्यन्त्रकारी थे और वे सब राज्य को उलटने की सतत चेष्ठा करते रहते थे। उसके आदमियों को 'ब्रदरहुड' की संज्ञा दी गई थी। यह भी अफ़वाह थी कि एक बड़ी भयंकर पुस्तक है जिसे गोल्डस्टीन ने लिखा है और वह पुस्तक गुप्त रूप से प्रचारित की जाती है। इसका कोई नाम नहीं है। उसे केवल 'पस्तक' के नाम से ही लोग जानते थे। ब्रदरहुड या पुस्तक के सम्बन्ध में पार्टी का हरेक सदस्य, जहां तक सम्भव होता था, चर्चा करने से बचने का प्रयत्न करता।

दूसरे मिनट फ़िल्म चरम सीमा पर पहुंच गई थी। लोग अपनी-अपनी कुर्सियों पर उछल रहे थे, चिल्ला रहे थे और शोर मचाकर गोल्डस्टीन की आवाज़ को अपनी आवाज़ में डुबा देने का प्रयत्न कर रहे थे। बगल में बैठी स्त्री का चेहरा सुर्ख हो गया और उसका मुंह इस प्रकार बार-बार

खुल और बन्द हो रहा था जैसे पानी से बाहर लाकर छोड़ी गई किसी मछली का! ओ'ब्रायन का भारी चेहरा भी लाल हो गया था। पीछे बैठी घने और गहरे काले बालोंवाली लड़की चिल्ला रही थी, 'सुअर! सुअर!! सुअर!!! अचानक उसने नई भाषा वाली मोटी डिक्शनरी उठाकर स्क्रीन पर दे मारी। वह गोल्डस्टीन की नाक पर लगकर नीचे गिर गई। टेलीस्क्रीन के पीछे से आवाज़ बराबर आती रही। एकाएक विन्स्टन ने अनुभव किया कि वह भी अन्य लोगों के साथ चिल्ला रहा है। और अपने जूतों से कुर्सी को बार-बार ठोकर मार रहा है। दो मिनटवाली उस घृणा-प्रचार फ़िल्म की विशेष बात यह नहीं थी कि उसमें चिल्लानेवालों के साथ आप भी शोर मचाएं, अपितु विशेषता यह थी कि आप बिना चीखे रह ही नहीं सकते थे। तीस सेकेंड बाद ही गम्भीरता समाप्त हो जाती थी। डर और गुस्से का भाव आप पर हावी हो जाता था। ऐसी इच्छा होती थी कि किसी को मार डाला जाए, हथौड़े से उसका मुंह कूट दिया जाए। ये भावनाएं बिजली की तरह उभर आती थीं और लोग विक्षिप्तों की तरह चिल्लाने लगते थे। यह घृणा और विध्वंस की इच्छा काल्पनिक थी और इसे किसी भी विषय या व्यक्ति की ओर मोड़ा जा सकता था। विन्स्टन को इस घृणा और क्रोध का भाव गोल्डस्टीन के बजाय कभी पार्टी, तो कभी बड़े भाई और कभी विचार नियन्त्रक पुलिस पर केन्द्रित होता दिखाई दिया। वह स्वभावतः गोल्डस्टीन से सहानुभूति करने लगता था, जो अकेला था और जिसे सबने बदनाम कर रखा था। किन्तु दूसरे ही क्षण उसे लगता कि गोल्डस्टीन के विरुद्ध जो कुछ भी कहा जा रहा है, वह सत्य है। ऐसे अवसरों पर उसके मन में बड़े भाई के विरुद्ध जो घृणा का भाव होता था, वह बड़े भाई के प्रति प्रशंसा के रूप में बदल जाता। बड़े भाई उसे अजेय, निर्भीक रक्षक, एशियाई डाकुओं के विरुद्ध खड़ी चट्टान-से लगते और गोल्डस्टीन अकेला एवं असहाय होते हुए भी तथा उसका अस्तित्व सन्दिग्ध होते हुए भी दुष्ट जादूगर-सा लगता।

कभी-कभी तो यह भी सम्भव होता है कि अपनी इच्छा से ही आप घृणा के पात्र को भी बदल दें। विन्स्टन ने अपनी घृणा का पात्र गोल्डस्टीन को न बनाकर अपने पीछे बैठी गहरे काले बालोंवाली लड़की को बना

लिया। उसके सामने स्पष्ट काल्पनिक दृश्य नाचने लगे। वह इस लड़की को रबड़ के कोड़े से इतना मारेगा कि वह मर जाएगी। वह उसे नंगा कर लकड़ी की सूली पर कस देगा और उसके सारे शरीर को तीरों से वेध देगा। वह उसके साथ बलात्कार करेगा और फिर उसका गला काट डालेगा। अब पहले से भी अधिक उसकी समझ में आ गया था कि वह इस लड़की से क्यों घृणा करता था। वह उससे घृणा करता था, क्योंकि वह सुन्दर थी, तरुण थी और काम की भावनाओं से रहित थी, क्योंकि वह उसके साथ हमबिस्तर होना चाहता है, लेकिन वह ऐसा कभी नहीं कर सकेगा। उसकी पतली कमर, उसे ऐसा लगता था, अपनी बाहों में लपेटने के लिए विन्स्टन को आमन्त्रित करती थी, परन्तु वहां बंधी नीली पेटी उसके कौमार्य व्रत का क्रोध दिलानेवाली प्रतीक थी।

अब घृणा-प्रचार की उस फ़िल्म का चरम दृश्य दिखलाया जा रहा है। गोल्डस्टीन की आवाज़ बिलकुल भेड़ के मिमियाने जैसी हो गई थी और क्षण-भर बाद ही शक्ल भी भेड़ जैसी हो गई। इसके बाद भेड़ की शक्ल यूरेशियन सैनिक की शक्ल में खो गई। वह आगे बढ़ रहा था। उसकी मशीनगन आग उगल रही थी। ऐसा लग रहा था कि वह दर्शकों पर चल रहा है और सामने की सीट में बैठे कुछ दर्शक सचमुच पीछे की तरफ़ झुक गए। तभी लोगों ने चैन की सांस ली जब दुश्मन की शक्ल बड़े भाई के चित्र में खो गई। काले बालों, काली मूंछों और शक्तिशाली चेहरे से रहस्यपूर्ण शान्ति की आभा फूट पड़ती थी। पूरे पर्दे पर यह शक्ल छा गई थी। बड़े भाई क्या कह रहे थे यह कोई सुन नहीं पाया। शायद ढाढ़स बंधानेवाले कुछ शब्द थे। ऐसे शब्द जो रणक्षेत्र के शोर में कहे जाते हैं, जो सुनाई तो नहीं पड़ते लेकिन जिनसे खोया साहस फिर लौट आता है। फिर बड़े भाई का चेहरा भी लुप्त हो गया और उसकी जगह ये तीन नारे पर्दे पर सामने आ गए :

युद्ध ही शान्ति है!

दासता ही स्वतन्त्रता है!

अज्ञानता ही शक्ति है!

परन्तु कई सेकेंडों तक पृष्ठभूमि में बड़े भाई का चेहरा बराबर बना रहा, जैसे दर्शकों की आखों में वह चेहरा अब भी बसा हो। विन्स्टन की पंक्ति की कुर्सियों पर बैठी औरत अब सामनेवाली कुर्सियों में से एक की पीठ पर झुक गई थी। इसके बाद उसने दोनों हाथ परदे की तरफ़ करके बुदबुदाते हुए कहा : "हे मेरे रक्षक!' यह कहने के बाद उसने अपने दोनों हाथों में मुंह छिपा लिया। स्पष्ट था कि वह कोई प्रार्थना कर रही थी।

इसी मौक़े पर सब लोग समवेत स्वर में एक प्रकार की सैनिक धुन में 'बड़े भाई, बड़े भाई' गाने लगे। आवाज़ काफ़ी भारी थी। कोई तीस सेकेंड यह क्रम चला। यह धुन भावातिरेक की अवस्था में अक्सर गायी जाती थी। यह एक प्रकार से बड़े भाई की बुद्धिमानी और शान का कीर्तन-सा था। परन्त इससे भी अधिक सम्भवतः यह आत्मसम्मोहन की क्रिया थी जिसमें धुन के साथ कीर्तन करके मानसिक चेतना को भुला दिया जाता था। लेकिन विन्स्टन का उत्साह ठंडा पड़ गया था। फ़िल्म देखते समय तो वह अपने आपको रोक नहीं पाता था और गुल मचाने में शामिल हो जाता था। किन्तु इस कीर्तन की तो ध्वनि-मात्र से वह घबड़ा जाता था। फिर भी अन्य लोगों के साथ बोलता ही रहा था। अपनी भावनाओं का शमन, अपनी मुद्रा पर संयम और अन्य लोगों का अनुकरण करने की उसकी स्वाभाविक आदत हो गई थी। परन्तु सम्भवतः कुछ क्षणों के लिए उसकी आंखों में चमक-सी आ गई थी, उससे अन्दाज़ किया जा सकता था कि वह क्या सोच रहा है। और उसी समय वह बात हुई — यदि उस घटना की सत्यता पर अब भी विश्वास कर लिया जाए तो।

सहसा उसकी आंखें ओ'ब्रायन से मिल गईं। ओ'ब्रायन खड़ा हो गया था। उसने चश्मा उतार लिया और उस समय वह उसे नाक पर रख कानों पर चढा रहा था। क्षण से भी कम समय के लिए विन्स्टन की आंखें ओ'ब्रायन से मिलीं और विन्स्टन ने जान लिया कि ओ'ब्रायन की मनः स्थिति भी वही है जो उसकी थी। एक-दूसरे ने एक-दूसरे को आंखों-ही-आंखों में सन्देशा दे दिया था और उसके बारे में कोई ग़लती होने की सम्भावना नहीं थी। ऐसा लगा कि दोनों के दिमाग़ खुल गए हैं और आंखों

के ज़रिए एक-दूसरे के मन की बातें दोनों के पास आ-जा रही हैं। उसे लगा ओ'ब्रायन कह रहा है, "मैं तुम्हारे हृदय की घृणा, तिरस्कार तथा क्षोभ की भावनाओं को समझता हूं। मैं तुमसे सहमत हूं और तुम्हारे साथ हूं।" इसके बाद वह चमक गायब हो गई तथा अन्य सबकी भांति ओ'ब्रायन का चेहरा भी भावहीन हो गया।

बात बस इतनी-सी थी। उसे स्वयं अपने आपपर सन्देह होने लगा था कि वस्तुतः यह घटना हुई थी या नहीं। इस प्रकार की घटना का कोई फल तो होना ही नहीं था। इससे केवल यही लाभ हुआ कि वह जान गया कि जिस प्रकार वह अन्दर-ही-अन्दर पार्टी का विरोधी है ठीक उसी प्रकार अन्य लोग भी हैं। गुप्त षड्यन्त्र की अफ़वाह शायद ठीक है। सम्भवतः गोल्डस्टीन की सचमुच कोई पार्टी है। परन्तु असंख्य गिरफ़्तारियों, इक़बाली बयानों और फांसियों के बाद भी इस प्रकार का दल बना रहेगा — ऐसा असम्भव ही जान पड़ता था। कभी उसे विश्वास होता था और कभी नहीं होता था। कोई प्रमाण नहीं था। हलकी-सी झलक मिलती थी जिसका कुछ अर्थ हो भी सकता था और नहीं भी हो सकता था। कभी दो आदमियों की बातचीत सुनाई दे जाती थी, कभी पाखानों की दीवारों पर कुछ लिखा दिखलाई पड़ जाता था, कभी दो अजनबी मिलकर इस प्रकार हाथ उठाते थे जिससे पता लग जाता था कि वे एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं। परन्तु यह सब अनुमान-मात्र ही था। बहुत सम्भव है, सब कपोलकल्पना ही हो। इसके बाद उसने ओ ब्रायन की ओर नहीं देखा और वह चुपचाप अपनी कोठरी में आकर बैठ गया। एक या दो सेकेंड के लिए उनकी नज़रें सन्दिग्धावस्था में एक हुई थीं और बस बात ख़त्म हो गई थी। परन्तु जैसी तालाबन्द कोठरी में उनको रहना पड़ रहा था उसमें यह भी महत्त्वपूर्ण बात थी।

विन्स्टन ने अंगड़ाई ली और फिर कुर्सी पर सीधा बैठ गया। उसे डकार आई। शराब उसके पेट से ऊपर की तरफ़ आ रही थी।

उसकी आखें कॉपी के पृष्ठ पर फिर से जम गईं। उसने देखा कि जितने समय वह दफ़्तर की बातें सोच रहा था, उस समय में भी उसने

कुछ लिखा है। पहले जैसी कांपती हस्तलिपि उसकी नहीं थी। उसने कई बार बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था :

बड़ा भाई, मुर्दाबाद!

बड़ा भाई, मुर्दाबाद!

यह नारा उसने कोई आधे पेज़ में बराबर कई बार लिखा था।

वह अब बड़ा डर अनुभव कर रहा था। परन्तु डर बेकार था, क्योंकि यह लिखना कॉपी खोलने से बड़ा अपराध नहीं था। एकबारगी उसकी तबीयत आई कि वह पृष्ठ फाड़ दे और डायरी लिखने का प्रयत्न सदैव के लिए छोड़ दे।

परन्तु उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया। वह जानता था, ऐसा करना बेकार होगा। चाहे वह 'बड़ा भाई, मुर्दाबाद' लिखे या न लिखे, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ सकता था। विचार नियन्त्रक पुलिस उसे अवश्य पकड़ लेगी। उसके मन में पार्टी-विरोधी भाव तो थे ही, चाहे उन्हें लिखे या न लिखे। यही अपराध था। इसे वे विचार-अपराध कहते थे। विचार-अपराध को सदैव छिपाया नहीं जा सकता था। आप कुछ समय के लिए, या कुछ वर्षों के लिए भले ही छिप-छिपकर यह अपराध कर लें, परन्तु एक न एक दिन आपका गिरफ्त में आ जाना निश्चित था।

हमेशा रात को — हमेशा रात को ही ऐसी गिरफ्तारियां होती थीं। अचानक आपके कन्धे झकझोरकर आपको कोई सोते से जगा देता, आप आंख खोलते ही देखते कि आपकी आंखों पर तेज़ रोशनी पड़ रही है और आप चौंधिया जाते। बिस्तर के चारों तरफ़ यमदूतों-से कठोर चेहरे वाले व्यक्ति घेरे खड़े होते। अधिकांश मामलों में न तो कोई मुकद्दमा चलाया जाता था और न किसी गिरफ़्तारी की कोई सूचना ही मिलती। लोग गायब हो जाते थे। वे हमेशा रात को ही लापता होते थे। गायब आदमी का नाम हर रजिस्टर से मिटा दिया जाता था। ऐसा हर काग़ज़ मिटा दिया जाता जिसमें नाम-मात्र के लिए भी गायब आदमी का उल्लेख होता था। गायब आदमी के अस्तित्व से ही इन्कार कर दिया जाता था

और फिर उसे भुला दिया जाता था। आप मार दिए जाते, क़त्ल कर दिए जाते और इस सबके लिए एक ही वाक्य था, "भाप बनाकर उड़ा दिया जाना।

कुछ समय के लिए उसे दौरा-सा आ गया और वह उसी झोंक में लिखता चला गया :

वे मुझे गोली मार देंगे, मुझे इसकी चिन्ता नहीं। वे मेरी गर्दन के पिछले हिस्से में गोली मारेंगे मुझे इसकी भी परवाह नहीं। बड़े भाई का नाश हो...।

वह कुर्सी पर निढाल होकर गिर गया। इसके एक क्षण बाद ही वह ज़ोर से चौंक पड़ा। तभी दरवाज़े पर थपथपाने की आवाज़ सुनाई दी।

आ गए! वह चूहे की भांति चुप होकर बैठ गया। फिर थपथपाहट हुई। देर करना और भी ख़तरनाक होगा, उसने सोचा, उसका हृदय ज़ोरों से धक-धक कर रहा था। परन्तु मुंह पर आदतन कोई भाव नहीं था। वह उठा और भारी क़दमों से दरवाज़े की ओर चला।

उसने लम्बी सांस ली और दरवाज़ा खोल दिया। दरवाजा खोलते ही उसका दम-में-दम आ गया। उसके सामने सफ़ेद चेहरे की, उड़ते बालोंवाली औरत खड़ी थी। उसके चहरे पर झुर्रियां थीं।

"ओह कामरेड!' उसने सूखी और खरखरी आवाज़ में कहा, "मुझे कुछ ऐसा लगा कि आप कमरे में लौट आए हैं। क्या आप मेरी रसोई में चलकर ज़रा नाली देख लेंगे? वह रुक गई है, शायद कुछ फंस गया है उसमें..."

यह श्रीमती पारसन्स थीं — विन्स्टन के पड़ोसी की पत्नी। उनकी उमर कोई तीस वर्ष की होगी। लेकिन वह अपनी उमर से अधिक लगती थीं। उन्हें देखकर ऐसा लगता था कि उनके चेहरे की झुर्रियों में धूल भर गई है। विन्स्टन उनके पीछे-पीछे चला गया। इस प्रकार की झुंझला देने वाली छोटी-मोटी मरम्मतों की रोज़ ही आवश्यकता हुआ करती थी।

विजय भवन काफ़ी पुराना था। ये फ्लैट 1930 के लगभग बने थे और अब प्रायः गिरने जैसे हो गए थे। छतों और दीवारों से पलस्तर बराबर गिरता रहता था। अब भी बरफ़ जमती तो नलके फट जाते थे। मितव्ययिता के कारण अधिकतर मकान को गरम तो किया ही नहीं जाता था और जब ऐसा होता भी था तो गरम रखनेवाले नलों को आधा ही खोला जाता था। मरम्मत वही होती थी जो आप अपने हाथ से कर लें। सरकारी मरम्मत की मंजूरी मुश्किल से मिलती थी। एक खिड़की में शीशा लगवाने की स्वीकृति आते-आते दो साल लग जाते थे।

"टॉम घर पर नहीं है, इसलिए आपको बुलाना पड़ा", श्रीमती पारसन्स ने कहा।

पारसन्स का हिस्सा विन्स्टन से बड़ा था। उसमें अंधेरा भी अधिक था। घर के अन्दर हर चीज़ टूटी-फूटी और रौंदी हुई दिखाई देती थी। ऐसा लगता था, कोई बहुत बड़ा जानवर कमरे भर में दौड़ा हो। हॉकी, चूंसेबाजी के दस्ताने, फुटबाल के अन्दर की रबड़वाली गेंद, पसीने से गन्दे मोज़े फ़र्श पर बिखरे पड़े थे। यूथ लीग और जासूसों के बड़े-बड़े नारे काग़ज़ों पर लिखे थे। बड़े भाई का आदम क़द पोस्टर चित्र लगा था। दूसरे कमरे में कोई कन्धे और काग़ज़ को टेलीस्क्रीन में बज रही सैनिक धुन के साथ बजा रहा था।

"बच्चे हैं," श्रीमती पारसन्स ने कुछ भयातुर दृष्टि से दरवाज़े की ओर देखते हुए कहा, "आज वे गए नहीं हैं और बेशक..."

श्रीमती पारसन्स की आदत थी कि वह अपने वाक्यों को अधूरा ही छोड़ दिया करती थीं। रसोईघर की नाली ऊपर तक हरे पानी से भरी हुई थी। इसमें से बन्दगोभी की बदबू और भी बुरी तरह आने लगी थी। विन्स्टन ने झुककर पाइप के जोड़ को देखा। वह हाथ नहीं डालना चाहता था। श्रीमती पारसन्स उसकी ओर असहाय भाव से देख रही थीं।

"यदि टॉम होता तो वह एक मिनट में वह नाली साफ़ कर देता।" उन्होंने कहा। सत्य मन्त्रालय में पारसन्स विन्स्टन के साथ ही काम करता था। वह देखने में मोटा था, परन्तु बहुत ही चंचल था। विचार नियन्त्रक

पुलिस से भी अधिक पार्टी की स्थिरता पारसन्स जैसे व्यक्तियों पर ही निर्भर थी। पैंतीस वर्ष की अवस्था में भी वह यूथलीग नहीं छोड़ना चाहता था। वह जासूस का काम भी क़ानूनी अवधि से एक वर्ष अधिक करता रहा था। खेल-कूद की समितियां, सामुदायिक भ्रमणों, प्रदर्शनों, बचत अभियानों तथा अन्य स्वयंसेवा के कार्यों में वह सबसे आगे रहता था। वह बड़ी शान से मुंह में पाइप दबाए हुए बताता था कि पिछले चार वर्षों से एक भी शाम ऐसी नहीं गुज़री है जब वह सामुदायिक केन्द्र पर न गया हो। उसके शरीर से पसीने की बदबू बराबर आती रहती थी जिससे उसके मेहनती जीवन का आभास मिल जाता था। यह बदबू उसके चले जाने के बाद भी वातावरण में छाई रहती थी।

"आपके यहां पेचकस है?" विन्स्टन ने पूछा।

"शायद हो," श्रीमती पारसन्स एकदम निराश-सी हो गईं, "बच्चों ने इधर-उधर..."

कमरे में बच्चों के घुसते ही जूतों की और सैनिक धुन पर कन्या और काग़ज़ बजाने की आवाज़ फिर से आई। श्रीमती पारसन्स जिस औज़ार की आवश्यकता थी वह ले आईं। विन्स्टन ने बोल्ट खोलकर पानी निकल जाने दिया। इसके बाद पाइप में से बालों की गूंथ निकालकर फेंक दी जिसकी वजह से पानी रुक गया था। उसने अपने हाथ धोए और फिर बगल के कमरे में चला गया।

"अपने हाथ ऊपर उठाओ!" जंगलियों की तरह चिल्लाते हुए किसी ने कहा।

एक ख़ूबसूरत बच्चा खिलौने की पिस्तौल हाथ में लिए मेज़ के नीचे से निकल आया था और उसे धमका रहा था। उससे दो साल छोटी उसकी बहन भी हाथ में लकड़ी लिए वैसा ही इशारा कर रही थी जैसा उसका भाई। दोनों नीले निकर, भूरी कमीज़ पहने थे और लाल रूमाल बांधे थे। यह जासूसों की पोशाक थी। विन्स्टन ने हाथ ऊपर कर दिए, लेकिन बच्चों के रंग-ढंग में कुछ ऐसी बात थी जिससे लगता था कि यह सब सिर्फ़ खेल नहीं है।

"तुम राजद्रोही हो।" लड़का चीख़ा, "तुम्हारे विचार अपराधियों जैसे हैं। तुम यूरेशियन जासूस हो। मैं तुम्हें भाप बनवा के उड़वा दूंगा। मैं तुम्हें नमक की खानों में भिजवा दूंगा।"

अचानक लड़का उसके चारों तरफ़ 'राजद्रोही' कहता हुआ, इधर-उधर कूदने लगा और लड़की भी वैसा ही करने लगी। विन्स्टन को डर लग रहा था। लड़के की आंखों में क्रूरता झलकती थी। कुशल ही समझिए कि उसके हाथ में असली पिस्तौल नहीं थी।

श्रीमती पारसन्स घबड़ाई-सी कभी बच्चों को, तो कभी विन्स्टन को देख रही थीं। यहां रोशनी में विन्स्टन ने देखा कि श्रीमती पारसन्स की झुर्रियों में सचमुच धूल भरी हुई थी।

"कभी-कभी तो ये बच्चे इतना शोर मचाते हैं कि कुछ न पूछिए", श्रीमती पारसन्स कह रही थीं, "ये लोग आज इसलिए भी नाराज़ हैं कि फांसी का दृश्य देखने नहीं जा सके। मैं व्यस्त हूं और टॉम के जल्दी वापस लौटने की आशा नहीं है।"

उस दिन शाम को कुछ यूरेशियन युद्ध-अपराधियों को पार्क में फांसी दी जानेवाली थी. विन्स्टन को याद आया। यह काम महीने में एक बार अवश्य होता था और लोग बड़े चाव से यह दृश्य देखने जाते थे। बच्चे हमेशा इसे देखने के लिए ज़िद करते थे। उसने श्रीमती पारसन्स से विदा ली और दरवाज़े की ओर बढ़ा। वह मुश्किल से छः कदम भी नहीं गया होगा कि उसकी गर्दन के पिछले हिस्से में कोई चीज़ इतने ज़ोरों से आकर लगी कि वह पीड़ा से छटपटा गया। उसने मुड़कर देखा कि श्रीमती पारसन्स लड़के को दरवाज़े की ओर खींच रही हैं और वह ज़मीन पर लोट गया है।

अपने कमरे में वापस आकर वह तेज़ी से टेलीस्क्रीन के आगे निकल गया और कुर्सी पर जाकर बैठ गया। वह अपनी गर्दन का पिछला भाग अब भी सहला रहा था।

वह सोच रहा था, ऐसे बच्चों के साथ मां गहरे आतंक में ही दिन काटती होगी। साल-दो साल बाद यही बच्चे अपनी मां में ऐसा दोष खोज

निकालने का प्रयत्न करेंगे जिससे उसे पार्टी-विरोधी घोषित किया जा सके। आजकल सभी बच्चे बड़े ख़तरनाक थे। उन्हें जो संस्था जासूसी सिखलाती थी, वह ऐसी शिक्षा देती थी कि घरवालों का अनुशासन वे मानते ही नहीं थे। परन्तु वे पार्टी के विरुद्ध कोई बात नहीं सोचते थे। पार्टी की ईश्वर की तरह पूजा करते थे और उन्हें पार्टी से सम्बन्धित हर चीज़ प्रिय थी। गाने, जुलूस, नारे, भ्रमण, ड्रिल, नक़ली राइफल के साथ सैनिक अभ्यास, बड़े भाई की स्तुति — यह सब उन्हें शानदार खेल-सा लगता था। उनकी सारी भावनाएं, उग्रता राजद्रोहियों, विदेशियों, तोड़-फोड़ करने-वालों, अपराधी विचार रखने वालों के विरुद्ध होती थीं। शायद ही कोई ऐसा सप्ताह बीतता होता हो जब टाइम्स में इस आशय की एक न एक ख़बर न छपती हो कि किस प्रकार कुछ पार्टी-विरोधी बातें सुनकर किसी बच्चे ने अपने मां-बाप को पुलिस के हवाले कर दिया। ऐसे बच्चों को 'वीर बालक' की उपाधि दी जाती थी।

उसकी गर्दन का दर्द धीरे-धीरे दूर हो गया। उसने अपनी क़लम उठा ली और सोचने लगा कि क्या वह कुछ और भी लिख सकता है। अचानक उसे ओ'ब्रायन का फिर ध्यान आ गया।

वर्षों पूर्व — सम्भवतः सात साल पहले उसने सपने में देखा था कि वह एक बिलकुल अंधेरे कमरे में चल रहा है आकर उसकी बगल में बैठे किसी आदमी ने कहा था, "अब हम लोग दुबारा ऐसी जगह मिलेंगे, जहां अंधेरा न होगा।" यह बात बड़ी शान्तिपूर्वक कही गई थी। आज्ञा जैसा उसमें कोई भाव नहीं था। वह रुका नहीं था और चलता चला गया था। सबसे अजीब बात तो यह थी कि उस सपने में उन शब्दों का उस पर कोई असर नहीं हुआ था। परन्तु बाद में उसने अनुभव किया था, वे शब्द उसने ओ'ब्रायन के आवाज़ में सुने थे।

विन्स्टन ने आज सवेरे ओ ब्रायन की आंखों में जो चमक देखी थी उसके बाद भी वह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि वह आदमी उसका मित्र है या शत्रु।

टेलीस्क्रीन से आनेवाली आवाज़ अचानक रुक गई। बिगुल बजने की स्पष्ट ध्वनि वातावरण में गूंज गई। इसके बाद टेलीस्क्रीन पर कोई कह रहा था :

"सुनिए, कृपया ध्यान से सुनिए!! मलाबार से यह समाचार अभी-अभी मिला है। दक्षिण भारत में हमारी सेनाओं ने विजय प्राप्त कर ली है। मैं सरकारी तौर पर यह बात कह रहा हूं कि अब युद्ध समाप्त होने में अधिक देर नहीं है। यह समाचार अभी-अभी मिला है।"

विन्स्टन ने मन-ही-मन कहा, अब कोई ख़राब समाचार मिलनेवाला है। इसके बाद हुआ भी वही। पहले तो यूरेशियन सेना के हताहतों की लम्बी-चौड़ी संख्या बतलाई गई, फिर घोषणा की गई कि आगामी सप्ताह चॉकलेट का राशन तीस ग्राम से घटाकर बीस ग्राम कर दिया जाएगा।

विन्स्टन को फिर डकार आई। शराब का नशा उतर रहा था। उस पर खुमारी-सी छा रही थी। विन्स्टन खिड़की की ओर चला गया। अब फिर उसकी पीठ टेलीस्क्रीन की ओर थी। बाहर अब भी ठंडक थी। मौसम साफ़ था। कहीं दूरी पर रॉकेट गिरने की गूंजती हुई आवाज़ सुनाई पड़ी। हर सप्ताह आजकल लन्दन में बीस या तीस रॉकेट गिर रहे थे।

उसे ऐसा लग रहा था कि वह समुद्र की तलहटी के वह किसी जंगल में घूम रहा है। वह दानवों की दुनिया में है और स्वयं भी दानव बन गया है। इस बात का क्या प्रमाण था कि एक भी जीवित मनुष्य उसकी ओर था? यह जानने का उसके पास क्या साधन था कि पार्टी की सत्ता सदैव नहीं बनी रहेगी? उत्तरस्वरूप उसको मन्त्रालय की इमारत पर ये तीन नारे फिर दिखलाई पड़ गए :

युद्ध ही शान्ति है!

स्वतन्त्रता ही दासता है!

अज्ञान ही शक्ति है!

उसने पच्चीस सेंट का एक सिक्का जेब से निकाला। सिक्के पर भी वे ही नारे छोटे-छोटे अक्षरों में लिखे थे। दूसरी तरफ़ बड़े भाई की शक्ल

थी। आप कहीं जाइए, सिक्कों से, टिकटों से, किताबों की जिल्दों से, पोस्टरों और सिगरेट पैकेटों के काग़ज़ों से — हर जगह से बड़े भाई की शक्ल आपको घूरती नज़र आती थी। सोते-जागते, खाते-पीते, काम करते, घर-बाहर, स्नानागार में या पलंग पर हर जगह वे ही आंखें थीं। उनसे पीछा नहीं छूटता था। आपका अपना कुछ भी नहीं था — केवल मस्तिष्क के नन्हे-से आन्तरिक क्षेत्र को छोड़कर।

वह सोच रहा था — यह डायरी आखिर वह किसके लिए लिख रहा है? भविष्य के लिए — अतीत के लिए; ऐसे युग के लिए, जो कल्पना-मात्र ही है। उसके सामने मौत नहीं — अस्तित्व का ही जड़मूल में उन्मूलन है। डायरी को जलाकर राख कर दिया जाएगा और उसे भाप बनाकर उड़ा दिया जाएगा। जो कुछ उसने लिखा है उसे केवल विचार नियन्त्रक पुलिस डायरी नष्ट करने के पूर्व पढ़ेगी। इसके बाद उसकी स्मृति तक शेष नहीं रहेगी। आप भविष्य के लिए क्या कर सकते हैं? विशेष कर उस समय जब आपका नामोनिशान तक नहीं छोड़ा जाए, आपका अनामी सन्देश तक न लिखा रहने दिया जाए?।

टेलीस्क्रीन ने चौदह (दिन के दो) बजाए। अब दस मिनट के अन्दर उसे वापस लौट जाना है। ढाई बजे उसे दफ़्तर में काम पर होना चाहिए।

घड़ी के घंटे सुन उसे फिर साहस हो गया था। एकान्त में वह भूत की तरह सच्ची बात कह रहा था पर उसकी वह बात सुननेवाला कोई न था; लेकिन उसे लग रहा था, जब तक वह अपनी बात कहता जाएगा, वह कड़ी, अतीत से भविष्य की ओर ले जानेवाली कड़ी, टूटेगी नहीं। वह मेज़ पर गया। उसने दवात में क़लम डुबोया और लिखा :

भविष्य या अतीत को — उस वक़्त को जब विचारों की स्वतन्त्रता होगी, जब मनुष्य मनुष्य से भिन्न मत भी रख सकेगा — जब सत्य का अस्तित्व बना रह सकेगा और जो कर दिया जाएगा उसे मिटाया न जा सकेगा।

'एकरूपता के युग से, एकान्त के युग से, बड़े भाई के युग से और द्वैध-विचारों के युग से — सबका अभिनन्दन।'

वह सोच रहा था कि वह मर चुका है। वह सोच रहा था, अब उसके विचार व्यवस्थित रूप से दिमाग़ में आ रहे हैं। अब उसने निर्णयात्मक कदम उठा लिया है। हर कार्य का परिणाम उस कार्य ही से सन्निहित होता है।

अब चूंकि उसने अपने-आपको मृत मान लिया था, इसलिए अब उसके लिए यह ज़रूरी था कि वह जितने दिन सम्भव हो जिए। उसकी दो उंगलियों में स्याही लग गई थी। स्याही के ये दाग़ फंसा सकते थे। मन्त्रालय में कोई भी उसकी उंगलियों में से ये दाग़ देखकर सोच सकता था कि वह लंच-ब्रेक में क्या लिखता रहा था। और क्यों लिख रहा था? लिखने के लिए उसने पुराने किस्म के क़लम का उपयोग क्यों किया? और फिर वह शंकालु व्यक्ति सम्बन्धित अधिकारियों को सूचित कर सकता था। उसने बाथरूम में जाकर साबुन से मलकर उंगलियां धोईं। साबुन क्या था — रेतनेवाला काग़ज़ था। उसके लगाने से स्याही तो स्याही, खाल तक उधड़ जाती थी। इस काम के लिए यह उपयुक्त ही था।

उसने डायरी को दराज़ में रख दिया। उसे छिपाने की चेष्टा करना अब व्यर्थ था। परन्तु वह यह बात अवश्य जान सकता था कि डायरी को किसने देखा है या नहीं। उसके पन्ने के एक कोने में लगा बाल तो सबको दिखाई पड़ जाएगा। उसने धूल का एक सफ़ेद कण उठाकर डायरी के कवर के एक कोने पर रख दिया। उसका खयाल था कि यदि किसीने डायरी को उठाया तो यह कण वहां से अवश्य गिर जाएगा।

विन्स्टन अपनी मां का याद कर रहा था।

उसकी उमर कोई दस-ग्यारह वर्ष की होगी, जब उसकी मां अचानक लापता हो गई थी। मां का क़द लम्बा था। मूर्तियों जैसा कलात्मक चेहरा था। अधिकतर वह चुप ही रहती थीं। वह बहुत धीरे-धीरे चलती थीं। मां के केश बहुत ही सुन्दर थे। पिता की शक्ल स्पष्ट याद नहीं थी। लेकिन जो कुछ धुंधली-सी याद थी, वह यह थी — वह दुबले-पतले,

अपेक्षाकृत सांवले थे। हमेशा गहरे रंग के कपड़े पहनते थे। चश्मा लगाते थे। सन् 1950 और 60 के बीच जो 'शुद्धि' हुई थी, उसमें विन्स्टन के माता-पिता का भी सफ़ाया हो गया था।

उस समय उसकी मां ज़मीन की गहराई में उसकी छोटी बहन को गोदी में लिपटाए बैठी थीं। वे भूमि के गर्भ में थीं, शायद किसी कुंए में या किसी गहरी क़ब्र में। परन्तु यह जगह ऐसी थी जो नीची होती हुई भी और नीचे होती जा रही थी। वह शायद किसी डूबते जहाज़ की कोठरी में थीं। वह उसे देख सकती थीं और विन्स्टन उन्हें। वह पानी में, हरे पानी में बराबर नीचे डूबती जा रही थीं और किसी भी क्षण उसकी दृष्टि से ओझल हो सकती थीं। वह हवा और प्रकाश में बाहर था और वे मौत की ओर नीचे की तरफ़ खिंची जा रही थीं। वह भी जानता था और वे भी जानती थीं। वे इतना जानती थीं कि विन्स्टन को ज़िन्दा रखना है तो उन्हें मरना है। और यह ऐसी बात थी जिसको टाला नहीं जा सकता था।

यह वह सपना था, जिसमें स्वप्न की सारी विशेषताएं थीं और वह उनके बौद्धिक जीवन का अंग बन गया था। जागने पर नए-नए विचार उसके दिमाग़ में आते थे। विन्स्टन जानता था कि तीस वर्ष पूर्व उसकी मां और बहन का देहान्त अत्यन्त दुखान्त परिस्थितियों में हुआ। अब वैसी मौत नहीं हो सकती। उसका ख़याल था कि दुखान्त घटनाएं अतीत की वस्तु हैं। उस युग की जब व्यक्ति का कुछ अपना निजी जीवन था, प्रेम था, मित्रता थी और परिवार का एक सदस्य दूसरे सदस्य की मदद के लिए कारण जाने बिना सहायता करने के लिए तैयार रहता था। आज वह बात सम्भव नहीं है। आज डर था, घृणा थी, पीड़ा थी, परन्तु मानवीय भावनाओं की गरिमा नहीं थी, किसी को किसी के लिए गहरा क्लेश नहीं होता था।

सहसा उसे लगा कि वह ग्रीष्म की सन्ध्या को हरी घास के मैदान पर खड़ा है। उस पर डूबते सूरज की किरणें पड़ रही हैं। उसने इस दृश्य की कल्पना इतनी बार की थी कि अब उसे यह सन्देह होने लगा था कि वास्तव में: उसने उक्त दृश्य देखा भी था या नहीं! वह जाग्रत अवस्था

में उसे सोने का देश कहता था। सड़क पर दोनों ओर दूर तक फलों के वृक्ष थे। इधर-उधर छोटे-मोटे टीले थे। हल्की हवा में पेड़ों की टहनियां ऐसी हिलती नज़र आती थीं जैसे किसी रमणी के बाल हवा के झोंकों से उड़ रहे थे। कुछ दूरी पर हालांकि दिखलाई नहीं पड़ रहा था, कल-कल करती हुई कोई नदी बहती जा रही थी। इसके आसपास झीलों में बतखें तैरती दिखती थीं।

गहरे काले बालोंवाली युवती उसकी ओर आती-सी लगती थी। क्षण-भर ही में उसे लगता कि उस युवती ने अपने कपड़े फाड़ डाले हैं और उन्हें उपेक्षित भाव से एक ओर फेंक दिया है। युवती की त्वचा कोमल, चिकनी और चमकीली है। उसके कपड़े उतार फेंकने के ढंग से लगता था कि उसने बड़ी शिष्टता और लापरवाही से वर्तमान संस्कृति और सभ्यता की सारी परम्पराओं को नष्ट कर डाला है। उसे लगता था कि सारी वर्तमान विचार-व्यवस्था, बड़े भाई और पार्टी को इसी प्रकार की साधारण क्रिया से बिलकुल नष्ट-अस्तित्वहीन किया जा सकता था। विन्स्टन जागा तो उसके मुंह पर शेक्सपियर का नाम था।

टेलीस्क्रीन से सीटी बज रही थी। यह सीटी इसी प्रकार तीस सेकेंड तक बजती रही। सवा सात बजे थे। दफ़्तर जानेवाले लोगों के लिए उठने का समय था। विन्स्टन बिस्तर से उठा। वह नंगा था। पार्टी के साधारण सदस्यों को वर्ष में तीन हज़ार वस्त्र-कूपन मिलते थे। पाजामे लेने में छः सौ कूपन ख़र्च हो जाते थे। उसने निकर और बनियान उठा ली। ये कपड़े कुर्सी पर पड़े थे। तीन मिनट बाद व्यायाम का कार्यक्रम शुरू होनेवाला था। दूसरे ही क्षण उसे खांसी का दौरा उठ आया। उसे सुबह उठते ही खांसी का यह दौरा प्रायः प्रतिदिन उठ आता था। खांसी से उसका दम इतना घुट गया कि उसे लेट जाना पड़ा। कई बार गहरी सांस लेने पर उसका दम वापस लौट सका। खांसी से उसकी नसें फूल गई थीं। टखने की नसवाला फोड़ा खुजला रहा था।

"तीस से चालीस की आयुवाले लोग," एक जनानी आवाज़ टेलीस्क्रीन से चीखती-सी आई, "तीस से चालीस की आयुवाले लोग अपनी-अपनी जगह पर खड़े हो जाएं।"

विन्स्टन उछलकर टेलीस्क्रीन के सामने आ खड़ा हुआ। टेलीस्क्रीन में एक तरुण युवती पहलवानी पोशाक और खिलाड़ियों के जूते पहने खड़ी थी।

"हाथ झुकाइए और फैलाइए।" वह बोली, 'सब लोग मेरा अनुकरण करें। एक, दो, तीन, चार! एक, दो, तीन, चार! कामरेड आइए, आइए मेरा साथ दीजिए। ज़रा तेज़ी से। एक, दो, तीन, चार! एक, दो, तीन, चार।

अभी खांसी के दौरे का दर्द विन्स्टन भुला नहीं पाया था। वह सपने भी पूरी तरह नहीं भूला था, किन्तु व्यायाम की तालमय गति के कारण उसका ध्यान उस तरफ़ से हटा। वह मशीन की तरह अपने हाथ आगे-पीछे फेंक रहा था। और अपने मुंह पर ऐसा भाव बनाए था जैसे उसे व्यायाम में आनन्द आ रहा हो, क्योंकि ऐसा भाव रखने में ही खैर थी। परन्तु वह अपने बचपन की याद भी करता जा रहा था। यह बड़ा कठिन था। उसे सन् 1950 के पहले की कोई बात साफ़-साफ़ याद नहीं थी। बड़ी-बड़ी घटनाएं उसे याद थीं लेकिन उनका एक-दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं था। बीते जीवन के वातावरण का ध्यान अवश्य आ जाता था। बीच-बीच में ऐसा अन्धकाल आ जाता था जिसके बारे में उसे कुछ भी याद नहीं पड़ता था। उस समय हर चीज़ भिन्न थी। देशों के नाम और उनके नक्शे भिन्न थे। उदाहरण के लिए पुराने ज़माने में जिस देश का नाम इंग्लैंड या ब्रिटेन था उसे अब एयरस्ट्रिप नम्बर 1 कहा जाता था। परन्तु प्राचीन काल में भी शायद लन्दन को लन्दन ही कहा जाता था।

विन्स्टन को यह याद था कि पुराने काल में उसका देश अक्सर युद्ध करता था, लेकिन शान्ति-काल भी होता था और काफ़ी लम्बा होता था। उसके बचपन में, जब एक हवाई हमला हुआ, तो उसके कारण सभी लोग आश्चर्य में पड़ गए थे। सम्भवतः यह उस समय की बात है जब कॉलचेस्टर पर अणुबम गिरा था। उसे हवाई हमले की बात तो याद नहीं थी लेकिन उसे यह आभास था कि उसके पिता उसका हाथ पकड़कर उसे नीचे, और नीचे, और नीचे ले गए थे। ज़मीन के नीचे वे घुमावदार

सीढ़ियों से उतरे थे। उतरते-उतरते वह इतना थक गया था कि रोने लगा था और उसकी वजह से सबको रुककर थोड़ा सुस्ताना पड़ा था। उसकी मां उनके पीछे, बहुत पीछे चली आ रही थी, कुछ सोती-सी, ऐसी जैसे सपने में चल रही हो। अन्त में वे भूगर्भ रेलवे के प्लेटफार्म आ गए थे, जहां बड़ा शोर मच रहा था।

लगभग उसी समय से युद्ध बराबर चलता रहा था। युद्ध का एक ही रूप रहा हो, सो बात नहीं थी। उसके बचपन में, कई महीनों तक सड़कों पर लड़ाई चलती रही थी। कुछ लड़ाइयों के दृश्य तो उसे अब तक याद थे। परन्तु सम्पूर्ण काल का इतिहास लिखना असम्भव था। कारण, किसी भी तरह का कोई लिखित शब्द इस विषय पर उपलब्ध ही नहीं था — जो कुछ सामग्री उपलब्ध थी वह सब वर्तमान राजनीतिक स्थिति के सम्बन्ध में ही थी। इस समय अर्थात 1984 में ओशनिया की लड़ाई यूरेशिया से हो रही थी। ईस्ट एशिया से मैत्री थी। किसी भी सार्वजनिक सभा या निजी बातचीत में कभी कोई इससे भिन्न बात कहता ही नहीं था। लेकिन विन्स्टन जानता था कि अभी पिछले चार वर्षों से ओशनिया यूरेशिया से युद्ध कर रहा था। परन्तु इसके पूर्व ईस्ट एशिया से लड़ाई थी और यूरेशिया से मित्रता थी।

पार्टी का कहना था कि यूरेशिया से ओशनिया की कभी दोस्ती नहीं रही। परन्तु वह, विन्स्टन स्मिथ, जानता था कि अभी चार वर्ष पूर्व यूरेशिया मित्र था। परन्तु उसके ज्ञान को पुष्ट करने का कोई प्रमाण था कहां? केवल उसे उसकी याद थी और उससे यह आशा की जाती थी। कि वह ऐसी याददाश्त का गला घोंट देगा। अगर यदि अन्य सब इस झूठ को सच मान लेते हैं और सारे लिखित काग़ज़ों में भी यही कहा जाता है तो वही इतिहास और सत्य बन जाता है। जो कुछ आज सच है वही आदि से अन्त तक सच है। यह बिलकुल सच है। केवल आपको अपनी याददाश्त पर नियन्त्रण करना था और उस पर विजय पानी थी। 'द्वैध विचारों' को वे नई भाषा में 'यथार्थ नियन्त्रण कहते थे।

"आराम से खड़े हो जाइए।" व्यायाम-शिक्षिका ने ज़रा मुस्कुराते हुए कहा।

विन्स्टन ने अपने हाथ नीचे कर लिए और धीरे-धीरे गहरी सांस ली। उसका दिमाग़ द्वैध विचारों के जगत में चक्कर काट रहा था। जानना और न जानना, वास्तविकता को जानते हुए गढ़ी और झूठी बातों को कहना, एकसाथ दो मत रखना, उसके बारे में यह भी जानना कि वे परस्पर विराधी हैं, नैतिकता की बातें करना परन्तु व्यवहार में उनके विरुद्ध कार्य करना, यह विश्वास करना कि प्रजातन्त्र असम्भव है और फिर भी कहना कि पार्टी लोकतन्त्र की रक्षक है, जो बात जिस समय आवश्यक न हो उसे भूल जाना, अब आवश्यक हो तो उसे फिर याद कर लेना और फिर जिसे अब तक याद रखा था उसे भूल जाना। जानते हुए उपचेतन को ग़लत बात मानने के लिए बाध्य करना, 'द्वैध विचार' शब्द का अर्थ समझने के लिए भी दोहरा विचार करना आवश्यक था।

शिक्षिका ने फिर सावधान होने के लिए कहा, "और हम अब देखेंगे कि हममें से कौन अपने पैर के अंगूठे छू सकता है।" शिक्षिका ने उत्साह-पूर्वक कहा, "अपने कूल्हों के ऊपर से मुड़िए कॉमरेड! एक, दो! एक, दो!"

विन्स्टन इस व्यायाम को मन-ही-मन कोस रहा था। पैरों से कमर तक उसके तेज दर्द हो रहा था। ऐसा हमेशा होता था। उसे इस व्यायाम के बाद बहुधा तेज़ खांसी का दौरा आ जाता था। मन-ही-मन विचार करने में जो आनन्द आ रहा था, वह ग़ायब हो चुका था। फिर भी वह सोच रहा था कि अतीत को बदला ही नहीं गया, उसे बिलकुल नष्ट कर दिया गया है। आप किसी सत्य को भी बिना किसी बाहरी प्रमाण के किस प्रकार सिद्ध कर सकते हैं? वह याद करने की कोशिश कर रहा था कि किस वर्ष उसने बड़े भाई का नाम सबसे पहले सुना था। उसका ख़याल था कि सबसे पहले सन् 1960 और 1970 के बीच बड़े भाई का नाम उसने सुना था। परन्तु निश्चय से कुछ कहना असम्भव था। पार्टी के इतिहास में उनको क्रान्ति का नेता और द्रष्टा कहा गया था और कहा गया था कि शुरू से ही बड़े भाई पार्टी के इतने बड़े नेता थे जितने आज हैं। परन्तु कभी-कभी कोई झूठ फिर भी आप पकड़ सकते थे। उदाहरण

के लिए पार्टी की किताबों में लिखा था, हवाई जहाज़ का आविष्कार पार्टी ने किया। परन्तु यह झूठ था। उसे याद था कि हवाई जहाज़ उसके बचपन में भी थे। परन्तु आप कुछ भी प्रमाणित नहीं कर सकते।

"स्मिथ!" टेलीस्क्रीन से एक कर्कशा की जैसी आवाज़ चीखी। "6079 स्मिथ डब्ल्यू! हां आप! जरा नीचे झुकिए। आप इससे कहीं अच्छी तरह व्यायाम कर सकते हैं। आप कोशिश नहीं कर रहे हैं। और नीचे। अब ठीक है कॉमरेड। अब आराम से खड़े हो जाइए। सब लोग आराम से खड़े हो जाएं। अब मुझे देखिए।"

विन्स्टन के सारे शरीर से गरम-गरम पसीना निकल रहा था। चेहरे पर अब भी कोई भाव नहीं था। हताश कभी मत दिखलाई पड़िए। कभी भुनभुनाइए मत। आंखों से प्रकट हुआ एक भाव मौत को निमन्त्रण दे सकता था। वह देख रहा था। शिक्षिका ने अपने हाथ सिर के ऊपर उठा लिए थे। इसके बाद वह झुकी और उसने पैरों का अंगूठा छू लिया। इस व्यायाम को उसने बड़ी दक्षता और सफ़ाई से किया।

"इस तरह कॉमरेड! मैं चाहती हैं आप इस तरह यह व्यायाम करें। फिर मुझे देखिए। मैं उनतालीस वर्ष की हूं और मेरे चार बच्चे हैं। अब देखिए।" वह फिर झुकी। 'देखिए, कैसे मेरे घुटने झुक रहे हैं। आप सब चाहें तो इसी तरह कर सकते हैं।' उसने सीधे खड़े होते हुए कहा "पैंतालीस वर्ष से कम आयुवाला हर आदमी अपने पैर के अंगूठे छू सकता है। हम सबको मोर्चों पर जाकर लड़ने का मौक़ा तो नहीं मिल सकता, परन्तु हम सब शारीरिक रूप से स्वस्थ तो रह सकते हैं। देश के उन सैनिकों को याद करिए जो मलाबार मोर्चे पर लड़ रहे हैं! तैरते हुए क़िलों के नाविकों को याद करिए। उन्हें किन मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। अब फिर कोशिश करिए। अब पहले से बहुत अच्छे, कॉमरेड! बहुत अच्छे!" शिक्षिका ने विन्स्टन को बिना घुटने झुकाए पैर के अंगूठे छू लेने पर उत्साहित करते हुए कहा। वह ऐसा कई वर्षों में पहली बार कर पाया था।

विन्स्टन ने धीरे-से, इतने धीरे-से कि पास लगी टेलीस्क्रीन तक भी उसकी आवाज़ न पहुंच सके, ठंडी आह भरते हुए दिन का काम शुरू किया। उसने सामने रखा लेखनयन्त्र (स्पीकराइट) अपने पास खींच लिया। चश्मा लगा लिया और लेखनयन्त्र को रूमाल से झाड़कर साफ़ किया। उसकी मेज़ के दाहिनी ओर ट्यूब से निकले हुए गोले पड़े थे। उन्हें खोलकर उसने उनमें रखे काग़ज़ निकाले।

दफ़्तर के जिस कमरे में वह बैठता था उस कमरे में तीन छेद थे। लेखनयन्त्र की दाहिनी ओर लिखित सन्देशों का छिद्र था। बाईं ओर अख़बारों के लिए कुछ बड़े मुंहवाला छेद था। बगल की दीवार में विन्स्टन से एक हाथ से भी कम दूरी पर एक और छेद था, जिसमें तार लगे थे। आखिरी छेद रद्दी काग़ज़ों को नष्ट करने के लिए था। ऐसे हज़ारों छेद पूरी इमारत में हज़ारों कमरों में थे। कमरों से बाहर बरामदों में भी थे। हर रद्दी काग़ज़ इसमें डाल दिया जाता था। डालते ही काग़ज़ उड़ता हुआ उन जलती भट्ठियों में पहुंच जाता था जो इमारत में नीचे कहीं थीं।

विन्स्टन ने गोले में से निकले काग़ज़ों को देखा। हरेक में दो पंक्तियां थीं। इसमें नई भाषा के अनेक शब्द थे। मन्त्रालय के नोटों में इसी तरह की भाषा चलती थी। सन्देश इस प्रकार थे :

टाइम्स 17.3.84 ब. भा. भाषण अशुद्ध रिपोर्ट अफ्रीका ठीक करो।

टाइम्स 19.12.83 भविष्योक्ति वाई पी चौथा क्वार्टर 83 अशुद्ध मुद्रण नए अंक से ठीक करो।

टाइम्स 14.2.84 सम्मन्त्र अशुद्ध उद्धरण चॉकलेट ठीक करो।

टाइम्स 3.12.83 ब. भा. दिवसादेश ठीक नहीं अस्तित्वहीन व्यक्ति पूरा लिखो, ऊपर दिखलाओ।

कुछ सन्तुष्ट हो विन्स्टन ने चौथा आदेश अलग रख दिया। यह काम कुछ कठिन और उत्तरदायित्वपूर्ण था। इसलिए इसमें सबसे अन्त में ही हाथ डालना ठीक था। बाक़ी तीन साधारण काम थे। हालांकि दूसरे काम में थोड़ा अधिक श्रम करना पड़ेगा — ऐसा लग रहा था। क्योंकि पुराने आंकड़े देखने थे।

विन्स्टन ने टेलीस्क्रीन में लगे डायल में वे नम्बर घुमाए। टाइम्स के जिन अंकों की उसे आवश्यकता थी, कुछ ही मिनट बाद वे अंक नलं द्वारा उसकी मेज़ पर आ गए। जो सन्देश विन्स्टन को मिले थे वे उन लेखों या समाचारों के सम्बन्ध में थे जिनमें किन्हीं कारणों से परिवर्तन की आवश्यकता थी या सरकारी सन्देश के शब्दों में सुधार करना ज़रूरी था। उदाहरण के लिए 17 मार्च के टाइम्स में मुद्रित एक दिन पूर्व के बड़े भाई के भाषण से ऐसा लगता था, दक्षिण भारत का मोर्चा शान्त रहेगा और उत्तरी अफ्रीका में यूरेशियन आक्रमण करेंगे। परन्तु हुआ यह कि यूरेशियनो ने दक्षिण भारत में हमला शुरू कर दिया और उत्तरी अफ्रीका में कुछ भी नहीं हुआ। इसलिए बड़े भाई के भाषण के उस अनुच्छेद को इस प्रकार लिखना था कि पढ़नेवाले को जो बात वस्तुतः हुई उसी की भविष्योक्ति प्रतीत हो। या उन्नीस दिसम्बर के टाइम्स में 1988 की चौथी तिमाही में होनेवाले उत्पादन का अनुमान छपा था। यह नवीं तीन वर्षीय योजना का छठा चरण भी था। आज के अंक में वास्तविक उत्पादन के आंकड़ें थे। उनको देखने से लगता था कि जो अनुमान किए गए थे, वे गलत थे। विन्स्टन का काम था कि वह अनुमानित आंकड़ों में इस प्रकार का परिवर्तन करे जिससे वास्तविक आंकड़ों और अनुमानिक आंकड़ों में विरोध या विशेष अन्तर न दिखलाई पड़े। तीसरे सन्देश में बहुत मामूली-सी ग़लती की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया था। इसे कुछ ही मिनटों में ठीक किया जा सकता था। कुछ समय पूर्व यानी फरवरी में समृद्धि मन्त्रालय ने स्पष्ट रूप से वचन दिया था कि सन् 1984 में चॉकलेट का राशन नहीं घटाया जाएगा। परन्तु वस्तुतः वर्तमान सप्ताह के बाद से चॉकलेट का राशन तीस से घटकर बीस ग्राम होनेवाला था। विन्स्टन को करना यह था कि जो वचन दिया गया था उसके स्थान पर यह चेतावनी दे देनी थी कि चॉकलेट का साप्ताहिक राशन निकट भविष्य में ही घटनेवाला है। बल्कि यह भी लिख देना था कि ऐसा अप्रैल में होगा।

प्रत्येक सन्देश के अनुसार जैसे ही विन्स्टन ने कार्य समाप्त कर लिया वैसे ही उसने लिखित शुद्धपत्रों को सम्बन्धित टाइम्स के अंकों में नत्थी

कर दिया और उनको नल में खिसका दिया। इसके बाद सन्देश के काग़ज़ों तथा अन्य रद्दी काग़ज़ों को मोड़-तोड़कर उस छेद में डाल दिया जो गरम हवा के ज़ोर से उड़ाकर उन रद्दी काग़ज़ों को जलती भट्ठियों की ओर भेज देता था। जो नल थे उनमें टाइम्स की जो प्रतियां भेजी जाती थीं, उनका क्या होता था यह वह ठीक-ठीक नहीं जानता था। परन्तु उसका अनुमान था कि जैसे ही टाइम्स के किसी अंक-विशेष में अपेक्षित शुद्धियां हो जाती थी, उसे दुबारा मुद्रित कर दिया जाता था और पुराने अंकों की सारी प्रतियां जला दी जाती थीं। नई प्रतियों को फाइल में सर्वत्र रख दिया जाता था। परिवर्तन की वह प्रक्रिया समाचारपत्रों पर ही नहीं, पुस्तकों, मासिक पत्रों, सरकारी पुस्तिकाओं, पोस्टरों, फ़िल्मों, कार्टूनों, फ़ोटोग्राफ़ों आदि सभी पर, जिनका राजनीति से ज़रा भी सम्बन्ध था, लागू होती थी। प्रतिदिन, नहीं प्रतिक्षण, अतीत को वर्तमान के उपयुक्त बनाने की सतत चेष्टा जारी रहती थी। इस प्रकार पार्टी की प्रत्येक भविष्यवाणी को लिखित प्रमाण द्वारा सत्य सिद्ध किया जा सकता था। कोई समाचार, कोई पत्र या कोई ऐसी भी चीज़ लिखित नहीं रह सकती थी जो समय की आवश्यकताओं के अनुकूल न हो। इतिहास को भी इसी प्रकार जितनी बार आवश्यक हो लिखा जाता था। एक बार ठीक हो जाने के बाद यह सिद्ध करना नितान्त असम्भव था कि कोई जालसाज़ी की गई है। रिकॉर्ड विभाग का एक बहुत बड़ा हिस्सा, उस हिस्से से भी बड़ा जिसमें विन्स्टन काम करता था, अपने सारे कर्मचारियों सहित ऐसी लिखित सामग्री को इकट्ठा करने में जुटा रहता था जिसमें अशुद्धियां होती थीं। वह उनको जलाने के लिए जमा करता था। पिछले हर अंक की प्रति फाइलों में हर जगह मिल जाती थी परन्तु उसमें कभी कोई अशुद्धि नहीं होती थी। पच्चीसों बार ऐसा हुआ कि बड़े भाई की भविष्यवाणी ग़लत सिद्ध होती, किन्तु उसे पुनः लिखकर समयानुकूल कर दिया जाता और अन्य कोई भी ऐसा अंक न मिलता जिससे किसी चीज़ का खंडन होता था। लिखित आदेशों को विन्स्टन तुरन्त जला देता था किन्तु उनसे भी यह प्रकट नहीं होता था कि कोई जालसाज़ी की जा रही है। उन आदेशों में हमेशा अशुद्धि, भूल, मुद्रण की ग़लती बताई जाती थी, जिन्हें शुद्धता की दृष्टि से दूर किया जाना आवश्यक था।

वह समृद्धि मन्त्रालय के आंकड़ों को ठीक करता हुआ सोच रहा था, यह जालसाज़ी नहीं है। वस्तुतः यह तो एक झूठ की जगह, दूसरा झूठ लिखना ही है। सीधे झूठ का भी वास्तविकता से कुछ सम्बन्ध होता है, किन्तु इस झूठ का यथार्थ स्थिति से कोई सम्बन्ध नहीं था। आंकड़े पहले भी उतने ही सफ़ेद झूठ थे, जितने अब। बहुधा आंकड़े अपने मन में सोच-समझकर लिखने पड़ते थे। उदाहरण के लिए समृद्धि मन्त्रालय का अनुमान था कि सम्बन्धित तिमाही में 14 करोड़ जूते तैयार होंगे, जिससे यह कहा जा सके कि लक्ष्य से अधिक निर्माण कार्य हुआ। लेकिन जो आंकड़े अब दिए गए थे उनमें लिखा गया था। कि 6 करोड़ 62 लाख जूते ही बने थे। अनुमानित आंकड़े लिखते समय मूल अंकों को विन्स्टन ने घटाकर 5 करोड़ 70 लाख कर दिया जिससे पढ़नेवाला यह मान ले कि मूल लक्ष्य से अधिक कार्य हुआ है। न तो 6 करोड़ 20 लाख ही सत्य था और न 5 करोड़ 70 लाख। सम्भवतः एक जोड़ा भी तैयार न हुआ हो। हर आदमी जानता था कि ओशनिया की आधे से ज़्यादा जनसंख्या नंगे पैर रहती थी। हर प्रकार के उत्पादन की यही हालत थी। हर वस्तु काली छाया में खो गई थी जिसमें वर्ष तक ठीक-ठीक नहीं बताया जा सकता था।

इस लम्बे हॉल में एक भी खिड़की नहीं थी। हॉल में बैठने के लिए कमरों की दो पंक्तियां थीं। लेखनयन्त्र में बोलने की तथा काग़ज़ों की आवाज़ बराबर आ रही थी। हॉल में बैठनेवाले लोगों में से दर्जन से भी अधिक ऐसे व्यक्ति थे जिनके नाम तक विन्स्टन को मालूम नहीं थे। हालांकि वह उनको प्रतिदिन बरामदे में आता-जाता देखता और दो मिनट वाली प्रचार-फ़िल्म में उनको हाथ-पैर फेंकते तथा तरह-तरह की मुद्राएं बनाते भी देखता था। हल्के बालोंवाली अधेड़ उम्र की स्त्री समाचारपत्रों से केवल उन लोगों के नाम प्रतिदिन छांटती रहती थी जिनको भाप बनाकर उड़ा दिया गया था। प्रतिदिन उसका यही काम था। जो आदमी इस प्रकार गायब हो जाते थे उनका कोई भौतिक अस्तित्व भी शेष नहीं रखा जाता था। उस औरत का पति भी कुछ वर्ष पूर्व इसी प्रकार समाप्त कर दिया गया था। कुछ दूर एम्पिलफोर्थ नाम का आदमी कविताओं में संशोधन

किया करता था। रिकॉर्ड विभाग का यह हॉल छोटा-सा भाग था। ऊपर, नीचे, आगे, पीछे असंख्य कर्मचारी तरह-तरह के कामों में लगे थे। बड़े-बड़े प्रेस थे, उपसम्पादक थे, टाइप विशेषज्ञ थे। इनके पास बड़े-बड़े स्टूडियो थे जिनमें नक़ली चित्र भी तैयार किए जाते थे। आवाज़ की नकल करनेवाले लोग थे, इंजीनियर थे, प्रोड्यूसर थे और विशेष ढंग का अभिनय करनेवाले अभिनेता भी थे। सन्दर्भ क्लार्कों की पूरी फ़ौज थी जो केवल इसकी सूची बनाते थे कि कौन-सी पत्र-पत्रिकाएं जलाई जाएंगी। गोदाम थे जहां शुद्ध पत्र-पत्रिकाएं जमा की जाती थीं और गुप्त भट्ठियां थीं जहां पुरानी पत्र-पत्रिकाएं जलाई जाती थीं। इसके अलावा ऐसे निर्देशक अफ़सर भी थे जो यह नीति निश्चित करते थे कि अमुक झूठ को सच और अमुक सच को झूठ बतलाया जाए। अमुक चीज़े नष्ट कर दी जाएं। उनके सारे प्रयत्नों को इसी प्रकार संयुक्त करने की भी व्यवस्था थी।

और रिकॉर्ड विभाग अन्ततः सत्य मन्त्रालय का एक विभाग मात्र ही तो था। इस विभाग का मुख्य कार्य अतीत का इतिहास तैयार करना नहीं अपितु ओशनिया के नागरिकों को समाचारपत्र, फ़िल्में, पाठ्य-पुस्तकें, टेलीस्क्रीन के प्रोग्राम, नाटक, उपन्यास तथा हर प्रकार की सूचनाएं और निर्देश देना और मनोरंजन आदि की व्यवस्था करना था। मूर्ति से लेकर नाटकों तक, गीत से लेकर जीवशास्त्र के निबन्ध तक, और आरम्भ की पाठ्य-पुस्तक से नई भाषा की डिक्शनरी तक की व्यवस्था करना इसी मन्त्रालय का काम था। पार्टी की आवश्यकताओं की पूर्ति करना ही मन्त्रालय का काम नहीं था बल्कि सर्वहारा वर्ग या मज़दूर वर्ग के लिए भी प्रकार-प्रकार की सामग्री जुटाना उसी का काम था। सर्वहारा वर्ग के लिए साहित्य, संगीत. नाटक तथा मनोरंजन आदि की सामग्री के लिए अलग-अलग विभाग थे। यहां अश्लील अख़बार छपते थे। इन विभागों में खेलकूद, अपराध, ज्योतिष, सनसनीखेज़ उपन्यास, सेक्स विकृतियों से भरी फ़िल्मों और गन्दे गीतों को छापा या तैयार किया जाता था। यह सब यन्त्रों से होता था। सब कामों के लिए अलग-अलग मशीनें थीं। इनको सम्बन्धित पार्टी-सदस्यों के अलावा या जो लोग काम करते थे, अन्य कोई

भी नहीं देख सकता था। तैयार होते ही इनको पैकेटों में बांधकर निर्दिष्ट स्थानों पर भेज दिया जाता था।

विन्स्टन अभी काम में ही लगा था कि तीन और सन्देश नल से उसके पास आ गए। परन्तु उनमें बतलाए गए कार्य सरल थे और दो मिनट की प्रचार-फ़िल्म के कार्यक्रम के पूर्व ही विन्स्टन ने उनको भी निपटा दिया। फ़िल्म देख आने के बाद जब विन्स्टन काम पर वापस लौटा तो उसने नई भाषा की डिक्शनरी उठा ली और अपना चश्मा पोंछने के बाद दिन का मुख्य कार्य करने जुट गया।

दफ़्तर का अधिकांश काम अंशतः जटिल दिनचर्या का अंग था, किन्तु कुछ काम ऐसे भी थे जो इतने नाज़ुक होते थे कि उनके करने में वह ऐसा डूब जाता था जैसे कोई किसी गणित के सवाल को हल करने में अपना आपा खो देता है। इन कामों में 'इंगसोश' के सिद्धान्तों का गहरा ज्ञान तो आवश्यक होता ही था, साथ ही इसकी जानकारी भी ज़रूरी होती थी कि पार्टी आपसे क्या कहलवाना चाहती है, यह आप समझें। विन्स्टन इस प्रकार का काम करने में बड़ा चतुर था। बहुधा उससे टाइम्स के सम्पादकीय तक को शुद्ध कराया जाता था। पहले जो सन्देश उसने अलग उठाकर रख दिया था, अब विन्स्टन ने उसे खोला। वह इस प्रकार था :

टाइम्स 3.12.83 ब. भा. दिवसादेश ठीक नहीं अस्तित्वहीन व्यक्ति पूरा लिखो, ऊपर दिखलाओ।

पुरानी या स्पष्ट भाषा में इसी सन्देश को इस तरह लिखा जाता :

"बड़े भाई के दिवसादेश की रिपोर्ट 3 दिसम्बर, 1983 के टाइम्स के अंक में ठीक नहीं छपी है। इसमें अस्तित्वहीन व्यक्ति की चर्चा है। इसे दुबारा लिखो और अपने अधिकारियों के पास देखने के लिए भेजो।"

विन्स्टन ने सम्बन्धित लेख पढ़ा। इसमें एफ़.एफ़.सी.सी. नाम की संस्था के कार्यों की तारीफ़ की गई थी। यह संस्था तैरते किलों के नाविकों को सिगरेट तथा अन्य प्रकार की सामग्री सप्लाई करती थी। अन्तरंग पार्टी

के कॉमरेड विदर्स की इस लेख में विशेष प्रशंसा की गई थी। इनको द्वितीय वर्ष का विशेष सेवा-सम्मान-चक्र प्रदान किया गया था।

तीन मास बाद एफ़.एफ़.सी.सी. का विघटन कर दिया गया। कारण बतलाया नहीं गया। यह अनुमान था कि विदर्स और उसके साथियों की सरकार की निगाह में कोई इज्ज़त नहीं रह गई थी। परन्तु पत्रों पर टेलीस्क्रीन में इसकी कोई चर्चा नहीं थी। यह स्वाभाविक था। राजनीतिक अपराधियों पर मुक़द्दमा नहीं चलाया जाता था और सार्वजनिक रूप से उनकी कोई चर्चा नहीं की जाती थी। शुद्धीकरण का महायज्ञ, जिसमें हज़ारों व्यक्ति फंसे होते थे, कई सालों में एकाध बार होता था। इन पर राजद्रोह का विचार-अपराध का मामला सार्वजनिक रूप से चलाया जाता था और उनसे स्वीकारोक्ति कराके उन्हें मार डाला जाता था। परन्तु ऐसा कभी-कभी होता था — वर्षों में एक बार। आमतौर पर पार्टी जिनसे रुष्ट होती थी, वे लोग बस गायब हो जाते थे और फिर उनके बारे में कुछ भी सुनाई नहीं पड़ता था। लोगों को आभास तक नहीं हो पाता था कि उनका हुआ क्या। माता-पिता के अलावा विन्स्टन की अपनी जान-पहचान के तीस आदमी समय-समय पर गायब हो चुके थे।

विन्स्टन ने क्लिप से अपनी नाक धीरे-से थपथपाई। समाने के कमरे में कॉमरेड टिलोटसन अपने माईक में बोलता चला जा रहा था। विन्स्टन सोच रहा था कि शायद टिलोटसन भी इसी काम में जुटा था। उसका अनुमान शायद ठीक ही था क्योंकि ऐसा कठिन और महत्त्वपूर्ण कार्य यदि किसी कमेटी को सौंपा जाता तो स्पष्ट हो जाता था कि जालसाजी की जा रही है। बहुत सम्भव था, इस मसौदे को तैयार करने में एक दर्जन से भी अधिक आदमी जुटे हों। इसके बाद फिर पार्टी का एक उच्च अधिकारी सब मसौदों को पढ़कर उनमें से एक छांट लेगा या चुने मसौदों से अपना विवरण तैयार कर लेगा और फिर इस प्रकार तैयार किया गया झूठा विवरण छापकर सत्य बना दिया जाएगा।

विन्स्टन को पता नहीं था कि विदर्स को क्यों हटाया गया था। शायद भ्रष्टाचार या दक्षता के अभाव की शिकायत रही हो। या बड़े भाई ने

किसी लोकप्रिय नेता से पिंड छुड़ाया हो। विदर्स या उसके किसी निकटतम साथी में द्रोहात्मक प्रवृत्तियां देखी गई हों। या उसे केवल इसलिए मार दिया गया हो कि इस प्रकार निरन्तर शुद्धीकरण करते रहना पार्टी की व्यवस्था का अंग है। सन्देश में विदर्स के बारे में एक ही संकेत था। वह था, लेख में अस्तित्वहीन व्यक्तियों की चर्चा है, अर्थात विदर्स मारा जा चुका है, जीवित नहीं है। विदर्स मर चुका था। वह अस्तित्वहीन था — वह कभी नहीं था। विन्स्टन ने सोचा कि बड़े भाई के भाषण की बातें उलट देने से ही काम नहीं चलेगा। ज़्यादा अच्छा होगा — इसमें बिलकुल भिन्न विषय की चर्चा की जाए।

वह भाषण को इस प्रकार भी लिख सकता था जिसमें राजद्रोहियों और विचार-अपराधियों की निन्दा-ही-निन्दा हो। परन्तु यह बहुत खुली बात हो जाती। इसके विपरीत किसी मोर्चे पर विजय की बात या नवीं तीन वर्षीय योजना में किसी सफलता की चर्चा से पिछले रिकार्डों में बहुत अधिक परिवर्तन करने की आवश्यकता पड़ सकती थी। इस समय विशुद्ध कल्पना की आवश्यकता थी। सहसा उसके दिमाग़ में कॉमरेड ओगिलवी नाम का एक पात्र आया। विन्स्टन ने सोचा, कॉमरेड ओगिलवी के सम्बन्ध में वह लिखेगा कि अभी हाल ही की लड़ाई में वह किस प्रकार वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ। कभी-कभी भाषणों में बड़े भाई पार्टी के किसी तुच्छ सदस्य की चर्चा पर बैठते और पूरे भाषण में उसी की प्रशंसा करते और बतलाते कि अपने जीवन-काल में तथा मौत के बाद वह कॉमरेड किस प्रकार सभी पार्टी सदस्यों का आदर्श बना हुआ है। आज वह कॉमरेड ओगिलवी को याद करेंगे। यह सच था कि इस नाम का कोई आदमी न था। परन्तु कुछ छपी पंक्तियां और कुछ जाली चित्र उसे ऐसा आदमी बना देंगे जो कभी था।

विन्स्टन ने लेखनयन्त्र अपनी ओर खींचा और बड़े भाई की शैली में बोलना शुरू किया। यह शैली सैनिक तथा अध्यापक की — दोनों शैलियों को मिश्रण थी। इसमें पहले सवाल किया जाता था और फिर तुरन्त उसका जवाब दिया जाता था।

कॉमरेड ओगिलवी ने तीन वर्ष की आयु में तीन को छोड़कर सारे खिलौने छोड़ दिए। जो खिलौने उन्होंने चुने थे — वे थे, ढोल, छोटी मशीनगन और हैलीकॉप्टर का नमूना। छह वर्ष की आयु में (उनके लिए एक वर्ष आयु घटा दी गई थी) वह बाल-जासूस के सरदार बन गए। नौ वर्ष की अवस्था में वह छोटे जासूस दल के नेता थे। ग्यारह वर्ष की आयु में उन्होंने अपने चचा को राजद्रोहात्मक बातें बनाते सुनकर उन्हें विचार पुलिस के हवाले कर दिया था। सत्रह वर्ष की आयु में वह सेक्स विरोधी लीग के जिला संयोजक बन गए। उन्नीस साल की आयु में उन्होंने ऐसा हथगोला बनाया जिसे शान्ति मन्त्रालय ने उपयोग के लिए स्वीकार कर लिया। जब इसका पहली बार प्रयोग किया तो एक ही हथगोले से इकतीस यूरेशियन बन्दी सैनिक मारे गए थे। तेईस वर्ष की आयु में वह वीरगति को प्राप्त हुए। वह तब भारतीय महासागर पर हवाई जहाज़ से यात्रा कर रहे थे तो शत्रु के जेट विमानों ने उनका पीछा किया। उनके पास महत्त्वपूर्ण काग़ज़ थे। वह एक मशीनगन सहित काग़ज़ों को जेब में रखे हैलीकॉप्टर से समुद्र में कूद पड़े। उनकी मौत सबके लिए ईर्ष्या की वस्तु है। बड़े भाई ने कॉमरेड ओगिलवी की एकाग्र सेवाओं की प्रशंसा की। वह शराब नहीं पीते थे। सिगरेट नहीं छूते थे। एक घंटा व्यायाम के अतिरिक्त उनका कोई मनोरंजन नहीं था। चिरकुमार रहने का उन्होंने व्रत ले रखा था। उनका विश्वास था कि परिवार के साथ पार्टी की चौबीसों घंटे सेवा नहीं की जा सकती। बातचीत का एक ही विषय उनके पास था और वह थे 'इंगसोश' के सिद्धान्त। जीवन का एक ही लक्ष्य था — यूरेशियन सेना की पराजय, शत्रु के गुप्तचरों, विध्वंसकों, विचार-अपराधियों और राजद्रोहियों की तलाश तथा उनको सजा दिलवाना।

पहले विन्स्टन ने सोचा कि विशेष सेवा का चक्र कॉमरेड ओगिलवी को दिला दिया जाए। परन्तु बाद में यह सोचकर कि इससे आगे कुछ अंकों में बहुत-से आवश्यक परिवर्तन करने पड़ सकते थे, उसने ऐसा नहीं किया।

जिस कॉमरेड ओगिलवी की एक घंटे पूर्व किसी ने कल्पना भी नहीं की थी वह अब वहां साकार धरा था। उसे लगा कि मृत को आप ज़िन्दा

कर सकते हैं लेकिन जीवितों को जीवन नहीं दे सकते। कॉमरेड ओगिलवी का अभी कोई अस्तित्व नहीं था, परन्तु अब वह चालमैन या जूलियस सीज़र की भांति ही ज़िन्दा रहेगा।

यह कैंटीन का हॉल था। इसकी छत बड़ी नीची थी। यह हॉल ज़मीन के नीचे था — तहख़ानेनुमा। लंच के लिए लोग लाइन में खड़े थे। धीरे-धीरे 'क्यू' खिसक रहा था। कमरा भरा था। बड़ा शोर हो रहा था। शोरबे की गन्ध पर विजय-मदिरा की भाप का अनुभव हो रहा था। कमरे में दूसरी ओर 'बार' था। 'बार' क्या था, दीवार में छेद था। दस सेंट का सिक्का डाल देने से एक मग भरकर शराब मिल जाती थी।

विन्स्टन के पीछे से किसीने कहा, "ओ, मैं तुम्हें ही तो देख रहा था।"

विन्स्टन ने घूमकर देखा। उसका दोस्त था — साइम। वह रिसर्च विभाग में था। दोस्त कहना तो ठीक नहीं होगा। आजकल दोस्त नहीं होते थे। कॉमरेड होते थे। कुछ कॉमरेड ऐसे होते थे जिनका साथ अन्य कॉमरेडों की अपेक्षा आप अधिक पसन्द करते थे। साइम भाषा-विज्ञान का ज्ञाता था। वह नई भाषा की डिक्शनरी के ग्यारहवें संस्करण का सम्पादन करनेवाली टीम का सदस्य था। क़द और आकार में वह विन्स्टन से भी छोटा था। उसके बाल काले और लम्बे थे। आंखों से दुख और विक्षोभ भी कभी-कभी चमक उठता था। वैसे उसकी दृष्टि बड़ी तीक्ष्ण लगती थी। यह आंखों से प्रकट था। वह देखता तो लगता था कि चेहरे से मन के भाव पढ़ रहा है।

"मैं पूछ रहा था, तुम्हारे पास फालतू ब्लेड है कोई?" उसने प्रश्न किया।

"एक भी नहीं।" विन्स्टन ने जल्दी में उत्तर दिया। इसमें अपराध की भावना छिपी थी, "मैं चारों तरफ़ तलाश कर आया। एक भी नहीं मिलता।"

हर आदमी को ब्लेडों की तलाश ही रहती थी। उसके पास दो नए ब्लेड थे, लेकिन वह उन्हें छिपाए था। कई महीनों से ब्लेडों का अकाल

पड़ा हुआ था। कोई-न-कोई आवश्यक वस्तु बहुधा पार्टी की दुकान पर नहीं मिलती थी। कभी बटन नहीं मिलता था, तो कभी रफ़ू करने के लिए ऊनी तागा। कभी जूतों के फीते नहीं मिलते थे तो कभी कोई और चीज़। आजकल रेज़र ब्लेडों का अभाव था। खुले बाज़ार में बहुत दौड़-धूप और पूछताछ के बाद एकाध ब्लेड कहीं मिल जाता था।

झूठ बोलते हुए उसने कहा, "मैं एक ही ब्लेड से पिछले छः हफ़्तों से दाढ़ी घिस रहा हूं।"

लाइन हल्के से धक्के के साथ आगे बढ़ी। काउंटर के किनारे पर रखे ढेर से दोनों ने एक-एक 'ट्रे' उठा ली। यह धातु की थी और ऐसी गन्दी थी कि उसकी चिकनाहट तक दूर नहीं हुई थी।

"कल बन्दियों को जो फांसी दी गई थी, क्या वह देखने गए थे तुम?" साइम ने पूछा।

विन्स्टन ने कुछ उदासीन भाव से कहा, "मैं कार्यव्यस्त था। अब फ़िल्म देख लूंगा।"

"फ़िल्म देखने में तो उतना मज़ा नहीं आ सकता।" साइस ने कहा।

साइम की आंखें बराबर विन्स्टन के चेहरे की पड़ताल कर रही थीं। विन्स्टन को ऐसा प्रतीत हुआ कि साइम कह रहा हो — मैं तुम्हें जानता हूं। मैं जानता हूं, तुम फ़ांसी का दृश्य देखने क्यों नहीं गए। बौद्धिक स्तर पर साइम भी बड़ा पार्टी-भक्त था। वह बड़े सन्तोष से शत्रु के गांवों पर हैलीकॉप्टरों द्वारा किए गए हमलों का विवरण बतलाता था। विचार-अपराधियों के मुक़द्दमों तथा उनके इक़बाली बयानों की चर्चा करता था। वह यह भी बतलाता कि प्रेम मन्त्रालय के तहख़ानों में अपराधियों को किस प्रकार मौत के घाट उतारा जाता था। विन्स्टन ने अपना सिर ज़रा मोड़ लिया जिससे साइम उसकी आंखों में आंखें डालकर मन की बात निकालने की कोशिश न करे।

साइम ने दृश्य की याद करते हुए कहा, "फ़ांसी का दृश्य देखने में इस बार बड़ा मज़ा आया। मेरा ख़याल है अपराधियों के पैर नहीं बांधने

चाहिए। इससे मज़ा नहीं आता। मुझे उनका पैर फटकारना बड़ा अच्छा लगता है। अन्त में उनकी जीभ नीली होकर बाहर निकल आती है। यह भी मुझे अच्छा लगता है।"

"अगला आदमी!" सफ़ेद कपड़े का एप्रन पहने हुए तथा हाथ में चमचा लिए हुए काउंटर के दूसरी तरफ़ खड़े मज़दूर ने चिल्लाकर कहा।

विन्स्टन और साइम ने अपनी-अपनी ट्रे आगे कर दी। लंच की नियमित वस्तुएं 'ट्रे' पर गिरने लगीं। रोटी का सख्त टुकड़ा, गुलाबी और भूरा-सा 'स्टू', पनीर का टुकड़ा, बिना दूध की कॉफ़ी और सैकरीन की एक टिकिया।

"वह, वहां टेलीस्क्रीन के नीचे एक मेज़ ख़ाली पड़ी है", साइम ने कहा, "रास्ते में शराब भी ले लेंगे।"

शराब बिना हैंडल के प्यालों में मिली। भीड़ चीरते वे मेज़ तक पहुंचे। इसके बाद 'ट्रे' खाली करके उन्होंने उसकी सारी चीजें मेज़ पर रख लीं। मेज़ पर एक कोने में कोई 'स्टू' का प्याला छोड़ गया था। सारा हॉल इतना गन्दा था कि देखकर मतली आती थी। विन्स्टन ने अपनी शराब का मग उठाया। एक क्षण उसे देख अपने-आप को तैयार किया। इसके बाद पूरी शराब एक सांस में पी गया। तेल जैसी शराब पीने के बाद हमेशा की तरह इस बार भी उसकी आंखों से आंसू बह निकले। कुछ देर बाद उसने अनुभव किया, कि वह भूखा है। अब उसने 'स्टू' चम्मच से पीना शुरू किया। बीच-बीच में गोश्त के टुकड़े भी आते जा रहे थे। कुछ देर दोनों में कोई नहीं बोला।

"डिक्शनरी का काम कैसा चल रहा है?" विन्स्टन ने पूछ।

"चल रहा है, धीरे-धीरे। डिक्शनरी का ग्यारहवां संस्करण निश्चयात्मक है।" साइम ने कहा, "यह अन्तिम संस्करण है। अब नई भाषा का वास्तविक स्वरूप निखर रहा है। हमारा काम समाप्त होने पर तुम जैसे आदमियों को यह नई भाषा पुनः सीखनी होगी। पर तुम सोचते होगे, हमारा काम नए शब्द बनाना है। परन्तु असल में बात ऐसी नहीं है।

हम शब्दों को नष्ट कर रहे हैं। बीसियों, सैकड़ों शब्द रोज़ काटे जा रहे हैं। बीसियों, सैकड़ों शब्द रोज़ काटे जा रहे हैं। हम भाषा के शब्द-भंडार को न्यूनतम कर देंगे। ग्यारहवें संस्करण में एक भी ऐसा शब्द नहीं मिलेगा जो सन् 2050 के पूर्व बेकार हो सकेगा।"

उसने जल्दी-जल्दी रोटी के कई ग्रास खाए और उनको गले से नीचे उतार लेने के बाद अध्यापकों के ढंग से फिर बोलना शुरू किया। उसके काले चेहरे पर चमक आ गई थी। वह ऐसा हो गया था जैसे सपने में बोल रहा हो।

"शब्दों का नष्ट करना अच्छी बात है। क्रिया और विशेषणों में बड़ी शक्ति नष्ट होती है। वे तो काटे ही जा रहे हैं। हम अब संज्ञाओं को भी घटा रहे हैं। पर्यायवाची शब्दों को ही नहीं, जम उन शब्दों को भी काट रहे हैं, जो विपरीत अर्थ देते हैं। ऐसे शब्द का क्या लाभ है जो दूसरे शब्द का उल्टा अर्थ देता हो। प्रत्येक शब्द का उलटा शब्द उसी शब्द में निहित होता है। अच्छा या भला कह देने से काम चल सकता है। यदि आपको बहुत अच्छा या शानदार कहना है तो इसके लिए धन अच्छा कह देने से काम चल सकता है। अन्त में अच्छे या बुरे के सैकड़ों पर्यायों की जगह केवल छह शब्द रह जाएंगे। और वस्तुतः एक शब्द। एक काट-छांट का लाभ तुम समझ रहे हो न? — बेशक यह 'आइडिया' बड़े भाई का ही था।"

बड़े भाई का नाम सुनते ही विन्स्टन को हरारत-सी हो आई। परन्तु इसके साथ ही साइम ने यह भी देख लिया कि उसकी बातों में विन्स्टन उत्साहपूर्वक भाग नहीं ले रहा है।

"विन्स्टन, तुम नई भाषा की पृष्ठभूमि भली-भांति समझ नहीं पाए हो।" उसने उदास होकर कहा, "आजकल नई भाषा में लिखते हुए तुम तथा अन्य सब पुरानी भाषा में ही सोचते हैं। 'टाइम्स' में छपी तुम्हारी चीज़ों को मैंने पढ़ा है। वे अच्छी हैं, लेकिन वे सब पुरानी भाषा में सोची गई बातों के नई भाषा में अनुवाद हैं। अभी तुम मन-ही-मन पुरानी भाषा से ही लिपटे हो। पुरानी भाषा बिलकुल अनिश्चित है और उसमें तरह-तरह के अर्थ देने वाले शब्द हैं जिनका प्रयोग अर्थ की दृष्टि से सन्दिग्ध होता

है। तुम अभी शब्द-संहार का सौन्दर्य नहीं अनुभव कर पाए हो। क्या तुम यह नहीं जानते हो कि नई भाषा ही संसार की एक मात्र ऐसी भाषा है जिसके शब्द प्रतिवर्ष घटते जा रहे हैं?"

निस्सन्देह, विन्स्टन यह नहीं जानता था। वह केवल मुस्कुरा दिया था। वह बोलना नहीं चाहता था। साइम ने अपनी रोटी का एक कौर और दांत से काट लिया और उसे चबाता हुआ बोला, "क्या तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आती कि नई भाषा का उद्देश्य ही विचार-शक्ति को सीमित कर देना है? अन्ततः हम विचार-अपराध या मानसिक अपराध को शब्दशः असम्भव कर देंगे। जब शब्द ही नहीं होंगे तो कोई विचार कैसे करेगा और जब विचार-शक्ति ही नष्ट हो जाएगी, तो मानसिक अपराधों का होना भी असम्भव हो जाएगा। हर शब्द का एक ही अर्थ होगा। यह अर्थ निश्चित कर दिया जाएगा और उसके व्यंजनात्मक अर्थों को बिलकुल नष्ट कर दिया जाएगा और भुला दिया जाएगा। यह प्रक्रिया हमारे और तुम्हारे मर जाने के बाद भी चलती रहेगी। हर वर्ष शब्दों की संख्या घटती जाएगी और इसी तरह विचार-शक्ति भी क्षीण होती जाएगी। क्रान्ति तभी पूर्ण होगी जब नई भाषा पूर्ण हो जाएगी। 'इंगसोश' नई भाषा है और नई भाषा ही 'इंगसोश'। क्या तुम्हारे दिमाग़ में कभी भी यह बात आई है कि सन् 2050 तक एक भी ऐसा आदमी जीवित नहीं होगा जो हमारे संवाद की भाषा को समझ सकेगा?"

"केवल"... विन्स्टन कहते-कहते एकदम रुक गया।

वह कहने जा रहा था, "केवल मज़दूरों को छोड़कर।" परन्तु यह सोच-कर चुप हो गया कि कहीं उसका यह कथन पार्टी-विरोधी न समझ लिया जाए। फिर भी साइम ने जान लिया कि वह क्या कहने जा रहा था।

"मज़दूर पेशा लोग आदमी थोड़े ही हैं," उसने लापरवाही से कहा, "सन् 2050 तक पुरानी भाषा का सारा ज्ञान लुप्त हो चुकेगा। अतीत का सारा साहित्य नष्ट कर दिया जाएगा। चौसर, शेक्सपियर, मिल्टन, बायरन आदि की कविताएं केवल नई भाषा ही में मिल सकेंगी। उनकी कविताओं का तत्त्व भी बदल जाएगा। पार्टी साहित्य भी बदल जाएगा। नारे भी

बदल जाएंगे। वस्तुतः आज जिसे हम विचार कहते हैं, वैसी कोई चीज़ ही नहीं होगी, पार्टी-भक्ति का अर्थ है, सोचना बन्द कर दिया जाए — सोचने की आवश्यकता ही नहीं है।"

तभी विन्स्टन के मन में यह भाव आया कि अब साइम की सांसे भी इनी-गिनी ही रह गई हैं। वह जल्दी ही मारा जाएगा। साइम ज़रूरत से ज़्यादा अकल काम में लाता है। ज़रूरत से ज़्यादा सुलझे ढंग से सोचता है और ज़रूरत से ज़्यादा स्पष्ट बोलता है। पार्टी ऐसे आदमियों को पसन्द नहीं करती। एक दिन वह गायब हो जाएगा। यह उसके मुंह पर ही लिखा है।

विन्स्टन ने अपनी रोटी और पनीर को ख़त्म कर दिया था। इसके बाद वह खिसककर कॉफ़ी पीने लगा।

साइम कुछ क्षणों के लिए चुप हो गया था। चम्मच से 'स्टू' में गोश्त की कोई बोटी तलाश कर रहा था।

निस्सन्देह, साइम मौत के घाट उतार दिया जाएगा। विन्स्टन के दिमाग़ में फिर यह ख़याल आया। उसे यह ख़याल आते ही बड़ा दुख हुआ। वह जानता था कि साइम उसे पसन्द नहीं करता और कारण मिलते ही वह उसे निस्सन्देह किसी भी समय विचार-अपराधी घोषित कर सकता था, फिर भी साइम के लिए उसे दुख हो रहा था। साइम में कुछ-न-कुछ ख़राबी अवश्य थी। आप यह नहीं कर सकते थे कि वह पार्टी-भक्त नहीं था या उसमें कट्टरता नहीं थी। वह 'इंगसोश' के सिद्धान्तों में विश्वास करता था। बड़े भाई का वह भक्त था, वह विजय पर हर्षित होता था, वह पार्टी से दगा करनेवालों से घृणा करता था, हमेशा नई से नई खबर उसे मालूम होती थी, ऐसी सूचनाएं भी जो साधारण पार्टी के सदस्यों को नहीं मिलतीं। परन्तु फिर भी ऐसा लगता था कि वह कुछ बदनाम है। वह ऐसी बातें कह देता था जिनका मुंह से न निकलना ही बेहतर होता। उसने बहुत-सी किताबें पढ़ रखी थीं। वह चेस्टनट कैफ़े जाता था। यह चित्रकार और संगीतज्ञों के बैठने-उठने की जगह थी। चेस्टनट कैफ़े जाना कोई ग़ैर-क़ानूनी नहीं था, परन्तु वहां जाना अपशकुन समझा जाता था। वृद्ध,

निन्दित पार्टी-नेता मारे जाने के पूर्व उसी कैफे में जाया करते थे। कभी-कभी गोल्डस्टीन भी देखा गया था। वह वर्षों — शायद दशकों पूर्व की बात थी। साइम का दुर्भाग्य उसे स्पष्ट दीख रहा था।

साइम ने सिर उठाकर कहा, "वह पारसन्स आ रहा है।"

विजय भवन में पारसन्स विन्स्टन का पड़ोसी था। वह भीड़ काटकर उनकी ही तरफ़ आ रहा था। मध्यम कद का वह मोटा आदमी था। उसके बाल सफ़ेद थे और चेहरा मेढ़कों जैसा था। पैंतीस वर्ष की उम्र में भी उसकी गर्दन और कमर पर मांस बढ़ता जा रहा था। परन्तु वह चलता तेज़ी से था और उसके चलने से कुछ लड़कपन भी प्रकट होता था। उसको देखकर ऐसा लगता था कि छोटा लड़का बड़ा हो गया है। वह अक्सर निकर तथा कमीज़ पहनता था, विशेष रूप से सामुदायिक भ्रमण या ऐसे ही किसी अन्य शारीरिक व्यायाम के अवसर पर। उसने दोनों व्यक्तियों से 'हलो हलो' किया और मेज़ पर बैठ गया। उसके मेज़ पर बैठते ही पसीने की तेज बदबू विन्स्टन की नाक में घुस गई। उसके लालिमापूर्ण चेहरे पर पसीने की बूंदें झलक रही थीं। साइम ने एक काग़ज़ निकाल लिया था। इसमें एक लम्बी शब्द-सूची थी। हाथ में स्याहीदार पेंसिल लिए वह इसी शब्द-सूची पर विचार कर रहा था।

पारसन्स ने विन्स्टन को चिकोटी काटते हुए कहा, "जरा देखो कॉमरेड को, भोजन के समय भी काम में जुटे हैं। अरे भई, क्या पढ़ रहे हो? क्या मेरे दिमाग़ से परे की बात है? स्मिथ, भाई मुझे तुमसे एक चन्दा वसूल करना है, इसीलिए मैं तुम्हारे पीछे पड़ा हूं।"

"कौन-सा चन्दा, विन्स्टन ने पर्स निकालने के लिए अपनी जेब में हाथ डाला। हर मास वेतन का चौथाई हिस्सा चन्दों में निकल जाता था। वे इतने अधिक थे कि उनको याद रखना भी मुश्किल था।

"घृणा सप्ताह के लिए घर-घर जाकर यह चन्दा इकट्ठा किया जा रहा है। हम शानदार प्रदर्शन की पूरी तैयारी कर रहे हैं। यदि विजय भवन में सड़क के अन्य सब भवनों की अपेक्षा सबसे अधिक झंडे न लगें तो मुझे दोष न देना। तुमने दो डॉलर देने का वायदा किया था।"

विन्स्टन ने पर्स निकालकर दो डॉलर के गन्दे नोट पारसन्स के हवाले किए। पारसन्स ने उनको रखकर अपनी नोट-बुक में लिख लिया।

"मैंने सुना", पारसन्स ने कहा, "मेरे लड़के ने उस दिन तुम्हारे गुलेल मार दी। मैंने उसकी अच्छी तरह पिटाई की है। मैंने उससे कह दिया है कि यदि फिर उसने ऐसी हरक़त की तो मैं उससे गुलेल छीन लूंगा।"

"मेरा ख़याल है, वह फ़ांसी देखने न जा सकने के कारण नाराज़ था।" विन्स्टन ने कहा।

"ठीक है। ऐसा तो होना ही चाहिए। दोनों बच्चे बड़े ही शरारती हैं। वे हमेशा जासूसों और युद्ध की बातें करते रहते हैं। पिछले शनिवार को मेरी लड़की ने, जानते हो क्या किया? वह बर्कहैम्पस्टीड अपने दल के साथ घूमने गई थी। उसने दो अन्य लड़कियों के साथ एक अजनबी का पीछा किया। दो घंटों तक वह जंगलों में उसके पीछ घूमती रही। ऐमरशम पहुंचकर तीनों ने उस आदमी को पुलिस के हवाले कर दिया।"

"ऐसा उन्होंने क्यों किया?" विन्स्टन ने हैरान और परेशान होकर पूछा। पारसन्स ने विजय-गर्व से कहा, "मेरी बच्ची ने यह जान लिया था कि वह शत्रु का गुप्तचर है। शायद उसे पैराशूट से गिरा दिया गया था। वह आदमी अजीब ढंग के जूते पहने था। ऐसे जूते पहने उसने पहले किसी को नहीं देखा था, इसलिए लड़की के मन में शक पैदा हो गया। हो न हो वह विदेशी हो, यह सोचकर लड़की ने उसे पुलिस के हवाले कर दिया। सात साल की लड़की के लिए इतना बहुत है, क्यों?"

"आदमी का क्या हुआ?" विन्स्टन ने पूछा।

"मुझे नहीं मालूम। लेकिन मुझे आश्चर्य न होगा यदि अब तक वह..." राइफ़ल तानने का इशारा करते हुए पारसन्स ने मुंह से गोली चालने और घोड़ा दबाने की आवाज़ की।

"बहुत ठीक।" साइम ने काग़ज़ से बिना अपनी आंखें उठाए हुए कहा।

"ठीक है, हम लोग ख़तरा नहीं मोल ले सकते," विन्स्टन ने सहमत होते हुए कर्तव्य का पालन किया।

"आजकल लड़ाई चल रही है।" पारसन्स ने कहा।

बात की पुष्टि के रूप में, ऐसा लगा, टेलीस्क्रीन पर ज़ोर से बिगुल बजने की आवाज़ हुई। टेलीस्क्रीन सिर पर ही था।

"कॉमरेड," किसी तरुण कंठ ने कहा, "ध्यान से सुनिए! बड़ी शानदार ख़बर है। हमने उत्पादन की लड़ाई जीत ली है। पिछले साल उपभोग्य वस्तुओं का जो उत्पादन हुआ, उससे प्रकट होता है कि जीवनयापन का स्तर बीस प्रतिशत बढ़ गया है। आज ओशनिया भर में कारख़ानों और दफ़्तरों से निकलकर सड़कों पर मजदूरों ने प्रदर्शन किए। इनमें नए तथा सुखमय जीवन के लिए बड़े भाई के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई थी। ये कुछ आंकड़े हैं। खाद्य सामग्री..."

'हमारा नया सुखमय जीवन' — इधर इन शब्दों का प्रयोग समृद्धि मन्त्रालय बहुत करता रहा था। पारसन्स घोषणा को आंख बन्द कर मूर्तिवत सुन रहा था। ऐसा लगता था कि नीरसता की साक्षात प्रतिभा है। वह आंकड़ों को तो समझ नहीं पाता था, परन्तु उन्हें सुनकर ही सन्तोष कर लेता था। अब उसने आंखें खोल लीं और अपनी जेब से एक गन्दा पाइप निकाल लिया। इसमें आधी से भी अधिक जली तम्बाकू पहले से ही भरी हुई थी। तम्बाकू सप्ताह में केवल सौ ग्राम मिलती थी, इसलिए कभी भी पाइप को ऊपर तक भरना तो सम्भव ही नहीं था। विन्स्टन विक्टरी सिगरेट पी रहा था। सिगरेट को वह बड़ी सावधानी से सीधा पकड़े था। अन्यथा तम्बाकू के नीचे गिर जाने का ख़तरा था। राशन कल से पहले मिलनेवाला नहीं था और उसके पास केवल चार सिगरेटें ही बची थीं। उसने आसपास के शोर से अपना ध्यान खींचकर वे आंकड़े सुनने का प्रयत्न किया जो टेलीस्क्रीन पर सुनाए जा रहे थे।

लम्बे-चौड़े आंकड़े टेलीस्क्रीन से अब भी झर रहे थे। पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष अधिक खाद्य सामग्री, अधिक कपड़ा, अधिक फ़र्नीचर, अधिक बर्तन, अधिक ईंधन, अधिक जहाज़ और अधिक हैलीकॉप्टर निर्मित हुए थे। अधिक पुस्तकें छपी थीं और अधिक बच्चे हुए थे। केवल बीमारियां, अपराध और पागलपन का रोग नहीं बढ़ा था। वर्ष-प्रतिवर्ष,

मिनट-प्रतिमिनट, हर व्यक्ति और हर चीज़ ऊपर की तरफ जा रही थी। वह जीवनयापन के ढंग के बारे में सोच रहा था। क्या हमेशा ऐसा ही था? क्या खाना हमेशा ऐसा ही था। उसने कैंटीन में चारों ओर दृष्टि डाली। नीची छत का, भीड़-भाड़ से भरा कमरा या तहख़ाना था यह। सैकड़ों आदमियों के कन्धे-से-कन्धे भिड़ रहे थे, जिसने यहां के वातावरण को उदास बना दिया था। मेजें धातु की थीं, टूटी हुई वैसी ही कुर्सियां, मुड़ी चम्मचें, गन्दी ट्रे, खुरदरे सफ़ेद मग, हरेक की सतह चिकनी, हर दरार में मैल भरा हुआ, तेल जैसी गन्धाने वाली शराब का खट्टा स्वाद, खराब कॉफ़ी, पितलाया हुआ 'स्टू' और गन्दे कपड़े। उसे जहां तक याद था, खाद्य सामग्री का सदैव अभाव रहा, मोज़े और बनियान सबके सब ऐसे पहनने पड़े, जिनमें पचासों छेद थे। फ़र्नीचर हर जगह टूटा-फूटा देखा। कमरे कभी भी पूरी तरह गर्म नहीं हो पाते थे, भूगर्भ ट्रेनों में बड़ी भीड़ चलती थी। मरम्मत न हो सकने के कारण मकान बराबर गिरते जाते थे। काले रंग की रोटी ही राशन में मिलती थी। चाय तो आंख से देखने को नहीं मिलती थी। कॉफ़ी में कोई स्वाद नहीं आता था। कृत्रिम शराब की अवश्य अधिकता थी। वह जितनी चाहो उतनी मिल जाती थी। ज्यों-ज्यों आदमी की आयु बढ़ती जाती थी, हालत बद से बदतर होती जाती थी। इससे दिमाग़ में बार-बार यही ख़याल आता था कि व्यवस्था सामान्य नहीं है। उसमें अवश्य ही कोई असाधारण बात है। जाड़ों का अन्त ही नहीं था। मोज़े मैल की वजह से चिकने और सख्त हो जाते थे। लिफ्टें काम ही नहीं करती थीं। पानी बहुत ही ठंडा होता था। साबुन लगाते ही हाथ कटने लगता था। सिगरेट हाथ में आते ही टूट जाती थी। खाने का स्वाद बड़ा ही भद्दा होता था। यह सब आदमी को क्यों असा प्रतीत हो यदि वह यह न जानता हो, या उसे यह याद न हो कि कोई ऐसा भी समय था जब ऐसी दशा नहीं थी?

उसने एक बार कैंटीन में चारों तरफ़ फिर नज़र घुमाई। हर आदमी बदसूरत नज़र आ रहा था। यदि लोग नीली वर्दी न पहने होते तो शायद और भी बदसूरत लगते। दूर, एक कोने में छोटी-सी मेज़ पर बैठा एक आदमी कॉफ़ी पी रहा था। उसकी छोटी-छोटी आंखें बार-बार कैंटीन के

हर कोने में जा रही थीं। वह हरेक को सन्देह की निगाहों से देख रहा था। पार्टी ने शारीरिक स्वास्थ्य को बहुत महत्त्व दिया था, किन्तु लगभग हर आदमी का क़द छोटा, रंग काला और स्वभाव चिड़चिड़ा होता जा रहा था।

समृद्धि मन्त्रालय का घोषणा बिगुल बजकर बन्द हो गया था। अब हल्का संगीत बज रहा था। पारसन्स ने आंकड़ों की वर्षा के बाद उत्साहपूर्वक अपनी आंखें खोली और मुंह से पाइप बाहर निकाल लिया।

जानकारों की भांति सिर हिलाते हुए उसने कहा, "इस वर्ष समृद्धि मन्त्रालय ने निश्चय ही अच्छा काम किया है। — क्यों कॉमरेड स्मिथ, तुम्हारे पास एकाध ब्लेड तो फालतू नहीं होगा?"

"मेरे पास एक भी ब्लेड नहीं है। मैं पुराने ब्लेड से ही पिछले छह सप्ताह से काम चला रहा हूं।'

"अच्छा-अच्छा। कोई बात नहीं। मैंने सोचा, पूछ लेने में क्या हर्ज़ है?"

"सॉरी!" विन्स्टन ने कहा।

पता नहीं क्यों विन्स्टन को श्रीमती पारसन्स की याद आ गई। उनके उड़ते हुए बाल तथा झुर्रियों में भरी धूलवाला चेहरा फिर उसके सामने आ गया। दो साल के भीतर ही वे बच्चे अपनी मां को विचार-पुलिस के हवाले कर देंगे। और श्रीमती पारसन्स को समाप्त कर दिया जाएगा। साइम को भी समाप्त कर दिया जाएगा। विन्स्टन का भी यही हाल होगा। ओ'ब्रायन भी मार डाला जाएगा। इसके विपरीत पारसन्स जैसे आदमी कभी नहीं मारे जाएंगे। वह गहरे काले घने बालोंवाली लड़की भी नहीं मारी जाएगी। ऐसा लगता था कि उसे तुरन्त मालूम हो जाता था कि कौन मारा जाएगा और कौन नहीं।

तभी वह अपने विचार-स्वप्न से जाग उठा। दूसरी मेज़वाली लड़की थोड़ी-सी घूम गई थी और उसकी तरफ़ देख रही थी। यह वही काले बालोंवाली लड़की थी। वह उसे तिरछी नज़रों से देख रही थी। जिस क्षण दोनों की नज़रें मिली लड़की तुरन्त दूसरी ओर देखने लगी।

विन्स्टन की पीठ पर पसीना आ गया। उसके हृदय में भयानक डर समा गया। थोड़ी ही देर में वह डर दूर भी हो गया। परन्तु वह अपने पीछे थोड़ी-सी बेचैनी भी छोड़ गया था। वह उसे क्यों देख रही है? वह उसके पीछे क्यों पड़ी है? अब उसे याद नहीं था कि जब वह मेज़ पर आकर बैठा तो वह आ गई थी या नहीं। लेकिन कल वह लड़की उसके पीछे बैठी थी, जबकि ऐसा करने का कोई कारण नहीं था। सम्भवतः वह यह सुनना चाहती है कि मैं सोचते-सोचते ज़ोर से बोलता हूं या नहीं।

फिर विन्स्टन को ख़याल आया कि कहीं वह विचार-पुलिस की एजेंट न हो। शायद शौकिया जासूसी करती हो। परन्तु असली ख़तरा तो उन्हीं शौकिया जासूसों से था। उसे याद नहीं कि वह लड़की कितनी देर उसकी तरफ़ देखती रही, शायद पांच मिनट तक देखती रही हो। वह विन्स्टन की शक्ल याद नहीं कर पा रही होगी। सार्वजनिक स्थानों में या टेलीस्क्रीन के सामने बैठकर इधर-उधर की बातें सोचना बहुत ही ख़तरनाक है। विन्स्टन मन-ही-मन कह रहा था, छोटी-से-छोटी बात भी जान की ग्राहक बन सकती है। घबरा जाना, चेहरे पर चिन्ता का भाव, बुदबुदाना, कोई भी अस्वाभाविक हरकत जिसमें ऐसा लगे कि कुछ छिपाया जा रहा है, ख़तरनाक थी। किसी सफलता की घोषणा के समय अविश्वास की भावना का चेहरे पर होना ही दंडनीय अपराध था। नई भाषा में उसके लिए शब्द भी था। इस शब्द का अर्थ था — चेहरे पर भावों का अपराध।

लड़की ने अब फिर उसकी तरफ पीठ कर ली थी। शायद वह सचमुच उसका पीछा नहीं कर रही थी। शायद वह संयोग ही था कि वह लगातार दो दिनों तक उसके आस-पास ही बैठ रही थी। विन्स्टन का सिगरेट बुझ चुका था। उसने संभालकर सिगरेट मेज़ पर रख दिया। वह उसे दफ़्तर के बाद पीना चाहता था, बशर्ते कि सिगरेट का तम्बाकू ज़मीन पर न गिरे। बहुत सम्भव है कि सामनेवाला आदमी विचार-पुलिस का सदस्य हो और वह तीन दिन के भीतर ही प्रेम मन्त्रालय के तहख़ानों में भेज दिया जाए। परन्तु सिगरेट का अन्तिम भाग भी नष्ट तो नहीं किया जाना चाहिए। साइम ने अपना काग़ज़ मोड़कर जेब में रख लिया था। पारसन्स ने बातचीत करना फिर शुरू कर दिया था।

"आजकल बहुत अच्छी प्रशिक्षा बाल गुप्तचरों को दी जा रही है। हम लोगों से भी अच्छी ट्रेनिंग उन्हें मिल रही है। अभी इन्हीं बच्चों को ऐसा भोंपा दिया गया है जिसकी सहायता से वे ताले के छेद से कमरे के अन्दर हो रही बातें सुन सकते हैं। मेरी लड़की ने कल रात यह प्रयोग मेरे कमरे पर किया और कहा कि वह कानों की अपेक्षा इस यन्त्र की सहायता से दूना सुन सकती है। अभी तो वह खिलौना ही है, लेकिन काम करने का अभ्यास तो बढ़ता ही है।"

तभी टेलीस्क्रीन से एक तेज़ सीटी जैसी आवाज़ निकलने लगी। यह काम पर वापस लौटने के लिए सिगनल था। तीनों आदमी खड़े हो गए। सबके साथ वे भी लिफ़्ट से चढ़ने का प्रयत्न करने लगे। इस प्रयत्न में विन्स्टन के सिगरेट का तम्बाकू झड़कर नीचे गिर गया।

विन्स्टन अपनी डायरी में लिख रहा था :।

तीन वर्ष पहले की बात है। घनी काली शाम थी। बड़े स्टेशन के पास की तंग गली में, वह एक बिजली के खम्भे के नीचे खड़ी थी। बहुत मन्द रोशनी थी। उसके चेहरे से तरुणाई झलकती थी। शायद उसने पाउडर बहुत लगा रखा था। यह पाउडर मुझे पसन्द आ गया था। सफ़ेद था न। उस पर लाल रंग की लिपस्टिक थी। अन्य कोई सड़क पर था नहीं। टेलीस्क्रीन भी नहीं। उसने कहा, "दो डॉलर। मैं...।"

अब एक क्षण के लिए ऐसा लगा कि आगे लिखना बड़ा कठिन है। उसने आंखें बन्द कर लीं और वह दृश्य याद करने का प्रयत्न करने लगा।

उसने एक गहरी सांस लेकर फिर लिखना शुरू किया :

मैं उसके साथ दरवाज़े से होता हुआ मकान के पिछले हिस्से में बने मैदान में पहुंचा और उसके साथ ज़मीन के नीचे बनी रसोई में घुस गया। दीवार के साथ लगा एक बिस्तर था। मेज़ पर एक लैम्प था। वह बड़ा मन्द जल रहा था। उसने...।

अब दांत से दांत भिंच गए थे। उसकी इच्छा हो रही थी कि वह थूक दे। उस औरत के साथ जब वह रसोईघर में था तो उसे अपनी पत्नी कैथरीन की याद आ गई। विन्स्टन का विवाह हुआ था — या हो चुका था और अभी तक उसकी पत्नी की मृत्यु भी नहीं हुई थी। उसे ऐसा लग रहा था कि उस दम घुटनेवाली रसोई में खटमलों, गन्दे कपड़ों और सस्ते सेंट की खशब-बदब मिली थी। परन्त सेंट का प्रयोग आकर्षक था क्योंकि पार्टी के किसी भी सदस्य को सेंट लगाने की अनुमति नहीं थी। केवल मज़दूर ही इसका उपयोग कर सकते थे।

जब वह उस औरत के साथ लेटा तो शायद दो वर्षों बाद उससे यह ग़लती हुई थी। नियमानुसार वेश्याओं के पास जाना वर्जित था, परन्तु कभी-कभी साहस करके यह नियम तोड़ भी लिया जाता था। ख़तरा ज़रूर था लेकिन इसमें जीवन और मृत्यु का सवाल नहीं था। वेश्या के साथ पकड़े जाने पर बेगार-शिविर में पांच साल बिताने पड़ सकते थे। उससे अधिक नहीं। शर्त यही थी कि आपने अन्य कोई अपराध न किया हो। वैसे यह काम बड़ा आसान भी था। ग़रीबों की बस्तियों में ऐसी स्त्रियां भरी पड़ी थीं जो अपने शरीर को हमेशा बेचने को तैयार रहती थीं। अप्रत्यक्षतः पार्टी वेश्यागमन को प्रोत्साहित भी करती थी क्योंकि अधिकारी समझते थे कि जो भावनाएं दबाई नहीं जा सकतीं, उनको दिमाग़ से बाहर निकालने का यह अपेक्षाकृत सरल साधन है। शर्त यही है कि इसका कोई दीर्घकालीन फल न हो और इसमें लोगों को कोई आनन्द न आवे। दूसरे इस काम में निम्नवर्ग की मजदूर औरतें ही हों। पार्टी सदस्यों के बीच कोई यौन सम्बन्ध नहीं होने चाहिए। यह अक्षम्य अपराध था।

पार्टी का यही लक्ष्य नहीं था कि स्त्री-पुरुषों के बीच ऐसे सम्बन्ध स्थापित न हो पाएं, जिससे वे एक-दूसरे पर जान देने के लिए तैयार हो जाएं, बल्कि यथार्थ उद्देश्य यह था कि सम्भोग कर्म में कोई आनन्द ही न रह जाए। विवाह के प्रत्येक प्रस्ताव को पहले एक कमेटी से स्वीकृत कराना पड़ता था। यदि इस कमेटी को ज़रा भी यह पता लग जाता था कि जोड़ा एक-दूसरे के सौन्दर्य से प्रभावित है तो विवाह की अनुमति नहीं

दी जाती थी। एक ही आधार पर अनुमति मिलती थी और वह था — पार्टी की सेवा के लिए हम बच्चे पैदा करना चाहते हैं। सम्भोग को हेय दृष्टि से देखा जाता था, ऐसे ही जैसे एनिमा से पेट साफ़ करने के कर्म को। परन्तु स्पष्ट रूप से यह सब नहीं कहा जाता था। यह बात बचपन से हर पार्टी सदस्य के दिमाग़ में बार-बार अपरोक्ष रूप से घुमाई जाती थी। तरुणों की सेक्स विरोधी लीग भी थी। यह बच्चों को ब्रह्मचर्य तथा आजीवन कौमार्य व्रत ग्रहण करने का व्रत दिलाती थी और इसी का प्रचार करती थी। उनका कहना था कि सभी बच्चे कृत्रिम गर्भाधान प्रक्रिया से उत्पन्न होने चाहिए। विन्स्टन जानता था कि पार्टी इस मामले में बहुत गम्भीर नहीं थी। परन्तु पार्टी की विचारधारा में यह बात खप जाती थी। पार्टी पहले तो यौन भावना को ही समाप्त करा देना चाहती थी और यदि ऐसा नहीं तो कम-से-कम यौन कर्म को बड़ा तुच्छ, गन्दा और हेय बना देना चाहती थी।

वह फिर कैथरीन की बात सोचने लगा। उन लोगों को अलग हुए नौ-दस नहीं, शायद ग्यारह वर्ष हो गए थे। उनका वैवाहिक जीवन केवल पन्द्रह मास का रहा।

कैथरीइन लम्बे क़द की सुन्दरी थी। उसके बाल चमकीले थे। चाल-ढाल अत्यन्त शानदार थी। चेहरे पर सज्जनता का भाव था। परन्तु इस सबके होते हुए अक्ल के नाम पर वह कोरी थी। शादी के बाद यह बात बहुत जल्दी विन्स्टन ने समझ ली थी। नारों के सिवाय उसके दिमाग़ में कुछ भी नहीं था। पार्टी की कोई भी बात वह मानने को तैयार हो जाती थी, वह चाहे कितनी ही मूर्खतापूर्ण क्यों न हो। इतना सब होते हुए भी वह उसके साथ ही रहता, यदि उसमें एक ख़राबी न होती।

जैसे ही वह उसे स्पर्श करता था, वह एकदम कठोर हो जाती थी। उसे आलिंगन करने पर ऐसा लगता था जैसे किसी लकड़ी की गुड़िया को छाती से लगा लिया हो। वह जब उसे अपनी बाहों में बांध भी लेती थी, तो भी विन्स्टन को ऐसा लगता था कि वह दोनों हाथों से उसे अपने पास से हटा रही थी। वह चुपचाप पड़ रहती। न सहयोग करती और

न विरोध। समर्पण कर निष्क्रिय हो जाती थी। यह स्थिति बहुत ही अजब थी और कभी-कभी तो भयानक प्रतीत होती थी। लेकिन वह उस समय भी कैथरीन के साथ रहने को तैयार था, यदि यह तय हो जाता कि दोनों के बीच यौन सम्बन्ध नहीं रहेंगे। हैरानी की बात यह थी कि कैथरीन ही इसके लिए राजी नहीं थी। उसका कहना था कि बच्चे अवश्य होने चाहिए। इसलिए जब भी असम्भव नहीं होता, यह क्रिया सप्ताह में एक बार नियमित रूप से होती थी। निश्चित दिन वह इस कार्य की उसे सुबह ही याद दिला देती थी। उसका संकेत होता था, 'पार्टी के प्रति हमारा कर्तव्य।' जी हां, वह इन शब्दों का ही प्रयोग करती थी। परन्तु जब भी वह दिन आने को होता तो विन्स्टन को एक प्रकार का डर आकर घेर लेता। सौभाग्यवश, कोई बच्चा नहीं हुआ। अन्त में वह हारकर प्रयत्न न करने के लिए राज़ी हो गई। शीघ्र ही, उसके बाद वे अलग हो गए।

विन्स्टन ने बहुत धीरे-से सांस ली। उसने फिर क़लम उठाई और लिखा :

वह बिस्तर पर गिर पड़ी। इसके बाद बिना किसी प्रारम्भिक औपचारिकता के उसने अपने कपड़े हटा दिए। मैं...

एकाएक उसे वह दृश्य याद हो आया। मन्द रोशनी, खटमल और सस्ते सेंट की बदबू और खुशबू की मिली गन्ध उसकी नाक में प्रवेश कर गई। उसका मन पराजय और पार्टी के विरुद्ध विद्रोह की भावना से अभिभूत हो गया। उसे लगा कि पार्टी ने अपनी सम्मोहन शक्ति से कैथरीन के सफ़ेद शरीर को बर्फ की तरह जमा दिया है। ऐसा क्यों होता है? वर्षों बाद ही सही, उसे यहां आने के लिए क्यों मजबूर किया जाता है? वह अपनी पत्नी को क्यों नहीं अपने साथ रख सकता? पार्टी की सभी स्त्रियां एक समान ही थीं। बचपन के वातावरण द्वारा, खेलों और शीतल जल द्वारा, स्कूल में दी जानेवाली शिक्षा द्वारा सेक्स-विरोधी भावनाएं लड़कियों के दिलो-दिमाग़ में भरी जाती थीं। ऐसी ही बात की शिक्षा जासूसी की ट्रेनिंग देनेवाली संस्थाओं में यूथ लीग में भी दी जाती। व्याख्यानों, परेडों, गीतों, नारों, सैनिक धुनों द्वारा भी इस स्वाभाविक भावना का दमन किया

जाता। उसका ख़याल था कि कुछ स्त्रियां अवश्य ही अपवाद होंगी। परन्तु मन नहीं मानता था। उनमें से एक भी गर्भवती होने योग्य नहीं थी। पार्टी चाहती भी यही थी। और वह क्या चाहता था! वह चाहता था कि वह इस दीवार को तोड़ दे। चाहे प्रेम हो या न हो। यदि एक बार भी सम्भोग सफलतापूर्वक हो जाता तो वह वस्तुतः पार्टी के विरुद्ध विद्रोह के बराबर था।

लेकिन अभी शेष कथा भी लिखनी थी। उसने लिखा :

मैंने ज़रा लैम्प तेज़ किया। मैंने उसकी शक्ल जब रोशनी में देखी तो —

उसने लैम्प के प्रकाश में देखा कि वह औरत बुढ़िया थी। पेंट की वजह से वह वास्तविकता पहले नहीं देख पाया था। सफ़ेद बाल भी दीख रहे थे। कहीं-कहीं। उसका मुंह थोड़ा-सा खुल गया था। उसमें एक भी दांत नहीं था। उसने जल्दी-जल्दी लिखा :

मैंने प्रकाश में देखा कि वह काफ़ी बुढ़िया थी। कम-से-कम पचास बरस की। फिर भी मैंने अपना उद्देश्य पूरा किया ही।

उसने अपनी उंगलियों से पलकें दबा लीं। अन्ततः उसने लिख ही डाला था। परन्तु लिखने से भी क्या फ़र्क पड़ता है। इस इलाज से काम नहीं हुआ। वह अब ज़ोर-ज़ोर से बकना चाहता था।

अब कोई आशा है (विन्स्टन ने लिखा) तो वह सर्वहारा वर्ग से ही है।

यदि कोई आशा थी तो मज़दूर या सर्वहारा वर्ग से ही थी। ओशनिया की पिचासी प्रतिशत आबादी मज़दूरों की थी। यही बहुसंख्यक तथा दलित समाज पार्टी को नष्ट कर सकते थे। पार्टी की सत्ता को अन्दर से नहीं उलटा जा सकता था। पार्टी के अन्दर यदि उसके दुश्मन हों, तो भी वे एक नहीं हो सकते थे, क्योंकि वे एक-दूसरे को पहचानते भी नहीं थे।

यदि ब्रदरहुड नाम की संस्था जैसी कोई चीज़ हो तो भी उसके सदस्य एक स्थान पर दो या तीन से अधिक संख्या में एकत्र नहीं हो सकते थे। आंखों से देखने का ढंग, ज़रा तेज़ आवाज़, कभी-कभी मुंह से निकला अस्फुट शब्द भी विद्रोह मान लिया जाता था। यदि मज़दूरों को किसी प्रकार जगा दिया जाए तो उन्हें किसी प्रकार का षड्यन्त्र रचने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। उन्हें तो केवल उबल पड़ना है और अपने-आप को इस तरह हिलाना है जिस तरह घोड़ा अपनी पीठ हिलाकर मक्खियों को भगा देता है। देर-सबेर ऐसा होना ही था। और अब तक... ?

पार्टी का दावा था कि उसने मज़दूर वर्ग का पूंजीपतियों से उद्धार किया था। पूंजीपति उन्हें भूखा मारते थे, उन्हें चाबुकों से पीटते थे, औरतों से कोयले की ख़ानों में काम लेते थे। सच यह था कि वे अब भी कोयला-ख़ानों में काम करती थीं। उनके बच्चों को आठ वर्ष की आयु में ही कारख़ानेदारों को बेच दिया जाता था। द्वैध विचार सिद्धान्तों के अनुसार इसके साथ ही पार्टी मजदूरों को यह भी सिखाती थी कि मजदूर वर्ग स्वभावतः अन्य कुछ लोगों के नीचे है। इसलिए मज़दूरों के सम्बन्ध में कोई वास्तविक जानकारी लोगों को थी ही नहीं। जानना आवश्यक भी नहीं था। वे पैदा होते थे। कूड़ाखानों में पलते थे। बारह वर्ष की अवस्था से वे काम में लगा दिए जाते थे। सौन्दर्य और यौवन का संक्षिप्त काल आता। बीस की आयु में विवाह हो जाता। तीस की आयु में वे अधेड़ हो जाते थे, साठ के होते-न होते मर जाते थे। उन्हें घोर शारीरिक परिश्रम करना पड़ता था। गृहस्थी और बच्चों की चिन्ता, पड़ोसियों से छोटे-छोटे झगड़े, फ़िल्म, फुटबॉल, बियर और जुए जैसी चीजें ही उनके दिमाग़ पर छाई रहती थीं। विचार-पुलिस के कुछ लोग बराबर उनमें घूमते रहते थे। वे झूठी अफवाहें फैलाते रहते थे। वे उन लोगों को भी छांट लेते थे जिनके ख़तरनाक हो जाने की सम्भावना रहती थी। लेकिन उनको पार्टी के सिद्धान्त सिखलाने की कोई कोशिश नहीं की जाती थी। मज़दूरों में प्रबल राजनीतिक आकांक्षाओं का होना वांछनीय नहीं समझा जाता था। उनमें राष्ट्रीयता का भाव ही होना पर्याप्त था। इसी के आधार पर उनसे अधिक काम ले लिया जाता था और राशन घटा दिया जाता था। वे छोटी-छोटी

बातों पर ही आपस में लड़ जाते थे। बड़ी बुराई की ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता था। बहुत-से मज़दूरों के घरों पर तो टेलीस्क्रीन भी नहीं था। पुलिस भी उनसे बहुत कम छेड़छाड़ करती थी। लन्दन में अपराधियों की पूरी बस्ती थी। मजदूरों की इस दुनिया में चोर, उठाइगीरों, वेश्याओं, नशीली वस्तुओं के बेचनेवाले व्यापारियों आदि की अलग दुनिया थी। परन्तु यह सब मजदूरों के बीच था। इसलिए उनकी कोई परवाह नहीं करता था। नैतिकता के मामलों में जो उनकी पारिवारिक परम्पराएं थीं, उन पर चलने और मानने के लिए मज़दूरों को पूरी स्वतन्त्रता थी। सेक्स सम्बन्धी पार्टी के ऊंचे सिद्धान्तों को उन पर लागू नहीं किया जाता था। व्यभिचार के लिए उन्हें कोई दंड नहीं दिया जाता था। तलाक की अनुमति थी। धार्मिक पूजा-पाठ की भी उन्हें अनुमति थी। वे सन्देह के पात्र नहीं थे। पार्टी का नारा था, 'मज़दूर और पशु स्वतन्त्र हैं।'

विन्स्टन ने धीरे-से अपना हाथ नीचे किया और अपने फोड़े को खुजलाया। उसमें फिर खुजली हो रही थी। अब वह फिर यह सोचने लगा था कि क्रान्ति के पूर्व जीवन कैसा था, यह जानना आज कितना असम्भव है। उसने श्रीमती पारसन्स से बच्चों की इतिहास की पुस्तक पढ़ने के लिए मांग ली थी। इसका एक अंश उसने कॉपी में नक़ल करना शुरू किया।

प्राचीन काल में (पुस्तक में लिखा था), स्वर्णक्रान्ति के पूर्व, लन्दन आज की तरह सुन्दर नहीं था। लन्दन बड़ा गन्दा और अंधेरी बस्तियों का शहर था। इसमें लोगों को पेट-भर भोजन मिलना भी दूभर था। सैकड़ों, हज़ारों व्यक्ति नंगे पैर — बिना जूतों के घूमते थे। बहुतों को रहने के लिए कोई घर तक न था। तुम्हारे बराबर के बच्चों को दिन में अपने निर्दयी मालिकों के लिए बारह-बारह घंटे काम करना पड़ता था। यदि बच्चे तनिक भी धीरे काम करते थे तो उनकी कोड़ों से ख़बर ली जाती थी। खाने को सूखी रोटी के टुकड़े और पानी के सिवा कुछ नहीं मिलता था। ऐसी भयानक दरिद्रता में कुछ लोगों के पास बड़े-बड़े और सुन्दर महलों जैसे मकान थे। इसमें अमीर लोग रहते थे। इनके पास अपने काम के लिए तीस-तीस नौकर होते थे। ये मालिक बहुत मोटे और बदसूरत होते थे।

इनके चेहरे से दुष्टता झलकती थी। इनमें से एक की तस्वीर सामने के सफ़े पर छपी है। यह आदमी लम्बा कोट पहने है। इसे फ्रॉक कोट कहा जाता था। यह एक टोपी भी पहने है। इसे टॉप हैट कहते थे। यह पूंजीपतियों की वर्दी थी। उनके सिवा इस पोशाक को अन्य कोई नहीं पहनता था। संसार की सारी जायदाद इन्हीं पूंजीपतियों के क़ब्ज़े में थी। उनके वर्ग के लोगों को छोड़ दुनिया का हर आदमी उनका गुलाम था। सारी ज़मीन, सब मकान, सारे कारखाने और सारा रुपया उनके कब्ज़े में था। यदि कोई भी उनकी आज्ञा मानने से इनकार करता तो वे उसे जेलखाने मे बन्द करा देते थे या उसे काम से हटा देते थे और भूखा मार डालते थे। साधारण आदमी को पूंजीपति के सामने पहले झुकना पड़ता था और सलाम करना पड़ता था, तभी वह बोल सकता था। उसे सामने जाने के लिए पहले अपनी टोपी उतारनी पड़ती थी और कुछ कह सकने के पूर्व 'श्रीमान' कहना पड़ता था। पूंजीपतियों का सरदार 'राजा' कहलाता था। और...।

आगे जो कुछ था उसे विन्स्टन जानता था। अब लम्बी बांहों का चोगा पहननेवाले पादरियों का ज़िक्र होगा, इसके बाद जजों की चर्चा होगी। शेयरों तथा अन्य बातों की चर्चा होगी। आप कैसे बतला सकते हैं कि इसमें से कितना सच और कितना झूठ था। शायद यही सच हो कि आज औसत आदमी पहले के सर्वसाधारण की अपेक्षा अधिक सुखी हो। इसके विरुद्ध केवल एक ही प्रमाण था और वह यह कि आपका अन्तस इन बातों का विरोध करता था, कोई-न-कोई ऐसा समय अवश्य रहा होगा जब यह अवस्था भिन्न रही होगी। आधुनिक जीवन की वास्तविक विशेषता अरक्षा या क्रूरता नहीं थी, बल्कि उसकी नग्नता, गन्दगी और निष्क्रियता या उत्साहहीनता थी। टेलीस्क्रीन से जिस जीवन के चित्र खींचे जाते थे या पार्टी के जो लक्ष्य थे, यथार्थ जीवन उनसे बहुत भिन्न था। पार्टी के सदस्य तक के लिए राजनीति वर्जित थी। वह अपने रोज़ के आकर्षणहीन काम में जुटा रहता था। नौकरी पाने की सतत चेष्टा करता रहता था। फटे मोज़ों को सीता रहता था। सैकरीन की टिकिया और सिगरेट के टुकड़े बचाकर रखने में व्यस्त रहता था। पार्टी का आदर्श बहुत ज़बरदस्त था।

आदर्शों की दुनिया बड़ी चमकीली थी। वह इस्पात और कंक्रीट की दुनिया थी। इसमें बड़ी-बड़ी मशीनें और भयंकर अस्त्र होंगे। योद्धाओं और कट्टर आदमियों का वह राष्ट्र होगा। वे सबके सब एकता के सूत्र में बंधे होंगे, सबके विचार एक होंगे, नारे एक होंगे। वे मिलकर काम करेंगे, लड़ेंगे, विजयी होंगे। तीन करोड़ आदमियों पर वे दृढ़ता से शासन करेंगे। इसके विपरीत, वास्तविकता यह थी कि शहर अंधेरे और गन्दे थे। इनमें अधभूखे लोग रहते थे। सड़क पर चलनेवाले लोगों में से अधिकांश के जूते फटे होते थे। वे उन्नीसवीं शताब्दी के मकानों में रहते थे। इन मकानों में उबली बन्दगोभी और पाख़ानों की दुर्गन्ध सदैव भरी रहती थी। उसे अपने सामने लन्दन का वह नज़ारा दिखाई पड़ रहा था जिसमें मलबों के ढेर थे, लाखों कूड़ों के डिब्बे थे और इसमें श्रीमती पारसन्स थीं जो अपनी बन्द नाली को खोलने के लिए प्रयत्नशील थीं।

उसने अपना टखना फिर खुजलाया। बार-बार टेलीस्क्रीन यह कहता था कि आज पहले की अपेक्षा अधिक खाद्य सामग्री है, अधिक कपड़ा है, अधिक अच्छे मकान हैं, मनोरंजन के अधिक साधन हैं और आज ओशनिया के लोग पहले से अधिक आयु तक जीते हैं, काम करते हैं, क़द में बड़े, अधिक स्वस्थ, मज़बूत, सुखी, बुद्धिमान और अधिक शिक्षित हैं। पचास वर्ष पूर्व ऐसा नहीं था। इस कथन का एक भी शब्द ग़लत या सही नहीं कहा जा सकता था। ये ऐसी बातें थीं जिनका कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं था। न इधर, न उधर। बहुत सम्भव था कि इतिहास की पुस्तकों की सारी बातें कपोल कल्पना हों। पंजीपति किसी भी औरत के साथ सो सकता है — ऐसा कोई क़ानून विन्स्टन को याद नहीं पड़ता था। वह 'टॉप हैट' जैसी किसी टोपी के बारे में भी नहीं जानता था।

हर बात, हर तथ्य पर कुहासा छाया था। मिथ्या महासत्य का रूप धारण कर चुकी थी। उसके पास एक ही ऐसा प्रमाण था जिससे जालसाज़ी सिद्ध की जा सकती थी। वह उस काग़ज़ को काफी देर तक अपनी मुट्ठी में दबाए रहा था। सन् 1973 में, हां वह सन् 1973 ही रहा होगा, और जो भी हो; लगभग इसी समय कैथरीन उससे अलग हुई थी। परन्तु वास्तविक बात सात या आठ वर्ष पूर्व की थी।

बात सन् 1965 के आसपास की है। यह वह समय था जब शुद्धीकरण का बड़ा अभियान शुरू हुआ था। इस अभियान में क्रान्ति के वास्तविक नेताओं को सदैव के लिए समाप्त कर दिया गया। सन् 1970 के आसपास उनमें से कोई बाक़ी नहीं रहा था। अपवाद यदि कोई था तो वह बड़े भाई थे। शेष को या तो क्रान्ति-द्रोही ठहरा दिया गया था या प्रतिक्रान्तिवादी। गोल्डस्टीन भाग गया था और छिपा था। यह कोई नहीं जानता — कहां। कुछ नेता तो लापता हो गए थे। अधिकांश को सार्वजनिक रूप से मुक़द्दमा चलाकर फ़ांसी दे दी गई थी। इन मुक़द्दमों में सबने अपने बयानों में अपराध स्वीकार कर लिए थे। अन्त में जो बचे थे, वे थे, आरोन्सन, जोन्स और रदरफोर्ड। सन् 1965 के आसपास गिरफ़्तारियां हुई थीं। तभी ये तीनों भी पकड़े गए थे। जैसा अक्सर होता है, वे अचानक लापता हो गए और पता नहीं एक-सवा बरस कहां रहे। इस बीच कोई नहीं जानता कि वे कहां रहे। इसके बाद अचानक उनको सबके सामने पेश किया गया और सार्वजनिक रूप से उनसे अपना अपराध स्वीकार कराया गया। उन्होंने बतलाया कि वे दुश्मनों के एजेंटों से मिलते थे (उन दिनों भी यूरेशिया से युद्ध चल रहा था)। उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने सरकारी रुपये का गबन किया है। पार्टी-सदस्यों की हत्याएं कराई हैं। बड़े भाई के नेतृत्व के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा और ऐसे विध्वंसक काम किए हैं जिनसे हज़ारों-लाखों आदमी मारे गए। इसके बाद उन्हें माफ़ कर दिया गया। पार्टी में फिर रख लिया गया। उन्हें दिखावटी तौर पर महत्त्वपूर्ण पद दिए गए, परन्तु वे वस्तुतः थोथे थे। तीनों ने 'टाइम्स' में लम्बे-लम्बे लेख लिखे। इन लेखों में उन्होंने अपनी पथ-भ्रष्टता के कारण बतलाए और इसके बाद वादा किया कि वे अपने-आप को सुधारेंगे।

रिहाई के कुछ दिनों के बाद उन तीनों को विन्स्टन ने चेस्टनट कैफ़े में देखा था। वह कितनी तृष्णा और कितने डर से उनको तिरछी निगाहों से बार-बार देखता था, यह विन्स्टन को याद हो आया। वे तीनों उम्र में उससे कहीं बड़े थे। वे पुरानी दुनिया की यादगार-सी लगते थे। पार्टी के आरम्भिक दिनों की शूरवीरता की याद उन्हें देखकर आ जाती थी। गृहयुद्ध और गुप्तवास के संघर्ष की रेखाएं भी उनके चेहरे से झलकती थीं। जब

बड़े भाई का नाम भी लोगों ने नहीं सुना था, ये नेता तब से प्रसिद्ध थे। तारीख़ें और सन् उसे याद नहीं थे। परन्तु अब वे राजद्रोही थे, अपराधी थे, शत्रु थे, अछूत थे और निश्चित था कि एक या दो वर्षों के भीतर उनको समाप्त कर दिया जाएगा। एक बार जो आदमी विचार-पुलिस के हाथ पड़ गया, वह फिर अपनी जान बचा नहीं पाया। वे उन लाशों की तरह लग रहे थे, जिन्हें क़ब्र में वापस भेजा जाना था।

उनके सबसे पास की मेज़ों पर कोई नहीं बैठा था। ऐसे आदमियों के आसपास भी देखा जाना समझदारी नहीं थी। उनके सामने लौंग से सुगन्धित शराब के गिलास रखे थे। चेस्टनट कैफ़े में मिलनेवाली शराब की यही विशेषता थी। तीनों में से रदरफ़ोर्ड के व्यक्तित्व से ही विन्स्टन सबसे अधिक प्रभावित हुआ। रदरफोर्ड किसी समय बड़ा प्रसिद्ध व्यंग्य चित्रकार था। उसके व्यंग्य-चित्रों ने क्रान्ति के पूर्व और उसके दौरान जनमत तैयार करने में बड़ी मदद दी थी। अब भी कभी-कभी 'टाइम्स' में उसके कार्टून छप जाते थे। वे रंग-ढंग से उसके पहले के व्यंग्य-चित्रों की नक़ल प्रतीत होते थे। इन चित्रों से ऐसा लगता था कि अतीत में लौटने की बराबर और सतत चेष्टा की जा रही है, जिसके सफल होने की कोई आशा नहीं है। लम्बा-चौड़ा, देवों-सा शरीर, चिकने बाल और फूले हुए होंठ। किसी समय वह बड़ा ही सबल रहा होगा। अब उसकी वह विशाल काया निर्बल हो रही थी, निढाल होती जा रही थी। हर तरफ़ से गिरी पड़ रही है, ऐसा लगता था। ऐसा लग रहा था कि जैसे आंखों के सामने कोई पहाड़ टूटकर गिरा जा रहा है।

पन्द्रह बजे (दिन के तीन) का एकान्त वक़्त था। विन्स्टन को याद नहीं आ रहा था कि उस वक़्त वह कैसे कैफ़े में आ गया था। कैफ़े क़रीब-क़रीब बिलकुल खाली पड़ा था। टेलीस्क्रीन से कोई धुन बज रही थी। तीनों आदमी, चुपचाप कोने में अपनी मेज़ पर बैठे थे। बिना कहे वेटर शराब के ताजे गिलास भर-भरकर ला रहा था। उनकी बग़ल की मेज़ पर शतरंज की बाज़ी बिछी थी लेकिन खेल शुरू नहीं हुआ था और तभी, शायद आधे मिनट के लिए टेलीस्क्रीन में कुछ हो गया। संगीत की धुन बदल गई। इसके बाद किसी ने गाना शुरू किया :

चेस्टनट के विशाल वृक्ष के नीचे।
मैंने तुम्हें बेचा और तुमने मुझे
वहां पड़े हैं वे और यहां पड़े हैं हम
चेस्टनट के विशाल वृक्ष के नीचे।

परन्तु वे तीनों अपने स्थान से हिले भी नहीं। लेकिन रदरफ़ोर्ड की तरफ़ दुबारा विन्स्टन ने देखा तो उसे पता लगा कि रदरफ़ोर्ड की आंखों में आंसू भर आए थे। तभी अत्यन्त भयभीत भाव से, यह बिना जाने कि डरना किस कारण हुआ, विन्स्टन ने देखा कि आरोन्सन और रदरफ़ोर्ड दोनों की नाकें टूटी हुई हैं।

कुछ ही दिनों बाद वे फिर पकड़ लिए गए। कहा गया कि रिहाई के बाद से ही वे नए-नए षड्यन्त्र रचने लगे थे। दूसरे मुक़द्दमे में उन्होंने अपने सारे नए और पुराने अपराध स्वीकार कर लिए। उनको फांसी दी गई और उनके इस तरह मारे जाने के बाद भावी पीढ़ी की चेतावनी के लिए उनके अन्त की कथा इतिहास में लिख दी गई। इनके कोई पांच वर्ष बाद सम्भवतः सन् 1973 में एक दिन विन्स्टन के पास कुछ काग़ज़ आए। वह जब उन्हें खोलकर देख रहा था तो उसे एक ऐसा काग़ज़ मिला जो कुछ काग़ज़ों में मिलाकर रख दिया गया था और उसके बारे में किसी को कुछ याद नहीं रहा था। खोलते ही काग़ज़ की विशेषता विन्स्टन की समझ में आ गई। दस वर्ष पहले के टाइम्स का यह अधफटा पृष्ठ था। यह ऊपर का हिस्सा था, जिसमें तारीख़ भी छपी थी। इसमें न्यूयार्क के एक पार्टी-जलसे का चित्र था। इस सामूहिक चित्र के बीच में नेताओं की जगह तीन व्यक्ति थे — जोन्स, आरोन्सन और रदरफोर्ड। इसमें कोई ग़लती नहीं हो सकती थी क्योंकि चित्र के नीचे उनके नाम भी लिखे थे।

अब मुद्दे की बात यह थी कि तीनों व्यक्तियों ने अपने मुकद्दमों में यह स्वीकार किया था कि उस तारीख को वे यूरेशिया में थे। कहा गया था कि वे कनाडा के गुप्त हवाई अड्डे से साइबेरिया आए और वहां उन्होंने यूरेशियन प्रधान सेनापति से मिलकर महत्त्वपूर्ण गुप्त सैनिक रहस्य उनको बता दिए। यह तारीख विन्स्टन के दिमाग़ में बनी रही क्योंकि यह गर्मियों के मध्य की बात है। परन्तु यह कहानी और बहुत-सी जगह भी रिकॉर्ड

में होगी। इससे एक ही परिणाम निकलता था और वह यह कि सारे इक़बाली बयान झूठे थे।

बेशक़ यह कोई नई खोज नहीं थी। जब शुद्धिकरण में लोगों को पकड़ा गया और मार डाला गया, उस समय भी विन्स्टन को यह विश्वास नहीं हुआ था कि जो अभियोग उन पर लगाए गए हैं, वे सच्चे हैं। परन्तु यह सबूत सामने था। जैसे उसने देखा कि फ़ोटोग्राफ़ क्या है और उसकी विशेषता क्या है, उसने तुरन्त दूसरे काग़ज़ों में उस चित्र को ढंक दिया। सौभाग्यवश जब वह काग़ज़ उसने खोला था तो वह टेलीस्क्रीन के लिए उलटा पड़ता था। उसने अपना पैड घुटनों पर रखा और कुर्सी को पीछे खिसका लिया जिससे वह टेलीस्क्रीन से अधिक-से-अधिक दूर हो जाए। दस मिनट बाद बिना खोले उसने चित्र को भट्टीवाले छेद में डाल दिया। दूसरे ही मिनट वह जलकर भस्म हो गया।

कोई दस या ग्यारह वर्ष पूर्व की बात थी। आज यदि यह चित्र मिला होता तो उसने उसे अपने पास रख ही लिया होता। वह चित्र नष्ट हो गया था। लेकिन उसकी याद-मात्र से ही उसे सहारा मिलता था। अतीत को क्यों बदला जा रहा है, इसका तात्कालिक कारण तो समझ में आता था, किन्तु दीर्घकालीन लक्ष्य नहीं समझ में आता था। उसने क़लम उठाकर लिखा :

मैं जानता हूं 'कैसे'; परन्तु 'क्यों', यह नहीं जानता।

विन्स्टन सोच रहा था, जैसे उसने पहले भी कई बार सोचा था, कहीं वह पागल तो नहीं हो गया है? शायद पागल ऐसा अल्पसंख्यक होता है, जिसकी संख्या एक ही होती है। एक वक़्त था जब यह विश्वास करना पागलपन समझा जाता था कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, आज यह कि अतीत अपरिवर्तनीय है।

उसने बच्चों के इतिहास की पुस्तक उठा ली। उसके मुखपृष्ठ पर बड़े भाई का चित्र था। वे सम्मोहनात्मक आंखें उसकी आंखों में घूर रही थीं। ऐसा लगता था कि कोई ज़बरदस्त बोझा आपके सिर पर लदा था। आपकी खोपड़ी में वह बोझा घुसा जा रहा है। आपके विश्वासों को वह

छिन्न-भिन्न किए दे रहा है। वह आपको अपना सारा विवेक खो देने के लिए बाध्य कर रहा है। अन्त में पार्टी आपसे कहेगी — दो और दो पांच होते हैं और आपको मानना पड़ेगा। अपने अनुभव को मत मानो। पार्टी का दर्शन था बाहरी असलियत कुछ नहीं है। सामान्य विवेक का होना अपराध है। आख़िर आप कैसे जानते हैं कि दो और दो चार होते हैं? या गुरुत्वाकर्षण शक्ति काम करती है? या अतीत अपरिवर्तनीय है?

पार्टी का कहना था कि आंखों और कानों का सबूत मत मानो। सहसा उसका दिल डूबने लगा। उसने अनुभव किया कि वह पार्टी की अपार शक्ति के आगे कुछ नहीं कर सकेगा। बहस में पार्टी के बुद्धिवादी सदस्य ऐसे तर्क देंगे जिनका उत्तर देना तो दूर, वह उनको समझ भी नहीं सकेगा। फिर भी उसका पक्ष सही है। वे ग़लत हैं और वह सही। सत्य की रक्षा करनी होगी। भौतिक संसार का अस्तित्व है उसके क़ानून नहीं बदलते। पत्थर कठोर होते हैं। पानी गीला होता है। जो चीजें किसी सहारे से नहीं टिकी होतीं वे नीचे गिर जाती हैं। यह सोचते हुए विन्स्टन ने अपनी कॉपी में लिखा :

दो और दो चार होते हैं, यह कहने का अधिकार ही स्वतन्त्रता है। यदि यह अधिकार मिल जाता है तो और सब चीजें मिल जाएंगी।

विन्स्टन सड़क पर जा रहा था, तभी उसके नासापुटों में कहीं भुन रही कॉफ़ी की ख़ुशबू — असली कॉफ़ी की, विक्टरी कॉफ़ी की नहीं, तैरती हुई घुस गई। विन्स्टन अनिच्छापूर्वक ठिठक-सा गया। कुछ क्षणों के लिए वह उड़कर अपने शैशव के अर्धविस्मृत संसार में पहुंच गया। इसके बाद दरवाज़ा बन्द होने की आवाज़ आई। इसके साथ ही जिस प्रकार सहसा ख़ुशबू आई थी, उसी प्रकार वह खो भी गई।

वह फुटपाथ पर शायद कई मील टहलता चला गया। टखने का फोड़ा दर्द से लप-लप करने लगा था। तीन सप्ताह में दूसरी बार वह सामुदायिक केन्द्र नहीं गया था। यह बड़ी ही लापरवाही थी, क्योंकि केन्द्र की उपस्थिति

पर सरकार की दृष्टि रहती थी। सिद्धान्ततः पार्टी के सदस्य का कोई वक़्त ख़ाली नहीं होता था। वह बिस्तर के अलावा अन्यत्र कहीं एकान्त में नहीं होता था। यह मान लिया गया था कि जब वह खा-पी नहीं रहा होगा, या काम पर नहीं जुटा होगा, उस समय वह किसी-न-किसी सामुदायिक मनोरंजन में भाग ले रहा होगा। कोई भी ऐसा काम जिससे यह प्रकट हो कि आप एकान्त चाहते हैं, ख़तरनाक था। परन्तु आज जब वह मन्त्रालय से निकला तो उसे लगा कि अप्रैल की एक शाम की यह हवा सारे कष्टों को हर लेनेवाली है और उसकी तबीयत घूमने को हो आई। आकाश आज अधिक स्वच्छ था और मौसम की गरमी विश्रामदायी थी। इतना अच्छा मौसम उसने वर्ष-भर अनुभव नहीं किया था। इस मौक़े पर सामुदायिक केन्द्र के शोर भरे वातावरण में कई घंटे बिताना उसे बड़ा कठिन लगा। वहां उबा देने तथा थका देनेवाले खेल, व्याख्यान, शराब के गिलासों से मुंह लगाकर कॉमरेडों से बातचीत करना उसे जंचा नहीं। बिना सोचे वह बस स्टॉप से आगे चल दिया और लन्दन के इस भाग में चला गया। उसने अपने-आप को पैरों के हवाले कर दिया था। जिधर वे ले जा रहे थे, उधर ही वह जा रहा था। उसे दिशा की चिन्ता नहीं थी।

वह इस समय उत्तरी लन्दन की गन्दी बस्तियों में था। वह स्थान वहां था जहां कभी सेंट पैंक्रास स्टेशन था। वह दुमंज़िले मकानवाली गड्ढेदार सड़क पर चल रहा था। यहां चूहों के बिल भी थे। इधर-उधर गन्दे पानी के खड्ढे थे। इधर-उधर के मकानों में अनगिनत आदमी भरे थे। युवतियां थीं। जिनके होंठों पर लिपस्टिक पुती थी। लड़के थे जो उनका पीछा कर रहे थे। सूजे मुंह की औरतें थीं जो याद दिलाती थीं कि दस वर्ष में ये सारी लड़कियां भी उन्हीं की तरह हो जाएंगी। बुड्ढे कमर झुकाए इधर-उधर आ-जा रहे थे। बच्चे नंगे पैर खेल रहे थे, और उन पर उनकी माताएं चिल्ला रही थीं। एक-चौथाई मकानों की खिड़कियों में शीशे नहीं थे और उनमें दफ्तियां लगी थीं। अधिकांश लोगों ने विन्स्टन की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। कुछ ने विन्स्टन पर अपने-आप को बचाते हुए नज़र डाली। उनकी निगाहों में जिज्ञासा थी। इस सड़क पर पार्टी की नीली वर्दी साधारण बात नहीं थी। पुलिस के गश्ती दस्ते रोक सकते थे। 'क्या

हम आपके काग़ज़ देख सकते हैं कॉमरेड? आप यहां क्या कर रहे हैं? आपने दफ़्तर कब छोड़ा? क्या यह आपके घर जाने का रास्ता है?' — आदि-आदि। ऐसा कोई नियम नहीं था कि आप असामान्य मार्गों से होकर न गुज़रें, परन्तु विचार नियन्त्रक पुलिस को पता चल जाए तो वह आप पर निगाह रखने लगेगी।

अचानक पूरी सड़क में हलचल मच गई। चारों तरफ़ से चेतावनी दी जाने लगी। सब लोग मकानों के अन्दर दौड़ते हुए खरगोशों की भांति घुसने लगे। एक जवान औरत विन्स्टन के सामने कूदकर सड़क पर आई और बाहर खेलते हुए बच्चे को घसीटकर फिर दरवाज़े के अन्दर घुस गई। उसने अपनी छाती पर पड़े एप्रन में बच्चे को लपेट लिया था। यह सब आंख झपकते हो गया। इसी समय काला सूट पहने एक आदमी बग़ल की गली से दौड़ता हुआ विन्स्टन की ओर आया और आकाश की ओर संकेत करने लगा।

"स्टीमर!" उसने चिल्लाते हुए कहा, "देखिए! तुरन्त मुंह के बल लेट जाइए।"

रॉकेट बमों को कुछ लोग स्टीमर कहते थे। विन्स्टन तुरन्त मुंह के बल लेट गया। मज़दूर जब भी ऐसी चेतावनी देते थे तो उनकी आशंका हमेशा सही होती थी। उन्हें पता नहीं कैसे, रॉकेट बमों के आने की ख़बर कुछ सेकेंड पहले ही लग जाती थी। कहा यह जाता था कि रॉकेट आवाज़ से भी अधिक तेज़ चलते थे। एकाएक ज़ोरों का शोर हुआ और फुटपाथ तथा सड़क कांपने लगी। कुछ चूरा-सा बरसकर उसकी पीठ पर गिर पड़ा। जब वह उठा तो उसे लगा कि पास की खिड़की का शीशा चूर-चूर हो गया और उसी का चूरा उसकी पीठ पर गिरा है। यह शीशा खिड़की में लगा था।

वह चलता रहा। आगे दो सौ मीटर की दूरी पर सड़क के आस-पास के मकानों को बम ने नष्ट कर दिया था। आकाश में काले धुएं का बादल-सा बन गया था और पास मलबा पड़ा था जिसके चारों ओर आदमी खड़े थे। मलबे में दबी उसे रक्त से लथपथ एक कोई लम्बी चीज़ दिखलाई

पड़ी। ध्यान से देखने पर पता चला कि यह किसी आदमी का हाथ है जो कलाई से कट गया था। हाथ इतना सफ़ेद हो गया था कि उसकी तुलना सफ़ेद प्लास्टर से की जा सकती थी। भीड़ से बचने को वह दाहिनी तरफ़ की एक गली में घुस गया। तीन-चार मिनट में वह उस क्षेत्र से बाहर आ गया जहां बम गिरा था। दूसरी सड़क पर सारा काम इस तरह हो रहा था जैसे बग़ल में कहीं कोई दुर्घटना हुई ही न हो। क़रीब बीस बजे (रात के आठ बजे) थे। मज़दूरों की भीड़ शराबख़ानों में जमा थी। उन गन्दे दरवाज़ों में से, जो अनगिनत बार खुल और बन्द हो रहे थे, पेशाब, लकड़ी के बुरादे और शराब की खट्टी महक आ रही थी। बाहर की तरफ़ निकले मकान के छज्जे पर एक आदमी अखबार पढ़ रहा था और दो आदमी उसके दोनों कन्धों की तरफ़ से अख़बार पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। वे पढ़ने में व्यस्त थे। शायद कोई बड़ा गम्भीर समाचार पढ़ रहे थे। अभी वह उनसे कुछ दूर था कि तीन में से दो में झगड़ा होने लगा। ऐसा लगा कि मारपीट हो जाएगी।

"मैं कह रहा हूं जिसके बाद सात का अंक होता है, ऐसा कोई नम्बर पिछले चौदह महीने से नहीं जीता है।"

"हां, एक सात अंकवाला जीता है। मैं तुम्हें संख्या भी बता दूंगा। चार शून्य सात। फरवरी में, फरवरी के दूसरे सप्ताह में।"

"फरवरी में, क्या बात करते हो? मैंने सब लिख छोड़ा है। और मैं कहता हूं कि कोई भी ऐसी संख्या...'

"ओह, बन्द करो यह बकवास!" तीसरे आदमी ने कहा।

वे लॉटरी की बात कर रहे थे। हर सप्ताह लॉटरी में एक लम्बी रकम दी जाती थी। इसमें मज़दूर बहुत रुचि लेते थे। ऐसे करोड़ों मज़दूर थे जिनके लिए जीवन का यदि सारा नहीं तो प्रमुख आकर्षण लॉटरी था। बहुत-से लोग केवल भविष्यवाणी करके और लॉटरी बेचकर अपनी जीविका कमाते थे। यह काम समृद्धि मन्त्रालय का था और विन्स्टन का इससे कोई सम्बन्ध नहीं था। परन्तु वह जानता था कि लॉटरी का पुरस्कार कल्पना-मात्र था। वही क्या पार्टी का हर आदमी जानता था। केवल छोटी-छोटी रक़में

दी जाती थीं। बड़ी रक़मों को पानेवाले तो कल्पित व्यक्ति होते थे।

अब वह जिस गली में था, वह मुड़कर पहाड़ी के नीचे चली गई थी। उसे ख़याल आ रहा था कि वह आसपास कहीं आ चका है और अब मुख्य मार्ग दूर नहीं है। तभी कुछ लोगों के चिल्लाने की आवाज़ आई। वह सीढ़ियों के क़रीब-क़रीब था जिनके नीचे कुछ दुकानदार बासी सब्जी बेच रहे थे। तब विन्स्टन को याद आया कि वह कहां है। यह गली मुख्य सड़क से मिलती थी। और मुख्य सड़क पर आकर पांच मिनट से भी कम चलने पर उस कबाड़ी की दुकान आती थीं जहां से उसने कॉपी ख़रीदी थी। उसी दुकान के कुछ आगे से उसने क़लम और स्याही की बोतल ख़रीदी थी।

वह एक क्षण सीढ़ियों पर ठिठककर खड़ा हो गया और सोचने लगा। गली के दूसरी ओर शराब की दुकान थी जिसकी खिड़कियों पर धूल जमी थीं। उसने जल्दी-जल्दी गली पार की।

तभी उसके विचारों का क्रम-भंग हो गया। वह रुक गया और इधर-उधर देखने लगा। वह एक तंग गली में था। इधर-उधर कुछ अंधेरी दुकानें और मकान थे। उसके सिर पर धातु के तीन गोले टंगे थे। उन पर ऐसा लगता था कि मुलम्मा किया हुआ था। उसे ख़याल आया कि वह कहां पर था। यह वही दुकान थी जहां से उसने कॉपी ख़रीदी थी।

उसकी नस-नस में डर समा गया। उसने कॉपी ख़रीदकर ही कोई कम अपराध नहीं किया था। उसने कसम खाई थी कि अब वह इस दुकान के पास कभी नहीं आएगा। परन्तु वह विचारों में खोया यहां चला आया था। हालांकि इक्कीस (रात के नौ) बजे थे, परन्तु दुकान अब भी खुली थी। उसने सोचा कि उसकी तरफ़ बाहर फुटपाथ पर लोगों का ध्यान दुकान के अन्दर रहने से अधिक आकृष्ट होगा। यह सोचते हुए वह अन्दर घुस गया। पूछे जाने पर वह कह सकता था कि रेज़र ब्लेड लेने आया था।

दुकानदार ने टंगा हुआ तेल का लैम्प जला दिया था। रोशनी साफ़ नहीं थी। दुकानदार की उमर साठ साल थी। वह दुर्बल था, और उसकी कमर झुक गई थी। नाक लम्बी थी। उसके बाल सफ़ेद हो गए थे, भौंहें अब भी खिचड़ी थीं। उसका चश्मा, चलने का ढंग तथा उसकी मखमल

की जैकट से अन्दाज़ होता था कि वह पढ़ना-लिखना भी जानता था। शायद वह साहित्यिक रहा था या संगीतकार। उसकी आवाज़ कोमल थी। उसका उच्चारण भी अन्य मज़दूरों की अपेक्षा साफ़ था।

दुकानदार ने घुसते ही कहा, "मैंने आपको फुटपाथ पर ही पहचान लिया था। आपने ही तो चिकने काग़ज़ की वह कॉपी ख़रीदी थी। वैसा काग़ज़ — ओह, वैसा काग़ज़ तो अब पिछले पचास वर्ष से नहीं बना है।" इसके बाद चश्मे के ऊपर से देखते हुए उसने कहा, "क्या मैं आपकी कोई विशेष सेवा कर सकता हूं? या आप वैसे ही घूमते-घूमते चले आए हैं?"

विन्स्टन ने टालते हुए कहा, "मैं इधर से गुजर रहा था। अन्दर चला आया। कोई खास चीज़ तो नहीं चाहता।"

"ठीक है।" दुकानदार ने कहा, "मैं नहीं समझता कि मैं आपकी ज़रूरत पूरी कर पाऊंगा। देखिए न! दुकान खाली पड़ी है। मैं आपको बताता हूं, अब यह व्यापार ही ख़त्म हो जानेवाला है। कोई मांग नहीं है और स्टॉक भी नहीं है। फ़र्नीचर और चीनी के बर्तन और कांच की चीज़ें, सब धीरे-धीरे टूट गई हैं। धातु की चीजें भी गला दी गई हैं। बरसों हो गए मैंने पीतल का कैंडल-स्टैंड नहीं देखा।"

वह छोटी दुकान अब भी भरी थी किन्तु एक भी मूल्यवान वस्तु उसमें नहीं थी। चलने-फिरने को भी बहुत कम जगह थी। तस्वीरों के काठ के फ्रेम भरे पड़े थे। इन पर बड़ी धूल जमी थी। इधर-उधर नटों और बोल्टों की ट्रे पड़ी थीं। पुराने चाकू तथा कुछ अन्य औज़ार पड़े थे। टूटी घड़ियां थीं। इसी तरह का और भी कूड़ा-करकट भरा पड़ा था। एक मेज़ पर कुछ और चीज़ें थीं। सुनहले काम का सुंघनीदान, खुले डिब्बे तथा अन्य ऐसी चीज़ें। विन्स्टन ने उस मेज़ की तरफ़ जाते हुए एक गोल, चिकनी तथा चमकती हुई चीज़ देखी। उसने उसे उठा लिया।

यह कांच का टुकड़ा था — एक तरफ़ मुड़ा हुआ और दूसरी तरफ़ चौरस, बिलकुल अर्धवृत्ताकार लगता था। इसमें अजीब-सी कोमलता थी। ऐसी कोमलता जैसी वर्षा के जल में होती है। कांच बनाने की विधि और उसके रंग दोनों से यही बात प्रकट होती है। उसके बीच में अजीब-सा

गुलाबी धब्बा था जो कांच के अर्धवृत्ताकार होने के कारण बड़ा-सा दिखलाई पड़ता था। यह धब्बा देखकर उसे गुलाब के फूल या समुद्री हवा निरीक्षण यन्त्र की याद आ गई।

"यह क्या है?" विन्स्टन ने खुश होते हुए पूछा।

"यह मूंगा है। भारतीय महासागर में मिला होगा। मूंगों को पहले लोग इस तरह के कांच में रखते थे। ये सौ वर्ष या इससे भी अधिक पुराना होगा।"

"बड़ा सुन्दर है।" विन्स्टन ने कहा।

"बड़ा सुन्दर है।" दुकानदार ने भी प्रशंसा करते हुए कहा, "लेकिन आजकल ऐसी चीज़ों की तारीफ़ करनेवाले हैं ही कहां?" उसने खोलते हुए कहा, "चूंकि आपको पसन्द आ गया है और आप इसे खरीदना चाहेंगे, इसलिए मैं चार डॉलर में ही आपको दे दूंगा। एक ज़माना था, जब इसके आठ पौंड मिल जाते थे। आजकल ऐसी चीज़ों की भी परवाह कौन करता है?"

विन्स्टन ने तुरन्त चार डॉलर देकर कांच-मूंगे को जेब में रख लिया। विन्स्टन उसके सौन्दर्य में इतना प्रभावित नहीं हुआ था जितना कि इस बात से कि वह उस बीते हुए युग की यादगार है, जिसके बारे में वह जानने को इतना अधिक उत्सुक है। उसके आकर्षण का एक कारण यह भी था कि उसका कोई उपयोग न था। परन्तु जिस ज़माने में यह बनाया गया होगा, उस ज़माने में अवश्य ही यह काग़ज़ दबाने के काम आता होगा, यह अनुमान उसने लगा लिया था। वह भारी तो काफ़ी था, किन्तु सौभाग्यवश उसकी तेज़ ज़रूरत से ज़्यादा फूली नहीं दिखलाई पड़ रही थी। ऐसी चीज़ का किसी पार्टी सदस्य के पास मिलना सन्देहजनक था। वही क्या, कोई भी पुरानी तथा उपयोगिताहीन वस्तु का होना सन्देह का कारण बन सकता था। बुड्ढा दुकानदार चार डॉलर पाकर बहुत खुश हो गया था। वह तीन या शायद दो डॉलर भी इस चीज़ के स्वीकार कर लेता।

"ऊपर एक और कमरा है। यदि आप देखना चाहें तो मैं रोशनी कर दूं।" दुकानदार ने कहा, "उसमें अधिक समान तो नहीं है। कुछ चीज़ें हैं।"

उसने दूसरा लैम्प जला लिया और कमर झुकाए सीधी ऊपर जानेवाली सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। जीना पुराना था। पतले-से रास्ते से होकर विन्स्टन भी दुकानदार के पीछे-पीछे ऊपर चला। कमरे का दरवाज़ा सड़क की तरफ़ न होकर उलटी तरफ़ एक हाते के सामने था। कमरे में फ़र्नीचर लगा था, जैसे कोई अब भी रहता हो। ज़मीन में गलीचे का टुकड़ा बिछा था। दीवार पर एक-दो तस्वीरें टंगी थीं। आतिशदान के पास एक आरामकुर्सी भी पड़ी थी। पुराने ढंग की घड़ी, जिसमें 12 तक ही अंक लिखे थे, टिक-टिक कर रही थी। खिड़की के नीचे गद्देदार पलंग था जिस पर उस समय भी बिस्तर बिछा हुआ था। यह पलंग कमरे का एक-चौथाई हिस्सा घेरे था।

वृद्ध दुकानदार ने कहा, "पत्नी के मरने तक हम लोग यहीं रहते थे। अब मैं धीरे-धीरे फ़र्नीचर बेच रहा हूं। वह पलंग बड़ा ख़ूबसूरत है, परन्तु शर्त यही है कि आप इसके खटमल पहले नष्ट कर दें। यह भारी भी बहुत है।"

वह लैम्प ऊंचा उठाए था, जिससे पूरा कमरा प्रकाशमान रहे। उस प्रकाश में वह कमरा बड़ा आकर्षक प्रतीत हो रहा था। विन्स्टन के दिमाग़ में सहसा यह बात आई कि कमरा कुछ डॉलर प्रति सप्ताह किराये पर लिया जा सकता है। शर्त यही है कि वह ऐसा ख़तरा उठाने को तैयार हो जाए। यह बहुत ही ख़तरनाक विचार था और इसे दिमाग़ से तुरन्त निकाल दिया जाना ही उचित है। फिर भी उसके मस्तिष्क में अपने पूर्व-संस्कारवश कुछ यादें जाग उठीं। इस कमरे में बैठने पर उसे ऐसा लगा कि वह बड़ा आराम अनुभव करेगा। वह सोच रहा था, 'वह आतिशदान के समीप पड़ी आरामकुर्सी पर बैठा होगा। आग पर चाय का पानी केटली में उबल रहा होगा। वह बिलकुल एकान्त में होगा। बिलकुल सुरक्षित। उसे कोई देख नहीं रहा होगा। कोई आवाज़ पीछा नहीं कर रही होगी। कोई शोर नहीं होगा। गुनगुनाती हुई केटली तथा घड़ी की टिक्-टिक् के अलावा और कोई आवाज़ तक न होगी।' उसके मुंह से निकल गया :

"यहां टेलीस्क्रीन नहीं है?"

"आह!" दुकानदार ने कहा, "मैंने ऐसी कोई चीज़ नहीं लगवाई। बहुत ख़र्च पड़ता है। और फिर मुझे इसकी ज़रूरत भी महसूस नहीं हुई। एक छोटी मेज़ है, परन्तु इसका उपयोग करने के लिए आपको कुछ कंकड़ नीचे लगाने होंगे।"

दूसरे कोने में किताबों की एक छोटी-सी आलमारी थी। उसमें रद्दी के अलावा कुछ नहीं था। मजदूरों के मोहल्लों में भी किताबों को खोजकर उसी प्रकार नष्ट किया गया था जिस प्रकार अन्य स्थानों पर। ओशनिया-भर में सन् 1960 से पहले प्रकाशित किसी भी पुस्तक की प्रति मिलनी कठिन थी। पलंग के सामने तथा आतिशदान के दूसरी ओर रोज़वुड के फ्रेम में जड़ी हुई तस्वीर के सामने बुड्ढा लैम्प लिए हुए खड़ा था।

"और अब यदि आप पुरानी क़िस्म की तस्वीरों में रुचि रखते हों तो —" दुकानदार ने कहा।

विन्स्टन पास आ गया और तसवीर देखने लगा। एक अंडाकार भवन था जो लोहे से उभारा गया था। इस इमारत की खिड़कियां चौकोर थीं, इमारत के सामने मीनार थी, इसके चारों ओर रेलिंग भी थीं। पीछे की तरफ़ एक मूर्ति भी थी। विन्स्टन कुछ देर इसे देखता रहा। उसे मूर्ति देखकर ख़याल आया कि उसने ऐसी कोई चीज़ देखी अवश्य है, परन्तु स्पष्ट रूप से कुछ भी याद न आया।

"इस तसवीर का फ्रेम दीवार में जड़ा है। लेकिन आप चाहेंगे तो मैं इसे निकाल दूंगा," बुड्ढे ने कहा।

"मैं इस इमारत को पहचानता हूं," विन्स्टन ने कहा, "यह इमारत 'न्याय भवन' के सामने की सड़क के बीचोबीच थी। अब तो केवल खंडहर-मात्र रह गया है।"

"बिलकुल ठीक है। अदालती इमारत के बाहर। इस पर बम गिराए गए थे... सन्... ओह! वर्षों पूर्व। यह चर्च था। इस चर्च का नाम सेंट क्लीमेंट्स डेन था।" वह थोड़ी क्षमा-सी मांगता हुआ मुस्कुराया। उसे लगा कि वह कोई हास्यास्पद-सी बात कह रहा है।

विन्स्टन सोचने लगा, यह चर्च किस शताब्दी में निर्मित हुआ होगा। लन्दन की किसी भी इमारत की प्राचीनता का निश्चय करना बड़ा कठिन होगा। कोई बड़ी आकर्षक इमारत हो, और वह नई-सी दिखलाई पड़ती हो, बस उसी के लिए कह दिया जाता था कि यह क्रान्ति के बाद बनाई गई है। पुरानी इमारतों को मध्ययुग की कह दिया जाता है। शताब्दियों के पूंजीवाद से कोई भी लाभ नहीं हुआ था। और न कोई जनोपयोगी चीज़ ही इस पूंजीवादी युग में बनी थी। वास्तुकला से भी इतिहास का ज्ञान प्राप्त करना उतना ही असम्भव था जितना इतिहास से। मूर्तियां, शिलालेख, यादगारी पत्थर तथा सड़कों के नाम वगैरह सब इस तरह बदल दिए गए थे कि बीते दिनों के बारे में कुछ भी नहीं जाना जा सकता था। यह सब काम बहत ही व्यवस्थित ढंग से किया गया था।

"मुझे यह भी नहीं मालूम हो सका कि यह चर्च था," उसने कहा।

"बहुत-से चर्च अब भी हैं," वृद्ध ने कहा, "परन्तु इनको अब दूसरे कामों में लाया जा रहा है।"

सेंट मार्टिन्स अब भी है। वह विक्टरी स्क्वायर में है। तसवीरों की जो गैलरी है, उसी के बराबर है। इस भवन में प्रवेश-द्वार का बरामदा तिकोना है। इसके सामने खम्भे हैं। बड़ी-बड़ी सीढ़ियां हैं।

विन्स्टन इस जगह को अच्छी तरह जानता था। यह अब अजायबघर था। इसमें अब प्रचार की वस्तुएं रखी जाती थीं। — रॉकेट बमों के नमूने, तैरते क़िलों के नमूने, शत्रु के अत्याचारों के मोम से बनाए गए नमूने आदि।

विन्स्टन ने वह तसवीर नहीं ख़रीदी। कांच के पेपरवेट से भी अधिक इस तसवीर का पास होना अधिक ख़तरनाक था। घर तो उसे ले ही नहीं जाया जा सकता था। यह तभी सम्भव था, जब तसवीर को फ्रेम से निकाल लिया जाता। परन्तु वह कुछ मिनट और खड़ा रहा। इस बीच उसने वृद्ध से और बातें कीं। उसे पता लगा कि बुड्ढे का नाम वीक्स नहीं था, जैसा कि दुकान के सामने लगे बोर्ड से प्रतीत होता था। उसका नाम चारिंगटन था। वह तीस साल से यह दुकान चला रहा था। वह बोर्ड पर लिखे नाम

को इस बीच बराबर हटाने की सोच रहा था, लेकिन वह यह कर नहीं पाया था।

वह मि॰ चारिंगटन से विदा लेकर चल दिया। सीढ़ियों से वह अकेला ही उतरा जिससे वृद्ध उसे सड़क पर जाते न देख पाए। उसने निश्चय किया था कि उचित समय, लगभग एक महीने बाद वह फिर दुकान पर आएगा। तब फिर एक दिन सामुदायिक केन्द्र न जाने के कारण किसी को सन्देह न होगा। सबसे बड़ी ग़लती उससे यह हुई थी कि वह डायरी खरीदने के बाद फिर यहां चला आया था और यह जानने का भी उसने प्रयत्न नहीं किया कि इस दुकानदार का विश्वास भी किया जा सकता है या नहीं। फिर भी —

हां, उसने फिर सोचा, वह यहां दुबारा आएगा। वह कुछ और चीज़ें ख़रीदेगा। वह सेंट क्लीमेंट डेन की उभरी हुई तसवीर लेगा, वह उसे अपनी पोशाक में छिपाकर घर ले जाएगा। ऊपर का कमरा किराये पर ले लेने की पागलपन-भरी बात फिर उसके दिमाग़ में आई। पांच सेकेंड के लिए वह अपने विचारों में इतना मगन हो गया कि फुटपाथ से सड़क पर उतर आया।

सहसा उसका ख़ून बर्फ़ की तरह जम गया। उसके पेट में पानी-पानी हो गया। कोई दस मीटर की दूरी पर एक आदमी नीली वर्दी में उसके पीछे-पीछे आ रहा था। वह वही कथा-विभाग की लड़की थी जिसके बाल घने और गहरे काले थे। अंधेरा हो रहा था। फिर भी उसे पहचानने में विन्स्टन ने कोई भूल नहीं की। लड़की ने सीधे उसके चेहरे की तरफ़ देखा। इसके बाद वह ऐसे चली गई जैसे उसने विन्स्टन को देखा ही नहीं।

कुछ क्षण के लिए विन्स्टन को ऐसे ख़याल हो आया जैसे उसे लकवा मार गया हो और वह चलने में बिलकुल असमर्थ हो। इसके बाद वह दाहिनी ओर मुड़ गया और भारी कदमों से आगे बढ़ गया। उसे इस बात का ध्यान भी नहीं आया कि वह ग़लत रास्ते पर जा रहा है। अब एक बात स्पष्ट हो गई थी कि वह लड़की उसके पीछे लगी जासूसी कर रही है। अवश्य ही उस लड़की ने विन्स्टन का पीछा किया था अन्यथा इतनी

दूर, पार्टी-सदस्यों के रहने के स्थान से इतनी दूर, इस अंधेरी गली में संयोगवश ही कोई नहीं आ सकता था। वह विचार-पुलिस की एजेंट है या शौकिया जासूसी कर रही है, इससे कोई ख़ास मतलब नहीं था। इतना काफ़ी था कि वह उस पर निगाह रखे है।

गली में घटाटोप अंधेरा छाया था। विन्स्टन ठहर गया और कई सेकेंड खड़ा सोचता रहा कि क्या करे। इसके बाद मुड़कर पीछे की तरफ़ चल दिया। मुड़ते ही उसे ख़याल आया कि वह लड़की उससे तीन मिनट पहले ही उस रास्ते से गुज़री है और यदि वह दौड़े तो उसे पकड़ सकता है। वह उसके पीछे-पीछे चलता रहेगा और कोई अंधेरी जगह आते ही किसी पत्थर से उसका सिर फोड़कर हत्या कर देगा। लेकिन शीघ्र ही उसे अपने इस विचार का परित्याग कर देना पड़ा। वह कोई शारीरिक श्रम की बात भी नहीं सोच सकता था। शारीरिक श्रम का विचार भी असहनीय था। इसके अतिरिक्त वह स्त्री कामुक प्रतीत होती थी, साथ ही तरुणी भी थी। अतएव वह आत्मरक्षा की भरसक चेष्टा करेगी। उसने सोचा कि वह भागता हुआ सामुदायिक केन्द्र चला जाए और जब तक वह बन्द नहीं हो तब तक वहां रहे जिससे उसे कम-से-कम आंशिक साक्ष्य तो मिल जाएगा। परन्तु यह भी असम्भव था। एक अजीब निष्क्रियता-सी उस पर छा गई थी। वह जल्द-से-जल्द घर पहुंच जाना चाहता था और एकान्त में पहुंचकर सोचना चाहता था।

जब वह अपने फ़्लैट पर पहुंचा तो बाईस (रात के दस) बज चुके थे। रोशनी साढ़े तेईस (साढ़े ग्यारह) बजे बुझा दी जाएगी। वह रसोई में गया और उसने एक चाय की प्याली भरकर शराब पी। इसके बाद कोने की मेज़ पर जाकर बैठ गया। उसने डायरी निकाल ली। परन्तु एकदम उसे खोला नहीं। टेलीस्क्रीन से कोई नारी-कंठ पतली आवाज़ में कोई देशभक्ति का गीत गा रहा था। वह संगमरमर की डिजाइन के कॉपी के कवर को एकटक देखता रहा। वह कोशिश कर रहा था कि टेलीस्क्रीन की आवाज़ उसके दिमाग़ से निकल जाए और उससे वह तंग न हो।

वे लोग रात को गिरफ़्तार करते थे। उचित यह होता है — वे पकड़ें, उसके पूर्व ही आत्महत्या कर ली जाए। निस्सन्देह कुछ लोग ऐसा ही करते

थे। बहुत-से लोग तो आत्महत्या के कारण ही लापता हो जाते थे। परन्तु आत्महत्या करना भी कठिन था। क्योंकि किसी भी प्रकार का हथियार या ज़हर मिलना बिलकुल असम्भव था।

उसने डायरी खोली, यह ज़रूरी हो गया था कि कुछ लिखा जाए। टेलीस्क्रीन पर गानेवाली स्त्री अब कोई दूसरा गीत गाने लगी थी। उसकी आवाज़ सिर पर ऐसे लग रही थी जैसे दिमाग़ में कांच के टुकड़े घुसे जा रहे थे। हां, उसने ओ'ब्रायन के सम्बन्ध में सोचने का प्रयत्न किया, जिसके लिए वह डायरी लिख रहा था। परन्तु कुछ भी लिखने की बजाय वह यह सोचने लगा कि विचार-पुलिस जब उसे पकड़ ले जाएगी, तब उसका क्या होगा? यदि वे पकड़ते ही मार डालें तो ज़्यादा चिन्ता की बात नहीं थी। मरना है — यह तो गिरफ़्तार होते ही आदमी सोच लेता था। लेकिन मरने के पहले इक़बाली बयान का झंझट था। ज़मीन पर लोट-लोटकर दया की भीख मांगनी पड़ती थी। टूटी हड्डियां चटखती थीं। टूटे दांत दुखते थे और जहां से सिर के बाल उखाड़ लिए जाते थे, वहां ख़ून बहने के बाद जम जाता था और वह हिस्सा बुरी तरह दुखता था। यदि मरना ही है तो यह सब कष्ट क्यों? अपने जीवन के कुछ दिन या सप्ताह क्यों और कम न कर लिए जाएं? जासूसों की नज़र से कोई भी नहीं बचा था और कोई भी ऐसा नहीं था जिसने अपने गुनाहों का इक़बाल न किया हो। एक बार मानसिक अपराध करने के बाद फिर यह निश्चित हो जाता था कि अमुक तारीख तक आप मार डाले जाएंगे। फिर भी यह भय, आतंक, जो कुछ भी नहीं बदल सकता था, भविष्य के गर्भ में क्यों छिपा था?

उसने पहले की अपेक्षा अधिक सफलता से ओ'ब्रायन की कल्पना कर ली। ओ'ब्रायन ने उससे क्या नहीं कहा था : 'अब हम वहां मिलेंगे जहां बिलकुल अंधेरा न होगा।' वह जानता था कि इसका क्या मतलब था या उसका ख़याल था कि वह इसका मतलब समझता था। परन्तु टेलीस्क्रीन से धिक्कार की भांति निकलनेवाली आवाज़ ने उसे आगे नहीं सोचने दिया।

स वेरे का वक़्त था। कोई दस या ग्यारह बजे होंगे। विन्स्टन अपने दफ़्तर के कमरे से शौचालय जाने के लिए बाहर निकला। बरामदा रोशनी से जगमगा रहा था। सामने की ओर से एक व्यक्ति आता हुआ विन्स्टन को दिखलाई दिया। कुछ और पास आने पर विन्स्टन ने देखा कि आनेवाला व्यक्ति कोई और नहीं वही लड़की थी। कबाड़ी की दुकान के पास रात के अंधेरे में उनकी मुलाकात हुए चार दिन बीत चुके थे। और पास आने पर विन्स्टन ने देखा कि लड़की के हाथ में पट्टी बंधी है और वह पट्टी उसके गले में भी लटकी है। दूर से यह पट्टी इसलिए नहीं दिखलाई पड़ रही थी क्योंकि पट्टी के कपड़े का रंग भी वही था जो उसकी वर्दी का था। सम्भवतः, उसका हाथ उपन्यासों के कथानक तैयार करनेवाली मशीन में आ गया था। गल्प विभाग में इस तरह की दुर्घटना बहुधा हो जाया करती थी।

उन दोनों के बीच की दूरी कोई चार मीटर थी, जब सहसा लड़की ठोकर खाकर मुंह के बल गिर पड़ी। उसके मुंह से एक दर्दभरी चीख निकल गई। अवश्य ही वह अपने घायल हाथ के बल गिरी होगी। विन्स्टन उसके पास पहुंचकर रुक गया। अब वह घुटनों के सहारे उठ बैठी थी। उसका चेहरा एकदम पीला पड़ गया था। परन्तु मुंह के आसपास का भाग रोज़ाना की अपेक्षा कहीं अधिक लाल था। वह एकटक उसकी तरफ़ देख रही थी। लड़की की निगाह में दर्द से अधिक डर था।

विन्स्टन के हृदय में अजब-सा भाव उत्पन्न हुआ। उसके सामने वह दुश्मन था जो उसे मार डालना चाहता था। उसके सामने एक मानव था जो पीड़ाग्रस्त था और जिसके हाथ की हड्डी भी शायद टूट गई थी। वह ख़ुद उसकी सहायता के लिए आगे बढ़ चुका था। उसे टूटे हाथ के बल गिर जाने पर विन्स्टन को ऐसा लगा जैसे स्वयं उसका अंग दुख उठा है।

"क्या चोट लग गई?" उसने पूछा।

"कुछ नहीं! मेरा हाथ थोड़ी देर में ठीक हो जाएगा।"

वह ऐसे बोल रही थी जैसे उसका दिल बड़ी तेज़ी से धड़क रहा हो।

"कोई हड्डी और तो नहीं टूट गई?"

"नहीं, मैं ठीक हूं। थोड़ी देर के लिए बड़ा तेज़ दर्द हुआ था।"

जो हाथ ठीक था, वह उसने बढ़ा दिया। विन्स्टन ने उसका हाथ पकड़कर खड़े होने में मदद की। वह अब नॉर्मल हो रही थी और पहले से ठीक लग रही थी।

"कोई ख़ास बात नहीं हुई, उसने बात ख़त्म करते हुए कहा, "कलाई में लग गई है। धन्यवाद कॉमरेड।" इसके बाद वह उसी दिशा में बढ़ गई जिस तरफ़ उसे जाना था। उसके चलने की गति से कोई यह अन्दाज़ भी नहीं लगा सकता था कि अभी-अभी कुछ हुआ भी था। पूरे कांड में कोई आधे मिनट से अधिक समय नहीं लगा था। अपने भावों को चेहरे पर न आने देने की उनकी स्वाभाविक आदत पड़ गई थी और इस समय तो वे बिलकुल टेलीस्क्रीन के सामने खड़े थे। परन्तु इतने पर भी क्षण-भर के लिए ही सही, आश्चर्य का भाव उनके चेहरे पर अवश्य आया था। उन दो या तीन सेकेंडों में ही, जितनी देर में उसने उठने के लिए लड़की को सहारा दिया था, उसने विन्स्टन के हाथ में एक कागज सरका दिया था। उसने यह काम इरादतन किया था, ऐसा विन्स्टन को नहीं लगा। उसने शौचालय में घुसते ही उसे अपनी जेब में डाल लिया। काग़ज़ का वह टुकड़ा बहुत छोटा-सा था। गोल किया हुआ था, पेशाब करते हुए उसने जेब में ही उंगलियों से खोल लिया। उसमें अवश्य ही कोई सन्देश होगा। एक क्षण के लिए उसकी इच्छा हुई कि पानीवाली कोठरी में जाकर काग़ज़ को जेब से निकालकर पढ़ ले। परन्तु यह बहुत बड़ी बेवकूफ़ी होगी, यह उसे मालूम था। कुछ जगहें ऐसी थीं जहां कि टेलीस्क्रीन पर हर वक़्त नज़र रखी जाती थी।

वह अपने दफ़्तरवाले कमरे में चला गया। वहां जाकर उस काग़ज़ के टुकड़े को उसने मेज़ पर पड़े काग़ज़ों के ढेर में डाल दिया। इसके बाद

चश्मा लगाकर लेखनयन्त्र उसने अपने सामने खींच लिया। 'पांच मिनट' उसका दिल धड़क रहा था, 'पांच मिनट बाद'। सौभाग्यवश जो काम वह कर रहा था, वह साधारण-सा था। कुछ आंकड़े ठीक करने थे, जिसमें अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं थी।

काग़ज़ पर जो भी लिखा हो, उसका कुछ-न-कुछ राजनीतिक उद्देश्य अवश्य होगा। उसे दो सम्भावनाएं प्रतीत हो रही थीं। पहली तो यह कि लड़की अवश्य ही विचार नियन्त्रक पुलिस की एजेंट है, जैसे कि उसे आशंका थी और यह कि विचार-पुलिस ने अपना सन्देश देने के लिए यह पद्धति क्यों चुनी? सम्भवतः इसका कोई कारण हो। इस सन्देश में शायद कोई धमकी दी गई हो, बुलाया गया हो, आत्महत्या कर लेने का आदेश दिया गया हो या फिर कोई अन्य प्रकार का जाल बिछाया गया हो। दूसरी सम्भावना यह थी कि यह सन्देश किसी गुप्त संस्था से आया हो और इसका विचार-पुलिस से कोई सम्बन्ध ही न हो। परन्तु वह अपने इस विचार को बराबर दबाने का यत्न कर रहा था। शायद 'ब्रदरहुड' नाम की गुप्त संस्था का कोई-न-कोई अस्तित्व अवश्य होगा। निस्सन्देह यह विचार सर्वथा निर्मूल था, परन्तु जब से यह काग़ज़ का टुकड़ा उसके हाथ में थमाया गया था, तब से ही बार-बार यह ख़याल उसके दिमाग़ में आ रहा था। कुछ मिनट बाद उसे एक और ख़याल आया और वह शायद ज़्यादा ठीक था। उसकी बुद्धि कह रही थी, यह मौत का सन्देशा है, परन्तु उसे ऐसा नहीं लग रहा था। उसकी अविवेकपूर्ण आशाएं बढ़ रही थीं, दिल जोरों से धड़क रहा था और बड़ी कठिनाई से लेखनयन्त्र के माइक में आंकड़े बोलते हुए वह अपनी आवाज़ को कांपने से रोक पा रहा था।

इसके बाद उसने काम करके सारे काग़ज़ इकट्ठे किए और उनको नल में डालकर वापस कर दिया। अब तक आठ मिनट गुज़र चुके थे। उसने अपनी नाक पर आए चश्मे को ठीक किया। धीरे-से ठंडी सांस भरी और अगला काम हाथ में लिया। इसके ऊपर ही वह चिट रखी थी। चिट पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था :

'मैं तुमसे प्रेम करती हूं।'

कुछ सेकेंडों के लिए वह उसे पढ़कर स्तब्ध हो गया। उसे इतना भी ख़याल न आया कि वह उस अपराध के सबूत को रद्दी काग़ज़ोंवाले छेद में डालकर जला दे। उसकी इच्छा हुई, वह काग़ज़ को दुबारा पढ़ ले। हालांकि वह उसका ख़तरा जानता था। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वस्तुतः यही शब्द काग़ज़ पर लिखे थे।

इसके बाद काम करना कठिन हो गया। काम कर सकने से भी अधिक कठिन टेलीस्क्रीन से अपने मानसिक द्वन्द्व को छिपाना था। उसे लगा कि उसके पेट में बड़ी तेज़ आग जल रही है। गरम, भीड़भाड़ और शोर-भरे कमरे में दोपहर का भोजन गले से उतारना कठिन हो गया। भोजन के समय उसने सोचा था, वह अकेला बैठेगा, परन्तु दुर्भाग्य देखिए, उस मौक़े पर पारसन्स ने उसे आ घेरा। शोरबेदार मांस की गन्ध और पारसन्स के पसीने की दुर्गन्ध एकसाथ उसकी नाक में घुस रही थीं और ऊपर से पारसन्स बड़बड़ करके कान चाटे जा रहा था। वह घृणा प्रचार सप्ताह के बारे में कुछ कह रहा था। उस शोर से पारसन्स की बात सुनाई नहीं पड़ रही थी और उसे बार-बार बात दोहराने के लिए पारसन्स से कहना पड़ता था। कमरे के दूसरी ओर अपनी एक सहेली के साथ वह लड़की भी बैठी थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि लड़की ने उसे देखा ही नहीं। इसके बाद विन्स्टन ने उस ओर आंख भी नहीं उठाई।

दोपहर बाद वह अपेक्षाकृत स्वस्थ हो गया था। एक काम ऐसा आ गया, जिसमें सारा ध्यान लगाना ज़रूरी था और जिसे पूरा करने में कई घंटों का समय लगाना था। उसे पिछले दो वर्षों की उत्पादन-रिपोर्टों को इस प्रकार लिखना था जिससे अन्तरंग पार्टी के एक सदस्य की बदनामी हो। आजकल वह सदस्य संकटग्रस्त था। इन कामों में विन्स्टन बहुत तेज़ था। दो घंटों के लिए लड़की की बात उसके दिमाग़ से बिलकुल उतर गई। इसके बाद फिर विन्स्टन को उसका ख़याल हो आया। उसकी यह इच्छा बड़ी तीव्र हो उठी कि वह अकेला हो। बिना एकान्त के वह इस घटनाचक्र पर पूरी तरह विचार ही नहीं कर सकता था। आज की रात सामुदायिक केन्द्र में विशेष कार्यक्रम था। कैंटीन में किसी तरह शाम का

भोजन भी निगला और केन्द्र में आयोजित एक वाद-विवाद गोष्ठी में भाग लिया। दो गेम टेबल टेनिस पर खेले, कई गिलास शराब गले के नीचे उतारी। और फिर शतरंज और 'इंगसोश' शीर्षक व्याख्यान सुना। उसका जी ऊब गया था, परन्तु वह अब एक और सन्ध्या-केन्द्र में अपनी ग़ैरहाज़िरी नहीं बढ़वाना चाहता था। यह शब्द पढ़ते ही मैं तुमसे प्रेम करती हूं' — उसकी जीवित रहने की आकांक्षा बढ़ गई थी। उसे लगा कि छोटी-छोटी बातों में अपने लिए ख़तरा पैदा करना कोई बुद्धिमानी नहीं है। साढ़े तेईस (रात के साढ़े ग्यारह) बजे वह घर पहुंचकर बिस्तर पर लेट पाया। जब तक चुप रहे तब तक वह रात के अंधेरे में टेलीस्क्रीन की पहुंच के बाहर था। इस अंधेरे में वह लगातार सोच सकता था।

अब व्यावहारिक समस्या थी ! उस लड़की से कैसे सम्पर्क स्थापित किया जाए और कैसे मिला जाए ! अब वह इस सम्भावना पर विचार नहीं करना चाहता था कि वह लड़की किसी प्रकार का जाल बिछा रही है। जब उस लड़की ने वह चिट उसे थमाई थी तो जो मानसिक द्वन्द्व का भाव उसके चेहरे पर था, उससे अन्दाज़ किया जा सकता था कि कोई षड्यन्त्र नहीं था। वह अवश्य ही मन-ही-मन बहुत डर गई होगी। केवल पांच, पांच रात पूर्व ही वह इसी लड़की का पत्थर से सिर फोड़ देना चाहता था, लेकिन अब उसके दिमाग़ में इस बात का ध्यान भी नहीं आ रहा था। वह उसके तरुण और नग्न यौवन की कल्पना कर रहा था, जो उसने स्वप्न में देखा था। वह उसे पहले बिलकुल मूर्खा समझता था। वह समझता था कि उसके दिमाग़ में घृणा और मिथ्या बातों का गोबर भरा होगा। अचानक उसे ध्यान आया कि वह कहीं उसके हाथ से न निकल जाए। यह सोचते ही उसे हरारत-सी हो आई। परन्तु मिलने की समस्या बड़ी ही टेढ़ी थी। जिधर भी मुंह करिए टेलीस्क्रीन सामने था। वह उससे बातचीत करने के तरह-तरह के उपाय सोच रहा था। वह हर उपाय पर गौर कर रहा था।

आज सवेरे जैसे वे मिले थे, वैसी बात, स्पष्ट था, दुबारा नहीं हो सकती थी। यदि वह रिकॉर्ड विभाग में होती तो उससे मिलना अपेक्षाकृत आसान था। परन्तु फ़िक्शन विभाग के सम्बन्ध मे उसका ज्ञान बहुत कम

था। वह किसी बहाने से भी वहां नहीं जा सकता था। यदि वह यह जान जाता कि वह कहां रहती है, काम पर कब आती है, तो रास्ते में आते-जाते मिलने की कोई योजना बनाई जा सकती थी। परन्तु घर जाते हुए उसका पीछा करना सुरक्षित नहीं था। इसका कारण यह था कि उसे प्रतीक्षा करनी पड़ती, अर्थात मन्त्रालय के सामने इधर-उधर चक्कर काटने पड़ते। उससे अन्य लोगों का ध्यान उसकी ओर अवश्य जाता। डाक से पत्र भेजने का तो सवाल ही नहीं उठता। नियमानुसार डाक के हर पत्र को डाकख़ाने में खोलकर पढ़ लिया जाता था। बहुत कम लोग पत्र लिखते थे। साधारण बातों के लिए छपे पोस्टकार्ड थे। उनमें अनेक बातें छपी थीं। इनमें से जिन बातों की जानकारी प्राप्त न करनी हो, उनको काटकर भेजा जा सकता था। इसके अतिरिक्त घर का पता जानना तो दूर, वह उस लड़की का नाम तक नहीं जानता था। अन्त में उसने सोचा, मिलने की सबसे सुरक्षित जगह कैंटीन है। यदि वह किसी मेज़ पर अकेली मिल जाए, और मेज़ कमरे के बीच में हो, टेलीस्क्रीन से दूर, तथा चारों तरफ़ लोग बातचीत कर रहे हों और ऐसा मौक़ा आधे मिनट के लिए भी मिल जाए, तो कुछ शब्द कहे-सुने जा सकते हैं।

इसके बाद एक सप्ताह, स्वप्न की-सी बेचैनी में बीता। दूसरे दिन वह लड़की उस समय तक कैंटीन में आई ही नहीं, जब तक वह चलने के लिए उठ खड़ा नहीं हुआ। सीटी बज चुकी थी। लड़की की शिफ़्ट शायद बदल गई थी। वे एक-दूसरे के पास से बिना नज़र डाले गुज़र गए। तीसरे दिन वह अन्य सहेलियों के साथ थी। इसके बाद लगातार तीन दिनों तक वह आई ही नहीं। उसका शरीर तथा दिमाग़ दोनों ही बुरी तरह दुखी थे। उसे उठना, चलना, फिरना, बात करना, मिलना-जुलना सभी कुछ बुरा लग रहा था। सोते में भी वह उसकी कल्पना से मुक्त नहीं हो सकता था। उन दिनों डायरी उसने छुई भी नहीं। उसे मालम ही नहीं था कि उस लड़की का क्या हुआ। शायद उसे मार डाला गया था। या उसने सम्भवतः स्वयं ही आत्महत्या कर ली थी। या उसे ओशनिया के दूसरे कोने में भेज दिया गया हो।

अगले दिन वह दिखलाई पड़ गई। उसका हाथ गले में पड़ी पट्टी से बाहर था। कलाई पर थोड़ा प्लास्टर अवश्य था। बड़ी मुश्किल से बात करने की इच्छा पर वह काबू पा सका। इसके बादवाले दिन उसे बात करने का मौका भी हाथ लगा। जब वह कैंटीन में आया तो उसने देखा कि वह दीवार से दूर एक मेज पर अकेली बैठी है। काफ़ी वक़्त था और भीड़ अधिक नहीं थी। 'क्यू' धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। जब वह ट्रे लेकर मेज़ की ओर चला तो भी वह अकेली थी। वह बिलकल सामान्य भाव से उसकी मेज़ पर बैठने के लिए आगे बढ़ा। दो सेकेंड बाद वह उसके पास पहुंच जाता, तभी उसके पीछे किसी ने उसे आवाज़ दी, "स्मिथ!' सुनहले बालोंवाला, बेवकूफ़-सा दीखनेवाला विलशर नाम का युवक उसे अपने पास की एक ख़ाली मेज़ पर बुला रहा था। निमन्त्रण अस्वीकार कर देना सुरक्षित नहीं था। एक बार पहचान लिए जाने के बाद अकेली लड़की के समीप जाकर बैठ जाना उसके लिए व्यावहारिक दृष्टि से सम्भव नहीं था। ऐसा करने पर लोगों का ध्यान उसकी ओर तुरन्त आकृष्ट हो जाता। वह उस युवक के पासवाली मेज़ पर ही मुस्कुराकर बैठ गया। उसकी तबीयत कर रही थी कि एक बूंसा मारकर उसका मुंह तोड़ दे। उस लड़कीवाली मेज़ कुछ ही मिनट बाद अन्य व्यक्तियों से भर गई।

अगले दिन वह जान-बूझकर 'लंच रूम' में जल्दी आ गया। वह आज भी उसी मेज़ पर बैठी थी और अकेली थी। कुछ देर बाद विन्स्टन उस लड़की के पास अकेला बैठा था। उसका दिल बड़े जोरों से धड़क रहा था। यह बहुत ज़रूरी था कि वे तुरन्त बातचीत कर लें। परन्तु वह अब बहुत भयग्रस्त था। वह शायद बोलता ही नहीं, यदि उसकी नज़र ऐम्पिलफोर्थ पर न पड़ गई होती। वह कवि था। अपनी ट्रे हाथ में लिए वह उपयुक्त मेज़ की तलाश में चारों तरफ़ निगाह दौड़ा रहा था। अपने कवित्वपूर्ण ढंग से ऐम्पिलफोर्थ को विन्स्टन से कुछ स्नेह था। यदि वह उसे देख लेता तो अवश्य ही उसके पास आकर बैठ जाता। एक मिनट का वक़्त था और इसी बीच काम कर लेना था। विन्स्टन और वह लड़की दोनों ही खा रहे थे। मन्दी आग पर पकी फली की शोरबेदार सब्ज़ी वे खा रहे थे। मन्द स्वर में विन्स्टन ने बोलना शुरू किया। दोनों में से किसी

ने भी सिर ऊपर नहीं उठाया। सब्जी का शोरबा वे लगातार चम्मच से पीते जा रहे थे। इसी बीच उन्होंने आवश्यक बातचीत कर ली।

"दफ़्तर से कब छुट्टी मिलती है?"

"साढे अठारह पर।" (शाम साढे छः बजे)

"हम कहां मिल सकते हैं?"

"विक्टरी स्क्वायर में, स्मारक के पास।"

"वहां टेलीस्क्रीन बहुत हैं।"

"कोई हर्ज नहीं। भीड़भाड़ ख़ूब होनी चाहिए।"

"कोई संकेत?"

"नहीं। मेरे पास उस समय तक न आइएगा जब तक मेरे आसपास काफ़ी आदमियों का जमघट न हो।"

"समय?"

"उन्नीस बजे।" (शाम सात बजे)

"अच्छी बात है।"

ऐम्पिलफोर्थ विन्स्टन को नहीं देख पाया और दूसरी मेज़ पर बैठ गया। लड़की ने जल्दी-जल्दी अपना लंच समाप्त किया और चल दी। विन्स्टन सिगरेट पीता बैठा रहा। अपनी बात ख़त्म कर लेने के बाद फिर वे नहीं बोले। उन्होंने एक-दूसरे को यथासम्भव देखा भी नहीं।

विन्स्टन विक्टरी स्क्वायर में समय से पूर्व ही पहुंच गया था। वह उस स्मारक के चारों तरफ़ घूमता रहा जिसके शीर्ष पर बड़े भाई की शक्ल थी। यह शक्ल दक्षिण की ओर देख रही थी। सड़क पर उसी स्मारक के सामने घोड़े पर एक मूर्ति बैठी थी। यह मूर्ति ओलिवर क्रामबेल की बतलाई जाती थी। सात बजकर पांच मिनट हो गए। किन्तु वह लड़की नहीं आई। विन्स्टन के मन में फिर वही पुराना डर उभर आया। शायद उसने अपना विचार बदल दिया है और इसीलिए नहीं आई है। वह धीरे-धीरे उत्तर की तरफ़ चला गया और सेंट मार्टिन चर्च को मन-ही-मन

पहचानकर खुश होने लगा। तभी उसने देखा कि लड़की स्मारक के सबसे नीचेवाले हिस्से में खड़ी है। वह कोई पोस्टर पढ़ने का बहाना कर रही थी। जब तक और लोग न पहुंच जाएं, तब तक उसके समीप जाना ख़तरनाक था। चारों ओर टेलीस्क्रीन लगे थे। तभी लोगों के चिल्लाने और भारी-भरकम ट्रकों के चलने की आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़ बाईं ओर से आ रही थी। अचानक सब लोग स्क्वायर के पार सड़क की ओर दौड़ने लगे। लड़की भी स्मारक के कोने पर बने शेरों के सहारे मुड़कर भीड़ में मिल गई। विन्स्टन भी पीछे-पीछे भागा। दौड़ते-भागते हुए उसने किसी के मुंह से सुना कि युरेशियन सैनिक-बन्दियों का एक जत्था गुज़र रहा है।

स्क्वायर के दक्षिणी भाग में पहले ही भीड़ जमा थी। सामान्यतः विन्स्टन भीड़ के एक कोने में कहीं खड़ा हो जाया करता था, लेकिन इस बार धक्के मारता और धक्के खाता वह भीड़ के बीचोबीच घुस गया। शीघ्र ही वह लड़की के पास पहुंच गया। वह अब लड़की के बराबर खड़ा था। दोनों एक-दूसरे से कन्धे सटाए खड़े थे और एकटक सामने देख रहे थे।

ट्रकों की एक लम्बी पंक्ति धीरे-धीरे गुजर रही थी। हर ट्रक के कोने पर कठोर मुद्रा में सशस्त्र सन्तरी खड़े थे। उनके पास छोटी मशीनगन थी। भद्दी-सी हरी वर्दी में पीले वर्ण के बहुत-से सैनिक भरे बैठे थे। वे उदास थे और उनके चेहरे से ऐसा लगता था कि वे मंगोलिन हैं। वे ट्रकों के अन्दर से लोगों को ताक रहे थे। कभी-कभी कोई ट्रक उछलता तो बन्दी सैनिकों के पैरों में पड़ी बेड़ियां खनक उठतीं। एक-एक करके अनेकों ट्रक भरे जत्थे निकल गए। विन्स्टन जानता था कि वे सैनिक बन्दी ट्रक में हैं, लेकिन वह उनको कुछ-कुछ देर बाद देख रहा था। लड़की का कन्धा और कोहनी तक का हाथ उसकी कमर तक चिपका हआ था। उसके गाल विन्स्टन के इतने निकट थे कि वह उनकी उष्णता तक अनुभव कर रहा था। बहुत जल्दी ही लड़की ने बात शुरू कर दी। पहले की भाति निर्लिप्त स्वर में बिना होंठ हिलाए उसने अपनी बात इस तरह कही कि विन्स्टन तो सुन ले लेकिन इसके बाद उसकी आवाज़ भीड़ तथा ट्रकों के आने-जाने के शोर में डूब जाए।

"क्या आप मेरी आवाज़ सुन पा रहे हैं?"

"हां"

"रविवार को तीसरे पहर ख़ाली हैं?"

"हां।"

"तो ध्यान से सुनें। यह याद रखना। पेडिंगटन स्टेशन जाना..."

सैनिक भाषा में उसने संक्षेप में वह रास्ता बतला दिया जहां से उसे जाना था। आधे घंटे की रेल-यात्रा के बाद स्टेशन से बाहर आना और बाईं तरफ़ मुड़ जाना। दो किलोमीटर पैदल चलना, एक फाटक मिलेगा खुला हुआ, मैदान पर एक पगडंडी दिखलाई देगी, फिर घास के बीच से एक पगडंडी जाती दिखलाई पड़ेगी; झाड़ियों के बीच भी यही पगडंडी गई है, फिर एक सूखा पेड़ मिलेगा। इस पर काई जमी है। ऐसे लग रहा था जैसे सारा नक्शा उसके दिमाग़ में था।

"यह सब याद रहेगा?" उसने अन्त में पूछा।

"हां!" विन्स्टन ने उत्तर दिया।

"पहले बाएं मुड़िए, फिर दाहिने और फिर बाएं। फाटक पर सांकल नहीं है।"

"ठीक है। वक़्त?"

"कोई पन्द्रह (दिन के तीन) बजे। शायद कुछ इन्तजार करना पड़े। मैं दूसरे रास्ते से पहुंचूंगी। अच्छा, आपको यह सब याद रहेगा न?"

"हां।"

"तो अब मेरे पास से जितनी जल्दी हो सके हट जाइए।"

उसे यह कहने की आवश्यकता नहीं थी। परन्तु एक क्षण के लिए भीड़ से उनका निकलना, हिलना भी मुश्किल था। ट्रक अभी भी गुज़र रहे थे। लोगों का मन अभी तृप्त नहीं हुआ था। पहले तो कुछ लोगों ने कुछ शोर मचाया, इसमें पार्टी सदस्य ही अधिक थे, परन्तु बाद में यह शोर बन्द हो गया। भीड़ में उत्सुकता का भाव ही अधिक था। विदेशियों

को, चाहे वे यूरेशिया के हों या ईस्ट एशिया के, अजब जानवर समझा जाता था। इन्हें बन्दियों के अलावा अन्य किसी भी रूप में ओशनिया के लोग देख ही नहीं पाते थे। केवल उनकी झलक ही मिलती थी। लोगों को यह भी नहीं ज्ञात होता था कि अन्ततः उनका क्या होता था। हां, इतना ज़रूर मालूम था कि इनमें से कुछ को युद्धोपराधी घोषित करके फ़ांसी दे दी जाती थी। अन्य लापता हो जाते थे। शायद उनसे श्रम-शिवरों में बेगार ली जाती थी। मंगोल चेहरों के बाद अब यूरोपियनों जैसे चेहरे आने लगे थे। ये गन्दे थे, थके थे और सबकी दाढ़ियां बढ़ी हुई थीं। गालों की हड्डियां उभर आई थीं। कभी वे विन्स्टन की आंखों में आंखें डालकर देखते थे, इसके बाद तुरन्त उनकी आंखें हट जाती थीं। अन्तिम ट्रक में एक वृद्ध था। इसके हाथ की कलाइयां एक-दूसरे पर सामने रखी थीं। ऐसा लगता था कि इस प्रकार हाथ पर हाथ रखने का उसे अभ्यास पड़ गया है। अब समय आ गया था कि विन्स्टन और लड़की एक-दूसरे से विदा ले लेते। परन्तु अन्तिम क्षण, जब वे अलग होनेवाले ही थे, तभी उसका हाथ विन्स्टन के हाथ के पास आया और विन्स्टन ने महसूस किया कि उसका हाथ थोड़ा-सा दबा।

हाथ में हाथ कोई दस सेकेंड रहा होगा। परन्तु उसे लगा कि वे दोनों युगों से एक-दूसरे का हाथ पकड़े हैं, उसे लड़की के हाथ की हर उंगली का ज्ञान हैं। उसने उसकी लम्बी उंगलियों का स्पर्श किया। श्रम से कठोर हुई हथेलियों को अनुभव किया। कलाई के नीचे के कोमल मांस को छुआ। तभी उसे याद आया कि वह यह नहीं जानता कि उसकी आंखें कैसी हैं? शायद भूरी थीं, परन्तु काले बालोंवाले लोगों की आंखें बहुधा नीली ही होती हैं। पीछे मुड़कर उसे देखना तो मूर्खता होती। वे हाथ पकड़े थे। परन्तु भीड़ में कोई देख नहीं सकता था। वे धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। विन्स्टन के दिमाग़ में अब लड़की की आंखें नहीं बल्कि एक दुखी बन्दी की आंखें घूम रही थीं।

विन्स्टन धूप-छाया में होता हुआ गली से गुज़र रहा था। जहां पेड़ नहीं होते थे। वहां वह धूप में चल लेता था। पेड़ों के नीचे उसके बाईं तरफ़ वाला मैदान नीला-सा था, यहां नीले फूलों के पौधे थे। हवा त्वचा का चुम्बन-सा लेती प्रतीत हो रही थी। दो मई थी। जंगल के मध्य भाग में कहीं से कबूतरों के जोड़े की गुटरगूं की आवाज़ आई।

वह कुछ जल्दी आ गया था। यात्रा में कोई कठिनाई नहीं हुई। वह लड़की इतनी अनुभवी थी कि उसने विन्स्टन को साधारण डर का अनुभव भी नहीं होने दिया। विन्स्टन ने सोचा कि सुरक्षित स्थान तलाश करने का भार उस पर छोड़ा जा सकता है। वैसे तो लन्दन और गांव दोनों जगह एक-सा ही ख़तरा था। परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में कम-से-कम टेलीस्क्रीन नहीं थे। परन्तु इधर-उधर छिपे माइक्रोफ़ोन अवश्य हो सकते थे। इनसे ध्वनि ग्रहण करके सुनी जा सकती थी। और आवाज़ पहचानकर आपको पकड़ा जा सकता था। दूसरे, अकेले यात्रा करना भी सुरक्षित नहीं था, क्योंकि ऐसा करने पर दूसरों का ध्यान आकृष्ट होता था। सौ किलोमीटर के दायरे में आने-जाने के लिए पासपोर्ट को तसदीक नहीं कराना पड़ता था। परन्तु कभी-कभी पुलिस के गश्ती दस्ते स्टेशन पर मिल जाते थे। यदि वे किसी पार्टी सदस्य को देख लेते तो उससे पासपोर्ट देखने को मांगते और तरह-तरह के सवाल पूछते थे। परन्तु कोई गश्ती पुलिस का आदमी नहीं दिखलाई पड़ा और साथ ही उसने यह भी जान लिया कि उसका कोई पीछा भी नहीं कर रहा। गर्मियां थीं। ट्रेनें मज़दूरों से भरी थीं। वे सब छुट्टी मनाने की मुद्रा में थे। काठ की बनी बेंचोंवाले कम्पार्टमेंट में बैठकर उसने यात्रा की। वह डिब्बा एक मज़दूर परिवार से भरा था। उसमें पोपले मुंहवाली दादी से लेकर दूध पीता बच्चा तक शामिल था। वे लोग अपने सम्बन्धी के यहां जा रहे थे। इसके साथ ही, विन्स्टन को उन्होंने यह भी बतलाया कि वे लोग वहां काले बाज़ार में मक्खन भी ख़रीदेंगे।

यहां कच्ची सड़क कुछ और चौड़ी हो गई थी। जैसा कि उसने बताया था। पगडंडी सामने थी। इस पर शायद पशु ही आते-जाते थे। यह पगडंडी सीधी झाड़ियों में चली गई थी। उसके पास घड़ी नहीं थी। लेकिन पन्द्रह अभी नहीं बजे थे। नीले फूलों के पौधे इतने अधिक थे कि उनको पैरों

के नीचे आने से बचाना कठिन हो गया था। वह झुककर कुछ फूल तोड़ने लगा। उसने सोचा, आने पर वह लड़की को फूलों का गुच्छा भेंट करेगा। कुछ ही देर में बड़ा-सा गुच्छा बन गया। अभी वह ठीक से फूल सूंघ भी नहीं पाया था कि उसके पीछे से आवाज़ आई जिसे सुनते ही उसका ख़ून सूख गया। परन्तु वह फूल बटोरता रहा। यही ठीक था। शायद वह लड़की ही हो। या शायद उसका पीछा ही किया जा रहा हो। पीछे देखने का मतलब अपने को दोषी सिद्ध करना था। वह एक के बाद एक फल तोड़ता रहा। तभी उसके कन्धे पर हल्के से किसी ने हाथ रखा।

उसने सिर उठाया। वह लड़की ही थी। उसने सिर हिलाकर चुप रहने का संकेत किया। इसके बाद वे झाड़ियों से होकर जंगल की तरफ़ बढ़ गए। स्पष्ट था कि वह उसके पहले भी इस जगह आ चुकी थी। वह गड्ढों से ऐसे बचती चली जा रही थी, जैसे उसका यह अभ्यास ही पड़ गया हो। विन्स्टन पीछे था। उसके हाथ में फूलों का गुच्छा था। वह कूदती-फांदती, झाड़ियों को पार करती जा रही थी क्योंकि कहीं-कहीं रास्ता भी नहीं था। विन्स्टन उसके पीछे चलता हुआ अब एक ऐसी जगह आ गया था जो एक छोटा-सा घास का मैदान था और चारों तरफ़ पेड़ों से घिरा था।

"लो, आ गए। उसने कहा।

वह अभी उससे कई कदम की दूरी पर खड़ा उसे देख रहा था। अभी तक उसका यह साहस नहीं हो रहा था कि वह उस लड़की के पास जाए।

वह कह रही थी, "मैं सड़क पर इसलिए कुछ नहीं बोलना चाहती थी कि कहीं कोई माइक न छिपा हो। मेरा ख़याल तो नहीं है कि वहां कोई माइक होगा, लेकिन हो सकता है। ऐसी दशा में वे सूअर हमेशा आवाज़ पहचान सकते हैं। यहां हम सुरक्षित हैं।"

"हां, इन पेड़ों को देखो। वे छोटे-छोटे थे। उन्हें कभी काट दिया गया था और अब उनके कटे हुए तनों से शाखें फूट रही थीं। अब बांसों का वन फिर तैयार हो रहा था। इनमें से एक भी वृक्ष अभी कलाई से अधिक मोटा नहीं था। "यहां ऐसी कोई बड़ी चीज़ नहीं है, जहां माइक

छिपाया जा सके। दूसरे मैं यहां पहले भी आ चुकी हूं।" वे केवल बातचीत कर रहे थे। अब वह पहले से अधिक पास आ गया था। वह बिलकुल सीधी उसके सामने खड़ी थी। उसके चेहरे पर मुस्कान थी, कुछ व्यंग्यात्मक-सी, जिसमें यह भाव था कि वह इतना सुस्त क्यों है। नीले फूल ज़मीन पर बिखर गए थे। वे अपने ही आप हाथ से छूट गए। विन्स्टन ने उसका हाथ पकड़ लिया।

"क्या तुम मानोगी?" उसने कहा, "मैं अभी तक यह भी नहीं जानता था कि तुम्हारी आंखों की पुतलियों का रंग कैसा है?" वे भूरी थीं। हल्की-भूरी और उनमें थोड़ी-सी श्यामलता भी थी। उसने अब यह देख लिया था।

"अब तुमने मुझे भली-भांति देख लिया न? क्या अब भी तुम मुझे पसन्द करती हो?"

"हां!"

"मैं उन्तालीस वर्ष का हूं। मेरी एक पत्नी है। मैं उससे अलग नहीं हो सकता। मेरे टखने पर ऐसा फोड़ा है, जो कभी अच्छा नहीं होता। मेरे पांच दांत नक़ली हैं।"

"मुझे इसकी कोई फ़िक्र नहीं है।"

अगले क्षण ही, पता नहीं कैसे, वह उसकी बांहों में थी। पहले तो उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह उसकी बाहों में सचमुच बंधी है। उसका जवां शरीर उससे बिलकुल चिपका था। उसके घने काले बाल उसके मुंह पर छाए थे। और हां, सचमुच उसने अपना मुंह ऊपर उठा लिया था और वह उसके लाल होंठों का चुम्बन ले रहा था। उसने अपनी बाहें विन्स्टन के गले में डाल दी थीं। अब विन्स्टन ने उसे नीचे लिटा दिया। उसने इसका कोई विरोध नहीं किया। वह जो चाहे कर सकता था। परन्तु उसे निकटता के अतिरिक्त अन्य कोई अनुभूति ही नहीं हो रही थी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था। परन्तु निकटता की अनुभूति के साथ उसे कुछ गर्वानुभूति हो रही थी। अब लड़की उठ बैठी थी। उसके बालों

में नीले फूल लग गए थे। उनको उसने झाड़ दिया। वह उसके सहारे से बैठ गई और अपनी बांहें उसने विन्स्टन की कमर में डाल दीं।

"कोई बात नहीं डियर! जल्दी नहीं है। अभी बहुत वक़्त है। परन्तु यह स्थान कितना गुप्त है? नहीं क्या? मैं एक बार लड़कियों के एक दल के साथ जब घूमने के लिए आई तो खो गई। तभी मैंने यह स्थान खोजा था। यदि कोई इधर आए तो हम उसके पैरों की आवाज़ सौ मीटर दूर से सुन सकेंगे।"

"तुम्हारा नाम क्या है?" विन्स्टन ने पूछा।

"जूलिया। और मैं तुम्हारा नाम जानती हूं — विन्स्टन, विन्स्टन स्मिथ।" उसने जवाब दिया।

"तुमको मेरा नाम कैसे पता लगा?"

"मैं तुमसे अधिक, और अच्छी तरह बातों का पता लगा सकती हूं, डियर! बताओ मेरे एक काग़ज़ पर यह लिखकर देने के पूर्व कि 'मैं तुमसे प्रेम करती हूं' तुम मेरे बारे में क्या सोचते थे?"

वह उससे झूठ नहीं बोलना चाहता था। उसने कहा, "मैं तुमसे घृणा करता था। मैं तुम्हारे साथ बलात्कार कर तुम्हें मार डालना चाहता था। दो सप्ताह पूर्व तो मैं पत्थर से तुम्हारा सिर फोड़ देने की बात सोच रहा था। सच बताऊं! मैं तुम्हें विचार-पुलिस से सम्बन्धित समझता था।"

जूलिया बड़े आकर्षक ढंग से हंस रही थी। वह इसे अपने नकलीपन की प्रशंसा मान रही थी।

"तुम सोचते होगे कि मैं पार्टी-भक्त सदस्य हूं। वाणी और आचरण से एकदम शुद्ध। मेरे दिमाग़ में सिवा झंडों, जुलूसों, नारों, खेलों और सामुदायिक भ्रमणों के अलावा कुछ नहीं रहता। और तुम सोचते होगे कि मौक़ा मिलते ही मैं तुम्हें विचार-अपराधी घोषित कर मरवा डालूंगी!"

"हां, कुछ इसी तरह की बातें मेरे दिमाग़ में थीं। आजकल बहुत-सी लड़कियां ऐसा करती हैं, यह तो तुम जानती हो।"

"यह सब इसकी वजह से है," कहते हुए जूनियर एंटी-सेक्स लीग की कमर पट्टी उतारकर जूलिया ने पेड़ की डाल पर फेंक दी। कमर पर हाथ पड़ते ही उसे जेब का ख़याल आया और उसने जेब में हाथ डालकर चॉकलेट निकाली। चॉकलेट के दो टुकड़े करके आधा उसने विन्स्टन को दे दिया। हाथ में लेने के पूर्व सुगन्ध से ही विन्स्टन समझ गया था कि जूलिया के हाथ में कोई असाधारण चॉकलेट है। चॉकलेट का रंग गहरा और चमकीला था और वह रुपहले काग़ज़ में लिपटा था। साधारण चॉकलेट भद्दे भूरे रंग के होते थे और उनका स्वाद राख-सा लगता था। लाकन कभी-कभी उसने जूलिया जैसा चॉकलेट भी चखा था।

"तुम्हें कहां मिल गई यह?" उसने पूछा।

"चोर बाज़ार से!" उदासीन भाव से जूलिया ने कहा, "मुझे ऐसी चीज़ चाहिए। मैं खिलाड़ी हूं। जासूस-दल की नेता हूं। जूनियर एंटी-सेक्स लीग में हफ्ते में तीन शाम मैं स्वेच्छा से काम करती हूं। मैंने उनकी उटपटांग बातों का लन्दन-भर में प्रचार करने में घंटों बरबाद किए हैं। मैं हमेशा जुलूस में झंडा लेकर चलती हूं। मैं हमेशा ख़ुश दिखलाई पड़ती हूं और किसी भी काम को करने से जी नहीं चुराती। हमेशा भीड़ के साथ चिल्लाना चाहिए — यही मेरी प्रत्येक को शिक्षा है। सुरक्षित रहने का भी यही तरीक़ा है।"

चॉकलेट का पहला छोटा टुकड़ा विन्स्टन की जीभ पर घुल गया था। बड़ा स्वादिष्ट था।

"तुम अभी कम उम्र की हो," उसने कहा, "मुझसे दस या पन्द्रह वर्ष छोटी हो। तुमको मुझ जैसे आदमी में आकर्षण की क्या बात दिखलाई दी?"

"कुछ चेहरे में था। मैंने सोचा, कोशिश करूं। मुझे बड़ी जल्दी पता लग जाता है कि कौन-से लोग बहुत पार्टी-भक्त नहीं हैं। देखते ही मुझे पता लग गया कि आप 'उनके' विरुद्ध हैं।"

'उनके' शब्द से विन्स्टन ने यह अर्थ लिया कि जूलिया का मतलब पार्टी-अधिकारियों से है जो पार्टी के अन्तरंग सदस्य होते हैं। वह उनका

स्पष्ट रूप से परिहास कर रही थी। वह जूलिया की स्पष्टवादिता से चकित था। जूलिया पार्टी के अन्तरंग सदस्यों के सम्बन्ध में ऐसे सारे शब्दों का प्रयोग कर रही थी जो पाख़ाने आदि की दीवारों पर लिखे दिखलाई पड़ जाते थे। उसे उसका यह काम स्वाभाविक और स्वस्थ प्रतीत हुआ। अब वे धूप-छाया में एक-दूसरे की कमर में हाथ डाले घूम रहे थे। पट्टी उतार देने के बाद जूलिया बड़ी कोमल लग रही थी। वे बहुत धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। जूलिया ने कहा कि छिपने के गुप्त स्थान के बाहर उनका चुप रहना ही उचित है। वे अब घूमते-घूमते जंगल के किनारे पहुंच गए थे। जूलिया ने उसे रोक दिया।

"खुले में मत जाओ। शायद कोई देख रहा हो। हम पेड़ की शाखाओं के पीछे अधिक सुरक्षित हैं।"

अब वे झाड़ियों की छाया में खड़े थे। धूप हज़ारों पत्तियों से छनकर उनके चेहरों पर पड़ रही थी और किरणों में अब भी गर्मी थी। विन्स्टन ने सामने के मैदान की तरफ़ देखा। अचानक वह उस जगह को पहचान-सा गया। वह जानता था कि वह जगह पुराना चारागाह थी। इसमें चारों तरफ़ पगडंडियां थीं और इधर-उधर कुछ टीले थे। दूसरी ओर झाड़ियों की और पेड़ों की टहनियां हवा में बहुत धीरे-धीरे हिल रही थीं। दूर से लगता था जैसे वे किसी रमणी के केश हों। अवश्य ही आस-पास कहीं छोटी-मोटी झील थी जिसमें बत्तखें तैर रही थीं।

"यहां कहीं झील है क्या?" उसने बहुत धीरे-से पूछा।

"हां! दूसरे मैदान के किनारे पर। उसमे बड़ी-बड़ी मछलियां हैं। वे पेड़ों की छाया में झील में तैरती दीखती हैं।"

"यह तो बिल्कुल स्वर्णिम प्रदेश है।" वह बुदबुदाया।

"स्वर्णिम प्रदेश है?"

"यह एक ऐसे दृश्य का नक्शा है जो अक्सर स्वप्न में मुझे दिखलाई पड़ता है।"

"देखो! देखो!" जूलिया ने कहा।

कोई पांच मीटर दूर बिलकुल उनके मुंह के सीध में पेड़ों की एक डाल पर एक चिड़िया आ बैठी थी। वह धूप में थी और वे छाया में, इसलिए उसने उनको नहीं देखा। डाल पर बैठते ही उसने पंख फैलाए। इसके बाद फिर उन्हें सिकोड़ लिया। थोड़ी देर के लिए अपना सिर झुका लिया जैसे सूरज को प्रणाम कर रही हो। और उसके बाद कूकना शुरू कर दिया। तीसरे पहर की शान्ति में वह आवाज़ चारों तरफ गूंज रही थी। विन्स्टन और जूलिया मारे आनन्द के एक-दूसरे से और चिपक गए। कई मिनट गुज़र गए किन्तु इस चिड़िया का संगीत बन्द न हुआ। हर बार नई आवाज़ वह गले से निकाल रही थी। ऐसा लग रहा था कि वह अपने गाने की कला का जान-बूझकर उनके सामने प्रदर्शन कर रही है। कभी वह कुछ सेकेंडों के लिए रुक जाती थी और अपने पंख संभाल लेती थी और फिर अपनी छाती फुलाकर गाना शुरू कर देती थी। विन्स्टन अजीब-सी श्रद्धा से वह कुहकना सुन रहा था। किसके लिए, क्यों चिड़िया गा रही थी? कोई साथी, कोई प्रतिद्वन्द्वी उसे देख नहीं रहा था। वह इस जंगल के किनारे के एक पेड़ की टहनी पर एकान्त में बैठकर बेकार अपनी संगीत-लहरी को क्यों नष्ट कर रही थी? धीरे-धीरे संगीत ने उसकी सारी चिन्ताएं हर लीं। ऐसा लगा कि संगीत तरल बनकर धूप में मिल गया है और सारे जंगल पर छिड़क दिया गया है। अब उसने सोचना बन्द कर दिया था और केवल अनुभव कर रहा था। जुलिया की कमर उसकी बाहों में थी। वह मुलायम और गरम थी। उसने जूलिया को और पास खींच लिया और अब उनकी छातियां एक-दूसरे से चिपकी थीं। ऐसा लग रहा था कि उसके शरीर में जूलिया का शरीर घुला जा रहा है। जहां भी उसका हाथ जाता, जूलिया से उसे पूर्ण समर्पण मिलता। उनके होंठ एक-दूसरे से मिले थे। वह स्पर्श उन कठोर चुम्बनों से बिलकुल भिन्न था जिनका वे पहले कभी अनुभव कर चुके थे। जब दोनों एक-दूसरे से अलग हुए तो दोनों के मुंह से ठंडी सांस निकल गई। चिड़िया अब डरकर उड़ गई। थोड़ी देर उसके पंखों की फटफटाहट सुनाई देती रही।

अपने होंठों को विन्स्टन ने जूलिया के कानों पर रखकर कहा, "अब...।"

"यहां नहीं," उसने उत्तर दिया, "आओ, अपने गुप्त स्थान पर वापस चलें वहां हम अधिक सुरक्षित रहेंगे।"

वे जल्दी-जल्दी उसी जगह फिर वापस चले गए। रास्ते में पैर के नीचे एकाध सूखी टहनी आ जाने से उसके टूटने की आवाज़ अवश्य हुई। वे जब पेड़ों से घिरी हुई उस जगह पहुंच गए तो वह उसकी तरफ़ मुंह करके खड़ी हो गई। दोनों की सांस बड़ी तेज़ी से चल रही थी। परन्तु जूलिया के होंठों पर हल्की मुस्कुराहट थी। वह एक क्षण उसकी तरफ़ देखती खड़ी रही। इसके बाद उसने अपनी वर्दी के जिपर को छुआ। और फिर लगभग वैसा ही हुआ जैसा उसने सपने में देखा था। उसने अपने कपड़े एकदम उतार डाले। उसकी त्वचा सूरज की किरणों में दूध की तरह चमक रही थी। क्षण-भर उसने जूलिया के शरीर को नहीं देखा। उसकी आंखें जूलिया के चेहरे पर जमी थीं जिस पर अब भी मुस्कुराहट थी। वह घुटनों के बल झुक गया और उसने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"क्या तुम पहले भी ऐसा कर चुकी हो?"

"निस्सन्देह। सैकड़ों बार, सैकड़ों बार नहीं तो कम-से-कम बीसियों बार।"

"पार्टी-सदस्यों के साथ?"

"हां, हमेशा पार्टी के सदस्यों के साथ ही।"

"क्या पार्टी के अन्तरंग सदस्यों के साथ भी?"

"नहीं उन सुअरों के साथ नहीं। लेकिन यदि मौका हो तो उनमें बहुतेरे ऐसा काम करने को मिल जाएंगे। वे इतने दूध के धुले नहीं हैं, जैसा वे कहते हैं।"

उसका दिल बहुत ज़ोरों से धड़कने लगा। वह बीसियों बार ऐसा कर चुकी है। वह चाहता था कि ऐसा सैकड़ों, हज़ारों बार हुआ हो। जिस बात से ज़रा भी भ्रष्टाचार का संकेत मिलता था। वही बात उसे बड़ी-बड़ी आशाएं बंधा देती थी। कौन जानता है, सम्भव है, पार्टी ऊपरी तौर पर मज़बूत दीखती हो लेकिन अन्दर से सड़ गई हो। बहुत मुमकिन है कि

बलिदान और त्याग के सिद्धान्तों का प्रचार अन्दर की सड़ांध छिपाने को हो। अब विन्स्टन ने जूलिया को नीचे खींच लिया, इससे उनके चेहरे आमने-सामने हो गए थे।

"सुनो। तुमने जितने आदमियों के साथ सम्भोग किया है, उतना ही अधिक मैं तुमसे प्यार करता हूं। यह तुम समझ गईं न।"

"हां।"

"...क्या तुम्हें ऐसा करना पसन्द है? मेरा मतलब केवल अपने-आप से नहीं है, मैं केवल सम्भोग की बात पूछता हूं।" विन्स्टन फिर बोला।

"हां, बहुत।"

वह यही सुनना चाहता था। केवल एक आदमी का प्रेम नहीं, बल्कि सम्भोग की तीव्र इच्छा ही वह शक्ति थी जो पार्टी को चूर-चूर कर देती। उसने घास और नीले फलों पर उसे लिटा लिया। इस बार कोई कठिनाई नहीं हुई। अब उसकी सांस इतनी तेज़ नहीं चल रही थी। कुछ समय बाद वे एक-दूसरे से अपने-आप अलग हो गए। धूप में कुछ और गरमी-सी आ गई थी। दोनों को नींद-सी आ गई। उसने अपने कपडे खींचकर कछ भाग जूलिया पर डाल दिया। दोनों एकसाथ सो गए और आधे घंटे तक सोते रहे।

विन्स्टन की नींद पहले खुली। वह उठकर बैठ गया और जूलिया का चेहरा देखता रहा। वह अपनी हथेली का तकिया बनाए सो रही थी। उसका चेहरा सुन्दर था। वह तरुण और सबल शरीर नींद में बिलकुल असहाय पड़ा था। उसे दया आ रही थी और यह इच्छा हो रही थी, वह उसकी हर प्रकार से रक्षा करे। उनका आलिंगन संघर्ष था और पूर्ण आनन्द की प्राप्ति विजय। उन्होंने पार्टी को करारा घूंसा मारा था। यह राजनीतिक कर्म था।

जूलिया ने कहा, "हम एक बार यहां और आ सकते हैं। किसी भी स्थान का उपयोग दो बार किया जा सकता है। बेशक, महीन-दो महीने बाद ही यहां आना हो सकेगा।"

जागते ही जूलिया की चाल-ढाल सामान्य पार्टी सदस्य की भांति हो गई। वह एकदम सतर्क थी और शीघ्रतापूर्वक तैयार हो गई। पहले उसने अपने कपड़े पहने। इसके बाद कमर के चारों ओर पट्टी बांध ली। और इसके बाद वापसी की बातें विस्तारपूर्वक निश्चित करने लगी। स्पष्ट था कि जूलिया में जैसी व्यवहार-बुद्धि थी, वैसी विन्स्टन में नहीं थी। ऐसा लगता था कि उसे लन्दन और उसके आसपास के क्षेत्र के बारे में बहुत ज्ञान था। इसका कारण यह था कि उसने अनगिनत सामुदायिक-भ्रमणों में भाग लिया था। अबकी बार उसने जाने के लिए जो रास्ता तय किया, वह आनेवाले मार्ग से बिलकुल भिन्न था। वह एक दूसरे ही रेलवे स्टेशन पर जा निकलता था। "जिस रास्ते से आओ उससे वापस कभी मत लौटो।" उसने यह कहकर महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त स्थिर कर दिया था। पहले वह रवाना होगी। उसके रवाना होने के आधे घंटे बाद विन्स्टन को प्रस्थान करना था।

उसने चार दिन बाद मिलने का एक स्थान भी निश्चित कर दिया। वे वहां दफ़्तर का काम ख़त्म करने के बाद मिल सकते थे। वह स्थान निर्धनों की बस्ती में था। इस बस्ती में एक चोर बाज़ार था। यहां बराबर भीड़ रहती थी और बड़ा शोर होता रहता था। वह इधर-उधर दुकानों पर जूतों के फीते या सीने का तागा ख़रीदने के बहाने घूमेगी। यदि सब ठीक-ठाक हुआ तो वह अपनी नाक साफ़ करेगी, नहीं तो विन्स्टन को बिना उसे पहचाने पास से गुज़र जाना होगा। यदि भाग्य ने साथ दिया तो भीड़ में पन्द्रह मिनट बातचीत की जा सकेगी और अगली मुलाक़ात का स्थान भी तय किया जा सकेगा।

जैसे ही विन्स्टन ने उसके निर्देश समझ लिए वैसे ही उसने कहा, "अब मैं चलती हूं। मुझे साढे उन्नीस (शाम साढ़े सात) बजे वापस पहुंचना है। मुझे जूनियर एंटी-सेक्स लीग के दफ्तर का काम करना है। कुछ पर्चे-वर्चे बांटने होंगे। क्या वाहियात काम है! है नहीं? ज़रा मेरे कपड़े तो झाड़ दीजिए। मेरे बालों में पत्ते आदि तो नहीं लगे हैं? ठीक से देख लीजिए। अच्छा तो बाई, डियर, बाई।"

उसने अपने-आप को विन्स्टन की बांहों में छोड़ दिया और लिपटकर ज़ोरों से चुम्बन लिए। एक क्षण बाद ही वह पेड़ों की शाखाओं को हटाकर जंगल में खो गई। ऐसा करते हुए उसने बहुत ही कम आवाज़ की। अब भी उसने जलिया का जाति-नाम या उसके रहने का पता नहीं पूछा था। परन्तु इसे कोई फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि उनके घर में मिलने या परस्पर पत्र-व्यवहार करने की कोई सम्भावना नहीं थी।

वे फिर उस जंगलवाले गुप्त स्थान पर कभी नहीं गए। मई में फिर प्रेम करने का केवल एक ही अवसर और मिल सका। यह स्थान जूलिया का जाना हुआ था। यह चर्च का खंडहर था। उस स्थान पर तीस वर्ष पूर्व एक अणुबम गिरा था। वहां पहुंच जाने के बाद छिपना आसान था, लेकिन वहां से निकलकर आना या जाना ख़तरनाक था। शेष दिनों वे केवल सड़कों या पार्कों आदि में भीड़ के बीच ही मिल सके थे। सड़कों पर एक विशेष ढंग से बातचीत करना सम्भव था। वे फुटपाथ पर चलते-चलते बातें करते और यदि आसपास कहीं भी किसी पार्टी सदस्य को आता देखते या किसी टेलीस्क्रीन के समीप पहुंच जाते तो तुरन्त बिना वाक्य समाप्त किए ही रुक जाते और इसके बाद फिर छूटे हुए वाक्य से बिना सिर उठाए बातें शुरू कर देते। जूलिया तो इस प्रकार की बातचीत की बहुत ही अभ्यस्त जान पड़ती थी। ऐसी बातचीत को वह 'किश्तों में बातचीत' कहती थी। बिना होंठ हिलाए उसे बातें करने का अद्‌भुत अभ्यास था। रात की मुलाकातों में वे किसी प्रकार सबकी आंखों में धूल झोंककर चुम्बन भी ले लेते थे।

कभी-कभी वे लोग मुलाक़ात के स्थान पर पहुंचकर भी बात नहीं करते थे। कारण, कभी पुलिस का गश्ती दल होता था तो कभी ऊपर हैलीकॉप्टर मंडरा रहा होता था। यदि कुछ कम ख़तरा हुआ तो भी मिलना कठिन था। विन्स्टन सप्ताह में साठ घंटे काम करता था। जूलिया को इससे कुछ और अधिक घंटे काम करना पड़ता था। उनकी साप्ताहिक छुट्टीयां अक्सर अलग-अलग पड़ती थी, क्योंकि छुट्टी का दिन काम की अधिकता या कमी के अनुसार निश्चित किया जाता था। जूलिया की कोई शाम शायद ही कभी ख़ाली होती थी। वह व्याख्यानों और प्रदर्शनों में, जूनियर एंटी-सेक्स

लीग के प्रचार-साहित्य के वितरण, घृणा सप्ताह के लिए झंडे तैयार करने, बचत अभियान के सिलसिले में छोटी-छोटी रक़में जमा करने के काम में तथा अन्य ऐसे ही कामों में बहुत ज़्यादा वक़्त देती थी। उसका कहना था, ऐसा करने से अपने प्रेम-कांड पर पर्दा डाले रखने में सहायता मिलती है। यदि आप छोटे-छोटे नियमों का पालन करते हैं तो बड़े नियम कभी-कभी तोड़ भी सकते हैं। उसने प्रयत्न करके विन्स्टन को इस बात के लिए राज़ी कर लिया था कि अन्य उत्साही पार्टी-सदस्यों की भांति वह भी सप्ताह में एक शाम स्वेच्छा से गोला-बारूद के कारखाने में काम करे। अतएव विन्स्टन सप्ताह में एक बार शाम को चार घंटे बड़े कष्ट से बिताता था। वह ढिबरी के हलके प्रकाश में बमों के फ़्यूज़ों के छोटे-छोटे टुकड़ों को आपस में जोड़ता था। यहां एक तरफ़ तो हथौड़े बजते थे और दूसरी ओर टेलीस्क्रीन का संगीत चलता था। दोनों मिलकर अजब समा बांध देते थे।

जब वे चर्चवाली मीनार के पास मिले तो उनकी जो बातें अधूरी रह गई थीं, वे उन्होंने पूरी कर लीं। तीसरे पहर का वक़्त था और बाहर बड़ी गर्मी थी। जिस स्थान पर वे ऊपर मीनार में थे, वह जगह भी बड़ी गर्म थी और वहां कछ बदब भी थी। यह बदबू कबूतरों की बीट की थी। वे वहां धूल भरे, पत्तियों और टहनी से भरे फ़र्श पर घंटों बैठे बातें करते रहे। वे बारी-बारी से उठकर मीनार की नुकीली दरारों में झांककर नीचे देख लेते थे, कहीं कोई आ तो नहीं रहा।

जूलिया छब्बीस वर्ष की थी। वह लड़कियों के होस्टल में रहती थी। उसके साथ तीस और लड़कियां रहती थीं। और वह जैसा कि विन्स्टन ने अनुमान किया था, फ़िक्शन-विभाग के उपन्यास लेखनयन्त्र पर काम करती थी। वह उपन्यास लिखने की सारी यान्त्रिक प्रक्रिया का वर्णन कर सकती थी। उसे आयोजन समिति के निर्देशों से लेकर दोहरानेवाले लेखकों के दल के कार्य तक का पूरा ब्यौरा मालूम था। परन्तु वह उपन्यास के छपकर तैयार हो जानेवाले रूप में रुचि नहीं रखती थी। वह पढ़ने-वढ़ने की फ़िक्र में नहीं रहती थी। जूतों के फीतों या मुरब्बों की तरह किताबें भी वस्तु थीं जिनका उत्पादन होना चाहिए। बस, इससे अधिक कुछ नहीं।

सन् 1960 के आरम्भ की बातों की उसे कोई याद नहीं थी। क्रान्ति के पूर्व की दशा के बारे में केवल उसके दादा बात किया करते थे। वह जब आठ वर्ष की थी, तभी वे लापता हो गए थे। स्कूल में वह हॉकी टीम की कप्तान थी। उसने लगातार दो वर्षों तक शारीरिक व्यायाम की ट्राफी जीती थी। जासूस दल की वह नेता भी रही है। जूनियर एंटी-सेक्स लीग की सदस्य बनने के पूर्व वह यूथ लीग की शाखा-सेक्रेटरी भी थी। चारित्रिक मामलों में उस पर कभी कोई दाग़ नहीं आया। फ़िक्शन विभाग के एक विशिष्ट स्थान पर उसको अपनी चारित्रिक योग्यता के कारण ही काम मिला था। इस जगह मजदूरों के लिए सस्ते किस्म के उपन्यास छापे जाते थे। उस जगह का नाम उन लोगों ने 'कूड़ा-करकट घर' रख छोड़ा था। वह वहां ऐसी पुस्तकों को तैयार करने में मदद करती थी जो मुहरबन्द काग़ज़ी लिफ़ाफ़ों में बंधकर बाजार में भेजी जाती थीं। इन पुस्तकों के नाम होते थे 'दुष्टता की कहानियां' या 'लड़कियों के स्कूल में एक रात' आदि। इन किताबों को युवक मज़दूर यह समझकर ख़रीदते थे कि वे कोई गैर-कानूनी चीज़ ख़रीद रहे हैं।

"ये कैसी किताबें हैं?" विन्स्टन ने उत्सुकतावश पूछा।

'ओह, बिलकुल रद्दी। बड़ी बोर। उनके पास छह कथानक हैं। वे उन्हीं में हेरफेर करके नई-नई पुस्तकें छापते रहते हैं। मैं तो केवल उस मशीन पर काम करती हूं। मैं कभी लेखकों के दल में नहीं रही। मैं साहित्यिक नहीं हूं।"

उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि विभागीय अध्यक्ष को छोड़कर जिस जगह जूलिया काम करती थी, वहां सब लड़कियां ही काम करती थीं। कारण यह था कि लड़कियों की अपेक्षा लड़कों की कामवृत्ति अधिक असंयमी होती है, इसलिए जो गन्दगी वहां छपती थी, उससे लड़कों के बिगड़ जाने की अधिक आशंका थी। जूलिया ने बतलाया, "वे लोग तो वहां विवाहित स्त्रियों को भी रखना पसन्द नहीं करते। कुमारियों को बड़ा शुद्ध समझा जाता है। लेकिन इस नियम का अपवाद मैं ही हूं।"

जूलिया का पहला प्रेम-किस्सा सोलह वर्ष की अवस्था में साठ साल के एक पार्टी सदस्य से चला था। बाद में उसने गिरफ़्तारी से बचने के

लिए आत्महत्या कर ली। जूलिया ने कहा, "अच्छा ही किया, वर्ना वह अपने बयान में मेरा भी नाम ले देता।" तब से फिर अनेक प्रेम-कांड हुए। उसके लिए जीवन साधारण और सीधा-सादा था। आप जीवन का आनन्द उठाना चाहते हैं। वे (पार्टीवाले) आपको रोकते हैं। आप नियम भंग करते हैं। वे आपको आनन्द से वंचित रखने के लिए नियम बनाते हैं। आप अपनी जान बचाते हुए नियम भंग करते हैं। यह बिलकुल स्वाभाविक है। वह पार्टी से घृणा करती थी। और वह स्पष्ट शब्दों में यह बात कह भी देती थी। उसने 'ब्रदरहुड' का नाम नहीं सुना था और उसका अस्तित्व भी वह नहीं जानती थी। वह पार्टी के विरुद्ध ऐसा कोई विद्रोह नहीं करना चाहती थी जो असफल हो जाए। चतुराई इसमें थी कि नियम तोड़ो और जिन्दा बचे रहो। वह सोच रहा था — जूलिया जैसे न जाने कितने और व्यक्ति युवा पीढ़ी में होंगे जो पार्टी को आसमान की तरह अपरिवर्तनीय समझते होंगे। वे उसकी सत्ता के विरुद्ध कभी आवाज़ नहीं उठाते थे। केवल, धोखा देते थे, ठीक उसी तरह जिस प्रकार खरगोश कुत्तों को धोखा देते हैं।

उन्होंने विवाह की सम्भावना पर कभी विचार नहीं किया। यह बात इतनी असम्भव थी कि उसके सम्बन्ध में विचार करना भी व्यर्थ जान पड़ता था। यदि विन्स्टन कैथरीन से किसी प्रकार अपना पिंड छुड़ा भी लेता तो भी पार्टी-कमेटी ऐसे विवाह की कभी अनुमती नहीं देती। विवाह का तो दिवास्वप्न भी नहीं देखा जा सकता था।

"वह कैसी थी? आपकी बीवी!" जूलिया ने पूछा।

"तुमने नई भाषा का वह शब्द सुना है, 'अच्छे विचारों वाली?' जिसका अर्थ होता है, जो पार्टी के विरुद्ध कोई बात ही न सोच सके — ऐसी थी वह! घोर पार्टी-भक्त!"

"मैंने शब्द तो नहीं सुना, लेकिन इस प्रकार के लोगों को जानती अवश्य हूं।"

इसके बाद वह अपने दाम्पत्य जीवन की कथा उसे सुनाने लगा। लेकिन ताज्जुब की बात यह थी कि कथा का विशिष्ट भाग जूलिया को

पहले ही मालूम था। जूलिया ने स्वयं ही उसे बतला दिया कि वह किस प्रकार विन्स्टन के स्पर्श करते ही अपने अंग-प्रत्यंग को कठोर बना लेती होगी, और फिर उसे यह लगता होगा कि कैथरीन उसे पीछे धक्का देकर हटा रही है, हालांकि उसके हाथ विन्स्टन के चारों ओर होते होंगे।

उसने कहा, "मैं यह सब भी बरदाश्त कर लेता, किन्तु एक बात मुझे असह्य थी। इसके बाद विन्स्टन ने उस दिन का विशेष और अनिवार्य कार्यक्रम बतलाया जिस रात कैथरीन उसके साथ ही सोती थी। "वह इस रात के कार्यक्रम को एक विशिष्ट नाम से पुकारती थी, जिसकी शायद तुम कल्पना भी नहीं कर सकतीं।"

"क्यों? वह कहती होगी, यह पार्टी के प्रति हमारा कर्तव्य है।" जूलिया ने तपाक्-से कहा।

"तुम्हें कैसे मालूम?"

"मैंने भी स्कूल में पढ़ा है। वहां सोलह वर्ष से ऊपर की लड़कियों को सेक्स पर सप्ताह में एक बार व्याख्यान दिया जाता है। जूनियर लीग में भी। वे ये बातें वर्षों दोहराते हैं और कूट-कूटकर दिमाग़ में भर देते हैं।"

इसके बाद जूलिया ने इस विषय में और विस्तार से बातें कीं। वह सेक्स-सम्बन्धी हर पार्टी-नियम की गहराई को समझती थी — वे बातें भी, जिन्हें विन्स्टन नहीं जानता था। पार्टी न केवल सेक्स-भावनाओं को इसलिए समाप्त कर देना चाहती थी, क्योंकि इससे हर व्यक्ति का अपना एक अलग मानसिक-जगत बन जाता है, अपितु इसलिए भी कि ऐसा होने देने से पार्टी का व्यक्ति पर नियन्त्रण कम हो जाता था। दूसरे सेक्स न करने से लोगों को हिस्टीरिया का दौरा पड़ने लगता था। यह वांछनीय था। इसको युद्ध-ज्वर के रूप में बदला जा सकता था। लोग इस कारण नेता की पूजा करने के लिए इच्छुक हो जाते थे। जूलिया का कहना था :

"प्रेम करने में आपकी शक्ति ख़र्च होती है। इसके बाद आप प्रसन्नता अनुभव करते हैं तथा अन्य चिन्ताओं का आप पर असर नहीं होता। पार्टी

को यह सहन नहीं है। वे चाहते हैं, हर समय आपमें से शक्ति फूटती रहे। ये मार्चे, हर्षध्वनियां, झंडियों का हिलाना, इन सबकी अधिकता यौन विकृति का चिह्न है। यदि आप अन्तःकरण से प्रसन्न हैं तो बड़े भाई या तीन वर्षीय योजना के सम्बन्ध में आपको उत्तेजित होने की क्या आवश्यकता है? दो मिनट की घृणा-प्रचार की फ़िल्में तथा अन्य वैसी ही चीज़ें देखकर आप क्यों उत्तेजित होंगे?"

विन्स्टन सोचता था कि यह बात बिलकुल ठीक है। कौमार्य या ब्रह्मचर्य व्रत और राजनीतिक अंधभक्ति में अवश्य ही यही सम्बन्ध था। पार्टी को भय, घृणा करनेवाले तथा पागलों जैसी बातों पर विश्वास कर लेनेवाले लोगों की ज़रूरत थी। यह सब बिना इस प्रकार कोई ऊर्जा दबाए किस तरह सम्भव होता? यौन-भावना पार्टी के लिए ख़तरनाक थी। इसलिए पार्टी ने इसे यह रूप दे रखा था। यही चाल उन्होंने माता-पिता के अभिभावकत्व से भी खेली थी। परिवारों का उन्मूलन असम्भव था। लोगों को बच्चों से बड़ा प्यार होता है। बच्चों को ऐसी शिक्षा दी गई थी कि वे अपने मां-बाप के ही विरुद्ध हो गए थे और उनकी जासूसी करते थे। परिवार विचार नियन्त्रक पुलिस की शाखा बन गए थे। ऐसी तरकीब की गई थी — एक-दूसरे के निकटतम व्यक्ति सदा एक-दूसरे पर जासूसी करते थे। यह जासूसी दिन-रात चलती थी।

पता नहीं क्यों, वह फिर सहसा कैथरीन की बात सोचने लगा था। कैथरीन को यदि विन्स्टन के विचारों का ज़रा भी पता लग जाता तो वह निस्सन्देह बिना संकोच उसे विचार-पुलिस के हवाले कर देती।

वे धूल-भरे फ़र्श पर बराबर-बराबर बैठे थे। उसने जूलिया को अपनी बग़ल में खींच लिया। वह उसके कन्धे पर दुलक गई। उसके बालों की गहरी सुगन्ध में कबूतरों की बीट की सड़ांध खो गई। उसने सोचा, जूलिया अभी बड़ी कमसिन है। उसे अब भी जीवन का आनन्द लेना है।

शायद वह यह अनुभव करती है कि कभी-न-कभी विचार-पुलिस उसे अवश्य पकड़ लेगी। परन्तु उसका विश्वास था कि आदमी की अपनी एक दुनिया अलग हो सकती है और उसमें गुप्त रूप से जैसा चाहे वैसे रहा भी जा सकता है। ज़रूरत केवल इस बात की है कि भाग्य दाहिने रहे,

अक्ल हो और ज़रा बहादुरी हो। वह यह नहीं मानती थी कि विजय बहुत दूर है। इसकी भी आवश्यकता नहीं है कि पार्टी के विरुद्ध संघर्ष छेड़ने के बाद अपने शरीर को लाश ही समझना चाहिए।

"हम मृत हैं।" विन्स्टन ने कहा।

"उंह! क्या बेकार की बातें करते हो! तुम मेरे साथ सो सकते हो या अस्थिपंजर के साथ? क्या तुम्हें जीवित रहने में आनन्द नहीं आता? क्या मुझे स्पर्श करना पसन्द नहीं? यह मैं हूं, यह मेरा हाथ है, यह पैर है। मैं यथार्थ हूं, बिलकुल सत्य। क्या तुम इसे नहीं पसन्द करते?"

उसने अपने-आप को सिकोड़ लिया और उसकी गोद में और सिमट गई। वह उसके वक्षस्थल को स्पर्श कर रहा था। उसके स्तन उभर आए थे, और सुदृढ़ थे। उसे लग रहा था कि वह अपनी तरुणाई और शक्ति से उसे सींच रही है।

"हां, मैं पसन्द करता हूं," उसने कहा।

"तो फिर मौत की बातें बन्द करो। और अब सुनो, हमें अगली मुलाक़ात के बारे में तय करना है। हम लोग जंगलवाली जगह पर फिर जा सकते हैं। अब काफ़ी दिन गुज़र चुके हैं। लेकिन इस बार तुम्हें बिलकुल दूसरे रास्ते से जाना चाहिए। मैंने पूरी योजना बना ली है। तुम ट्रेन से जाना... लेकिन देखो, अच्छा मैं नक्शा ही बना देती हूं।"।

और फ़र्श की धूल-भरी सतह पर उसने कबूतर के घोंसले से टहनी निकालकर नक्शा बनाना शुरू कर दिया।

विन्स्टन ने मि॰ चारिंगटन की दुकान के ऊपर के छोटे और जर्जर कमरे में चारों तरफ़ दृष्टि दौड़ाई। खिड़की के पास पलंग पड़ा था। और उस पर बिस्तर बिछा था। उस पर नीचे की तरफ़ पुराने कम्बल पड़े थे। बिना गिलाफ का तकिया पड़ा था। पुराने ढंग की घड़ी टिक-टिक चल रही थी। कोने में तिपाई थी। कांच का पेपरवेट भी रखा था। मन्द रोशनी में वह चमक रहा था।

आले में टीन का स्टोव था। एक चाय बनाने का बर्तन और दो प्याले थे। ये चीज़ें मि॰ चारिंगटन ने ही दी थीं। विन्स्टन ने स्टोव जलाकर उस पर पानी रख दिया। वह एक पैकेट विक्टरी कॉफी और कुछ सैकरीन की टिकिया ले आया था। घड़ी में सात बजकर बीस मिनट हुए थे। उसका साढ़े सात बजे आने का वायदा था।

वह मन-ही-मन सोच रहा था — मूर्खता, मूर्खता, मूर्खता! जानबूझकर वह मूर्खता पर मूर्खता करता जा रहा है, जो आत्महत्या के सिवा कुछ नहीं है। उसके दिमाग़ में यह ख़याल तिपाई पर चमकते हुए पेपरवेट को देखकर सबसे पहले आया। जैसी उसने कल्पना की थी, मि॰ चारिंगटन ने कमरे को किराये पर उठाने में कोई आपत्ति न की। उलटे वह खुश थे, सोच रहे थे, इससे उन्हें कुछ डॉलरों की घर बैठे-बिठाए आमदनी ही हो जाएगी। जब उनको यह बतलाया गया कि विन्स्टन कमरे को अपनी प्रेमिका के साथ कुछ समय बिताने के लिए किराये पर लेना चाहता है, तो भी मि॰ चारिंगटन न तो क्षुब्ध ही हुए और न उन्होंने कोई विरोध ही किया। इसके बजाय उन्होंने साधारण बातें करनी आरम्भ कर दी। उनका कहना था कि एकान्त बडी मल्यवान वस्त है। हरेक व्यक्ति कभी-न-कभी एकान्त की कामना करता है। और जब किसी को ऐसा एकान्त मिल जाए तो यह साधारण शिष्टाचार का तकाज़ा है कि जो इस बात को जाने वह अपना मुंह भी इस विषय में न खोले। उन्होंने यह भी बतलाया कि मकान के ऊपरवाले भाग में जाने के दो रास्ते हैं। पहला सामने से और दूसरा पीछे से, जो गली में खुलता था। इसके बाद वह गायब हो गए।

खिड़की से बाहर, कोई गा रहा था, विन्स्टन ने झांककर देखा। वह मलमल के परदे के पीछे था। जून का महीना था। सूरज ज़मीन और आकाश तपा रहा था। हाते में एक स्थूलकाय स्त्री कपड़े धो-धोकर सुखा रही थी। कुछ बच्चों के कपड़े थे। वह कपड़ों में क्लिपें भी लगा रही थी। जब उसके मुंह में क्लिप न होती तो वह ज़ोरों से गा उठती :

वह आशाहीन कल्पना थी
जो अप्रैल के दिन की भांति गुज़र गई
एक नज़र और एक शब्द, इनसे क्या-क्या सपने बन गए
इन्होंने मेरे हृदय को चुरा लिया!

यह धुन गत कई सप्ताहों में लन्दन पर छाई थी। यह गाना अनगिनत मज़दूरों के लिए संगीत विभाग ने तैयार किया था। इस गाने के शब्द 'पद्य-यन्त्र' नाम की मशीन से तैयार किए गए थे। लेकिन वह औरत इस ढंग से गा रही थी कि वह बेहूदा गाना भी जानदार बन गया था। वह उस स्त्री की आवाज़ भी सुन रहा था और उसके आने-जाने पर जूतों की चरमराहट भी। सड़क पर बच्चे शोर मचा रहे थे। कहीं दूर से गाड़ियों तथा मोटरों आदि के आने-जाने की आवाज़ भी सुनाई पड़ रही थी। फिर भी कमरा शान्त था। टेलीस्क्रीन न होने के कारण ऐसा था।

मूर्खता, मूर्खता, मूर्खता! उसने फिर सोचा। यह तो सोचा ही नहीं जा सकता था कि वे कुछ सप्ताह लगातार यहां आएं और फिर भी पकड़े न जाएं। परन्तु एकान्तवाली जगह होने का आकर्षण ऐसा था, जिससे वे दोनों ही बच नहीं पाए थे। गिरजे के खंडहर में मिलने के बाद वे फिर बहुत दिनों तक मिल ही नहीं पाए थे। घृणा सप्ताह के कारण काम के घंटे बहुत अधिक बढ़ा दिए गए थे। वैसे वह सप्ताह आने में अभी एक मास की देर थी, परन्तु इसकी तैयारी में अभी से लोगों को बहुत अधिक काम करना पड़ रहा था।

जब से वह उससे मिला था, उसकी इच्छाएं बहुत कुछ दूसरा रूप धारण कर चुकी थीं। पहले उसकी इच्छाओं में कामुकता नहीं थी, परन्तु दूसरी बार यह हुआ। उसे लगा कि जूलिया के बालों की सुगन्ध, उसके अधरों का माधुर्य तथा उसकी त्वचा का स्पर्श, सब-कुछ उसके अन्दर प्रविष्ट हो गया है। अब जूलिया उसकी भौतिक आवश्यकता थी। उसने सोचा, कितना अच्छा होता, उन्होंने दस वर्ष पूर्व ही विवाह कर लिया होता। दोनों सड़क पर ठीक उसी तरह चलते, जैसे इस समय चल रहे थे, परन्तु खुलकर, किसी से छिपाने की ज़रूरत न पड़ती। वे छोटी-मोटी

बातें करते, और घर की छोटी-मोटी चीजें बाज़ार में साथ-साथ ख़रीदते। उसकी इच्छा हो रही थी कि उनकी कोई एक ऐसी जगह होनी चाहिए जहां वे मिलें तो सही, लेकिन हर बार मिलने पर सम्भोग करना अनिवार्य न हो। उसके दिमाग़ में यह बात आई कि क्यों न मि० चारिंगटन की दुकान के ऊपर का कमरा किराये पर ले लिया जाए। जब उसने जूलिया के सामने यह प्रस्ताव रखा तो वह बिना किसी आपत्ति के आशातीत ढंग से कमरे को किराये पर लेने के प्रस्ताव से सहमत हो गई। दोनों जानते थे, यह निपट पागलपन है। ऐसा ही था, जैसे दोनों जान-बूझकर क़ब्र की ओर कदम बढ़ा रहे हों। वह पलंग की पाटी पर बैठा उसका इन्तज़ार कर रहा था किन्तु उसके दिमाग़ में प्रेम मन्त्रालय के तहखाने नाच रहे थे। सामने मौत थी, ठीक उसी तरह जिस तरह निन्यानवे के बाद सौ की संख्या आती है। कोई बच नहीं सकता था, लेकिन थोड़ा टाला ज़रूर जा सकता था।

तभी किसी के जीने पर जल्दी-जल्दी चढ़ने की आवाज़ सुनाई दी। जुलिया कमरे में जल्दी से घुस गई। उसके हाथ में भूरे रंग का औज़ारों का झोला था। इस झोले को लिए हुए उसने कई बार जूलिया को मन्त्रालय में इधर-उधर आते-जाते देखा था। उसने बांहें फैलाकर उसे आलिंगन में ले लिया, लेकिन जूलिया ने जल्दी ही अपने-आप को बाहुपाश से छुड़ा लिया। शायद उसका कारण यह था कि उसके हाथ में झोला अब भी टंगा था।

"आधे मिनट के लिए।" उसने कहा "मैं क्या लाई हूं, यह तो देखो। तुम वही गन्दी विक्टरी कॉफ़ी फिर ले आए हो! मैं भी यही सोच रही थी। फेंक दो। हमें उसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। यह देखो!"

वह अपने घुटनों के बल बैठ गई। उसने झोला खोल दिया था। कुछ पेचकस तथा अन्य औज़ार ऊपर रखे थे। नीचे कुछ साफ़ पैकट थे। पहला पैकट जो जूलिया ने विन्स्टन को दिया उसमें से कुछ जानी-पहचानी ख़ुशबू आ रही थी। उसमें कुछ रेत जैसी भारी चीज़ थी। छूते ही वह धसक जाती थी।

"यह चीनी तो नहीं है?" उसने कहा।

"बिलकुल चीनी, असली चीनी है। सैकरीन नहीं है। यह सफ़ेद डबलरोटी रही, काली सड़ियल रोटी नहीं, और यह मुरब्बे का डिब्बा है। यह दूध का टीन है। मुझे इसे बांधना पड़ गया क्योंकि..."

"फिर वह चुप हो गई। उसने यह नहीं बतलाया कि उसने ऐसा क्यों किया। सुगन्ध से कमरा भर गया था, ऐसी सुगन्ध जिससे वह बचपन से परिचित था। आजकल तो कभी-कभी ही ऐसी सुगन्ध मिलती थी। कभी किसी दरवाज़े से आती तो कभी सड़क पर किसी आदमी के झोले या जेब से और फिर एकदम गायब हो जाती।

"ये कॉफ़ी है, असली कॉफ़ी।" जूलिया ने धीरे से फुसफुसाकर कहा।

"ये पार्टी के अन्तरंग सदस्यों को दी जानेवाली कॉफ़ी है। मैं पूरा किलो ले आई हूं।" उसने कहा।

"परन्तु ये चीज़ें तुम्हें मिल कैसे गईं?" विन्स्टन ने पूछा।

"ये सब पार्टी के अन्तरंग सदस्यों के लिए है। कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो उन सुअरों को न मिलती हो। लेकिन उनके वहां भी तो नौकर-चाकर हैं और वे भी तो चोरी कर सकते हैं। और यह देखो मैं एक पैकट चाय का भी लाई हूं।"

विन्स्टन भी उसके पास ज़मीन में ही बैठ गया था। उसने पैकट का एक कोना फाड़ दिया।

"असली चाय है। जामुन की पत्तियां नहीं।" जूलिया ने कहा। "इधर काफ़ी चाय आ रही है। शायद हिन्दुस्तान या ऐसी ही किसी जगह पर इन्होंने क़ब्ज़ा कर लिया है। हां, सुनो, जरा तीन मिनट के लिए तुम मेरी तरफ़ पीठ करके बैठ जाओ। बिस्तर के दूसरी ओर, लेकिन खिड़की के बहुत पास मत जाना। परन्तु जब तक मैं न कहूं मेरी ओर मुंह न करना।" विन्स्टन चुपचाप अर्थहीन दृष्टि से एकटक दूसरी ओर मलमल के पर्दे से बाहर देखता रहा। नीचे अब भी वह औरत कपड़े धो-धोकर सुखा रही थी। उसने और दो क्लिपें रस्सी पर सूख रहे कपड़ों में लगाकर फिर अत्यन्त भावपूर्वक गाया :

वे कहते हैं समय बीतने के साथ सब बातें
विस्मृति के गर्भ में समा जाती हैं।
वे कहते हैं, आप सदैव उन बातों को भुला सकते हैं।
लेकिन उन मुस्कुराहटों और आंसुओं की याद
वर्षों बीत जाने के बाद भी हमारे हृदय को दुखी कर देती है।

ऐसा प्रतीत होता था कि उसे पूरा गीत याद था। उसका स्वर मधुर और गरम हवा में चारों ओर गूंज रहा था। उस स्वर में अजीब दुख था। उसे देखकर ऐसा लगता था कि यदि वह शाम अनन्त हो आए और उसे लगातार अनगिनत कपड़े धोने पड़ें तो भी उसे कोई शिकायत नहीं होगी। वह वहां हज़ारों बाल-बच्चों के कपड़े सुखाती रहेगी और गीत गुनगुनाती रहेगी। उसे ख़याल आया कि पार्टी के किसी सदस्य को गाते या गुनगुनाते हुए उसने कभी नहीं सुना या देखा। गुनगुनाने को पार्टी-भक्ति में कमी और अपने-आप से बातें करने जैसी ख़तरनाक सनक समझा जाता। शायद जब लोग क़रीब-क़रीब भूखे रहते हों, तभी उनको गाने की इजाज़त दी जाती थी। यह उन्हें गीत दिए जाते थे।

"अब मुंह मेरी तरफ़ कर सकते हो।" जूलिया ने कहा।

उसने फिर जूलिया की तरफ़ चेहरा घुमा दिया। क्षण-भर तो वह उसे पहचान ही नहीं सका। वह उम्मीद कर रहा था कि वह उसको नंगा देखेगा। परन्तु वह नंगी नहीं थी। जो परिवर्तन हुआ था, वह उससे भी अधिक था। उसने अपने चेहरे को सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री से सज्जित किया था।

अवश्य ही वह मजदूरों की बस्ती की किसी दुकान में घुस गई होगी और वहां से उसने 'मेकअप' सामग्री खरीद ली होगी। उसके होंठों पर लाली थी। गालों पर भी लाली थी। नाक पर पाउडर था। आंखों के नीचे भी कुछ लगा था जिससे वे चमक गई थीं। मेकअप चतुराई से नहीं किया गया था, परन्तु इन मामलों में विन्स्टन के स्टैंडर्ड भी कोई बहुत ऊंचे नहीं थे। उर ने किसी पार्टी सदस्य के चेहरे की सौन्दर्य प्रसाधन सामग्रीयुक्त कल्पना नहीं की थी। जूलिया के बदले हुए चेहरे को देखकर वह चौंक गया। कुछ रंगों के लग जाने से वह ख़ूबसूरत ही नहीं लग रही थी, बल्कि

पहले से अधिक स्त्रियोचित मुद्रा में दिखलाई पड़ रही थी। उसके अधकटे केश तथा लड़कों जैसी पोशाक उसकी सुन्दरता में चार चांद लगा रहे थे और जैसे ही विन्स्टन ने उसको अपनी बांहों में भरा कि उसके नासापुटों में नक़ली सेंट की ख़ुशबू घुस गई।

"सेंट भी?" उसने कहा।

"हां डियर! सेंट भी। और तुम्हें मालूम है कि आगे मैं क्या करने जा रही हूं? अगली बार औरतोंवाली फ्राक लाऊंगी और इस पतलून को उतार फेंकूंगी। मैं रेशमी मोज़े और ऊंची एड़ी के जूते पहनूंगी। इस कमरे में नारी बनकर रहूंगी — पार्टी की सदस्य नहीं।"।

उन्होंने अपने कपड़े उतार फेंके और उस महोगनी लकड़ी के पलंग पर चढ़ गए। वह पहली बार उसके सामने बिलकुल नंगा हुआ था। अभी तक वह अपने दुबले और पीले शरीर को देख बड़ा लज्जित होता था। उसे अपने टखने की नस पर फोड़ा देखकर भी शरम लगती थी। चादर तो कोई न थी लेकिन पलंग पर जो कम्बल था, वह हलका होते हुए भी बड़ा मुलयाम था। पलंग की लम्बाई-चौड़ाई तथा उसका गुदगुदापन दोनों के लिए बड़ा आश्चर्यदायी आनन्द था। जूलिया ने कहा, "इस पलंग में खटमल ही खटमल भरे होंगे। परन्तु क्या किया जाए।" दोहरे पलंग अब नहीं दिखलाई पड़ते। यदि कहीं दीखते भी थे तो केवल मज़दूरों के ही मकानों में। विन्स्टन अपने बचपन में इस तरह के पलंग पर कभी-कभी सोता था। जूलिया पहले कभी ऐसे पलंग पर नहीं लेटी थी।

कुछ देर के लिए वे सो गए। जब वे जगे तो कोई पौन घंटा गुज़र चुका था। वह हिला नहीं, क्योंकि बांह का तकिया लगाए जूलिया सो रही थी। उसका अधिकांश पाउडर तथा लाली या तो विन्स्टन के चेहरे पर लग गई थी या तकिये पर। परन्तु गालों पर हलकी लाली अब भी थी। डूबते सूरज की पीली किरणें पलंग के पैताने पर पड़ रही थीं। आतिशदान चमक रहा था। उस पर रखा पानी ख़ूब खौल रहा था। नीचे हाते में औरत का गाना बन्द हो गया था। सड़क से बच्चों के शोर की आवाज़ अब भी आ रही थी। वह सोच रहा था कि क्या बीते ज़माने में स्त्री-पुरुषों

का गरमी के दिनों में इस प्रकार लेटा रहना, इच्छानुसार बातें करना, और उठने के लिए बाध्य न होना, चुपचाप बाहर से आनेवाली आवाज़ों को सुनना — स्वाभाविक समझा जाता था? जूलिया जाग गई थी। उसने आंखें मलीं और कुहनी के बल उठकर जलते स्टोव को देखा।

"ओह, आधा पानी तो भाप बनकर ही उड़ गया होगा," उसने कहा, "मैं अभी उठकर झटपट कॉफ़ी बनाती हूं। अभी बहुत समय है। आजकल तुम्हारे फ़्लैटों की बिजली कब काट दी जाती है?"

"साढ़े तेईस बजे (साढ़े ग्यारह बजे)।"

"मेरे होस्टल में तो बिजली ग्यारह बजे ही चली जाती है। इसलिए हम लोगों को इसके पहले ही पहुंच जाना चाहिए, क्योंकि — चल भाग यहां से गन्दे!" और जूलिया ने नीचे झुककर अपना एक जूता उठाकर कोने की ओर फेंककर मारा। ठीक उसी तरह जिस तरह विन्स्टन ने उसे फ़िल्म के दौरान गोल्डस्टीन पर डिक्शनरी फेंकते देखा था।

"कौन था?" उसने आश्चर्य से पूछा।

"चूहा। वह अपने बिल से नाक चमका रहा था। वहां एक छेद है।"

"अच्छा! इस कमरे में चूहे भी हैं?" विन्स्टन ने कहा।

जूलिया लेट गई थी। उसने कहा, "यहां सब जगह हैं। हमारे होस्टल के रसोईघर तक में हैं। लन्दन के कुछ भागों में तो केवल चूहों की ही बस्ती है। तुम्हें मालूम है, वे बच्चों पर हमला कर देते हैं? हां, कुछ स्थानों में तो दो मिनट के लिए भी बच्चों को माताएं ज़मीन पर लिटाकर अकेला नहीं छोड़तीं। हमला बड़े-बड़े भूरे चूहे करते हैं। और सबसे ख़तरनाक बात तो यह है कि वे...।"

"बस, बस, बन्द करो।" विन्स्टन ने कसकर अपनी आंखें बन्द कर लीं।

"डियर, क्या हुआ, तुम्हारा चेहरा तो एकदम पीला पड़ गया है?"

"मुझे चूहों से सबसे अधिक डर लगता है।"

"फ़िक्र न करो, डियर।" जूलिया ने कहा, "मैं इन गन्दे जानवरों को यहां नहीं घुसने दूंगी। मैं जाने के पहले इस छेद के मुंह को किसी चीज़ से भर दूंगी। अगली बार सीमेंट प्लास्टर लाकर इसे अच्छी तरह बन्द कर दूंगी।"

जूलिया बिस्तर से उठ पड़ी थी और उसने अपने कपड़े पहन लिए थे। उसने कॉफ़ी बना ली थी। सुगन्ध इतनी तेज़ थी कि उसे उठकर खिड़की बन्द कर देनी पड़ी। उसे लगा कि कहीं इस गन्ध से कोई उत्सुकतावश कमरे में झांकने ऊपर न आ जाए। चीनी की वजह से कॉफ़ी में रेशम जैसी चमक आ गई थी। सैकरीन की वजह से इस चमक को वह वर्षों हुए भूल गया था। जूलिया अपनी पतलून की एक जेब में हाथ डाले और दूसरे में डबलरोटी तथा मुरब्बा लिए कमरे में इधर से उधर घूम रही थी। वह कभी उदासीन भाव से बुक-केस को देखती और कभी तिपाई की मरम्मत की तरकीब बताने लगती और कभी आरामकुर्सी पर कूदकर बैठ जाती और देखती कि उसमें बैठने से आराम मिलता है या नहीं। उसे पुरानी घड़ी देखने में भी मज़ा आता था। कांच के पेपरवेट को रोशनी में अच्छी तरह देखने के लिए वह उसे पलंग पर ले आई। उसने पेपरवेट जूलिया के हाथ से ले लिया। उसमें अन्दर का भाग वर्षा के जल जैसा लगता था।

"यह क्या है?" जूलिया ने पूछा।

"कुछ नहीं, मेरा मतलब है, यह कभी काम में नहीं लाया गया। यही बात मुझे पसन्द है। यह इतिहास का एक अंश है, जिसे पार्टी-अधिकारी बदलना भूल गए। यह सौ वर्ष पूर्व की दुनिया का सन्देश है।"

"और यह चित्र..." उसने उंगली उठाकर दिखलाते हुए कहा, "और यह तस्वीर भी क्या सौ साल पुरानी है?"

"और ज़्यादा, शायद दो सौ बरस। ठीक-ठीक तो नहीं कहा जा सकता। आजकल कोई चीज़ कितनी पुरानी है, यह बतलाना बड़ा कठिन है।"

वह उसे देखने और आगे बढ़ गई। थोड़ी देर बाद तस्वीर देखकर उसने कहा, "ये कौन-सी जगह है? ऐसा लगता है, मैंने इसे पहले भी देखा है।"

"यह चर्च है या था। इसका नाम सेंट क्लीमेंट्स डेन था।"

"मैं शर्त लगाकर कहती हूं," जूलिया ने कहा, "इस तस्वीर में खटमल भरे हैं। मैं इसे उतारकर एक दिन इसकी सफाई करूंगी। अब चलने का वक़्त हो गया। मुझे मुंह अच्छी तरह धो डालना चाहिए। मुझे तुम्हारे मुंह को भी अच्छी तरह धोना पड़ेगा। यह काम बाद में करूंगी।"

विन्स्टन कुछ और मिनट बिस्तर से नहीं उठा। कमरे में अंधेरा हो रहा था। वह रोशनी के पास चला गया और पेपरवेट को एकटक देखता रहा। अन्दर का मूंगा देख इतनी उत्सुकता नहीं होती थी जितनी उसके अन्दर का कांच देखकर। कांच को इस तरह बनाया गया था कि वह काफ़ी गहरा-सा प्रतीत होता था। फिर भी उसकी पारदर्शिता में कोई कमी नहीं आई थी। ऐसा प्रतीत होता था कि कांच के ऊपर की सतह आकाश है जिसके नीचे अपना वातावरण है जिसमें पुरानी दुनिया बन्द है। पेपरवेट वह कमरा था जिसमें वह बैठा था। वह मूंगा उसका तथा जूलिया का जीवन था। वे कांच के टुकड़े में बन्द करके अमर बना दिए गए थे।

साइम लापता हो गया। एक दिन सुबह वह काम पर नहीं आया। कुछ आदमियों ने उसकी अनुपस्थिति को बुरा ठहराया। इसके बादवाले दिन किसी ने उसकी चर्चा भी नहीं की। तीसरे दिन विन्स्टन रिकॉर्ड विभाग के नोटिस को देखने गया। एक नोटिस में शतरंज कमेटी के सदस्यों की मुद्रित सूची थी। इसमें पहले साइम का भी नाम था। सूची पहले ही की तरह अब भी थी, अर्थात कुछ भी काटा नहीं गया था — परन्तु उसमें एक नाम कम था। इतना काफ़ी था। साइम का अस्तित्व जाता रहा था। उसका अस्तित्व कभी था ही नहीं।

गरमी बड़ी तेज़ हो गई थी। मन्त्रालय के भूगर्भस्थित कमरों में तापमान नियन्त्रित था, उनमें खिड़कियां नहीं थीं। परन्तु बाहर फुटपाथ पर सूरज की गरमी से गरम ज़मीन पर पैर जलते थे। घृणा-सप्ताह की तैयारी पूरी तेज़ी से जारी थी। सभी मन्त्रालयों के कर्मचारी ओवरटाइम ड्यूटी दे रहे थे। जुलूस, सभाएं, सैनिक परेड, व्याख्यान, मोम के नमूने, फ़िल्म शो, टेलीस्क्रीन कार्यक्रम — सभी का संयोजन किया जा रहा था। स्टैंड बनाए जाने थे, काग़ज़ के पतले बनाए जाने थे, नए नारे तैयार होने थे, गीत लिखे जाने थे, अफ़वाहें फैलानी थीं तथा नक़ली फोटोग्राफ़ तैयार करने थे। जूलिया की यूनिट भी बजाय उपन्यास तैयार करने के दुश्मन के अत्याचारों भरे पैम्फ्लेट तैयार कर रही थी। रोज़ का काम करने के अलावा विन्स्टन को 'टाइम्स' की पिछली फ़ाइलों का पारायण भी करना पड़ता था और ऐसे समाचार तैयार करने थे जो भाषणों में उद्धृत किए जा सकें। रात में देर तक शहर में उपद्रवी मज़दूर चक्कर काटते फिरते थे। उस समय अजब-सा वातावरण हो जाता था। रॉकेट बमों का गिरना पहले से अधिक बढ़ गया था। कभी-कभी कहीं दर बड़े जोरों का धमाका होता था। इनके बारे में किसी के पास कोई जवाब नहीं होता था। इनको लेकर तरह-तरह की अफ़वाहें फैलाई जाती थीं।

नए गीत (इनको घृणा-गीत कहा जाता था) की धुन तैयार हो गई थी। वह टेलीस्क्रीन पर निरन्तर बजाई जा रही थी। बड़ी वीभत्स थी वह, जिसे संगीत नहीं कहा जा सकता था। वह कुछ-कुछ बहुत-से ढोलों के एकसाथ पीटे जाने की आवाज़ से मिलती थी। उसे बहुत-से लोग सैनिकों की मार्च के साथ जब चिल्लाकर गाते थे तो सुनकर डर मालूम होने लगता था। मज़दूरों को वह पसन्द आ गई थी, लेकिन पिछला गाना अब भी लोकप्रिय था। पारसन्स के बच्चे दिन-रात, जब मर्जी आती, काग़ज़ और कन्धे पर यह धुन बजाने लगते थे। कभी-कभी तो उनका शोर कानों के पर्दे फाड़ने लगता था। पारसन्स ने बहुत-से स्वयंसेवकों का दल बनाया था। ये स्वयंसेवक सड़कें सजा रहे थे। जहां-तहां झंडे लगाए जा रहे थे। पोस्टर तैयार हो रहे थे। झंडियां लगाई जा रही थीं। पारसन्स बड़ा ख़ुश था। वह हर स्थान पर मौजूद लगता था। कभी किसी चीज़ को गिराने के लिए

धक्का दे रहा है तो कभी कोई रस्सी खींच रहा है, कभी आरा चला रहा है तो कभी हथौड़ा। हर एक की मदद करना, मज़ाक़ करना और कॉमरेडों की भांति उपदेश देना उसका दिन-रात का काम था। इसके साथ ही उसके शरीर से बराबर पसीना निकला करता था जिसकी बदबू जो भी पास होता उसकी नाक में घुस जाती।

अचानक लन्दन-भर में एक नए ढंग का पोस्टर लग गया। इस पर कुछ लिखा नहीं था। इसमें केवल एक यूरेशियन सैनिक का बड़ा-सा सिर बना था जो तीन-चार मीटर बड़ा था। वह सैनिक आगे बढ़ता-सा लग रहा था। उसके पास एक छोटी मशीनगन थी। आप चाहे जहां खड़े हों, मशीनगन की नोक आपकी तरफ़ ही तनी लगती रहेगी। यह पोस्टर बड़े भाई के चित्रों से भी अधिक संख्या में हर ख़ाली स्थान पर लगा दिया था। मज़दूरों को अधिकतर युद्ध आदि की फ़िक्र नहीं रहती थी, लेकिन उनमें भी देशभक्ति का ज्वार लाने की तैयारी की जा रही थी। अब रॉकेट बमों से मरनेवालों की संख्या भी बढ़ने लगी थी। एक बम सिनेमाघर पर गिरा और सैकड़ों व्यक्ति ज़िन्दा दफ़न हो गए। मुर्दों का बड़ा लम्बा जुलूस निकला और बाद में क्षोभ प्रकट करने के लिए सभा हुई। एक बम खेल के मैदान पर गिरा और शाम को जो बच्चे वहां खेलने आए थे उनमें से दर्जनों मर गए। यूरेशियन सैनिकवाले पोस्टर की सैकड़ों प्रतियां स्थान-स्थान पर फाड़ डाली गईं। उनको जला दिया गया। इस झगड़े में बहुत-सी दुकानें भी लूट ली गईं। तभी यह अफवाह फैला दी गई कि जासूस रेडियो तरंगों से रॉकेट फेंक रहे हैं। एक वृद्ध दम्पत्ति के घर में रहनेवालों को विदेशी समझकर आग लगा दी गई और वे ज़िन्दा जल गए।

जब मि० चारिंगटन के कमरे में जूलिया और विन्स्टन पहुंचे तो वे नंगे होकर पास-पास लेट गए। कपड़े इसलिए उतार दिए थे कि गरमी न लगे। चूहा फिर नहीं आया। परन्तु गरमी बढ़ने के साथ खटमलों की संख्या बढ़ गई थी। लेकिन कोई चिन्ता की बात नहीं थी। गन्दा हो या साफ़, कमरा किसी स्वर्ग से कम न था। जैसे ही वे आते थे, चारों तरफ़ चोर बाज़ार से ख़रीदी हुई कीड़े मारने की दवा छिड़क देते थे। कपड़े उतार फेंकते

थे और सम्भोग करते थे। पसीना ख़ूब निकलता था, लेकिन इसकी उन्हें कोई चिन्ता न थी। इसके बाद सो जाते थे।

उठते तो देखते कि खटमल फिर इकट्ठे हो गए हैं और उन पर हमला करने की तैयारी कर रहे हैं।

चार, पांच, छह और सात बार वे उसी कमरे में जून के महीने में मिले। अब हर वक़्त शराब पीना विन्स्टन ने छोड़ दिया था। उसे अब शराब की ज़रूरत भी नहीं थी। वह पहले से अधिक मोटा हो गया था। उसका नस के ऊपर टखनेवाला फोड़ा बैठ गया था। सवेरे उसे जो तेज़ खांसी के दौरे आते थे, वे भी अब बन्द हो गए थे। जीवन अब उतना असह्य नहीं रहा था। टेलीस्क्रीन को देखकर वह अब मुंह नहीं बनाता था। और न उसकी यह इच्छा होती थी कि वह ज़ोरों से गालियां बके। अब उनका घर था, गुप्त स्थान था, इसलिए बुरा नहीं लगता था कि वे कभी-कभी कुछ घंटों के लिए मिल पाते हैं। अब तो मुख्य बात यह थी कि कबाड़ी की दुकान के ऊपर जो कमरा था, वह बना रहे। यह जानना कि कमरा सुरक्षित है, उसमें रहने के ही बराबर था। कमरा एक दुनिया थी जिसमें बीते हुए संसार के मृत जीव भी चल, फिर और घूम सकते थे। विन्स्टन सोच रहा था, मि० चारिंगटन भी मृत जीव ही है। ऊपर कमरे में जाते हुए वह उनसे बातें करने के लिए कुछ मिनटों के लिए ठहर जाया करता था। वृद्ध कहीं बाहर नहीं जाता था और ऐसा लगता था कि उसके पास ग्राहक भी नहीं आते थे। वह प्रेत की तरह रहता था। उसके दो स्थान थे। या तो अंधेरी दुकान या उससे भी अंधेरी रसोई, जहां मि० चारिंगटन खाना बनाते थे। रसोई में अन्य चीज़ों के साथ पुरानी किस्म का ग्रामोफ़ोन था जिसमें बहुत बड़ा भोंपा लगा था। विन्स्टन से बातें करने का मौक़ा पा वह खुश होता था। वृद्ध की नाक बड़ी लम्बी थी और उसके चश्मे का कांच बड़ा मोटा था। वह अपने कन्धे झुकाए और मखमली जैकेट पहने जब अपनी दुकान में घूमता था तो ऐसा लगता था कि वह कोई व्यापारी नहीं बल्कि संग्रहकर्ता है। वह विन्स्टन से कभी कुछ भी ख़रीदने को नहीं कहता। वह केवल उन चीज़ो की तारीफ़ चाहता था।

मि. चारिंगटन की बातें सुनना ठीक उसी प्रकार था जिस प्रकार पुराने संगीतबक्स का बजाना।

दोनों जानते थे — एक तरह से यह बात कभी उनके दिमाग़ से नहीं निकली थी — कि जो कुछ हो रहा है, वह अधिक दिनों तक नहीं चलेगा। कभी-कभी तो उन्हें ऐसा लगता था कि मृत्यु उतनी ही सन्निकट है जितना बिस्तर, जिस पर वे लेटे हैं। वे एक-दूसरे को छाती से लगा लेते थे। उनकी दशा ठीक उस व्यक्ति की भांति थी जो आनन्द के अमृत का आख़िरी घूंट भी मरने के पांच मिनट पहले तक बड़ी तृष्णा से पी रहा होता है। कभी-कभी उन्हें लगता कि वे सुरक्षित ही नहीं बल्कि उनकी यह व्यवस्था स्थायी भी है। उस कमरे में उनको लगता था कि कभी कोई नुक़सान नहीं पहुंच सकेगा। वहां पहुंचना कठिन और एक तरह से ख़तरनाक भी था। परन्तु कमरा सुरक्षित दुर्ग था। कभी-कभी वे लोग बच निकलने के दिवास्वप्न भी देखते थे। यदि भाग्य ने साथ दिया तो वे शेष जीवन-भर अपना यह गुप्त सम्बन्ध बनाए रखेंगे। या कैथरीन शायद मर जाए और फिर जूलिया से वह शादी कर लेगा। और नहीं तो वे दोनों एकसाथ आत्महत्या कर लेंगे। या वे गायब हो जाएंगे। अपना सब-कुछ बदल देंगे। मज़दूरों की भांति बोलना सीख लेंगे और किसी कारख़ाने में नौकरी कर किसी तंग गली में रहकर बाकी ज़िन्दगी गुज़ार देंगे। परन्तु दोनों जानते थे, ये बेकार की बातें हैं। सच यह था कि बचने का कोई रास्ता नहीं था। एक ही व्यावहारिक योजना थी — आत्महत्या की। और उसे भी काम में लाने का उनका इरादा नहीं था। वे एक के बाद दूसरा दिन, एक के बाद दूसरा सप्ताह ठीक उसी तरह बिताते थे जिस प्रकार मनुष्य के फेफड़े तब तक सांस लेते रहते हैं, जब तक उन्हें हवा मिलती रहती है।

कभी-कभी वे पार्टी के विरुद्ध विद्रोह करने की बात भी सोचते थे। परन्तु उन्हें यह मालूम नहीं था कि इस विषय में पहला कदम किस प्रकार उठाया जाए। यदि कल्पित राजद्रोही संस्था 'ब्रदरहुड' का अस्तित्व हो भी तो उसका पता कैसे लगाया जाए, यह एक समस्या थी। विन्स्टन ने ओ'ब्रायन और अपने बीच के स्वभाव या भावनागत घनिष्ठता का हल

जूलिया को बतलाया। उसने यह भी कहा कि वह चाहता है कि स्वयं ओ'ब्रायन से जाकर मिले और कहे कि मैं पार्टी का शत्रु हूं और उसकी सहायता का अभिलाषी। हैरानी की बात थी कि विन्स्टन की यह बात जूलिया को असम्भव नहीं लगी। वह आदमियों को उनके चेहरे से भांप लेती थी। दूसरे, जूलिया की यह भी धारणा थी कि हरेक व्यक्ति मन-ही-मन पार्टी से घृणा करता है। यदि हर व्यक्ति यह जान जाए कि ख़तरा नहीं है तो वह पार्टी के नियमों का अवश्य ही उल्लंघन करेगा। परन्तु उसका यह विश्वास न था कि कोई व्यापक विरोधी दल है या उसका कोई अस्तित्व भी हो सकता है। गोल्डस्टीन और उसके साथियों को अपने मतलब के लिए पार्टी ने रच लिया है और जिस पर आप केवल विश्वास करने का बहाना करते हैं। अनेकों बार वह उन आदमियों की फांसी के लिए चिल्लाई है जिनके नाम भी कभी उसने नहीं सुने और जो अभियोग उन पर लगाए गए थे उनकी सत्यता में उसे रंचमात्र भी विश्वास नहीं था। जब मुक़द्दमे चलते थे तो वह उन कुछ लोगों के साथ होती थी जो अदालतों में दिन-रात बैठे-बैठे यह धुन लगाए रहते थे कि राजद्रोहियों को मौत की सज़ा दो। दो मिनट की प्रचार-फ़िल्म में यह गोल्डस्टीन के विरुद्ध चिल्लाने में सबसे आगे रहती थी। फिर भी गोल्डस्टीन के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था। गोल्डस्टीन के सिद्धान्तों का भी उसे ज्ञान नहीं था। वह क्रान्ति के दौरान बालिका थी। उसे सन् 1950 और 1970 के बीच हुए विचारों-सम्बन्धी संघर्ष की कोई विशेष याद नहीं थी। कोई स्वतन्त्र राजनीतिक विरोधी दल या आन्दोलन हो सकता है, इसकी तो वह कल्पना भी नहीं कर सकती थी। और फिर कुछ भी हो, पार्टी अजय-अमर थी। यह सदैव रहेगी और उसका रूप भी यही रहेगा। आप केवल उसके ख़िलाफ़ गुप्त रूप से विद्रोह कर सकते हैं, गुप्त रूप से उसकी आज्ञाओं का पालन न करने का अवसर निकाल सकते हैं। कभी-कभी कोई हिंसात्मक कार्य भी कर सकते हैं, जैसे किसी को मार डालना या कोई चीज़ बारूद से उड़ा देना।

कई बातों में जूलिया विन्स्टन से अधिक तेज़ थी। और उस पर पार्टी-प्रचार का शीघ्रता से असर भी नहीं पड़ा था। जब उसने किसी

सिलसिले में यूरेशिया के विरुद्ध चलनेवाले युद्ध का ज़िक्र किया तो वह जूलिया के मुंह से यह सुनकर चकित रह गया कि युद्ध नहीं हो रहा। लन्दन पर जो रॉकेट बम प्रतिदिन गिर रहे हैं, उन्हें शायद लोगों को डराए रखने के लिए ओशनिया की सरकार स्वयं गिरा रही है। यह ऐसा विचार था जो उसके दिमाग़ में कभी आया ही नहीं था। दो मिनट की प्रचार-फ़िल्म के दौरान जूलिया का कहना था कि वह कठिनाई से अपनी हंसी रोक पाती थी। वह सरकारी बातों को केवल इसलिए मान लेती थी क्योंकि अक्सर सच या झूठ में उसे कोई अन्तर नहीं लगता था। यथा, उसने यह मान लिया था कि हवाई जहाजों का आविष्कार पार्टी ने किया है। उसने यह स्कूल में पढ़ा था। अपने स्कूल के दिनों में, विन्स्टन को याद आया, पार्टी केवल यह कहा करती थी कि उसने हैलीकॉप्टर बनाए हैं। बारह साल बाद जूलिया के स्कूल के दिनों में तो वह हवाई जहाज़ का आविष्कार करने का दावा करने लगी थी। और अब विन्स्टन ने बतलाया कि हवाई जहाज़ उसके पैदा होने के पूर्व भी थे और क्रान्ति के बहुत पहले बन चुके थे तो जूलिया को इसमें कोई ख़ास मज़ा नहीं आया। आख़िर इससे क्या फ़र्क पड़ता है कि हवाई जहाजों का आविष्कार किसने किया? जूलिया को यह जानकर भी आश्चर्य हुआ कि चार वर्ष पहले ओशनिया की ईस्ट एशिया से लड़ाई थी और यूरेशिया से मित्रता। परन्तु फिर भी जूलिया ने इस बात की कोई परवाह नहीं की। उसका कहना था, "इसकी कौन परवाह करता है?" उसने अधीरता से कहा, "एक के बाद बराबर दूसरा युद्ध चलता रहेगा और हर कोई जानता है कि खबर झूठी है।"

कभी-कभी वह जूलिया से रिकॉर्ड-विभाग की बातें करता और बतलाता कि उसने कैसी-कैसी जालसाज़ियां की हैं। परन्तु जूलिया इनसे तनिक भी घबड़ाई नहीं दीखती थी। उसने जूलिया को जोन्स, पारसन्स और रदरफोर्ड की कहानी सुनाई। उस काग़ज़ की कहानी सुनाई। परन्तु इसका जूलिया पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। पहले तो उसकी समझ में वास्तविकता ही नहीं आई।

"क्या वे तुम्हारे दोस्त थे?" उसने पूछा।

"नहीं, मैं तो उन्हें जानता भी नहीं था। वे पार्टी के अन्तरंग सदस्य थे। दूसरे वे मुझसे उम्र में कहीं अधिक बड़े थे। वे क्रान्ति के पहले के नेता थे। मैं तो उन्हें शक्ल से ही जानता था।"

"तो फिर उनके सम्बन्ध में चिन्तित होने की क्या आवश्यकता है? लोग तो हमेशा ही मारे जाते हैं। नहीं क्या?"

उसने जूलिया को समझाने का यत्न किया, "यह दूसरा मामला है। यह केवल मार डालने की ही बात नहीं है। क्या तुम यह समझती हो कि अतीत को, जो बीते हुए कल से शुरू होता है, बिलकुल ख़त्म कर दिया गया है? हम इस समय क्रान्ति तक के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। इसी प्रकार क्रान्ति के पर्ववर्ती काल के सम्बन्ध में भी हम कछ नहीं जानते। सारा रिकॉर्ड नष्ट कर दिया गया है या झूठा बना दिया गया है। हर पुस्तक पुनः लिख डाली गई है। हर तस्वीर का रंग बदल गया है। हर मूर्ति, इमारत और सड़क का दूसरा नाम रख दिया गया है। यह प्रक्रिया हर दिन, हर मिनट और हर क्षण जारी है। इतिहास रुका है। वर्तमान के सिवा कुछ नहीं है। और वर्तमान में केवल पार्टी का अस्तित्व है और कुछ नहीं। पार्टी जो करती है, वह ठीक है। मैं जानता हूं कि अतीत के बारे में झूठ बोला जा रहा है, लेकिन मैं इसे प्रमाणित नहीं कर सकता। एक बार वास्तविकता को झूठ में बदल लेने के बाद उसका कोई प्रमाण ही शेष नहीं रहता। एक ही ऐसा मामला था जिसके बारे में मेरे हाथ में ठोस सबूत आया था।"

"वह क्या चीज़ थी?"

"वह तस्वीर थी। परन्तु कुछ ही मिनट के बाद मैंने उसे फेंक दिया। परन्तु आज यदि ऐसा ही प्रमाण हाथ आ जाए तो मैं उसे अवश्य रख लूंगा।"

"मैं ऐसा नहीं करूंगी। जूलिया ने कहा, 'मैं ख़तरा उठाने को अवश्य तैयार हूं लेकिन तभी जब कोई फ़ायदा हो। यदि आप उसे रख भी लेते तो भी क्या लाभ होता?"

"शायद अधिक लाभ न होता। यदि मैं किसी अन्य व्यक्ति को दिखलाता तो शायद उसके दिमाग़ में भी थोड़ा-सा सन्देह उत्पन्न हो जाता। मैं नहीं समझता कि हम जीवनकाल में कोई परिवर्तन कर पाएंगे। परन्तु छोटे-छोटे विद्रोही दल अवश्य बन सकते हैं। ये दल क्रमशः बढ़ सकते हैं। कुछ रिकॉर्ड भी पीछे छोड़े जा सकते हैं। इससे अगली पीढ़ी हमारे काम को आगे ले जा सकती है।"

"मेरी अगली पीढ़ी में कोई रुचि नहीं है। मैं तो अपने-आप में तथा तुममें रुचि रखती हूं।"

"तुम तो कमर से नीचे के हिस्से में ही विद्रोही हो।" उसने कहा।

जूलिया को यह बात बड़ी अच्छी लगी और उसने विन्स्टन को प्रसन्नता के मारे बाहों में भर लिया।

पार्टी के सिद्धान्तों की आलोचना में जूलिया को ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। वह इन सब बातों पर कोई ध्यान नहीं देती। ये बेकार की बातें हैं, क्यों अपना दिमाग़ ख़राब किया जाए। वह जानती है कि कब हर्षध्वनि करनी चाहिए और कब थू-थू — और बस इतना ही जानना आवश्यक है। उससे बातें करते हुए विन्स्टन ने अनुभव किया कि पार्टी-भक्ति बिना सिद्धान्त जाने भी कितनी आसान है? आप कुछ भी विश्वास करा सकते हैं। वे, जो कहा जाता था, मान लेते थे।

आख़िर जिसका इन्तजार था, वह हो ही गया, जिस सन्देश की प्रतीक्षा थी वह आ ही मया। शायद जीवन-भर वह इसी घटना की प्रतीक्षा करता रहा था।

वह मन्त्रालय के कमरों के बीच के लम्बे रास्ते में जा रहा था। वह क़रीब-क़रीब उसी जगह था, जहां जूलिया फिसली थी और फिसलने के बाद उसने चिट दी थी। अचानक उसने महसूस किया कि उससे कहीं अधि क स्थूल शरीर का कोई व्यक्ति उसके पीछे आ रहा है। जो व्यक्ति पीछे

था, वह थोड़ा-सा खांसा। यह बोलने की भूमिका थी। विन्स्टन रुक गया और मुड़ा। वह ओ'ब्रायन था।

आख़िर वे एक-दूसरे के आमने-सामने थे। उसकी तबीयत हो रही थी, वह भाग जाए। उसका दिल बड़े ज़ोरों से धड़क रहा था। वह स्वयं बोलने में असमर्थ था। ओ'ब्रायन पहले ही की तरह आगे बढ़ता गया। थोड़ी-सी देर के लिए उसने मैत्रीपूर्वक विन्स्टन की बांह पर अपना हाथ रखा। अब दोनों साथ-साथ चल रहे थे। ओ'ब्रायन ने इस प्रकार बात करनी शुरू की जैसे वह बराबर का हो। यह शिष्टाचार पार्टी के अन्य अन्तरंग सदस्यों में नहीं था।

"मैं तुमसे बात करने के मौके की तलाश में था," ओ'ब्रायन ने कहा, "कुछ दिन हुए तुम्हारे नई भाषा में लिखे एक लेख को मैं टाइम्स में पढ़ रहा था। ऐसा लगता है कि तुम्हें नई भाषा में बड़ी गवेषणात्मक रुचि है।"

विन्स्टन अब तक सम्भल गया था। उसने कहा, "गवेषणात्मक तो क्या, मैं तो केवल नौसिखुआ हूं। यह मेरा विषय भी नहीं है।"

"परन्तु तुम बड़ी अच्छी भाषा लिखते हो," ओ'ब्रायन ने कहा, "यह केवल मेरी राय नहीं है। मैं तुम्हारे एक मित्र से बातें कर रहा था। वह तो भाषा विशेषज्ञ है। उसका नाम इस समय मेरे दिमाग़ से उतर गया है।"

विन्स्टन का दिल धड़कने लगा। ओ'ब्रायन का मतलब सिवा साइम के अन्य किसी व्यक्ति से नहीं था। परन्तु साइम न केवल मर गया था, बल्कि वह समाप्त कर दिया गया था और उस जैसे नाम का कोई आदमी पहले कभी था ही नहीं। उसको याद किया जाना अक्षम्य अपराध होता। ओ'ब्रायन का यह कदम अवश्य ही किसी बात का संकेत होगा। वे धीरे-धीरे रास्ते के छोर तक चले गए। यहां ओ'ब्रायन ने चश्मा नाक पर रखने के बाद कहा, "मैं तुम्हें बतलाना चाहता हूं कि तुमने अपने लेख में ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो समय के अनुकूल नहीं हैं। परन्तु वे अभी

हाल ही में निरर्थक हुए हैं। तुमने नई भाषा की डिक्शनरी का दसवां संस्करण देखा है क्या?"

"नहीं," विन्स्टन ने कहा, "क्या वह छप गया है? हम लोग रिकॉर्ड विभाग में अब भी नवां संस्करण ही काम में ला रहे हैं।"

"मेरा ख़याल है, अभी दसवां संस्करण कुछ महीने और न निकल सकेगा। परन्तु कुछ अग्रिम प्रतियां उपलब्ध हैं। मेरे पास भी एक है। शायद तुम उसे देखना पसन्द करो!"

"जी, बिलकुल।" विन्स्टन ने इशारा समझकर कहा।

"कुछ नई चीज़ें बड़े काम की हैं। क्रियाएं बड़ी कम हो गई हैं। यह बात तुम्हें अच्छी लगेगी। क्या मैं किसी के हाथ डिक्शनरी भेज दूं? परन्तु मैं ऐसी बातें भूल जाता हूं। न हो तो तुम मेरे फ़्लैट में आ जाओ और उसे अपने सुविधानुकूल समय पर ले लो। क्या यह ठीक रहेगा? मैं अपना पता तुम्हें बताए देता हूं।"

वे उस समय एक टेलीस्क्रीन के सामने खड़े थे। कुछ सोचते हुए ओ'ब्रायन ने अपनी दोनों जेबों में हाथ डाले और चमड़े की जिल्द मढ़ी एक पॉकेट-बुक तथा सोने की पेंसिल निकाली। ओ'ब्रायन ने पता इस प्रकार लिखा कि कोई भी आदमी जो टेलीस्क्रीन के दूसरे छोर पर हो वह तुरन्त पढ़ सकता था कि ओ'ब्रायन ने क्या लिखा है। उसने पता लिखा और काग़ज़ फाड़कर विन्स्टन को दे दिया।

"मैं शाम को अक्सर घर पर ही रहता हूं," ओ'ब्रायन ने कहा, "यदि न रहूं तो भी डिक्शनरी मेरा नौकर तुम्हें दे देगा।"

वह चला गया। वे एक-दूसरे से अधिक-से-अधिक कुछ मिनटों तक बातें करते रहे होंगे। इस घटना का एक ही मतलब था — ऐसा इन्तज़ाम किया गया था कि विन्स्टन ओ'ब्रायन का पता जान ले। यह ज़रूरी था। बिना सीधे पूछे किसी के रहने के स्थान का पता जाना ही नहीं जा सकता था। किसी प्रकार की कोई डायरेक्टरी तो थी नहीं। ओ'ब्रायन का मतलब था, 'यदि तुम कभी मुझसे मिलना चाहो तो मेरा यह पता है जहां भेंट हो सकती है।' सम्भव है डिक्शनरी में कोई सन्देश भी छिपा हो। जो

कुछ भी हो, एक बात निश्चित थी कि जिस षड्यन्त्रकारी दल की कल्पना उसने की थी वह यही था। वह उस दल की चौखट तक पहुंच गया था।

वह जानता था कि उसे देर या सवेर ओ'बायन के बलाहट का सम्मान कर जाना ही पड़ेगा। शायद कल, या शायद कुछ समय बाद, यह तय नहीं था। अब जो हो रहा था वह वर्षों की प्रतीक्षा का परिणाम था। पहला गुप्त मानसिक विचार था। दूसरा था डायरी लिखना। अब शब्दों से आगे कुछ काम करना था। आख़िरी काम प्रेम मन्त्रालय में होनेवाला था। उसने स्वीकार कर लिया था, अन्त तो कार्य के आरम्भ में ही था। ओ'ब्रायन का मतलब समझ जाने के बाद उसका शरीर मौत जैसी ठंडक अनुभव कर रहा था। वह यह तो सदैव जानता था कि क़ब्र है और वह उसकी प्रतीक्षा कर रही है।

विन्स्टन जागा तो उसकी आंखों में आंसू भरे थे। जूलिया सोते-सोते उसकी तरफ़ खिसक आई थी। वह कुछ-कुछ बुदबुदाई। जो शब्द उसके मुंह से निकले उसका मतलब शायद यह था कि क्या बात है?

"मैंने सपना देखा है..." उसने कहा और फिर बात पूरी करने के पहले ही रुक गया।

वह चुपचाप आंखे मूंदे पड़ा था। वह अब भी स्वप्न के सम्बन्ध में ही सोच रहा था। वह लम्बा-चौड़ा सपना था जिसमें उसका पूरा जीवन चमक रहा था, ठीक उसी तरह जिस तरह गर्मी में वर्षा के बाद शाम का पूरा दृश्य चमक उठता है। यह सब-कुछ उसी कमरे में हुआ था।

सपने में उसे अपनी मां की अन्तिम झलक याद हो आई थी। कुछ ही क्षणों में उसके दिमाग़ में मां से सम्बन्धित सारी घटनाएं घटा की तरह उमड़ आईं। इनको उसने जान-बूझकर भुला रखा था। उस ठीक याद नहीं, लेकिन जब यह कांड हुआ तो वह दस वर्ष का या शायद बारह का।

उसके पिता पहले ही लापता हो चुके थे। कितने पहले, उसे यह मालूम नहीं। उसे याद है कि समय बड़ा कठिन था। अक्सर हवाई हमलों के दिनों

में उन्हें ज़मीन के नीचे छिपना पड़ता था, सड़कों पर विचित्र पोस्टर चिपके होते थे, युवकों के दल-के-दल घूमते थे, रोटी की दुकानों के सामने लम्बे-लम्बे क्यू लगते थे — कहीं दूरी पर मशीनगन चलने की आवाज़ भी सुनाई पड़ जाती थी और सबसे बड़ी बात थी कि उन्हें पेट-भर खाना कभी नहीं मिलता था। वह अन्य बच्चों के साथ कूड़ेख़ाने में बन्दगोभी की पत्तियां, आलू के छिलके, बासी रोटियों के टुकड़े ढूंढ़ा करता था।

पिता के लापता हो जाने के बाद मां ने कोई आश्चर्य प्रकट नहीं किया और न वह रोईं-चिल्लाईं ही। परन्तु एक अजीब प्रकार का परिवर्तन उनमें आ गया। वह बिलकुल निर्जीव-सी हो गईं। वह किसी ऐसी चीज़ की प्रतीक्षा कर रही थीं, जिसे होना ही था। वह घर का काम बराबर करतीं — खाना बनाना, कपड़े धोना, सीना-पिरोना, बिस्तर बिछाना, फ़र्श पोंछना, झाड़ू लगाना — सभी कुछ होता था, पर बहुत धीरे-धीरे। किसी काम में उत्साह नहीं था। वह घंटों चुपचाप बिस्तर पर ही बैठी रह जाती थीं, बिलकुल स्तब्ध भाव से। छोटी बहन को दूध पिलाती रहतीं। विन्स्टन की बहन छोटी और दुबली-पतली थी। उमर कोई दो या तीन साल की थी। वह कभी-कभी विन्स्टन को अपनी छाती से लगा लेतीं और बड़ी देर तक उसे चिपकाए ही रहतीं। कहती कुछ भी नहीं थी। वह छोटा होते हुए भी जानता था कि इसका सम्बन्ध उस बात से है, जिसकी चर्चा कभी नहीं की जाती।

वे एक अंधेरे बदबूदार कमरे में रहते थे। इस कमरे का आधा भाग बिस्तर से ढंका होता था। आले में गैस का नल था; एक अलमारी थी जिसमें लकड़ी रहती थी। बाहर मिट्टी का बर्तन था। यह कई कमरों के बीच एक था। उसे याद है, उसकी मां गैस के नल पर बर्तन में खाने की चीजें किस तरह झुकी-झुकी बनाती थीं। उसे बड़ी भूख लगती थी। लेकिन पेट-भर खाने को नहीं मिलता, और वह चिल्लाकर कहता था कि उसे और खाना क्यों नहीं दिया जाता था। कभी वह अपने हिस्से से अधिक खाना लेने के लिए खुशामद करने लगता था। उसकी मां अधिक खाना देने के लिए तैयार भी रहती थीं। वह यह मानकर चलती थीं कि लड़के को सबसे अधिक खाना मिलना चाहिए। लेकिन वह कितना ही अधिक

देतीं वह और अधिक मांगता। हर बार भोजन के समय वह उसे समझाती कि वह बहुत अधिक स्वार्थी न बने और याद रखे कि उसकी छोटी बहन भी है जिसे खाने की ज़रूरत है। लेकिन कोई फायदा न होता था। वह परोसना बन्द किए जाते ही जोरों से चिल्लाकर रोने लगता था। वह मां के हाथ से बर्तन छीनकर चम्मच से खुद परोस लेना चाहता था। वह अपनी बहन की प्लेट से चीजें उठाकर खा जाता था। वह जानता था कि ऐसा करने से मां और बहन भूखी रह जाएंगी। फिर भी उसे इतनी भूख लगती थी कि उसे खाने के सिवा कुछ सुझाई नहीं पड़ता था। मां की आंखें बचाकर वह भंडार से चीज़ें चुराकर खा जाता था।

एक दिन चॉकलेट का राशन मिला। पिछले कई सप्ताहों से क्या, महीनों से चॉकलेट का राशन नहीं मिला था। उसे याद है कि वह चॉकलेट का टुकड़ा उसे कितना कीमती लगता था। वह दो औंस का टुकड़ा था (उन दिनों औंसों की ही बात की जाती थी)। यह टुकड़ा तीन आदमियों के बीच मिला था। स्पष्ट था कि उसे तीन बराबर टुकड़ों में बांटा जाना चाहिए था। अचानक विन्स्टन ने चिल्लाते हुए मांग की कि उसे सारा चॉकलेट दे दिया जाए। मां ने कहा, वह ज़्यादा लालची न बने। बड़ी देर तक वह ज़िद्द करता रहा। कभी वह चिल्लाता, कभी आंसू बहाता, कभी डांट खाता और कभी खुशामद करता। उसकी छोटी बहन दोनों हाथों से मां को पकड़े थी। ऐसी लगती थी जैसे कोई छोटी बन्दरिया बैठी हो। उसकी बड़ी-बड़ी आंखों से दुख टपका-सा पड़ता था। अन्ततः मां ने चॉकलेट का एक-तिहाई हिस्सा तोड़कर विन्स्टन को और दूसरा उतना ही बड़ा हिस्सा उसकी बहन को दे दिया। उसकी छोटी बहन ने वह टुकड़ा धीरे-से अपने हाथ में ले लिया। वह समझ नहीं पा रही थी कि इसका क्या किया जाए। इसके बाद एकाएक वह झपटा और उसने वह टुकड़ा, जो बहन के हाथ में था, छीन लिया और बाहर भाग निकला।

"विन्स्टन! विन्स्टन!" — मां ने चिल्लाते हुए कहा, "लौटो, तुरन्त लौटो। बहन को उसके हिस्से का चॉकलेट वापस करो।"

वह रुक तो गया लेकिन वापस नहीं लौटा। उसकी मां आतुर प्रतीक्षा से उसकी ओर देखती रही। वह जानता था कि कोई बात होनेवाली है

पर क्या, यह वह नहीं जानता था। उसकी बहन थोड़ा-थोड़ा रोने लगी थी, क्योंकि वह समझ गई थी कि कोई चीज़ उससे छीन ली गई है। मां ने बहन को खींचकर अपनी छाती से चिपका लिया। वह घूमकर सीढ़ियों से नीचे आ गया। चॉकलेट हाथ में घुल गया था और चिपचिपाने लगा था।

इसके बाद उसने अपनी मां को फिर कभी नहीं देखा। चॉकलेट खा लेने के बाद उसे अपने-आप पर कुछ शर्म आई और वह घंटों सड़कों पर घूमता रहा। आख़िर बहुत भूख लगने पर घर वापस लौटा। लौटने पर मां नहीं मिली। इस प्रकर की घटनाएं उस समय भी सामान्य हो चली थीं। कमरे में सिवाय मां और बहन के और कोई चीज़ गायब नहीं थी। उन्होंने कोई कपड़े तक नहीं लिए थे। मां का ओवरकोट तक टंगा था। आज तक उसे निश्चय नहीं था कि उसकी मां जीवित है या मर गई। बहुत सम्भव है कि उसे बेगार कराने के लिए भेज दिया गया हो। बहन को शायद किसी अनाथालय में भेज दिया गया हो। क्योंकि विन्स्टन का भी यही हाल हुआ था। ये अनाथालय गृहयुद्ध के दौरान खुल गए थे। शायद बहन को मां के साथ ही श्रम-शिविर में ही भेज दिया गया हो या बहुत मुमकिन कहीं मरने के लिए ही छोड़ दिया गया हो।

अभी भी स्वप्न उसके मस्तिष्क में छाया था।

उसने जूलिया को अपनी मां के लापता होने का किस्सा बतलाया। उसे जो कुछ याद था उससे विन्स्टन का अनुमान था कि उसकी मां कोई असाधारण स्त्री नहीं थी। उसे बहुत अधिक बुद्धिमान भी नहीं कहा जा सकता था। फिर भी मां में हर प्रकार की सौजन्यता, पवित्रता थी और वह कुछ अर्थों में आदर्शवादी थी। बाहर की बातों का, उसकी भावनाओं का आदर्शों पर कोई असर नहीं होता था। यदि आप किसी को प्यार करते हैं तो बस प्यार करते हैं, यदि देने के लिए कुछ न भी हो तो भी आप प्यार तो दे ही सकते हैं। जब चॉकलेट का आखिरी टुकड़ा भी उसने बहन से छीन लिया तो उसकी मां ने बच्ची को छाती से लगा लिया था।

वह कुछ देर सोचता रहा। फिर वह बोला, "क्या तुमने कभी यह सोचा है कि हम लोग यहां से निकल चलें और फिर एक-दूसरे से कभी न मिलें? हम दोनों के लिए यह सबसे अच्छा होगा।"

"हां, यह बात मेरे दिमाग़ में भी कई बार आई। परन्तु फिर भी मैं ऐसा करने को तैयार नहीं हूं।"

"हम भाग्यवान हैं, परन्तु यह क्रम अधिक दिन तक नहीं चल सकेगा। तुम अभी जवान हो। तुम सामान्य और निर्दोष लगती हो। तुमको मुझ जैसे आदमियों से दूर रहना चाहिए। शायद तुम अभी पचास साल और जीवित रह सको।"

"नहीं, मैंने सोच लिया है कि तुम जो करोगे वही मैं करूंगी। और निराश होने की ज़रूरत नहीं है। मैं जानती हूं, जीवित कैसे रहा जाता है।"

"शायद हम लोग साल-छह महीने और साथ रह सकें — कौन जानता है? अन्त में तो हमें अलग होना ही पड़ेगा। उस समय क्या तुम सोच सकती हो, हम अपने-आप को कितना अकेला महसूस करेंगे? एक बार पकड़े जाने के बाद फिर कुछ भी शेष नहीं रहेगा। हम एक-दूसरे के लिए कुछ न कर सकेंगे। यदि मैं अपना अपराध स्वीकार कर लूंगा तो भी वे तुम्हें गोली मार देंगे; और अपराध नहीं स्वीकार करूंगा तो भी वे गोली मार देंगे। मुझसे वे जो चाहेंगे कहलवा लेंगे। हममें से कोई भी नहीं जान सकेगा कि कौन ज़िन्दा है और कौन मर गया। बस एक ही बात है जो हम कर सकते हैं, वह यह कि एक-दूसरे को धोखा न दें। हालांकि उससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता।"

"अगर तुम्हारा मतलब अपराध स्वीकार करने से है," जूलिया ने कहा, "तो वह तुरन्त मनवा लेंगे। हर एक को वह स्वीकार करना ही पड़ता है। उससे नहीं बचा जा सकता। वे अत्याचार करते हैं।"

"अपराध स्वीकारोक्ति से मेरा मतलब नहीं। स्वीकारोक्ति धोखा नहीं है। तुम क्या कहती या करती हो इससे कोई प्रयोजन नहीं, प्रयोजन केवल

मन की भावना से है। यदि वे ऐसा कर सकें कि मैं तुम्हें प्यार करना बन्द कर दूं तो यह असली धोखेबाज़ी होगी।"

वह इस बात को सोचती रही। अन्त में उसने कहा, "नहीं, वे हम लोगों को परस्पर प्रेम करने से तो नहीं रोक सकते। वे तुमसे कहलवा तो कुछ भी सकते हैं परन्तु वे तुम्हें उस पर विश्वास करने के लिए विवश नहीं कर सकते। वे तुम्हारे अन्दर नहीं घुस सकते।"

"नहीं," विन्स्टन ने ज़रा आशापूर्वक कहा, "नहीं, यह सच है कि वे अन्दर नहीं घुस सकते। यदि तुममें मानवीय भावनाएं उस समय भी रहीं जब तुम्हें यह पता रहा कि उनके होने या न होने से कोई फ़ायदा नहीं है, तो बस तुमने पार्टी को परास्त कर दिया।"

आख़िरकार उन्होंने वह काम भी कर ही डाला। जिस कमरे में वे खड़े थे वह लम्बा था। उसमें हल्की रोशनी जल रही थी। टेलीस्क्रीन बहुत धीमा बज रहा था। गहरे नीले रंग के कालीन पर चलने से ऐसा लगता था जैसे मखमल का हो। कमरे के कोने पर ओ'ब्रायन एक मेज़ पर बैठा था। हरे रंग के शेड का टेबल-लैम्प था। उसके दोनों तरफ़ काग़ज़ों के ढेर थे। जब जूलिया और विन्स्टन को नौकर अन्दर लाया तो उसने सिर उठाकर भी नहीं देखा।

विन्स्टन का हृदय इतने ज़ोरों से धड़क रहा था कि उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह बोल भी सकेगा। आख़िर हमको फांस ही लिया, हमको फांस ही लिया, विन्स्टन केवल इतना ही सोच पा रहा था। यहां आना ही बड़ी ग़लती थी और साथ आना तो और भी बड़ी मूर्खता थी। यह सच था कि वे अलग-अलग रास्तों से आए थे और ओ'ब्रायन के मकान की सीढ़ियों पर ही आकर मिले थे। परन्तु ऐसी जगह आना भी साहस का काम था। ऐसा बहुत कम होता था कि कोई पार्टी के अन्तरंग सदस्यों के मोहल्ले में आए; और उनके घर में अन्दर घुसना तो अनहोनी ही बात थी। बड़े-बड़े फ़्लैटों के ब्लॉक थे, हर चीज़ से अमीरी टपकती थी। हर

वस्तु लम्बी-चौड़ी थी, चारों तरफ़ खाने की अच्छी-अच्छी चीज़ों की ख़ुशबू आ रही थी, असली और अच्छी तम्बाकू-गन्ध भी यहां मिलती थी, बिना आवाज़ किए तेज़ लिफ़्टें सरसराती ऊपर और नीचे चली जाती थीं। सफ़ेद वर्दियों में नौकर इधर-उधर दौडते नज़र आते थे। सारा वातावरण डर पैदा कर देता था। यहां आने का उसके पास बड़ा अच्छा बहाना था। फिर भी उसे हर क़दम पर यही डर लग रहा था कि किसी कोने से काली वर्दीधारी सिपाही निकल आएगा, उससे उसके काग़ज़ मांगेगा और तुरन्त बाहर चले जाने को कह देगा। ओ'ब्रायन के नौकर ने बिना किसी तशद्दुद के उन दोनों को अन्दर चला आने दिया। नौकर ठिंगना था। उसके बाल काले थे और वह सफ़ेद वर्दी पहने था। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था। ऐसा लगता था कि वह चीनी है। जिस रास्ते से होकर वह उन्हें कमरे में ले गया उसमें हलका कालीन बिछा था। दीवार के दोनों ओर क्रीम जैसे रंग का काग़ज़ लगा था। दीवारों पर सफ़ेद रंग था। सभी कुछ बहुत ही स्वस्थ प्रतीत होता था। यह भी डर पैदा करता था। विन्स्टन ने इससे पहले ऐसा कोई रास्ता नहीं देखा था जिसकी दीवारें आदमियों के आने-जाने की रगड़ से काली न हो गई हों।

ओ'ब्रायन उठा और उनकी तरफ़ आया। कालीन पर चलने की ज़रा भी आवाज़ नहीं हुई। विन्स्टन का डर और बढ़ गया। उसे लगा कि वह बड़ी ग़लती कर बैठा है। यथा, विन्स्टन के पास क्या सबूत है कि ओ'ब्रायन राजनीतिक षड्यन्त्रकारी है। आंखों में एकबारगी चमक तथा एकाध सन्दिग्ध बात कहने के अतिरिक्त ओ'ब्रायन ने कुछ नहीं किया था और यह कोई प्रमाण नहीं था। शेष उसकी कल्पना थी जिसका कोई आधार नहीं था। अब तो वह यह भी नहीं कह सकता था कि वह डिक्शनरी लेने आया है, क्योंकि ऐसी हालत में जूलिया की उपस्थिति को कैसे स्पष्ट करता? जैसे ही ओ'ब्रायन टेलीस्क्रीन से आगे पहुंचा कि उसके दिमाग़ में कोई ख़याल आया। ओ'ब्रायन रुका, बग़ल में गया और दीवार पर लगे स्विच को उसने दबा दिया। खट्-से आवाज़ हुई और टेलीस्क्रीन से आवाज़ आनी बन्द हो गई।

जूलिया के मुंह से अस्पष्ट आवाज़ निकल गई, इसमें आश्चर्या शामिल था। विन्स्टन डरा हुआ था लेकिन फिर भी वह इतना विस्मित हुआ कि बिना बोले रुक न सका।

"क्या आप टेलीस्क्रीन को बन्द कर सकते है?" वह पूछ ही बैठा।

"हां" ओ'ब्रायन ने कहा, "हम बन्द कर सकते हैं। हमें यह विशेषाधिकार प्राप्त है।"

अब ओ'ब्रायन दोनों के सामने खड़ा था। उसके मुंह का भाव अब भी अन्दर की भावनाओं को व्यक्त नहीं कर रहा था। वह इन्तज़ार कर रहा था कि विन्स्टन कुछ बोले। परन्तु वह क्या बोलता? बड़ी कठिनाई से विन्स्टन ओ'ब्रायन की आंखों से आंख मिलाकर रख पा रहा था। अचानक ओ'ब्रायन के चेहरे का भाव बदला और ऐसा लगा कि वह मुस्कुरानेवाला है। ओ'ब्रायन ने अपने विशेष ढंग से चश्मे को नाक पर रख लिया।

"क्या मैं बोलूं या तुम कुछ कहोगे?" उसने पूछा।

"मैं ही कहता हूं," तुरन्त विन्स्टन बोला, "क्या टेलीस्क्रीन बिलकुल बन्द हो गई?"

"हां, हर चीज़ बन्द है। हम बिलकुल अकेले हैं।"

"हम यहां इसलिए आए हैं क्योंकि..."

विन्स्टन रुक गया, उसने अनुभव किया कि उसका उद्देश्य कितना अस्पष्ट है। यह अस्पष्टता शायद वह पहली बार अनुभव कर रहा था। वह नहीं जानता था कि ओ'ब्रायन से किस प्रकार की मदद मिल सकेगी, इसलिए वह यह भी नहीं जानता था कि वह अपना क्या उद्देश्य बतलाए। पर वह कहता गया, हालांकि वह जानता था कि उसका कथन बड़ा लचर और कमजोर साबित होगा।

"हमारा ख़याल है कि पार्टी के विरुद्ध कोई षड्यन्त्रकारी दल काम कर रहा है और आप भी उसके सदस्य हैं। हम उस दल के सदस्य बनना चाहते हैं। हम भी पार्टी के शत्रु हैं। हमारा 'इंगसोश' के सिद्धान्तों में कोई

विश्वास नहीं है। हम विचार-अपराधी हैं। हम व्यभिचारी भी हैं। हम आपसे इसलिए यह रहस्य कह रहे हैं क्योंकि हम अपने-आप को आपकी दया पर छोड़ देना चाहते हैं। यदि आप हमसे कोई काम लेना चाहें तो हम उसके लिए तैयार हैं।"

वह रुक गया और उसने पीछे देखा। शायद दरवाज़ा खुल गया था। वह नौकर दरवाज़ा बिना खटखटाए अन्दर चला आया था। विन्स्टन ने देखा, उसके हाथ में एक ट्रे है। ट्रे में कांच की सुराही और गिलास थे।

"मार्टिन भी हमारा एक साथी है", ओ'ब्रायन ने कहा, "ट्रे इधर ले आओ मार्टिन। गोल मेज़ पर रखो। कुर्सियां तो काफ़ी हैं न? ठीक है, हम यहीं पर बैठकर बातें करेंगे। अपने लिए भी एक कुर्सी ले आओ, मार्टिन। अब हम काम की बातें करेंगे। और दस मिनट के लिए तुम यह सोचना बन्द कर दो कि तुम नौकर हो।"

मार्टिन भी आराम से बैठ गया। परन्तु उसके चेहरे से नौकर की भावनाएं दूर नहीं हुईं। ऐसा ज़रूर लगता था कि वह विशेष कृपापात्र नौकर है। विन्स्टन उसे तिरछी नज़र से देखता रहा। ऐसा लगता था कि वह सारी ज़िन्दगी नौकर का ही अभिनय करता रहा है और यह अभिनय करते-करते इतना अभ्यस्त और सतर्क हो गया है कि वह एक मिनट के लिए भी नौकर के पात्र का स्वरूप नहीं छोड़ना चाहता। सुराही से गिलासों में ओ'ब्रायन ने शराब डाली और गिलास को लाल पेय से भर दिया। उसकी ख़ुशबू कुछ खट्टी-मीठी-सी थी। जूलिया गिलास उठाकर उसे बड़ी उत्सुकता से सूंघने लगी।

"यह शराब है," ओ'ब्रायन ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुमने शायद किताबों में इसके बारे में पढ़ा होगा। पार्टी के छोटे सदस्यों तक यह नहीं पहुंच पाती है।" इसके बाद गिलास उठाकर उसने सबके स्वास्थ्य की कामना की। साथ ही नेता इमैनुअल गोल्डस्टीन का भी नाम लिया।

विन्स्टन ने भी अपना गिलास कुछ उत्सुकता से उठाया। इस लाल शराब के बारे में उसने काफ़ी पढ़ा था। इसके काफ़ी सपने भी देखे थे। यह लाल शराब भी मि० चारिंगटन के पेपरवेट की भांति बीते युग की चीज़ थी। उसने ख़ाली गिलास मेज़ पर रख दिया।

"तो क्या गोल्डस्टीन नाम का सचमुच कोई व्यक्ति है?" उसने पूछा।

"हां है। और वह ज़िन्दा भी है। कहां है यह नहीं जानता।"

"और उसका दल षड्यन्त्र — ये सब सच हैं क्या? क्या ये विचार पुलिस की मनगढन्त बातें नहीं हैं?"

"नहीं, वे सब सच हैं। हम उस दल को ब्रदरहुड कहते हैं। तुम इस दल के बारे में आज जितना जानते हो उससे अधिक कभी नहीं जान पाओगे। बस इतना ही तुम्हें और मालूम होगा कि तुम भी इसके सदस्य हो। मै अभी तुम्हें बताऊंगा।" अपनी कलाई में बंधी घड़ी की ओर देखते हुए ओ'ब्रायन ने कहा, "पार्टी के अन्तरंग सदस्यों के लिए भी यह सुरक्षित नहीं है कि वे एक बार में आधे घंटे से अधिक टेलीस्क्रीन को बन्द रखें। तुम्हें साथ-साथ नहीं आना चाहिए था। अब तुम लोग अलग-अलग जाना। तुम कॉमरेड –" जूलिया की ओर देखते हुए उसने कहा, "तुम पहले निकल जाना। अभी बीस मिनट का वक़्त है। मैं तुमसे कुछ प्रश्न पूछंगा, साधारण रूप से तुम क्या करने को तैयार हो?"

"कुछ भी, जो हम कर सकते हों।" विन्स्टन ने कहा।

ओ'ब्रायन अपनी कुर्सी पर कुछ मुड़कर इस तरह बैठ गया कि विन्स्टन का मुंह उसके सामने रहे। जूलिया की तरफ़ उसने देखना ही बन्द कर दिया। उसने यह मान लिया कि विन्स्टन ही जूलिया के लिए उत्तर दे सकता है। थोड़ी देर के लिए उसकी पलकें मुंद गईं। फिर धीरे-से, बिना किसी भाव के उसने प्रश्न पूछने आरम्भ किए। उसके स्वर से ऐसा लगता था कि उसे प्रश्न पूछने की आदत पड़ी हुई है या उसे उनके उत्तर सुनने का अभ्यास हो गया था।

"क्या आप अपना जीवन देने को तैयार हैं?"

"हां।"

"क्या ऐसे तोड़-फोड़ के काम करने को तैयार हैं, जिनसे सैकड़ों निर्दोष व्यक्ति मर जाएं?"

"हां"

"क्या आप अपने देश के साथ धोखा करने को प्रस्तुत हैं?"

"हां।"

"क्या आप धोखेबाज़ी, ठगी, जालसाज़ी, इधर की बात उधर करके लोगों को धमकाने के लिए तैयार हैं? क्या आप बच्चों को बिगाड़ने के लिए नशीली दवाएं बांटने को, वेश्यावृत्ति को प्रोत्साहन देने को, यौन रोगों को फैलाने को तैयार हैं? संक्षेप में क्या आप ऐसा कोई भी, कार्य करने को तैयार हैं जिससे लोगों की हिम्मत टूटे और पार्टी की शक्ति कम हो जाए?"

"हां।"

"उदाहरण के लिए, यदि आपसे कहा जाए कि आप किसी बच्चे के मुंह पर अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए तेज़ाब फेंक दें, तो क्या आप यह काम कर सकेंगे?"

"हां"

"क्या आप अपना वर्तमान रूप छोड़कर शेष जीवन-भर वेटर या बन्दरगाह के मज़दूर के रूप में अपना जीवन व्यतीत करने को तैयार हैं?

"हां"

"क्या आप, जब कहा जाएगा तब आत्महत्या कर लेंगे?"।

"हां।"

"क्या आप दोनों एक-दूसरे को छोड़ने और फिर कभी न मिलने की प्रतिज्ञा करने को तैयार हैं?"

"नहीं।" इस बार जूलिया बोल पड़ी।

विन्स्टन को ऐसा लगा कि वह बहुत देर बाद बोल पाया। कुछ देर के लिए उसे ऐसा लगा कि उसमें बोलने की भी ताक़त नहीं रही है। उसके मुंह से बड़ी मुश्किल से निकल पाया, "नहीं।"

"यह बतलाकर तुमने अच्छा किया," ओ'ब्रायन ने कहा।

इसके बाद वह जूलिया की तरफ़ मुड़कर तनिक प्यार-से बोला, "तुम यह समझ रही हो न कि यदि यह बच भी गया तो बिलकुल भिन्न क़िस्म का व्यक्ति होगा? हमें इसका रूप बिलकुल बदल देना होगा। इसका चेहरा, इसकी चाल-ढाल, इसके हाथों की बनावट, इसके बालों का रंग और इसकी आवाज़ तक बदल जाएगी। और तुम, तुम शायद ख़ुद भी बदल जाओ। हमारे सर्जन आदमी को बिलकुल बदल सकते हैं। कभी-कभी यह ज़रूरी हो जाता है। आवश्यकता पड़ने पर हम कभी शरीर का कोई अंग भी काट डालते हैं।"

विन्स्टन से मार्टिन के मंगोलों जैसे चेहरे पर दृष्टि डाले बिना नहीं रहा गया। उसके चेहरे पर कहीं कोई घाव का निशान नहीं था। जूलिया कुछ और पीली हो गई थी। परन्तु वह ओ'ब्रायन की ओर बड़ी वीरता से देख रही थी। वह कुछ अस्पष्ट रूप से बुदबुदाई जिसका अर्थ सहमति था।

"ठीक है। यह तो तय हो गया।"

मेज़ पर चांदी का डिब्बा था। उसमें सिगरेटें थीं। ओ'ब्रायन ने उसमें से एक सिगरेट खुद निकालकर डिब्बा अन्य लोगों की ओर सरका दिया। इसके बाद खड़ा होकर इधर-उधर टहलने लगा। ऐसा लगता था कि वह खड़े होकर ज़्यादा अच्छी तरह सोच सकता था। सिगरेटें बहुत अच्छी थीं। वे रेशम जैसे काग़ज़ में लिपटी थीं। उसने फिर अपनी कलाई की घड़ी देखी।

"मार्टिन, अब तुम रसोई में जाओ। मैं पन्द्रह मिनट में टेलीस्क्रीन खोलूंगा। इन कॉमरेडों को भली-भांति पहचान लो क्योंकि इनसे शायद तुम्हें फिर काम पड़े और तुम फिर शायद इन्हें देखो। मुझे सम्भवतः अब इनसे नहीं मिलना पड़ेगा।"

मार्टिन ने उन्हें फिर देखा। उसकी आंखों में मित्रता का भाव लेशमात्र भी नहीं था। वह उन्हें पहचानने के लिए उनके चेहरे की विशेषताएं रट रहा था लेकिन ऐसा लगता था कि उसकी उनमें रुचि नहीं है। उसी समय

विन्स्टन को ख़याल आया कि शायद नक़ली चेहरे पर किसी भी प्रकार के भाव आते-जाते ही नहीं हैं। बिना किसी प्रकार की सलाम-दुआ किए मार्टिन कमरे से बाहर चला गया। वह धीरे-से अपने पीछे किवाड़ भी बन्द कर गया। ओ'ब्रायन अब भी टहल रहा था। एक हाथ उसका पतलून में था और दूसरे हाथ में सिगरेट थी।

"आप समझ लीजिए कि आपको अंधेरे में लड़ना है।" उसने कहा, "आप हमेशा इसी प्रकार रहेंगे। आपको आदेश मिलेंगे और उनका आपको पालन करना होगा। आप आज्ञाओं का कारण नहीं जान सकेंगे। बाद में आपके पास मैं एक पुस्तक भेजूंगा जिससे वर्तमान समाज की प्रकृति को समझ सकेंगे। उसी से आप यह भी समझ सकेंगे कि हम इसको किस प्रकार नष्ट करेंगे। जब आप पूरी किताब पढ़ लेंगे तो आप ब्रदरहुड के सदस्य हो जाएंगे। लेकिन आन्दोलन के सामान्य उद्देश्यों या तात्कालिक कार्यों के सम्बन्ध में आप कुछ भी नहीं जान सकेंगे। मैं केवल यह बतला सकता हूं कि ऐसे आन्दोलनकारियों का दल अवश्य है। परन्तु यह नहीं कह सकता कि इसकी सदस्य-संख्या सौ है या दस लाख। अपने ज्ञान के आधार पर आप कभी यह भी नहीं कह सकेंगे कि इस दल की सदस्य-संख्या बारह भी है। आपका तीन या चार व्यक्तियों से सम्पर्क होगा। ये सम्पर्क भी बदलते रहेंगे। मुझसे आपका पहली बार सम्पर्क हुआ, इसलिए वह बना रहेगा। मेरे द्वारा आपको आज्ञाएं मिलेंगी। यदि कोई सूचना देनी हुई तो वह मार्टिन के ज़रिए मिलेगी। जब आप पकड़ लिए जाएंगे तो आप अपना-अपना अपराध स्वीकार कर लेंगे। लेकिन आपके पास स्वीकारोक्ति के लिए बहुत कम मसाला होगा। आप कुछ साधारण व्यक्तियों को ही फंसा सकेंगे। शायद आप मुझे भी धोखा न दे सकेंगे। सम्भव है, उस समय तक मैं मर जाऊं या मैं बिलकुल नया आदमी ही बन जाऊं।"

ओ'ब्रायन बराबर नरम कालीन पर इधर-से-उधर टहलता रहा। स्थूलकाय होते हुए भी उसके चलने में शान थी। उसके व्यक्तित्व से शालीनता ही नहीं बल्कि आत्मविश्वास भी झलकता था। ऐसा लगता था कि वह बहुत समझदार है। वह चाहे जितना अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ हो परन्तु उसमें कट्टरता नहीं थी। जब वह हत्याएं, आत्महत्याएं, यौन रोगों, कटे अंगों तथा

बदले चेहरों के बारे में बात कर रहा था तो ऐसा लगता था कि वह कह रहा है कि 'इन बातों से छुटकारा नहीं है। यह हमें करना ही पड़ेगा। परन्तु हम यह काम उस समय नहीं करेंगे जब जीवन आज से अधिक सुखपूर्वक बिताने के काबिल होंगे।' विन्स्टन की एकदम यह इच्छा हुई कि वह श्रद्धा से ओ'ब्रायन के सामने अपना सिर झुका दे। जूलिया भी प्रभावित लग रही थी। उसका सिगरेट बुझ गया था और वह ध्यान से सुन रही थी। ओ'ब्रायन कह रहा था :

'ब्रदरहुड के बारे में तुम्हारी अपनी धारणाएं भी होंगी। तुमने सोचा होगा कि षड्यन्त्रकारियों का एक बहुत बड़ा समूह होगा। वे किसी तहखाने में मिलते होंगे। दीवारों पर सन्देश लिखते होंगे। एक-दूसरे को सांकेतिक भाषा से पहचान लेते होंगे या हाथों से कोई विशेष इशारा करते होंगे। इस तरह की कोई चीज़ नहीं है। दल के लोगों के पास एक-दूसरे को पहचानने का कोई साधन नहीं है। एक सदस्य दो-चार अन्य सदस्यों को ही जान सकता है। गोल्डस्टीन स्वयं यदि विचार-पुलिस के हाथ पड़ जाए तो वह भी पूरी सदस्य-सूची नहीं दे सकता। और न वह ऐसी कोई सूचना ही दे सकता है जिससे पूरी सदस्य-सूची का ज्ञान हो जाए। ऐसी कोई सूची है ही नहीं। ब्रदरहुड को कोई भी नष्ट नहीं कर सकता क्योंकि वह सामान्य दल नहीं है। यह दल विचारमात्र है, जो अनश्वर है। इसी विचार-सूत्र से यह दल बंधा हुआ है। विचार के अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु आपको बांधे नहीं रखेगी। आपका कोई साथी नहीं होगा और न कोई आपको हिम्मत ही बंधाएगा। अन्त में जब आप पकड़े जाएंगे तो भी आपको कोई मदद नहीं मिलेगी। हम अपने सदस्यों की कोई सहायता नहीं करते। जब हम बहुत ही आवश्यक समझते हैं कि पकड़ा गया सदस्य चुप रहे तो हम कभी-कभी चुपचाप रेज़र ब्लेड चोरी से उसके पास पहुंचवा देते हैं। आपको बिना प्रतिफल और बिना किसी आशा के जीवित रहने का अभ्यास डालना होगा। आप थोड़ा-सा काम करेंगे, पकड़े जाएंगे, अपराध स्वीकार करेंगे और मर जाएंगे। यही परिणाम हैं जिन्हें आप देख सकेंगे। हमारे जीवन-काल में कोई दृष्टिगोचर परिणाम होगा, हमें इसकी आशा नहीं करनी चाहिए। हम मृत हैं। हमारा असली जीवन भविष्य है।

हम उसमें मुट्ठी-भर धूल के रूप या मुट्ठी-भर हड्डियों के रूप में ही भाग ले सकेंगे। यह भावी जीवन भी कितनी दूर है, नहीं कहा जा सकता। शायद एक हज़ार साल लग जाएंगे। इस समय सिवा इसके और कुछ सम्भव नहीं है कि हम स्वस्थ व्यक्तियों के क्षेत्र को अर्थात सदस्य-संख्या को धीरे-धीरे बढ़ाते जाएं। सामूहिक रूप से तो हम कोई काम कर ही नहीं सकते। हम ज्ञान का प्रचार व्यक्ति से व्यक्ति तक ही कर सकते हैं। विचार-पुलिस के सामने अन्य कोई चारा नहीं है।"

वह रुक गया और उसने तीसरी बार घड़ी की ओर देखा।

"कॉमरेड, अब वक़्त हो गया है, आप जाएं।" उसने कहा, "लेकिन रुकिए। अभी भी सुराही आधी भरी है।" उसने गिलास भर दिए और अपना गिलास उठा लिया?"

"इस बार हम क्या कामना करेंगे?" उसने सुझाव देते हुए कहा, "विचार-पुलिस अव्यवस्थित हो जाए? बड़े भाई की मौत हो? मानवता के नाम पर? भविष्य के लिए?"

विन्स्टन ने कहा, "अतीत के लिए?"

"हां, अतीत अधिक महत्त्वपूर्ण है।" ओ'ब्रायन ने गम्भीरतापूर्वक कहा। उन्होंने अपने-अपने गिलास ख़ाली कर दिए। एक क्षण बाद ही जूलिया चलने को उठ खड़ी हुई। ओ'ब्रायन ने, एक अलमारी के ऊपर रखे डिब्बे से एक सफ़ेद चपटी गोली जूलिया को दी, और कहा कि वह उसे अपनी जीभ पर रख ले। यह ज़रूरी है कि उनके मुंह से यहां से जाते समय शराब की गन्ध न आए। लिफ़्टवाले कर्मचारी इस बात पर बड़ा ध्यान रखते हैं। जैसे ही जूलिया बाहर गई, ओ'ब्रायन उसके अस्तित्व के सम्बन्ध में एकदम भूल गया। वह टहलता हुआ दो कदम चला।

"कुछ ब्यौरे की बातें तय करनी हैं," उसने कहा, "मैं समझता हूं, तुम्हारे पास छिपने का कोई गुप्त स्थान है।"

विन्स्टन ने मि॰ चारिंगटन की दुकान के ऊपरवाले कमरे के सम्बन्ध में बतलाया।

"फिलहाल यह ठीक है। इसके बाद हम तुम्हारे लिए कुछ और व्यवस्था कर देंगे। यह ज़रूरी है कि गुप्त स्थान बराबर बदलता रहे। इस बीच मैं तुम्हें किताब भेजने की कोशिश करूंगा।" विन्स्टन को ऐसा लगा कि ओ'ब्रायन कहनेवाला था, 'गोल्डस्टीन की किताब।' परन्तु उसने कहा नहीं। ओ'ब्रायन ने अपना कथन जारी रखते हुए कहा, "पुस्तक की एक प्रति प्राप्त करने में ही कई दिन लग जाते हैं। इसकी बहुत अधिक प्रतियां उपलब्ध नहीं हैं। विचार-पुलिस पता लगते ही या हाथ पड़ते ही नष्ट कर डालती है। हम उतनी तेजी से पुस्तक की प्रतियां छाप नहीं पाते। परन्तु इससे कोई भी फ़र्क नहीं पड़ता। पुस्तक अमर है। यदि अन्तिम प्रति भी नष्ट कर दी जाए तो भी हम अक्षरशः वैसी ही पुस्तक फिर प्रकाशित कर देंगे। क्या तुम हमेशा अपने साथ छोटा बैग रखते हो?"

"हां, नियमित रूप से।"

"कैसा है वह?"

"काला और पुराना, उसमें दो पट्टियां हैं।"

"काला और पुराना, दो पट्टियोंवाला? अच्छा। बहुत जल्दी ही किसी दिन — तारीख़ तो नहीं बता सकता — सवेरे काम पर जब पहुंचोगे तो तुम्हें एक सन्देश मिलेगा। इसमें एक अशुद्धि होगी, जिसकी वजह से तुम उस सन्देश को दुबारा मांगोगे। उसके दूसरे दिन तुम बिना बैग के दफ़्तर जाओगे। मेरा ख़याल है, आपने अपना बैग गिरा दिया है। यह कहते हुए एक आदमी जो बैग तुम्हें देगा उसमें गोल्डस्टीन की पुस्तक होगी। तुम उसे पढ़कर चौदह दिन में वापस कर देना।"

कुछ क्षण वे चुप रहे।

"अभी कुछ मिनट बाद तुम्हें जाना है। हम फिर मिलेंगे। यदि हम दुबारा मिले तो...।"

विन्स्टन ने आंख उठाकर उसकी तरफ़ देखा और फिर कुछ हिचकिचाते हुए कहा, "तो वह ऐसी जगह होगी जहां बिलकुल अंधेरा न होगा।"

ओ'ब्रायन ने सिर हिला दिया। उसने अपनी स्वीकृति इस प्रकार दी जैसे वह सन्दर्भ जानता हो, "हां वह जगह ऐसी होगी जहां बिलकुल अंधेरा

नहीं होगा। — अब मैं समझता हूं, तुम्हें जाना चाहिए। लेकिन रुकना। अच्छा हो कि तुम भी इसमें से एक टिकिया खाते जाओ।"

विन्स्टन जैसे ही खड़ा हुआ ओ'ब्रायन ने अपना हाथ बढ़ा दिया। ओ'ब्रायन के मज़बूत पंजे में हाथ मिलाते समय विन्स्टन को ऐसा लगा कि उसकी हड्डियां चूर-चूर हो जाएंगी। विन्स्टन ने दरवाज़े से एक बार और मुड़कर देखा। वह टेलीस्क्रीन के सामने खड़ा उसका स्विच दबानेवाला था। भेंट समाप्त हो गई थी। विन्स्टन ने सोचा, तीस सेकेंड के भीतर ओ'ब्रायन पार्टी के काम में फिर जुट जाएगा।

विन्स्टन थककर चूर-चूर हो गया था। उसे ऐसा लग रहा था कि उसके सारे शरीर की शक्ति किसी ने चूस ली थी। उसे वे कपड़े तक बोझ लग रहे थे जिन्हें वह पहने था। पैरों में फुटपाथ से आते समय चोट लग गई थी। हाथ की मुट्ठी खोलना और बन्द करना तक श्रमसाध्य था।

पिछले पांच दिनों में उसने नब्बे घंटे काम किया था। उसने ही क्या, मन्त्रालय के हर कर्मचारी ने इतना ही काम किया था। अब सब काम ख़त्म हो गया था और कल सुबह तक के लिए बिलकुल फुरसत थी। वह छह घंटे अपने गुप्त कमरे में और नौ घंटे बिस्तर पर बिता सकता था। धीरे-धीरे तीसरे पहर की धूम में वह अंधेरी गली से मि॰ चारिंगटन की दुकान के ऊपरवाले कमरे के लिए रवाना हुआ। वह पुलिस के गश्ती दल पर भी अपनी आंखें गड़ाए था। परन्तु मन-ही-मन उसे लग रहा था, आज अब उससे कोई छेड़छाड़ नहीं करेगा। उसके हाथ में भारी बैग था जो बार-बार उसके घुटने से टकरा रहा था। उसके अन्दर वही किताब थी। किताब छह दिन पूर्व उसके पास आ गई थी। परन्तु उसे देखना तो दूर, खोलने तक का अवकाश नहीं मिला था।

घृणा सप्ताह के छठे दिन इतने जुलूस निकल चुके थे, इतने व्याख्यान हो चुके थे, इतना शोर मच चुका था, इतने गाने गाए जा चुके थे, इतने पोस्टर लग चुके थे, इतनी फ़िल्में दिखलाई जा चुकी थीं, इतने बिगुल, नगाड़े

और दमामे मार्च के साथ पीटे जा चुके थे, इतने टैंक ज़मीन रौंद चुके थे, हवाई जहाज़ उड़ चुके थे, तोपें दाग़ी जा चुकी थीं कि यूरेशिया के विरुद्ध लोग बुरी तरह उबल रहे थे। उस समय जनता के क्रोध की दशा यह थी कि यदि उसी समय दो हज़ार यूरेशियन युद्धापराधियों को फांसी दी जानी होती तो जनता उनको फांसी दिए जाने के पहले ही उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर मार डालती। उसी समय घोषणा की गई कि ओशनिया की लड़ाई यूरेशिया से नहीं है बल्कि ईस्ट एशिया से है। यूरेशिया मित्र है।

विन्स्टन लन्दन के मध्य स्थित एक स्क्वायर में हुए प्रदर्शनों में भाग ले रहा था। जिस समय यह घोषणा हुई, रात का वक़्त था। सफ़ेद चेहरे और नीले झंडे रोशनी में चमक रहे थे। स्क्वायर में उस समय हज़ारों आदमी थे। क़रीब एक हज़ार बालक-गुप्तचर भी थे। बाल-पट्टियों से ढंके मंच पर अन्तरंग पार्टी का एक सदस्य भाषण दे रहा था। वह एक हाथ से माइक्रोफ़ोन को पकड़े था और उसका दूसरा हाथ ऊपर की तरफ़ हवा में था। आवाज़ बड़ी सख्त थी। वह अत्याचारों, हत्याओं, निष्कासनों, लूटों बलात्कारों, बन्दियों को दी गई यन्त्रणाओं, नागरिकों पर की गई बम-वर्षाओं का लम्बा इतिहास सुना रहा था। वह झूठे प्रचार, अन्यायपूर्ण आक्रमण, भंगसन्धियों की बाबत भीड़ को बता रहा था। यह असम्भव था कि आप व्याख्यान सुनकर वक्ता की बातें न मानें और फिर क्रोध से पागल न हो उठें। बीच-बीच में जनसमूह इतनी ज़ोर से चिंघाड़ उठता था जिसमें वक्ता का कंठ डूब जाता था। सबसे ज़्यादा शोर स्कूल में पढ़नेवाले बच्चे कर रहे थे। अभी व्याख्यान शुरू हुए मुश्किल से बीस मिनट गुज़रे होंगे कि एक आदमी कोई काग़ज़ लेकर मंच पर दौड़ता हुआ आया। वक्ता ने बिना रुके काग़ज़ पढ़ लिया; उसकी आवाज़ या बोलने की चाल-ढाल में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा, और न व्याख्यान के शब्द ही बदले, परन्तु अचानक नाम बदल गए। बिना एक भी शब्द कहे जनसमूह वस्तुस्थिति समझ गया। ओशनिया की लड़ाई ईस्ट एशिया से है। अचानक दूसरे ही क्षण बड़ी अशान्ति-सी मच गई। झंडे और पोस्टर जिनसे स्क्वायर सजाया गया था, ग़लत थे। आधे से ज़्यादा पोस्टरों पर ग़लत शक्लें थीं। यह किसी दुश्मन

के एजेंट की कार्रवाई थी। गोल्डस्टीन के साथी अपनी साज़िश में जुटे हैं। थोड़ी देर के लिए सारा काम बन्द हो गया और कुछ ही क्षणों में सारे पोस्टर फाड़ डाले गए। बच्चों ने सारी झंडियां छतों पर चढ़-चढ़कर काट दीं। वक्ता माइक्रोफ़ोन पकड़े, अपना हाथ हवा में घुमाता हुआ बराबर भाषण देता रहा। एक मिनट बाद ही जनसमूह फिर पहले की भांति क्रोध से गरज रहा था। घृणा-प्रचार वैसे ही जारी था जैसे पहले; केवल लक्ष्य बदल गया था।

विन्स्टन इस बात से बड़ा प्रभावित हुआ था कि वक्ता ने अपना भाषण बीच में से बदला था। फिर भी वाक्य कहीं से भंग नहीं हुआ था। परन्तु उस समय विन्स्टन के दिमाग़ में अन्य बातें घूम रही थीं। जब लोग पोस्टर और झंडियां फाड़ने में व्यस्त थे तभी एक आदमी ने उसकी बांह छूकर कहा, "क्षमा कीजिएगा। आपने अपना बैग गिरा दिया है।" उसने बिना कोई भाव प्रकट किए बैग ले लिया। वह उस समय भी जानता था कि अभी वह कई दिन यह बैग खोल भी नहीं सकेगा। प्रदर्शनों के समाप्त होते ही वह मन्त्रालय पहुंच गया। हालांकि रात के ग्यारह बज चुके थे। मन्त्रालय के समस्त कर्मचारी यही कर रहे थे। टेलीस्क्रीन पर काम पर आने के लिए आदेश देने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी।

ओशनिया की लड़ाई ईस्ट एशिया से थी। हमेशा रही है। पिछले पांच वर्ष का सारा सरकारी रिकॉर्ड बेकार हो गया था। रिपोर्ट, सब तरह के काग़ज़, समाचारपत्र, पुस्तकें, पैम्पलेट, फ़िल्में और फ़ोटोग्राफ़ सभी बेकार हो गए थे। सबमें बिजली की तेज़ी से परिवर्तन किए जाने की आवश्यकता थी। यद्यपि कोई आदेश नहीं दिया गया था लेकिन सब यह जानते थे कि उनके विभागीय अध्यक्ष यह चाहते थे कि एक सप्ताह के अन्दर एक भी ऐसा काग़ज़ बाक़ी न रहे जिसमें यूरेशिया से लड़ाई का ज़िक्र हो और ईस्ट एशिया से मित्रता की बात हो। बहुत बड़ा काम था। रिकॉर्ड विभाग का हर आदमी अठारह-अठारह घंटे काम कर रहा था। मुश्किल से दो या तीन घंटे सोने को मिलते थे। तहख़ानों से चटाइयां ला-लाकर कमरों के बाहर बरामदों में बिछा दी गई थीं। कैंटीन का नौकर मेज़ों पर ही

सैंडविचें और विक्टरी कॉफ़ी बांट जाता था। हर बार सोने जाने के पूर्व विन्स्टन अपनी डेस्क साफ़ कर देता। लेकिन जब वह उठता तो देखता था फिर वह काग़ज़ों से लदी है। सारा काम यन्त्रवत होता था। अक्सर एक ही जगह दूसरा नाम लिख देने से काम चल जाता था, परन्तु ब्यौरे की रिपोर्ट में सावधानी और बहुत अक्लमन्दी से काम करने की ज़रूरत थी। युद्ध का संसार के एक भाग से दूसरे भाग में स्थानान्तरित करने में काफ़ी भौगोलिक ज्ञान की आवश्यकता थी।

तीसरे दिन विन्स्टन की यह हालत हो गई थी कि उसकी आंखों में असह्य पीड़ा होने लगी थी। और कुछ ही मिनटों बाद चश्मा साफ़ करने की आवश्यकता प्रतीत होने लगती थी। ऐसा लग रहा था कि उसे काम दबाए डाल रहा है, पीसे दे रहा है। परन्तु वह अपने स्नायविक तनाव की धुन में काम में जुटा था। हर आदमी, जो वहां काम कर रहा था, जालसाज़ी को भली-भांति करना चाहता था। छठे दिन सुबह काग़ज़ आने कम हो गए। आधे घंटे तक कुछ नहीं आया। फिर एकाध काग़ज़ आया। इसके बाद फिर कुछ नहीं आया। हर जगह काम का ज़ोर घट गया था। बहुत ज़बरदस्त काम, जिसकी कहीं चर्चा भी नहीं होती थी, पूरा हो गया था। बारह बजे अगले दिन तक की छुट्टी कर दी गई। विन्स्टन के बैग में अब भी वह किताब थी। वह घर गया। उसने दाढ़ी बनाई। नहाया। नहाने में ही उसे नींद आ गई।

कांपते घुटने से वह मि॰ चारिंगटन की दुकान से ऊपर गए जीने पर चढ़ा। वह थका था परन्तु उसे अब नींद आ नहीं रही थी। उसने खिड़की खोल दी। गन्दा स्टोव जला दिया। जूलिया भी आ ही जानेवाली थी। इस बीच वह किताब पढ़ेगा। वह आरामकुर्सी पर बैठ गया और उसने बैग खोला।

काली जिल्द चढ़ी एक किताब निकल आई। इस पर कोई नाम नहीं था। मुद्रण भी कहीं-कहीं टेढ़ा-मेढ़ा था। ऊपर के पृष्ठ पुराने लगते थे। वे तुरन्त अलग हो जाते थे। ऐसा लगता था कि पुस्तक कई हाथों से गुज़री थी। अन्दर के मुख्यपृष्ठ पर लिखा था :

भ्रष्ट धनिकतन्त्र के समूहवाद का

सिद्धान्त और प्रयोग

लेखक

इमैनुअल गोल्डस्टीन

(विन्स्टन ने पढ़ना शुरू किया।)

अध्याय 1

अज्ञान ही शक्ति है

इतिहास साक्षी है कि पाषाण युग की समाप्ति के बाद से संसार में सदैव तीन प्रकार के वर्ग रहे हैं : उच्च, मध्य तथा निम्न। इन वर्गों का और भी विभाजन हुआ है और उन उपवर्गों के तरह-तरह के नाम भी रहे हैं। उनकी संख्या तथा उनके पारस्परिक सम्बन्ध भी समय-समय पर बदलते रहे हैं। परन्तु समाज की अनिवार्य रूपरेखा कभी नहीं बदलती। बहुत-सी क्रान्तियों के बावजूद यह व्यवस्था बारम्बार उभरती रही, ठीक उसी प्रकार जिस तरह कुतुबनुमा की सुई हमेशा उत्तर दिशा दिखलाती है।

इन तीनों वर्गों के उद्देश्य और लक्ष्य सर्वथा भिन्न रहे हैं...

विन्स्टन ने पढ़ना बन्द कर दिया। पहला कारण तो यह था कि वह अकेला था। दूसरे उसे आराम मिल रहा था। तीसरे वह सुरक्षित था। वहां कोई टेलीस्क्रीन नहीं था। इन तथ्यों को वह भली-भांति अनुभव करना चाहता था। गर्मियों की वायु उसके गालों को स्पर्श कर रही थी। कहीं दूर बच्चे खेल रहे थे और उनके शोर की आवाज़ उसके. कानों में पड़ रही थी। वह कुर्सी में और आराम से बैठ गया और उसने अपने पैर दीवार से टिका लिए। बड़ा सुख मिल रहा था उसे। उसने कुछ ही क्षण बाद दूसरी जगह पुस्तक को खोल लिया। अबकी बार उसके सामने तीसना अध्याय आया। वह पढ़ता गया।

अध्याय 3

युद्ध ही शान्ति है

संसार का तीन बड़े-बड़े राज्यों में विभक्त हो जाना ऐसी घटना थी जिसकी

कल्पना बीसवीं शताब्दी के मध्य में ही कर ली गई थी। रूस ने सारा यूरोप हड़प लिया था और ब्रिटेन तथा उसके साम्राज्य को अमेरिका ने हड़प लिया था। इस प्रकार यूरेशिया और ओशनिया राज्यों का प्रादुर्भाव हो चुका था। तीसरा बड़ा राज्य ईस्ट एशिया काफ़ी लम्बे युद्ध के बाद बन सका। इन तीनों राज्यों की सीमाएं अनिश्चित हैं और युद्ध के परिणामों के अनुसार बदलती रहती हैं। परन्तु साधारण रूप से वे भौगोलिक सीमाओं के अनुकूल हैं। यूरेशिया में यूरोप और एशिया का समस्त उत्तरी भाग है। यह पुर्तगाल में बेरिंग जलडमरूमध्य तक फैला है। ओशनिया में दोनों अमेरिका, अटलांटिक द्वीप-समूह और ब्रिटिश द्वीप-समूह हैं। इसमें आस्ट्रेलिया और अफ्रीका के दक्षिणी भाग भी हैं। ईस्ट एशिया अन्य दोनों राज्यों की तुलना में छोटा था। उसकी पश्चिमी सीमाएं यूरेशिया तथा ओशनिया की अपेक्षा अनिश्चित थीं। ईस्ट एशिया में चीन तथा उसके दक्षिण में स्थित अन्य देश जापान तथा मंचूरिया, मंगोलिया और तिब्बत के क्षेत्र थे जिनका कुछ भाग कभी ईस्ट एशिया के हाथ में होता था तो कभी ओशनिया या यूरेशिया के हाथ में।

ये तीन महाराज्य किसी एक राज्य से मैत्री रखकर तीसरे राज्य से हमेशा पिछले पच्चीस वर्षों से युद्ध करते चले आ रहे हैं। परन्तु अब युद्ध की विभीषिका उतनी भयंकर नहीं रही है जितनी वह बीसवीं शताब्दी के कछ आरम्भिक दशकों में थी। युद्ध सीमित बातों पर होता है और तीनों राज्य यह जानते हैं कि वे एक-दूसरे को नष्ट नहीं कर सकते। उनके बीच युद्ध का कोई दृढ़ कारण भी नहीं है। इन राज्यों में कोई परस्पर सैद्धान्तिक मतभेद भी नहीं है। परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि युद्ध में रक्तपिपासा अपेक्षाकृत घट गई है या इन राज्यों के सैनिकों में वीरता की भावना अधिक जाग्रत हो गई है। इसके विपरीत तीनों राज्यों में ज़ोरों से युद्ध-प्रचार होता है। बलात्कार, लूटपाट, बच्चों का कत्ल, सारी जनता को दास बना देना, बन्दियों से बदला लेना जिसमें उनको गरम पानी में उबालना और ज़िन्दा दफना देने के कर्म भी शामिल हैं, बिलकुल साधारण समझे जाते हैं। लेकिन शर्त यह है कि वे अपने पक्ष की ओर से किए गए हैं। यदि शत्रु-पक्ष करता है तो उसका बड़ा विरोधात्मक प्रचार किया

जाता है। परन्तु अब युद्ध में पहले की अपेक्षा बहुत कम व्यक्ति भाग लेते हैं। लड़ाइयों में हताहत-संख्या भी बहुत कम होती है। लड़ाई यदि होती है तो सीमावर्ती क्षेत्रों में होती है और जगह का अनुमान लोग अन्दाज़ से ही कर लेते हैं। या लड़ाई तैरते किलों के पास होती है, जो समुद्री सीमा की रक्षा करते हैं। युद्ध का देश के अन्य भागों में अर्थ होता है उपभोग्य वस्तुओं का शाश्वत अभाव, कभी-कभी रॉकेट बमों का फट जाना और उनसे कुछ कोड़ी व्यक्तियों का मर जाना। युद्ध का असल मतलब ही बदल गया है। सच तो यह है कि युद्ध के आधार ही बदल गए हैं।

वर्तमान युद्ध का यथार्थ रूप समझने के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि आजकल का युद्ध निर्णयात्मक कभी हो ही नहीं सकता। अब राज्यों की शक्ति बराबर है और तीनों ही राज्यों की भौगोलिक सीमाएं उनकी बराबर रक्षा करती हैं। यूरेशिया के पास इतनी अधिक भूमि है कि उसे जीत पाना कठिन है। ओशनिया की रक्षा अटलांटिक महासागर की लम्बाई-चौड़ाई करती है। ईस्ट एशिया की जनसंख्या बहुत है और वहां के लोग बहुत अधिक परिश्रमी हैं। दूसरे, युद्ध करने के लिए कोई भौतिक कारण नहीं है। पहले युद्ध बाज़ारों के लिए होते थे। अब हर राज्य की अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर है, इसलिए बाजारों की प्रतिद्वन्द्विता का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। कच्चे माल की प्राप्ति अब किसी भी राज्य के लिए जीवन या मरण का प्रश्न नहीं है। ये तीनों राज्य इतने बड़े हैं कि इन्हें अपनी ही सीमाओं में यथेष्ट और आवश्यकतानुसार कच्चा माल मिल जाता है। यदि वर्तमान युद्धों का कोई आर्थिक प्रयोजन है तो वह है मज़दूरी करने योग्य मनुष्यों को प्राप्त करना। संसार के कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहां राज्यों की सीमाएं अस्थिर हैं। इन क्षेत्रों में विश्व-जनसंख्या का पांचवां भाग रहता है। वे स्थान या क्षेत्र हैं — टेंजियर, ब्राजाविले, डारविन और हांगकांग। तीनों बड़े-बड़े राज्य इन्हीं घनी आबादीवाले क्षेत्रों पर कब्जा कर लेने के लिए बराबर युद्ध करते रहते हैं। विवादाग्रस्त क्षेत्रों पर पूर्णरूप से कभी किसी राज्य का पूर्ण आधिपत्य स्थापित नहीं हो पाता। इन पर प्रतिद्वन्द्वी राज्यों की सत्ता बराबर बदलती रहती है।

जो भी शक्ति भूमध्य रेखावर्ती अफ्रीका, मध्यपूर्व, दक्षिण भारत या इंडोनेशियान द्वीप-समूह को अपने कब्जे में रखती है वह सैकड़ों लाख कुलियों को भी सस्ते दामों में पा सकती है। इन क्षेत्रों के लोग क़रीब-क़रीब गुलाम हो गए हैं। क्योंकि वे एक के बाद दूसरे विजेता के अधिकार में आते-जाते रहे हैं। यह ध्यान में रखने योग्य बात है कि युद्ध विवादाग्रस्त क्षेत्रों से आगे कभी नहीं बढ़ता। यूरेशिया की सीमाएं कांगो नदी की घाटी और भूमध्य सागर के उत्तरी तट के बीच घटती-बढ़ती रहती हैं। भारतीय महासागर के द्वीपों पर कभी यूरेशिया और कभी ईस्ट एशिया का अधिकार हो जाता है। मंगोलिया में ईस्ट एशिया तथा यूरेशिया की सीमा रेखा कभी स्थायी नहीं हो पाती। ध्रुव के आसपास के बहुत से क्षेत्र पर तीनों शक्तियां दावा करती हैं लेकिन इसमें अधिकांश प्रदेश में आबादी ही नहीं है और वहां कोई भी गया नहीं है। परन्तु शक्ति-सन्तुलन हमेशा लगभग बराबर रहता है, इसी तरह हर राज्य के बीच का भाग हमेशा सुरक्षित रहता है।

आधुनिक युद्ध का मुख्य उद्देश्य मशीनों के उत्पादन को जीवनयापन का स्तर बिना अधिक ऊंचा उठाए खर्च कर डालना है। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ ही से औद्योगिक समाज के सम्मुख यह समस्या रही है कि अतिरिक्त उत्पादन का क्या किया जाए। वर्तमान काल में, जब लोगों को पेट-भर भोजन ही मुश्किल से मिलता है, यह समस्या इतनी कठिन नहीं है, फिर भी उत्पादन को नष्ट करने का यह कृत्रिम ढंग अपना काम कर रहा है। सन् 1914 के पूर्व जो संसार था, उसकी तुलना में आज की दुनिया भूखी, नंगी और खंड-विखंड है। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में हर पढ़ा-लिखा व्यक्ति आज की दुनिया के बारे में यह कल्पना किए था कि वह इतनी धनी, आरामदेह, व्यवस्थित और दक्ष होगी कि उसका कोई ठिकाना नहीं। उसकी यह दुनिया चमकते कांच, इस्पात और सफेद कंकरीट की दुनिया थी। विज्ञान और प्रौद्योगिकी बड़ी द्रुत गति से आगे बढ़ रहे थे। इसलिए यह स्वाभाविक लगता था कि वे आगे बढ़ते जाएंगे। परन्तु क्रान्तियों और अभावों के कारण ऐसा नहीं हो सका। कुल मिलाकर आज का संसार पचास साल पूर्व की अपेक्षा कहीं अधिक जंगली है। कुछ पिछड़े क्षेत्र अवश्य विकसित हुए हैं। तथा युद्ध की कुछ पद्धतियों का भी विकास

हुआ है। परन्तु आविष्कार तथा खोजें होनी बिलकुल बन्द हो गई हैं। सन् 1950 में जो अणु-आयुधों का युद्ध हुआ था — उन युद्धों से नष्ट वस्तुओं को कभी ठीक नहीं किया जा सका। मशीनों के आविष्कार के बाद लोग यह अनुभव करने लगे थे कि अब मानव-समाज में विषमता के लिए कोई स्थान शेष नहीं रहा है। यदि मशीनों का प्रयोग मूल उद्देश्यों के अनुसार किया जाता तो भूख, अधिक श्रम, गन्दगी, अशिक्षा, रोगों आदि को कुछ ही पीढ़ियों में सदैव के लिए समाप्त किया जा सकता है। मशीनों की वजह से लोगों के जीवन-यापन का स्तर उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तथा बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में ऊंचा भी हुआ था।

परन्तु यह भी स्पष्ट हो गया था कि यदि सम्पत्ति की वृद्धि हुई तो वर्गगत समाज का अन्त हो जाएगा। ऐसी दुनिया जिसमें हर आदमी को दो-चार घंटों से अधिक काम न करना पड़े, खाने-पीने को पर्याप्त हो, ऐसे मकान में रहे जिसमें उसके लिए स्नानागार और रेफ्रीजेरेटर हो, चढ़ने के लिए कार या हवाई जहाज़ हो, उस स्थिति में आर्थिक विषमता तो स्वयमेव दूर हो जाती है। एक बार ऐसा हो गया तो धन की कमी या अधिकता से एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति में कोई विशेष अन्तर नहीं रह सकता।

यह भी सम्भव नहीं था कि मशीनों से इतना कम उत्पादन किया जाए कि जनता निर्धन ही बनी रहे। समस्या यह थी कि उद्योगों को बिना उत्पादन बढ़ाए किस प्रकार चलाया जाए। उत्पादन तो हो, किन्तु वितरण न हो। इसका व्यावहारिक समाधान था — युद्ध। लगातार युद्ध करते रहने से ही यह सम्भव था।

युद्ध में केवल जनहानि ही नहीं, मानव-श्रम से बनाई गई वस्तुओं का भी नाश होता है। युद्ध ऐसी प्रक्रिया है जिससे ऐसी सामग्री को नष्ट किया जाता है, हवा में उड़ा दिया जाता है या डुबा दिया जाता है; जिसे प्राप्त करके लोग आराम से रह सकते हैं। जब अस्त्र-शस्त्र न भी नष्ट हो रहे हो, उस समय भी उनको बनाते रहने से मानव-शक्ति का प्रयोग ऐसे कार्यों में होता रहता है जो लाभदायी सामग्री नहीं बनाती। उदाहरण के लिए तैरते क़िले का निर्माण ही ले लीजिए। इसके बनाने में जितना श्रम और

समय लगता है, उतने समय और श्रम में सैकड़ों लदू जहाज़ बनाए जा सकते हैं। वस्तुतः युद्ध-योजना ही इस प्रकार बनाई जाती है कि वह सारे अतिरिक्त उत्पादन को नष्ट कर दे। जनता की आवश्यकताओं का अनुमान हमेशा कम लगाया जाता है, जिससे वह भूखी और नंगी रहती है। जिन वर्गों को कृपापात्र समझा जाता है उनको भी बराबर कठिनाइयों में रखा जाता है। सामान्य अभाव की स्थितियों में थोड़ी-थोड़ी सुविधाएं भी वर्ग-भेद बनाए रखती हैं। बीसवीं शताब्दी के हिसाब से अन्तरंग पार्टी सदस्य को भी मितव्यय तथा अत्यन्त श्रमपूर्ण जीवन बिताना पड़ता है। पार्टी के निचले सदस्यों की तुलना में उसके पास एक बड़ा फ़्लैट होता है, दो-तीन नौकर होते हैं। खाना और कपड़ा अच्छा मिलता है। तम्बाकू और शराब भी अच्छी होती है। इसी प्रकार पार्टी के निचले सदस्य सबसे निचले मज़दूरों के वर्ग के मुकाबले में मज़े में होते हैं। सामाजिक जीवन बहुत ही घिरा-घिरा होता है। छोटी-छोटी चीज़ें अमीरी-ग़रीबी का फ़र्क पैदा कर देती हैं। और जब युद्ध का ख़तरा बराबर बना रहे, उस समय यह स्वाभाविक लगता है कि सत्ता किन्हीं थोड़े-से व्यक्तियों के हाथ में ही रहे।

युद्ध से केवल वस्तुएं नष्ट ही नहीं होतीं बल्कि वे इस तरह नष्ट होती हैं कि लोग उस नाश को अनिवार्य मान लेते हैं। सिद्धान्ततः मन्दिर और पिरामिड बनाकर भी अतिरिक्त वस्तुओं को नष्ट किया जा सकता है। गड्ढों को खोदकर और उन्हें भरने में मानव-शक्ति नष्ट की जा सकती है। अतिरिक्त उत्पादन को जलाया जा सकता है। परन्तु यह वर्गगत और विशेषाधिकार प्राप्त समाज का आर्थिक आधार ही होगा, भावनात्मक आधार नहीं। परन्तु यहां नैतिक साहस बनाए रखने का प्रश्न है। जनता जब तक काम में लगी रहे तब तक वह अन्य बातों की परवाह नहीं करती। युद्ध अच्छी तरह चल रहा है या नहीं, इसकी भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। केवल आवश्यकता इस बात की है कि युद्ध चलता रहे।

आगामी विश्वविजय में पार्टी के हर व्यक्ति का अडिग विश्वास होता है। यह विजय या तो धीरे-धीरे अधिकाधिक भू-क्षेत्र पर क़ब्ज़ा करके प्राप्त होगी या फिर किसी ऐसे शस्त्र के द्वारा जिसका अन्य कोई देश आविष्कार

नहीं कर पाएंगे। नए शस्त्रों के लिए बराबर खोज और आविष्कार किए जाते हैं। यही एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें कुछ ऐसे व्यक्तियों के लिए स्थान है जिनमें थोड़ी-सी मौलिकता है। पुराने अर्थों में अब विज्ञान शेष नहीं रहा है। नई भाषा में विज्ञान जैसा कोई शब्द नहीं है। विचार या चिन्ता की वे समस्त पद्धतियां, जो अनुभूति पर आधारित हैं, 'इंगसोश' के मूल सिद्धान्तों के विपरीत हैं। कला-क्षेत्र में संसार या तो यथास्थान है या पीछे जा रहा है। खेतों को घोड़ों से जोता जाता है और पुस्तकें मशीनों से लिखी जाती हैं। पार्टी के दो लक्ष्य हैं। पहला, सारे संसार के भू-क्षेत्र पर कब्ज़ा करना और दूसरा, स्वतन्त्र विचार के सब तरीकों को नष्ट कर देना। अतएव पार्टी के सामने दो प्रमुख समस्याएं हैं। पहली तो यह कि दूसरा आदमी क्या सोच रहा है। यह जान लेने की मशीन बना लेना और दूसरे करोड़ों आदमियों को सेकेंडों में बिना चेतावनी दिए मार डालने की तरकीब निकालना। जो विज्ञान अब शेष है, उसकी शोध के अब यही दो विषय हैं। आज के वैज्ञानिक दो श्रेणियों में विभक्त हैं। पहली श्रेणी में तो वे वैज्ञानिक हैं जो मनोवैज्ञानिक तथा जिज्ञासु हैं। वे असाधारण ब्यौरे से लोगों के चेहरों के भावों, संकेतों, आवाज़ के मतलब को समझने के लिए सतत रूप से प्रयत्नशील हैं। वे विभिन्न औषधियों का प्रयोग करके यह देखते हैं कि कौन-सी चीज़ ऐसी है जिसके खिला देने से आदमी अपने-आप सच-सच हृदय की बात बता देता है। वे यह भी देखते हैं कि यन्त्रणा देकर, घबड़ा देनेवाली बातें कहकर, सम्मोहन आदि द्वारा किस प्रकार असल बात उगलवाई जा सकती है। दूसरी श्रेणी में वे वैज्ञानिक हैं जो केवल रसायनशास्त्री, भौतिकशास्त्री या जीवशास्त्री हैं। इनके शोध का विषय केवल प्राण हरने के नए-नए तरीकों को निकालना है। शान्ति मन्त्रालय की बड़ी-बड़ी प्रयोगशालाओं में, ब्राजील के जंगलों में, आस्ट्रेलिया के रेगिस्तानों में, दक्षिणी ध्रुव के गुप्त द्वीपों में अवस्थित गुप्त प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिक सतत रूप से इन कामों में जुटे रहते हैं। कुछ वैज्ञानिक केवल भावी युद्धों का ढंग तय करने में लगे रहते हैं। कुछ बड़े-से-बड़े रॉकेट बमों को बनाने में व्यस्त रहते हैं। कुछ अधिकाधिक शक्तिशाली बारूद बनाने में लगे हैं। कुछ का काम ऐसे टैंक बनाना है जिनकी चादर फट

ही न सके। कुछ मार डालनेवाली नई-नई गैसें बनाने में जुटे रहते हैं। वे ऐसे विषों की खोज में रहते हैं जिनके मिला देने से पूरे-पूरे महाद्वीपों की जनसंख्या ही नष्ट हो जाए बल्कि वहां वनस्पति तक पैदा न हो। कुछ रोगों के ऐसे कीटाणु बनाने में व्यस्त हैं जिनसे कोई बच ही नहीं सके। कुछ ऐसी सवारी बनाने के फ़िक्र में हैं जो ज़मीन के नीचे पनडुब्बी की भाति चलेगी। कछ की समस्या है एक हवाई जहाज़ बनाना जो पानी के जहाज़ की भांति चले और किसी हवाई अड्डे का मोहताज न हो। कुछ वैज्ञानिक और भी ऐसी ही असम्भव बातें खोजने में व्यस्त हैं। जैसे सूर्य की उन किरणों का लैंसों द्वारा संग्रह जो अन्तरिक्ष में हज़ारों मील दूर हैं, या कृत्रिम भूकम्प पैदा करना या भूमि के मध्य भाग की उष्णता को इकट्ठी करके बड़ी-बड़ी समुद्री लहरें उत्पन्न कर देना। परन्तु इनमें से कोई भी योजना सफल होती प्रतीत नहीं होती। और न तीनों राज्यों में से एक भी अन्य दो देशों से आगे बढ़ पाता है। मजे की बात यह है कि तीनों ही महादेशों को अणुबम बनाना आता है, जो इन सब शोधों से कहीं अधिक शक्तिशाली शस्त्र है। पार्टी का कहना है कि अणुबम उसने बनाया है, लेकिन वस्तुतः अणुबम सन् 1940 के आसपास बना था और इसका प्रयोग पहली बार कोई दस साल बाद किया गया था। उस समय सैकड़ों अणुबम मुख्य-मुख्य औद्योगिक केन्द्रों पर डाले गए। वे जगह थीं — यरोपियन रूस, पश्चिमी यरोप और उत्तरी अमेरिका। इन बमों को गिराने का मतलब यह था कि सब देशों के शासक यह समझ लें कि यदि कुछ और बम गिरें तो व्यवस्थित समाज का अन्त हो जाएगा और उसके साथ ही उनकी शासन-व्यवस्था का भी। इसके बाद कोई समझौता तो नहीं हुआ लेकिन कोई बम नहीं गिराया गया। सब राज्य बम बना-बनाकर रखते गए और इसका इन्तज़ार करते रहे कि जब मौक़ा आएगा तक इनको काम में लाया जाएगा। इस बीच युद्ध जहां का तहां स्थिर है, इसे कोई तीस-चालीस वर्ष हो गए हैं। हैलीकॉप्टरों का पहले से अधिक प्रयोग होने लगा है। बमवर्षक हवाई जहाजों के स्थान पर स्वचालित रॉकेट प्रयोग में आने लगे हैं। युद्धपोतों के स्थान पर तैरते किलों का प्रयोग होने लगा है जो क़रीब-क़रीब इस तरह के बने हैं कि उनको डुबाया ही नहीं जा

सकता। इसके अलावा अन्य कोई विकास-कार्य नहीं हुआ है। टैंक, पनडुब्बी, तारपीडो, मशीनगनों, राइफ़लों आदि का अब भी प्रयोग होता है। प्रेस और टेलीस्क्रीन के प्रचार के बावजूद ऐसे युद्ध फिर कभी नहीं हुए जिनमें क्रान्ति के पूर्व कुछ सप्ताहों में ही करोड़ों व्यक्ति मारे गए थे।

कोई भी बड़ा राज्य ऐसा काम कभी नहीं करता जिसमें पूर्ण पराजय की सम्भावना हो। जब भी कोई बड़ा आक्रमण किया जाता है तो वह मित्रदेश के विरुद्ध आकस्मिक हमले के रूप में होता है। तीनों राज्यों की सामरिक नीति लगभग एक-सी है। योजना यह है कि अपने शत्रु-देश को उसके चारों तरफ़ अड्डे बनाकर घेर लिया जाए। इस उद्देश्य की पूर्ति में धोखे से हमले करने की नीति का पूरा प्रयोग किया जाता है। नीति यह है कि पहले दोस्ती कर ली जाए; इसके बाद उस समय तक चुप रहा जाए जब तक दोनों पक्षों के प्रति हृदय में एक-दूसरे के प्रति कोई सन्देह नहीं रह जाए और फिर अचानक हमला करके इच्छित स्थान पर क़ब्ज़ा कर लिया जाए। इस बीच सभी महत्त्वपूर्ण स्थानों पर रॉकेटों से अणुबमों को गिराने की पूरी तैयारी कर ली जाए। अणुबम-वर्षा में यह ध्यान रखा जाए कि शत्रु बदला न ले सके। इसी बीच दूसरे शत्रु-देश से मित्रता की सन्धि करने की तैयारी कर ली जाए। यह योजना दिवास्वप्न-मात्र है। इसकी पूर्ति असम्भव है। भूमध्य रेखा के विवादाग्रस्त क्षेत्रों को छोड़कर तथा ध्रुव प्रदेश के अतिरिक्त अन्य किसी स्थान में युद्ध नहीं होता। यूरेशियन चाहे तो आसानी से ब्रिटिश द्वीप-समूह पर क़ब्ज़ा कर सकता है। भौगोलिक दृष्टि से ब्रिटिश द्वीप-समूह है भी यूरोप का ही अंग। इसी प्रकार ओशनिया आसानी से यूरेशिया की पश्चिमी सीमाओं को राइन या विश्चुला तक खिसका सकता है। परन्तु कोई इस तरह की बात नहीं करता। यदि ओशनिया उन क्षेत्रों पर क़ब्ज़ा करना चाहे जिन्हें कभी फ्रांस और जर्मनी माना जाता था, उसे या तो वहां की सारी आबादी को खत्म करना होगा जो बड़ा कठिन काम है, या फिर उस आबादी को आत्मसात करना होगा जिसका तकनीकी ज्ञान लगभग उतना ही है जितना ओशनिया के लोगों का। यही समस्या अन्य दोनों राज्यों के सामने भी रहती है। यह आवश्यक है कि तीनों देशों का परस्पर कोई सम्बन्ध न रहे। इसका अपवाद केवल

युद्धबन्दी या काले दास ही हैं, जो विदेशी के रूप में एक से दूसरे राज्य में आते-जाते हैं। सरकारी तौर पर जो मित्रदेश होता है उसे भी शक़ की निगाह से ही देखा जाता है। युद्ध-बन्दियों को छोड़कर ओशनिया का औसत नागरिक कभी किसी विदेशी को नहीं देखता। वह यूरेशिया या ईस्ट एशिया की भाषा भी नहीं सीख सकता। यदि वह अपने पड़ोसी देशवासियों से मिले तो उसे ज्ञात होगा कि वे भी उसी की तरह हाड़-मांस के जीव हैं। और विदेशियों के बारे में उसे जो कुछ बतलाया गया है, वह सब-कुछ झूठ है। जिस मुहरबन्द दुनिया में वह रहता है, उसके बन्द दरवाज़े टूट जाएंगे। डर, घृणा आदि समाप्त हो जाएगी। अतएव हर एक राज्य यह चाहता है कि ईरान, मिस्र, जावा या सीलोन पर जहां चाहे जितनी बार उसका क़ब्ज़ा हो जाए या चाहे जितनी बार वे उसके हाथ से निकल जाएं परन्तु देश की मुख्य सीमाएं उनके नागरिक कभी पार न करें। सीमा पार करने का हक़ केवल रॉकेट बमों को ही है।

इसकी तह में यह तथ्य छिपा है कि तीनों राज्यों में जीवन-यापन का स्तर लगभग समान है, परन्तु इसे कोई मुंह पर नहीं लाता। ओशनिया में प्रचलित दर्शन इंगसोश कहलाता है। यूरेशिया में नव-बोल्शेविज्म और ईस्ट एशिया में मृत्युपूजा या आत्मबलि। ओशनिया के नागरिकों को दूर देशों के दर्शनों के सम्बन्ध में कुछ भी पढ़ने की मनाही है। परन्तु उनसे कहा जाता है कि वे इनको बर्बरतापूर्ण दर्शन समझें और यह माने कि वे अनैतिक हैं। सच यह है कि तीनों दर्शनों में कोई स्पष्ट अन्तर है नहीं भी। वे दर्शन जिस सामाजिक रूपरेखा का समर्थन करते हैं उनमें भी कोई फ़र्क नहीं है। वहीं शीर्ष पर सारी शक्ति केन्द्रित है। उसी तरह हर देश में अर्ध-ईश्वर रूपी नेता की पूजा होती है। अतएव, इसका निष्कर्ष यह है कि ये तीनों महाराज्य एक-दूसरे को जीतने में तो असमर्थ हैं ही, साथ ही वे जानते हैं कि विजय प्राप्त कर लेने से कोई लाभ नहीं होगा। वे ये भी जानते हैं, कि युद्ध शाश्वत रूप से चलना चाहिए और जीत किसी की नहीं होनी चाहिए।

इसलिए, प्राचीन काल के युद्ध की तुलना में आज का युद्ध जाली है। यह अयथार्थ है, किन्तु अर्थहीन नहीं है। इससे अतिरिक्त उत्पादन की खपत

हो जाती है और वह वातावरण बना रहता है जो वर्गगत समाज की रक्षा के लिए आवश्यक है। युद्ध अब केवल आन्तरिक समस्या है। अतीत में, सब देशों के शासक आपस में लड़ते थे और विजयी हमेशा पराजित के धन को लूट लेता था। परन्तु आज शासकवर्ग एक-दूसरे से नहीं लड़ता। आज हर देश का शासक अपने प्रजावर्ग से लड़ रहा है। इस युद्ध का उद्देश्य भू-क्षेत्र जीतना नहीं बल्कि समाज का वर्तमान ढांचा बनाए रखना है। अतएव, 'युद्ध' शब्द ही भ्रामक है। यह कहना अधिक समीचीन होगा कि निरन्तरता के कारण युद्ध का अस्तित्व लुप्त हो गया। इसकी जगह अब एक बिलकुल नई चीज़ ने ले ली है। यदि तीनों राज्य आपस में यह तय कर लें कि वे शान्ति से रहेंगे और एक-दूसरे पर हमला नहीं करेंगे तो भी उसका वही असर होगा जो आज है। ऐसी अवस्था में हर राज्य का अपना विश्व होगा। वे बाहरी ख़तरों से उत्पन्न स्वस्थ दृष्टिकोण से वंचित रहेंगे। स्थायी शान्ति, स्थायी युद्ध की भांति ही होगी। 'युद्ध ही शान्ति है' इस नारे का यही अर्थ है। इस अर्थ को पार्टी के बहुसंख्यक सदस्य पूरी तरह नहीं समझते।

विन्स्टन ने एक क्षण के लिए पढ़ना बन्द कर दिया। पुस्तक बड़ी आकर्षक लग रही थी। उसे बड़ा आराम मिल रहा था। एक प्रकार से पुस्तक में कोई नई बात नहीं थी, परन्तु यह भी आकर्षण का एक कारण था। यदि वह अपने विचार व्यवस्थित कर लिख पाता तो वह भी वही बातें लिखता जो किताब में उसने पढ़ी थीं। वह पुस्तक उसी जैसे किसी व्यक्ति ने लिखी थी, परन्तु वह निश्चित रूप से विन्स्टन से अधिक मेधावी, अधिक बुद्धिमान तथा अधिक निडर था। वह सोच रहा था कि वह पुस्तक सर्वोत्तम होती है जिसकी विषय-वस्तु का उन्हें पहले से ही ज्ञान हो। उसने पुनः पहला अध्याय खोला ही था कि उसे लगा कि जूलिया आ गई और वह उससे मिलने पुस्तक रखकर उठ गया और आगे बढ़ा। जूलिया ने आते ही अपना झोला पटक दिया और अपने-आप को विन्स्टन की बांहों में छोड़ दिया। उन्हें मिले एक सप्ताह से अधिक समय हो गया था।

"मुझे किताब मिल गई," उसने अलग होते हुए कहा।

"मिल गई? अच्छा हुआ।" उसने बिना कोई दिलचस्पी दिखलाते हुए कहा। इसके बाद तत्काल कॉफ़ी बनाने के लिए एक स्टोव जलाने में लग गई।

पुस्तक के बारे में उन्होंने कोई आधे घंटे तक बात नहीं की। जब बात शुरू हुई तो वे पलंग पर लेटे थे। शाम ठंडी थी। उन्होंने खिड़की के कांच बन्द कर रखे थे। नीचे से गाने का परिचित स्वर सुनाई पड़ रहा था, और जूतों की खट्-खट् की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। अहाते में दिखनेवाली वह मोटी औरत, जिसे पहले दिन विन्स्टन ने देखा था, हमेशा वहां रहती थी। जूलिया उसके बग़ल में लेट गई थी। ऐसा लगता था कि वह सो ही जानेवाली है। वह फ़र्श पर पड़ी किताब उठा लाया और पलंग के सिरहाने से पीठ टेककर उसे फिर पढ़ने लगा।

"यह किताब हमें पढ़नी चाहिए," विन्स्टन ने कहा, "ब्रदरहुड के हर सदस्य ने इसे पढ़ा है।"

"तुम पढ़ो। ज़ोर से पढ़ो कि तुम पढ़ने के साथ मुझे भी समझाते चलोगे।"

घड़ी में शाम के छह अर्थात अठारह बजे थे। अभी उनके पास तीन-चार घंटों का वक़्त था। उसने घुटने पर पुस्तक रख ली और पढ़ना शुरू कर दिया।

अध्याय 1

अज्ञान ही शक्ति है

इतिहास साक्षी है कि पाषाण युग की समाप्ति के बाद से संसार में सदैव तीन प्रकार के वर्ग रहे हैं : उच्च, मध्य तथा निम्न। इन वर्गों का और भी विभाजन हुआ है और उन उपवर्गों के तरह-तरह के नाम भी रहे हैं। उनकी संख्या तथा उनके पारस्परिक सम्बन्ध भी समय-समय पर बदलते रहे हैं। परन्तु समाज की अनिवार्य रूपरेखा कभी नहीं बदलती। बहुत-सी क्रान्तियों के बावजूद यह व्यवस्था बारम्बार उभरती रही, ठीक उसी प्रकार जिस तरह कुतुबनुमा की सुई हमेशा उत्तर दिशा दिखलाती है।

"जूलिया — क्या तुम जग रही हो?" विन्स्टन ने पूछा।

"हां, डियर! मैं सुन रही हूं। पढ़ते रहो। बड़ा आनन्द आ रहा है।"

उसने पढ़ना जारी रखा :

इन तीनों वर्गों के उद्देश्य और लक्ष्य सर्वथा भिन्न रहे हैं और उनके बीच कोई समझौता नहीं हो सकता। उच्च वर्ग जहां है, वहीं रहना चाहता है। निम्न वर्ग का यदि कभी कोई उद्देश्य होता है तो वह यह कि वर्गों को नष्ट किया जाए और वर्गहीन समाज बनाया जाए। अधिकतर निम्नवर्ग इतना दबाया जाता है कि वह रोज़ की दाल-रोटी के अलावा कुछ भी सोच नहीं पाता और जब सोचता है तो उपर्युक्त बात ही सोचता है। अतएव इतिहास में यही संघर्ष नए-नए रूपों में बार-बार सामने आता है। दीर्घकाल तक उच्चवर्ग सुरक्षित रूप से सत्तारूढ़ प्रतीत होता है। परन्तु कभी-न-कभी ऐसा समय आता है जब वह आत्मविश्वास खो बैठता है या शासन करने की क्षमता उसमें नहीं रहती या दोनों ही बातें गायब हो जाती हैं। तब मध्यवर्ग अल्पवर्ग के लोगों को उखाड़ फेंक देता है। मध्यवर्ग के ये लोग निम्नवर्ग को यह कहकर अपनी तरफ़ मिला लेते हैं कि वे स्वतन्त्रता तथा न्याय के लिए दासता के विरुद्ध लड़ रहे हैं और स्वयं उच्चवर्ग के सदस्य बन बैठते हैं। इसके बाद कुछ निम्नवर्ग के लोग तथा कुछ उच्चवर्ग के लोग भी पुनः मध्यवर्ग बना लेते हैं और संघर्ष पुनः शुरू हो जाता है। तीनों वर्गों में निम्न ही ऐसा वर्ग है जिसे अस्थायी रूप से भी सफलता नहीं मिलती है। यह अतिशयोक्ति है कि प्राचीन काल से अब तक कोई भौतिक प्रगति ही नहीं हुई है। परन्तु चाहे जितनी धन-सम्पत्ति बढ़ी हो, चाहे जितनी शिष्टता बढ़ी हो, चाहे कितने ही सुधार हुए हों, क्रान्तियां हुई हों, इनमें से किसी से इंच-मात्र भी वर्गगत समानता की दिशा में प्रगति नहीं हुई है। निम्नवर्ग की दृष्टि से, परिवर्तन चाहे जितने हुए, स्वामियों में ही फ़र्क पड़ा है। इससे अधिक कुछ नहीं।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक संघर्षों का यह क्रम बहुत-से लोगों के मस्तिष्क में स्पष्ट हो गया। कुछ लोगों ने इतिहास की गति को चक्राकार बतलाकर कहा कि निम्न और उच्चवर्गों के बीच के अन्तर को अपरिहार्य मान लिया जाए। इस सिद्धान्त के माननेवाले वैसे तो आदि काल से थे,

लेकिन प्राचीन काल में यह सिद्धान्त उच्च वर्गों द्वारा प्रतिपादित किया गया था। इनमें राजा, धनिकवर्ग के व्यक्ति, वकील, पुरोहित तथा इन लोगों पर आश्रित व्यक्ति थे। निम्नवर्ग के लोगों को यह भरोसा दिलाया जाता था कि लोकोत्तर जीवन में उन्हें उनके बलिदानों और आत्मत्याग का सुपरिणाम मिलेगा। मध्यवर्ग के लोग जब तक संघर्ष करते थे तब तक हमेशा स्वतन्त्रता, न्याय और बन्धुता का नारा लगाते थे। परन्तु अब उन्हीं लोगों ने, जो सत्तारूढ़ तो नहीं थे परन्तु जिनके सत्तारूढ़ हो जाने की सम्भावना थी, इस मानव-बन्धुता के विरुद्ध नारा लगाना शुरू कर दिया। समाजवाद, जिसका सम्बन्ध प्राचीनकाल के दास विद्रोहों तक से था, ऐसी अन्तिम कड़ी था जो अतीत के वर्ग-समानता के सुखद स्वप्न से सम्बन्धित था। लेकिन सन् 1900 के बाद जितने भी समाजवादी आन्दोलन आरम्भ हुए उन सबने स्वतन्त्रता और समानता के सिद्धान्त का अधिकाधिक परित्याग ही किया। समाजवाद का प्रादुर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ। परन्तु जो नए आन्दोलन इस शताब्दी के मध्य में आरम्भ हुए और जो ओशनिया में इंगसोश, यूरेशिया में नव-बोल्शेविज्म और ईस्ट एशिया में मृत्युपूजा के नाम से विख्यात हैं, उनका उद्देश्य स्वाधीनता को नष्ट करना और असमानता को प्रोत्साहन देना था। इसमें सन्देह नहीं कि ये नए आन्दोलन पुरानों में से ही शुरू हुए, परन्तु वे पुराने समाजवाद से केवल मौखिक सहानुभूति ही रखते थे। इन सबका उद्देश्य प्रगति को अवरुद्ध करना और इतिहास को उचित अवसर पर आगे बढ़ने से रोक देना था। पहले की तरह उच्चवर्ग मध्यवर्ग द्वारा अपदस्थ होना था। मध्यवर्ग को उच्चवर्ग बन जाना था। परन्तु इस बार उच्चवर्ग ने ऐसी पैंतरेबाज़ी की कि उसे कोई ऊंचे आसन से हटा ही न सके।

यह नया सिद्धान्त कछ तो ऐतिहासिक ज्ञान के संचय से और कुछ ऐतिहासिक घटनाओं की कल्पना से निकला। इतिहास की चक्राकार गति को अब समझ लिया गया था, या कम-से-कम ऐसा लगता था। यदि इतिहास की गति समझ ली गई थी तो लोगों का ख़याल था कि उसे बदला भी जा सकता है। लेकिन इसका मुख्य कारण यह था कि बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में ऐसा प्रतीत होने लगा था कि मानव-समानता

स्थापित हो जाने की सम्भावना है। यह सच है कि हर आदमी एक-सा ही मेधावी नहीं होता और कोई किसी काम के उपयुक्त होता है तो कोई किसी के, परन्तु अब वर्ग-विषमता या धन के बाहुल्य से उत्पन्न असमानता के लिए कोई स्थान नहीं था। आरम्भिक युगों में वर्ग-भेद अनिवार्य ही नहीं वांछनीय भी था। असमानता सभ्यता का मूल थी। परन्तु मशीनों से उत्पन्न होनेवाले उत्पादन के कारण स्थिति बदल गई। यदि यह ज़रूरी भी हो कि लोग अलग-अलग ढंग के काम करें तो भी यह आवश्यक नहीं था कि वे भिन्न सामाजिक या आर्थिक स्तरों पर रहें। अतएव, मध्यवर्ग के जिन लोगों को सत्ता मिलनेवाली थी, उन्हें मानव-समानता वांछनीय आदर्श नहीं प्रतीत हुआ, अपितु वह ऐसी आशंका प्रतीत हुआ जिसका उन्मूलन आवश्यक था। बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक से हर राजनीतिक सिद्धान्त ने तानाशाही का समर्थन शुरू कर दिया। पृथ्वी पर स्वर्ग लाने की कल्पना का ठीक उस समय परित्याग कर दिया गया जब उसको मूर्तरूप देना सम्भव हो गया था। हर नया राजनीतिक सिद्धान्त वर्गगत समाज और दमन का समर्थन करने लगा। सन् 1930 के आस-पास इस राजनीतिक संकीर्णता और कठोरता के कारण वे बातें भी होनी आरम्भ हो गईं जो काफ़ी दिनों से बन्द थीं। जैसे बिना मुक़द्दमे के नज़रबन्द कर देना। युद्धबन्दियों का दासों की भांति प्रयोग, सार्वजनिक रूप से फ़ांसी देना, इक़बाली बयान के लिए यातना देना, तथा सामूहिक रूप से लोगों को निष्कासित कर देना। इन बातों को न केवल शुरू ही कर दिया गया अपितु इन्हें बरदाश्त भी किया जाने लगा और पढ़े-लिखे लोग भी इनका समर्थन करने लगे।

पूरे दस वर्ष तक गृहयुद्धों, क्रान्तियों, प्रति-क्रान्तियों तथा संघर्षों के बाद इंगसोश तथा इसके समान अन्य दो और राज-दर्शन सफल हो सके। परन्तु इन पर तानाशाही की छाया पहले ही पड़ चुकी थी। यह भी स्पष्ट हो गया था कि इतनी अव्यवस्था और अशान्ति के बाद तानाशाही शासन ही आएगा। यह भी पता लग गया था कि दुनिया का शासन किस प्रकार के लोगों के हाथ में रहेगा। अभिजात्य-वर्ग नौकरशाहों, वैज्ञानिकों, टेकनिशियनों, ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं, प्रचार-विशेषज्ञों, समाजविज्ञानियों, अध्यापकों,

पत्रकारों तथा व्यावसायिक राजनीतिज्ञों का था। इस वर्ग के अधिकांश व्यक्ति मध्यवर्ग के वेतनभोगी व्यक्ति थे। इनमें से कुछ श्रमिकों के उच्चतर वर्ग के थे। इस अभिजात्य-वर्ग को उद्योगों के एकाधिपत्य तथा केन्द्रीय सरकार हो जाने से अपना वर्तमान रूप प्राप्त करने में और भी सहायता मिल गई। इन लोगों की यदि पहले के अधिकारियों से तुलना की जाए तो पता लगता है कि इस वर्ग के लोग अपेक्षाकृत कम लालची, विलासिता से बहुत अधिक आकृष्ट न होनेवाले, परन्तु अधिक-से-अधिक सत्ता हथिया लेने के लिए आतुर प्रतीत होते हैं। वे क्या कर रहे हैं, यह बात वे अच्छी तरह जानतें हैं और विरोधियों को कुचलने में ज़रा भी काहिली, सुस्ती या दया नहीं दिखलाते। यह अन्तिम अन्तर विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। आज की निरंकुश तानाशाही की तुलना में अतीत के समस्त निरंकुश शासक अदक्ष थे। उन्होंने पूरी तरह विरोध का दमन नहीं किया। शासकवर्ग के विरुद्ध जब तक कोई प्रत्यक्ष कार्य नहीं होता था, तब तक वह लोगों से छेड़छाड़ नहीं करता था और थोडी-बहुत उदारता दिखलाता था। लोगों को विचार स्वातन्त्र्य भी रहता था, कम-से-कम इन अर्थों में कि वे जो चाहें सोच सकते थे। आधुनिक प्रतिमानों की तुलना में मध्ययुग का कैथोलिक चर्च भी पर्याप्त सहिष्णु था। इसका एक कारण यह भी था कि कोई भी सरकार हर व्यक्ति पर निगाह नहीं रख सकती थी। प्रेस के आविष्कार के कारण जनमत तैयार करना आसान हो गया। रेडियो और टेलीविज़न ने इसे और भी अधिक सुविधा प्रदान की। टेलीविज़न ने बाद में यह उन्नति की कि इसमें जिस पर्दे से चित्र देखा जा सकता था उसी से चित्र लिया भी जा सकता था। इससे निजी जीवन की समाप्ति हो गई। इसके ज़रिये हर ऐसे नागरिक पर चौबीसों घंटे दृष्टि रखी जा सकती थी जिसके क्रियाकलाप राजनीतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। सरकारी प्रचार के अतिरिक्त विचार-विमर्श के अन्य सब विकल्प समाप्त किए जा सकते हैं। इस प्रकार न केवल सब लोग राज्य की इच्छा के अनुसार आचरण ही करने लगे अपितु पहली बार हर विषय पर लोगों का एक ही मत भी होने लगा।

सन् 1950 तथा 1960 के बीच के दस वर्षों के बाद, जिनमें क्रान्तियों के कारण चारों ओर अव्यवस्था थी, समाज फिर तीन वर्गों में विभक्त

हो गया — उच्च, मध्य तथा निम्न। इस बार उच्चवर्ग यह जानता था कि उसे अपनी स्थिति सुदृढ़ बनाए रखने के लिए क्या करना चाहिए। अब यह बात भली-भांति समझ ली गई थी कि अयोग्य उच्च वर्ग को बनाए रखने के लिए समूहवाद ही सबसे अधिक उचित सिद्धान्त है। 6 नि-सम्पत्ति और विशेषाधिकारों की रक्षा का सबसे अच्छा रास्ता संयुक्त स्वामित्व है। 'निजी सम्पत्ति का उन्मूलन' जो क्रान्तियों के दौरान में हुआ, उसकी जगह अब ऐसी व्यवस्था ने ली थी जिसमें सम्पत्ति अपेक्षाकृत अत्यल्प व्यक्तियों के हाथों में सीमित हो गई। फ़र्क़ इतना ही था कि अब एक व्यक्ति स्वामी नहीं था, बल्कि एक वर्ग था। व्यक्तिगत रूप से पार्टी के किसी सदस्य के पास उसके अपने काम में आनेवाली कुछ चीज़ों को छोड़कर अन्य कोई सम्पत्ति नहीं है। सामूहिक रूप से, ओशनिया की हर चीज़ पर पार्टी का क़ब्ज़ा है, क्योंकि सारे देश पर उसी का नियन्त्रण है। वह हर वस्तु को जैसे चाहती है, वैसे प्रयोग करती है।

किन्तु वर्गगत समाज को शाश्वत बना देना इतना आसान नहीं है। ये समस्याएं और भी उलझन-भरी और गहरी हैं। शासक-वर्ग को पदच्युत करने के कुल चार ढंग ही सम्भव हैं। वे हैं : बाहर की कोई शक्ति हमला करके उसे परास्त कर दे, या शासक-वर्ग स्वयं ही शासन करने की इच्छा त्याग दे, फिर वह ऐसे मध्यवर्ग को जन्म दे दे जो बहुत ही शक्तिशाली भी हो और साथ ही शासकों से असन्तुष्ट भी हो। या ये सब कारण एक-साथ काम करें। जो शासक-वर्ग इन कारणों को हटा देगा। वह हमेशा शासन करने में सफल हो जाएगा।

वर्तमान शताब्दी के मध्यकाल के बीत जाने के बाद किसी बाहरी शक्ति के आक्रमण की सम्भावना तो शेष रही नहीं। आज सारी दुनिया जिन तीन राज्यों में विभक्त है, वे क़रीब-क़रीब अजेय हैं। जनता का असन्तोष और विद्रोह करने की बात केवल सैद्धान्तिक है। जब तक जनता के सामने तुलनात्मक जीवनयापन के मानदंड नहीं होते, तब तक उसे पता भी नहीं लगता कि वह दलित है या उस पर अत्याचार किया जा रहा है। असन्तोष को प्रकट करने का कोई माध्यम ही नहीं है। मशीनों के कारण जो अधिक उत्पादन होता है, उसकी समस्या भी निरन्तर चलनेवाले युद्ध से हल कर

ली गई है। (तीसरा अध्याय देखिए।) अतएव वर्तमान शासक-वर्ग की समस्याएं हैं — योग्य, बेकार, सत्तापिपासु व्यक्तियों का कोई शक्तिशाली वर्ग न बन पाए, तथा पार्टी में उदारतावाद और सन्देहवाद के पोषकों का कोई दल न उभर आए। अतएव यह समस्या शीर्ष सम्बन्धी कही जा सकती है।

इस भूमिका को समझ लेने के बाद यदि कोई ओशनिया के सामाजिक ढांचे को न भी जानता हो तो भी उसकी कल्पना तो भली-भांति कर ही सकता है। स्तूप के शीर्ष बिन्दु पर बड़े भाई हैं। उनसे कोई ग़लती नहीं हो सकती और वे सर्वशक्तिमान हैं। वे ही प्रत्येक सफलता, प्रत्येक विजय, प्रत्येक शोध, सारे ज्ञान, समस्त गुणों के स्रोत हैं। ऐसी हर बात उन्हीं के नेतृत्व तथा प्रेरणा-शक्ति होने के कारण होती है। पोस्टरों पर उनका चेहरा दिखलाई पड़ता है और टेलीस्क्रीन पर उनकी आवाज़ सुनाई देती है। वे क़रीब-क़रीब अमर हैं और वे कब पैदा हुए थे, यह कोई नहीं जानता। बड़े भाई के रूप में ही पार्टी अपने-आप को सारे संसार के सामने प्रकट करती है। बड़े भाई जनता के स्नेह, श्रद्धा, डर तथा अन्य ऐसी ही भावनाओं के केन्द्र हैं जो किसी व्यक्ति के प्रति तो उमड़ सकती हैं लेकिन किसी दल के प्रति नहीं। बड़े भाई के ठीक नीचे अन्तरंग पार्टी है। इसमें कोई साठ लाख व्यक्ति हैं। यह संख्या ओशनिया की आबादी का दो प्रतिशत है। अन्तरंग पार्टी के बाद बाह्य और बड़ी पार्टी का नम्बर आता है। यदि अन्तरंग पार्टी मस्तिष्क है तो बाह्य पार्टी हाथ है। सबसे नीचे गूंगी जनता है जो मज़दूर कहलाती है। ओशनिया में 85 प्रतिशत लोग मज़दूर हैं। पहले हमने जो वर्ग-विभाजन किया है, उसके अनुसार मज़दूर जनता निम्नवर्ग में आई। भूमध्य रेखावर्ती लोग किसी वर्ग में नहीं आते क्योंकि इनके शासक बराबर बदलते रहते हैं। उन्हें समाज का अनिवार्य अंग नहीं माना जाता।

सिद्धान्ततः इन तीनों वर्गों की सदस्यता वंशगत नहीं है। अन्तरंग पार्टी के सदस्य माता-पिता का बच्चा अपने-आप जन्म के अधिकार से अन्तरंग पार्टी का सदस्य नहीं बन जाता। पार्टी के किसी भी वर्ग में शामिल करने

के लिए उसकी परीक्षा ली जाती है। यह परीक्षा सोलह वर्ष की अवस्था में होती है। ओशनिया के शासकों में परस्पर रक्त-सम्बन्ध नहीं है, बल्कि समान सिद्धान्तों में विश्वास ही उनकी एकता का कारण है। पुराने वर्ग के अर्थों में पार्टी वर्गमात्र नहीं है। अर्थात पार्टी के सदस्यों के बच्चों को ही सत्ता मिलेगी यह ज़रूरी नहीं है। पुराने समाजवादियों का ख़याल था कि जो वंश-परम्परागत नहीं है वह वर्ग स्थायी नहीं हो सकता। उसने यह नहीं विचार किया कि वंश-परम्परागत धनिकवर्ग का शासन हमेशा अल्पकालीन होता है। इसके विपरीत कैथोलिक चर्च जैसी संस्थाएं सैकड़ों वर्ष चलीं। उच्चवर्ग-तन्त्र का अर्थ पिता से पुत्र को सत्ता हस्तान्तरण नहीं है — अपितु जीवन के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोण और जीवन-यापन का एक विशिष्ट ढंग है, जिसको मृत व्यक्ति जीवितों पर लादते जाते हैं। शासक-वर्ग जब तक अपने उत्तराधिकारियों को निश्चित कर सकता है तब तक वह शासक ही बना रहेगा।

हमारे समस्त विश्वासों, आदतों, रुचियों, मनोवृत्तियों को इस प्रकार का बना दिया गया है, जिससे पार्टी का रहस्य छिपा रहे और वर्तमान सामाजिक रूपरेखा का वास्तविक चित्र हमारी आंखों के सामने न आए। विद्रोह या विद्रोह की तरफ़ कोई क़दम भी उठाना बिलकुल असम्भव है। मज़दूरवर्ग की ओर से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। यदि उनसे छेड़-छाड़ न की जाए तो पीढ़ी के बाद पीढ़ियां, शताब्दियों के बाद शताब्दियां गुज़रती चली जाएंगी और मज़दूर उसी तरह काम करते रहेंगे। बच्चे पैदा करते जाएंगे और मरते जाएंगे। उनमें न केवल किसी विद्रोह की ही भावना उत्पन्न नहीं होगी, बल्कि वे कल्पना भी नहीं कर सकेंगे कि जो संसार है उसके अलावा भी और कोई दुनिया हो सकती है। यदि औद्योगिक प्रगति के लिए उन्हें उच्च शिक्षा दी गई तो वे अवश्य ख़तरनाक सिद्ध हो सकते हैं। लेकिन अब सैनिक और औद्योगिक होड़ शेष नहीं रह गई है। इसलिए लोगों को दी जानेवाली शिक्षा का स्तर भी गिरता जा रहा है। बौद्धिक स्वतन्त्रता भी उनको इसीलिए दी गई है कि उनमें विचार करने की बुद्धि ही नहीं है। इसके विपरीत पार्टी में छोटे-से-छोटे विषय पर छोटे-से-छोटे सदस्य के विमत को बरदाश्त नहीं किया जाता।

जन्म से मृत्यु तक पार्टी सदस्य पर विचार-पुलिस की दृष्टि रहती है। वह जब एकान्त में होता है तो भी उसे यह पता नहीं होता कि वह अकेला है। वह सोता हो या जागता, काम कर रहा हो या आराम कर रहा हो या बिस्तर पर हो, वह चाहे कहीं हो, बिना पूर्व-सूचना के उसके पास पुलिस पहुंच सकती है या उस पर इस तरह नज़र रखी जा सकती है कि उसे पता ही नहीं चले। कोई भी काम, जो पार्टी-सदस्य करता है, पार्टी उससे उदासीन नहीं रह सकती। उसके मित्रों, उसके मनोरंजन या विश्राम के ढंगों, अकेले में उसकी बुदबुदाहट, एकान्त में उसके चेहरे के भावों तक का अध्ययन किया जाता है। वास्तविक कदाचरण ही नहीं, सनक, स्नायुओं की बेकली या ऐसी समस्त बातों का अध्ययन और विश्लेषण किया जाता, जिससे मानसिक संघर्ष का भाव व्यक्त होता हो। उसके आचरण का नियमन किसी क़ानून या आचार-संहिता से नहीं होता। ओशनिया में कोई क़ानून नहीं है। ऐसे विचार या कार्य जिनके द्वारा मृत्यदंड मिल सकता है, करने की मनाही नहीं है। वस्तुतः शुद्धिकरण, गिरफ़्तारियां, यन्त्रणाओं, कारागारवासों तथा मार डालने का जो अनन्त सिलसिला है, वह यह नहीं प्रकट करता कि पकड़े गए सारे व्यक्तियों ने कोई-न-कोई अपराध किया ही है, बल्कि उनमें वे व्यक्ति अधिक संख्या में होंगे जिनसे भविष्य में किसी अपराध के किए जाने की सम्भावना होगी। पार्टी-सदस्य का मत भी पार्टी के अनुकूल होना ज़रूरी नहीं है, बल्कि यह भी ज़रूरी है कि उसके भाव भी पार्टी के विरुद्ध न हों। पार्टी क्या चाहती है, यह कभी नहीं बतलाया जाता। सच तो यह है कि यदि वह साफ़-साफ़ अपनी मंशा प्रकट कर दे तो इंगसोश की परस्पर विरोधी बातें प्रकाश में आ जाती हैं। यदि कोई व्यक्ति पार्टी का भक्त है तो उसे अपने-आप पता लग जाएगा कि क्या बात सही है और क्या गलत। परन्तु सच बात तो यह है कि उसे बचपन में जो शिक्षा मिलती है, उसके कारण उसमें सोचने की शक्ति ही शेष नहीं रह जाती।

पार्टी सदस्य की कोई निजी भावनाएं नहीं होनी चाहिए। उसे निरुत्साहित भी नहीं दिखलाई पड़ना चाहिए। विदेशियों के प्रति हमेशा क्रुद्ध रहना चाहिए और उनसे घृणा करनी चाहिए। यही भाव देश के प्रति विश्वासघात

करनेवालों के सम्बन्ध में होना चाहिए। जीवन-यापन की दशाओं के प्रति असन्तोष को प्रतिदिन प्रचार की फ़िल्में दिखलाकर समाप्त कर दिया जाता है। अन्य प्रकार की विद्रोही भावनाओं को पार्टी के अनुशासन की शिक्षा द्वारा समाप्त कर दिया जाता है। बच्चों को सिखलाया जाता है कि वे किस प्रकार अपराधपूर्ण विचार के निकट पहुंचते ही आगे सोचना बन्द कर दें। अपराध रोकनेवाली शिक्षा का अर्थ है ऐसी मूर्खता की स्थिति प्राप्त कर लेना जो जीवन की रक्षा करती रहे। इसके विपरीत पार्टी-भक्ति का मतलब है मानसिक शक्ति पर इतना नियन्त्रण रहे कि आप उसे जैसा चाहें मोड़ दें, ठीक उसी तरह जिस प्रकार सरकस का पहलवान अपने शरीर को जिधर चाहें मोड़ सकते हैं, ओशनिया का समाज इस विश्वास पर आध पारित है कि बड़े भाई सर्वान्तर्यामी हैं और पार्टी कभी कोई ग़लती कर ही नहीं सकती। परन्तु वस्तुतः बड़े भाई सर्वान्तर्यामी नहीं हैं और पार्टी भी ग़लतियां कर सकती है, अतएव तथ्यों को बराबर गढ़ते रहने के लिए अथक परिश्रम की आवश्यकता है। यहां पार्टी के हित को दृष्टि में रखते हुए काले को सफ़ेद कहना और सोचना पड़ता है। अतीत की बातों को इसलिए बदलते रहने की ज़रूरत है।

अतीत की घटनाओं में परिवर्तन के दो कारण हैं। इनमें से एक तो सावधानी बरतना कहा जा सकता है। वह यह है कि पार्टी के छोटे सदस्य भी जीवन की कठिन परिस्थितियों को केवल इसलिए बरदाश्त करते हैं क्योंकि उनके सामने तुलना करने के लिए कोई चीज़ नहीं है। इसी दृष्टि से पार्टी सदस्यों को इतिहास का ज्ञान भी नहीं होना चाहिए। क्योंकि इस ज्ञान के अभाव में वे यह कभी नहीं जान सकेंगे कि उनके पूर्वज उनकी अपेक्षा अच्छी स्थिति में रहते थे। उसे तो वही लगना चाहिए कि उसके जीवन-यापन के प्रतिमान सुधरते जा रहे हैं। भाषण और रिपोर्ट ही पर्याप्त नहीं हैं। पिछले रिकॉर्ड भी इस तरह दुरुस्त होने चाहिए कि पार्टी के अनुमान सही साबित हों। यह भी दिखलाया जाए कि पार्टी के सिद्धान्तों या उसके मित्रों में कभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इसकी वजह यह है कि सिद्धान्त बदलने का या मित्र-परिवर्तन करने से भी कमज़ोरी प्रकट होती है। यदि तथ्य विपरीत हों, तो यह ज़रूरी है कि उनको अनुकूल बनाया

जाए। इस प्रकार इतिहास बराबर लिखा जाता है। सत्य मन्त्रालय का यह काम इतना ज़रूरी है जितना षड्यन्त्रों के दमन का काम, जो प्रेम मन्त्रालय करता है।

इंगसोश के दर्शन का मुख्य तत्त्व है यह सिद्धान्त कि अतीत बदल सकता है। विगत घटनाओं का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है, सिवा इतिहास के और स्मृति के। अतीत वही है जो पिछला इतिहास और स्मृति कहे। चूंकि इतिहास पर पार्टी का नियन्त्रण है और पार्टी का अपने सदस्यों के दिमाग़ों पर भी नियन्त्रण है, इसलिए अतीत वही है जो पार्टी कहती है। यदि किसी को रिकॉर्डों में परिवर्तन करना पड़े या अपनी स्मृति को ठीक करना पड़े तो यह भी ज़रूरी है कि वह जो कुछ करे उसे भूल जाए। इसकी तरकीब यह है कि बहुसंख्यक पार्टी-सदस्य वही बात कहने लगते हैं जो नए रिकॉर्डों में होती है तथा अन्य लोगों को भी वही बात माननी पड़ती है। इसे यथार्थ नियन्त्रण कहते हैं। नई भाषा में इसे 'द्वैध विचार' कहते हैं।

द्वैध विचार का मतलब है अपने दिमाग़ में दो तथ्यों को रखना और दोनों पर ही विश्वास करना। पार्टी का बुद्धिवादी सदस्य जानता है कि उसे किस दिशा में अपनी स्मृति को मोड़ना है। इतनी चेतना होनी चाहिए कि कोई ग़लती न होने पाए और इतनी अचेतना कि काम होने के बाद वह परिवर्तन की क्रिया को भूल जाए। विश्वासपूर्वक झूठ बोलने, असुविधा पैदा करनेवाले सत्य को भुला देना, आवश्यकता पड़ने पर सत्य को याद कर लेना और जब तक ज़रूरी हो याद रखना और फिर भुला देना, यह सब निहायत ज़रूरी है। द्वैध विचार के प्रयोग द्वारा जान-बूझकर आप किसी जानकारी को भुलाते हैं। और इस प्रकार आप एक झूठ के सहारे सच्चाई की सीमा को कूदकर पार कर जाते हैं। इस प्रकार पार्टी हज़ारों वर्षों की गति को रोक सकती है। इतिहास की धारा को अवरुद्ध कर सकती है।

अतीत के वर्ग-तन्त्रों का पतन इसलिए हुआ है कि वे या तो कामचोर हो गए या उनके विश्वास की जड़ें हिल गईं। या तो वे बेवकूफ़ी करने लगे या बदलती परिस्थितियों के अनुकूल अपने-आप को नहीं बना सके।

या तो वे उदारतावादी हो गए या कायर। और उन्होंने ऐसे स्थानों पर भीरुता दिखलाई जहां शक्ति-प्रयोग आवश्यक था और इसी कारण पदच्युत कर दिए गए। पार्टी की यह सफलता है कि उसने ऐसी तरकीब निकाल ली है कि जिसमें दोनों प्रकार की बातें निभ सकती हैं। यह तरकीब है द्वैध विचार की। इसके अलावा अन्य किसी ताक़त से पार्टी की सत्ता को शाश्वत नहीं बनाया जा सकता था।

द्वैध विचार के अन्वेषक ही इसके सबसे बड़े प्रयोगकर्ता भी हैं। इसका सबसे बड़ा उदारहण है यह बात कि ज्यों-ज्यों आदमी का सामाजिक स्तर ओशनिया में बढ़ता जाता है त्यों-त्यों उसकी युद्ध-मनोवृत्ति भी बढ़ती जाती है। युद्ध के प्रति सबसे अधिक विवेकपूर्ण दृष्टिकोण विवादास्पद प्रदेशों के निवासियों का है। ये युद्ध को समुद्री तूफ़ान की भांति शाश्वत संकटमय लहर मानते हैं जो उनके ऊपर से बराबर आती-जाती रहती है। कौन-सा पक्ष जीतता है इस तथ्य के प्रति वे बिलकुल उदासीन हैं। उनके लिए दोनों मालिक बराबर हैं क्योंकि उनको दोनों के लिए उसी तरह काम करना पड़ता है और दोनों मालिकों का व्यवहार उनके साथ एक-सा ही है। इनसे कुछ ही अच्छी अवस्था में मज़दूरवर्ग के लोग हैं। परन्तु इनको भी बराबर लड़ाई की याद दिलाई जाती रहती है। उन्हें प्रचार द्वारा कभी-कभी क्रुद्ध किया जा सकता है। किन्तु यदि उनसे छेड़छाड़ न की जाए तो वे परवाह भी नहीं करते कि युद्ध हो भी रहा है या नहीं और यदि हो तो उसमें क्या हो रहा है। पार्टी में और विशेष रूप से अन्तरंग पार्टी के सदस्यों में युद्ध के लिए बड़ा उत्साह पाया जाता है। वही लोग विश्व-विजय में सबसे अधिक विश्वास प्रकट करते हैं जो समझते हैं कि ऐसा होना असम्भव है। यह दो परस्पर विरोधी बातों का एकसाथ होना ही — ज्ञान के साथ घोर अज्ञान, सनक के साथ कट्टरता — ओशनिया के समाज की मुख्य विशेषता है। सरकारी विचारों में भी इसी प्रकार के विरोधाभास मिलते हैं। पार्टी शारीरिक श्रम को हेय समझती है, परन्तु अपने सदस्यों को वर्दी वही देती है जो किसी समय मज़दूर पहनते थे। पारिवारिक भावनाओं को ख़त्म करने का हर प्रयत्न किया जाता है, किन्तु उन्हीं के आधार पर पार्टी नेता के प्रति असीम श्रद्धा, अनुराग और भक्ति की मांग की जाती

है। मन्त्रालय के काम भी इसी प्रकार उलटे हैं। शान्ति मन्त्रालय का काम युद्ध-संचालन है। सत्य मन्त्रालय का काम दिन-रात असत्य और मिथ्या बातें गढ़ना है। प्रेम मन्त्रालय यन्त्रणा-घर है। समृद्धि मन्त्रालय लोगों को भूखा मारता है। ये पाखंड भी नहीं हैं। जान-बूझकर ऐसा किया गया है। इन विराधाभासों के बीच सामंजस्य स्थापित करके ही अनिश्चित काल तक के लिए शक्ति और सत्ता को अपने हाथ में बनाए रखा जा सकता है। अन्य किसी प्रकार से कालचक्र की गति को रोका नहीं जा सकता। यदि मानव-समानता को कभी स्थापित नहीं होने देना है, यदि उच्चवर्ग को हमेशा उसकी जगह बने रहने देना है तो वर्तमान मानसिक अवस्था को बनाए रखना पड़ेगा, जो नियन्त्रित पागलपन के सिवा कुछ भी नहीं है।

लेकिन एक और सवाल है जिसकी ओर अभी तक हमने ध्यान नहीं दिया है। प्रश्न है – मानव-समानता को क्यों न स्थापित किया जाए? मान लिया कि आपकी प्रक्रिया बिलकुल ठीक है, परन्तु इतनी बड़ी प्रशासन-व्यवस्था द्वारा इतिहास की गति अवरुद्ध करने की ज़रूरत क्या है।

विन्स्टन सहसा अपने चारों ओर छाए मौन से सचेत हो उठा। ठीक उसी तरह जैसे कोई नई आवाज़ सुनकर चौंक उठता है। ऐसा लग रहा था कि जूलिया काफ़ी देर से बिलकुल चुप थी। वह करवट लिए लेटी थी और कमर से ऊपर का हिस्सा बिलकुल नंगा था। वह हाथों पर अपने गाल रखे थी और बालों की एक लट आंखों पर झूल रही थी। उसका वक्षस्थल निरन्तर ऊपर-नीचे उठ-गिर रहा था।

"जूलिया!"

उत्तर नदारद।

"जूलिया, जाग रही हो क्या?"

कोई जवाब नहीं। वह सो रही थी। उसने किताब बन्द करके फ़र्श पर रख दी, और चादर जूलिया को उढ़ा दी और खुद भी ओढ़ ली।

वह सोच रहा था, असली रहस्य तो उसने जाना ही नहीं। वह यह तो समझ गया था कि 'कैसे?' परन्तु उसकी समझ में यह नहीं आया था

कि 'क्यों?' पहले की भांति तीसरे अध्याय ने भी उसे कोई बात नहीं बतलाई थी जिसे वह न जानता हो; हां, पढ़ने से उसका ज्ञान व्यवस्थित और क्रमबद्ध अवश्य हो गया था। लेकिन पढ़ने के बाद उसे विश्वास हो गया था कि कम-से-कम वह पागल तो नहीं है। सत्य और असत्य दो चीज़ें हैं। यदि आप सत्य को मानते हैं, तो आप पागल नहीं हैं, चाहे फिर आप अकेले ही क्यों न हों। डूबते सूरज की पीली किरण तिरछी होकर उसके कमरे में आ रही थी। वह तकिये पर पड़ रही थी। उसने आंखें मूंद लीं। चेहरे पर पड़नेवाली धूप और लड़की के कोमल शरीर का स्पर्श उसे निद्रादायी विश्राम प्रदान कर रहा था। उसमें विश्वास जाग गया था। वह सुरक्षित था। वह बिलकुल ठीक था।

जब विन्स्टन की आंख खुली तो उसे ऐसा लगा कि वह बड़ी देर तक सोया रहा है। पुरानी घड़ी देखने पर पता लगा कि अभी तो केवल 20 बजकर 30 मिनट हुए हैं (रात के साढ़े आठ)। वह कुछ देर पड़ा रहा। अचानक नीचे हाते से बाहर वही गीत उसके कानों में पड़ा, "वह आशाहीन कल्पना थी...'

लगता था कि वह शुष्क गीत अब भी लोकप्रिय बना हुआ था, अब भी वह यहां-वहां सब जगह सुनाई पड़ जाता था। इस गीत के सामने 'घृणा गीत' फीका पड़ गया था। जूलिया गीत की आवाज़ सुनकर जाग पड़ी। उसने बड़ी अदा से अंगड़ाई ली और पलंग से नीचे आ गई।

"मुझे भूख लगी है।" उसने कहा, "और कॉफ़ी बनाती हूं। उंह स्टोव तो बुझ गया और पानी ठंडा पड़ा है। उसने स्टोव उठाकर हिलाया। "इसमें तो तेल ही नहीं है।"

"नीचे से थोड़ा तेल मिल जाएगा।"

"अजब बात है। कुछ देर पहले तो यह बिलकुल भरा था। मैं कपड़े पहन लूं। ठंड हो गई है।"

विन्स्टन भी उठ पड़ा और उसने भी अपने कपड़े पहन लिए। नीचे वाली औरत गाए जा रही थी।

वह अपनी वर्दी की पेटियों को कसता हुआ खिड़की तक आ गया। सूरज मकानों के पीछे जाकर छिप गया होगा। हाते में धूप नहीं थी। कपड़े धोने का पत्थर अभी भी गीला था। चिमनियों के बीच आसमान भी ऐसा नीला और स्तब्ध था जैसे अभी-अभी धोया गया हो। वह औरत गा रही थी, इधर-उधर चल-फिर रही थी, कभी चुप हो जाती थी और कपड़े सुखाने लगती थी। जूलिया भी उसकी बग़ल में आ गई। दोनों मिलकर नीचेवाली स्थूल स्त्री को देखने लगे। उसको देखते-देखते पहली बार विन्स्टन ने अनुभव किया वह औरत ख़ूबसूरत भी है। उसने कल्पना भी नहीं की थी कि इतनी स्थूल स्त्री, जिसने बहुत सारे बच्चे पैदा किए हों, इतनी सुन्दर भी बनी रह सकती है।

उसने जूलिया की कमर को अपनी बाहों में लपेट रखा था। घुटने से कमर तक वे एक-दूसरे से चिपके खड़े थे। उनके शरीरों के स्पर्श से कभी कोई बच्चा पैदा न होगा। यही एक ऐसी बात है जिसे वे कभी नहीं कर सकते। नीचेवाली औरत के दिमाग़ नहीं था, परन्तु बड़ा-सा स्वस्थ शरीर, मज़बूत हाथ-पैर और उर्वर पेट था। वह सोच रहा था, पता नहीं इस औरत ने कितने बच्चे पैदा किए होंगे। वह शायद एक साल के लिए जवान रही हो, जंगली गुलाब की तरह, और फिर वह फल की भांति फूल गई होगी, सख्त हो गई होगी — सुर्ख और खुरदरी हो गई होगी। उसका सारा जीवन कपड़े धोने, फ़र्श धोने, सीने-पिरोने, खाना बनाने, झाड़ लगाने, पालिश करने में बीत गया होगा। पहले अपने बच्चों के लिए फिर अपने बच्चों के बच्चों के लिए उसने यह सब किया होगा। अब भी वह गा रही है। उसके मन में अजब-सी श्रद्धा जाग रही थी जिसे वह प्रकट नहीं कर पा रहा था। उसके ये भाव चिमनियों के पीछे फैले, नीले, मेघविहीन आकाश के साथ मिल गए थे। वह सोच रहा था कि क्या आकाश ईस्ट एशिया तथा यूरेशिया में भी ऐसा ही है जैसा यहां? क्या आकाश के नीचे रहनेवाले सब व्यक्ति एक ही तरह के हैं? क्या वे सभी एक-दूसरे के अस्तित्व से अनभिज्ञ हैं, क्या उन सबके बीच घृणा और मिथ्या की दीवारें खड़ी हैं और क्या सभी जगह के लोगों में वह शक्ति छिपी है जो एक दुनिया बदल देगी? अगर किसी से आशा है तो वह मज़दूरवर्ग से ही है।

बिना पूरी किताब पढ़े ही वह समझ गया था कि गोल्डस्टीन का यही सन्देश होगा। भविष्य मज़दूरों का ही है। देर-सवेर कभी-न-कभी ऐसा अवश्य होगा कि मजदूर भी सोचेंगे और जब सोच सकेंगे, तो जागेंगे और जागकर वह काम करेंगे जिसकी उनसे आशा की जाती है। मज़दूरवर्ग अनश्वर है। नीचे खड़ी औरत को देखकर सन्देह की कोई गुंजाइश ही नहीं रह जाती। एक-न-एक दिन वे ज़रूर जागेंगे। और जब तक ऐसा नहीं होता, चाहे इसमें हज़ार वर्ष ही क्यों न लगे, तब तक वे अनगिनत मुसीबतों के होते हुए भी जिन्दा रहेंगे। चिड़ियों की तरह वे अपनी ताकत एक शरीर से दूसरे शरीर को देते रहेंगे जिसमें न तो पार्टी हिस्सेदार बन सकती है और न उस ताकत को मार ही सकती है।

"तुम्हें याद है वह चिड़िया," विन्स्टन ने पूछा, "जिसने पहले दिन हमें अपना गीत सुनाया था?"

"उसने कोई गीत नहीं सुनाया, वह तो अपने मन को खुश करने के लिए गा रही थी। शायद अपना जी ख़ुश करने के लिए भी नहीं, बस गाने के लिए गा रही थी।" जूलिया ने कहा।

चिड़ियां गाती हैं। मज़दूर गाते हैं। पार्टी नहीं गाती। सारी दुनिया में, लन्दन में, पेरिस में, न्यूयार्क में, अफ्रीका और ब्राजील में, सीमा पार के निषिद्ध प्रदेशों में, बर्लिन में, रूसी मैदानों के गांवों में, चीन और जापान के बाजारों में, हर स्थान पर वही अजेय मज़दूर था जो दानव की भांति श्रमरत था। उनकी स्त्रियां बच्चे पैदा करती थीं और मज़दूर जन्म से लेकर मृत्यु तक काम करता था और बराबर गाता रहता था।

"हम मृत हैं।" विन्स्टन ने कहा।

"हम मृत हैं।" जूलिया ने उसकी ही बात प्रतिध्वनित कर दी।

"हां, तुम मृत हो।" उनके पीछे से कठोर स्वर में किसी ने दोहराया।

वे उछलकर अलग खड़े हो गए। विन्स्टन को काटो तो ख़ून नहीं। उसका बदन बर्फ़ की तरह शीतल हो गया था। जूलिया का चेहरा भी सफ़ेद पड़ गया था। गाल की लाली अब भी रंग की तरह चमक रही थी, पर ऐसा लगता था कि उसका नीचे की त्वचा से कोई सम्बन्ध नहीं है।

"जहां हो, ठीक वहीं खड़े रहो। जब तक कहा न जाए, ज़रा भी हिलना मत।"

शुरू हो गया। आख़िर शुरू हो गया। वे एक-दूसरे को देखने के अलावा कुछ भी नहीं कर सकते थे। मकान से निकल भागें — अपनी जान बचाने को कूदकर भाग जाएं — ऐसा कोई विचार उनके दिमाग़ में नहीं आया। खटके की आवाज़ आई। किसी ने शायद सिटकनी खोली थी। इसके बाद कांच टूटने की आवाज़ आई। तस्वीर ज़मीन पर गिर गई थी। उसके पीछे जो टेलीस्क्रीन छिपा था, वह सामने आ गया।

"अब वे हमें देख भी सकते हैं।" जूलिया ने कहा।

"अब हम तुम्हें देख भी सकते हैं, उसी आवाज़ ने कहा, "कमरे के बीचोबीच खड़े हो जाओ। अपनी पीठ एक-दूसरे के सामने कर लो। अपने हाथ सिर के पीछे ले जाकर बांध लो। एक-दूसरे को छुओ मत।"।

वह उसे छू तो नहीं रहा था लेकिन उसे लग रहा था कि जूलिया का सारा बदन बुरी तरह कांप रहा था। या शायद वही अकेला कांप रहा था। उसने बड़ी मुश्किल से अपने दांतों को बजने से रोक लिया था, परन्तु वह अपने घुटनों पर काबू नहीं पा रहा था। नीचे से बहुत-से जूतों की खटखटाहट सुनाई पड़ रही थी। आवाज़ घर के अन्दर और बाहर दोनों तरफ़ से आ रही थी। हाते में लोग भरे थे। कोई चीज़ घसीटकर पत्थर की ओर लाई जा रही थी। औरत का गाना अचानक रुक गया था। बड़े ज़ोर के साथ किसी चीज़ के गिरने तथा लुढ़कने की आवाज़ आई थी। शायद कपड़े धोने के टब को फेंक दिया गया था। इसके बाद गुस्से से चीखने की आवाज़ आई और ऐसा लगा कि कोई दर्द से चिल्ला रहा है।

"मकान को घेर लिया गया है।" विन्स्टन ने कहा।

"मकान को घेर लिया गया है।" टेलीस्क्रीन ने दोहराया।

उसे लगा कि जूलिया ने मुंह खोला। इसके बाद ही वह बोली, "मैं समझती हूं, अब हम लोग एक-दूसरे से अलविदा कह लें।"

"हां तुम लोग अलविदा कह सकते हो।" टेलीस्क्रीन ने कहा।

विन्स्टन के पीछे बिस्तर पर कोई चीज़ धम्-से गिरी। खिड़की के सहारे किसी ने सीढ़ी रखी थी जिसने फ्रेम तोड़ दिया था, वही बिस्तर पर गिरा था। कोई खिड़की में लगाई गई सीढ़ी के सहारे ऊपर चढ़ रहा था। कमरा काली वर्दीधारी सिपाहियों से भर गया था। उनके हाथों में हथकड़ियां थीं।

विन्स्टन का कांपना बन्द हो गया था। वह इधर-उधर देख तक नहीं रहा था। एक ही काम करना था — वह यह कि एकदम सीधा, बिना हिले-डुले खड़ा रहा जाए और उन लोगों को मारने का मौका न दिया जाए। फिर ज़ोर का धमाका हुआ। किसी ने कांच का पेपरवेट उठाकर ज़मीन पर दे मारा था। वह आतिशदान से लगकर टुकड़े-टुकड़े हो गया था।

मूंगे का टुकड़ा, केक से गिरे चीनी के गुलाबी फूल की तरह नीचे गिरकर चटाई पर लुढ़क गया था। अचानक किसी ने उसके टखने पर ज़ोरों से ठोकर मारी जिससे वह गिरते-गिरते बचा। किसी ने जूलिया के चूंसा मारा था और वह ज़मीन पर दोहरी होकर तड़प रही थी और उनकी आवाज़ तक नहीं निकल पा रही थी। विन्स्टन को इतनी भी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि वह उसकी तरफ़ लेशमात्र भी मुड़कर देख सके। परन्तु कभी-कभी उसे थोड़ा-सा जूलिया का तड़पता हुआ चेहरा दिखलाई पड़ जाता था। उस आतंक की अवस्था में भी वह जूलिया का तड़पना अनुभव कर रहा था। वह यही चाह रहा था कि दर्द तो है ही, लेकिन हे भगवान, जूलिया की सांस वापस लौट आए। इसके बाद दो आदमियों ने जूलिया को बोरी की तरह उठा लिया और बाहर लेकर चले गए। विन्स्टन को जलिया के चहेरे की झलक मिल गई। जलिया का चेहरा नीचे झल गया था, पीला था और उसकी आंखें मुंद गई थीं। उसके दोनों गालों पर लगी लाली अब भी मिटी नहीं थी। यही जूलिया के अन्तिम दर्शन थे।

वह मुर्दे की तरह चुपचाप खड़ा था। किसी ने उसे अभी तक मारा नहीं था। उसके दिमाग़ में तरह-तरह के विचार आ रहे थे, परन्तु उसमें उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह सोच रहा था — पता नहीं, इन लोगों ने क्या मि॰ चारिंगटन को भी पकड़ लिया है। वह सोच रहा था, उस हाते वाली औरत का क्या हुआ?

तभी सीढ़ियों पर हलके क़दमों से किसी के चढ़ने की आवाज़ आई। मि॰ चारिंगटन ने कमरे में प्रवेश किया। काली वर्दीधारी आदमियों का धृष्ट व्यवहार कुछ कम हो गया। मि॰ चारिंगटन की शक्ल भी बदल गई थी। उनकी आंखें पेपरवेट के टुकड़ों पर पड़ी।

"इन टुकड़ों को उठाओ।" उन्होंने तेज़ी से कहा।

तुरन्त एक सिपाही ने झुककर उनकी आज्ञा का पालन किया। उनकी बात का विशेष लहजा भी बदल गया था। विन्स्टन को ख़याल आया, यही आवाज़ उसने कुछ सेकेंड पहले टेलीस्क्रीन पर सुनी थी। मि॰ चारिंगटन अभी भी अपनी मखमली जाकेट पहने थे। परन्तु उनके बाल जो पहले सफ़ेद थे, अब बिलकुल काले हो गए थे। अब वह चश्मा भी नहीं था। उन्होंने विन्स्टन पर एक तीखी नज़र डाली जैसे उसे पहचान रहे हों, इसके बाद फिर कोई ध्यान नहीं दिया। चारिंगटन पहचाने तो जा सकते थे लेकिन वह अब पहले जैसे नहीं थे। उनकी कमर सीधी हो गई थी। ऐसा लगता था कि लम्बाई बढ़ गई है। उनके चेहरे में भी थोड़ा-सा परिवर्तन हो गया था। परन्तु थोड़े-से परिवर्तन ने ही बहुत बड़ा परिवर्तन कर दिया था। भौंहों के बाल अब भी कम थे, लेकिन झुर्रियां बिलकुल गायब थीं। चेहरा बदला-सा लगता था। नाक भी छोटी लगने लगी थी। अब पैंतीस वर्ष के व्यक्ति का कठोर चेहरा सामने था। विन्स्टन को ख़याल आया कि जीवन में पहली बार वह विचार-पुलिस के आदमी को अपनी जानकारी में सामने खड़ा देख रहा है।

पता नहीं वह कहां था। शायद वह प्रेम मन्त्रालय में था, परन्तु स्थान निर्धारण का कोई साधन नहीं था।

वह जिस कोठरी में बन्द था, उसकी छत काफी जी की। खिडकी एक भी नहीं थी। बल्ब छिपे थे, केवल उनकी रोशनी ही कमरे में थी। हूंऽ हूंऽऽ हूंऽऽऽ की आवाज़ आ रही थी। ऐसा लगता था कि इसका सम्बन्ध हवा की सप्लाई से था। दीवार के सहारे बेंच-सी बनी थी, जिस पर बैठा जा सकता था। वह दरवाज़े के पास जाकर खत्म हो जाती थी। दूसरी तरफ़ के दरवाज़े के पास पाखाने के लिए तसला था जिस पर लकड़ी का घोरा नहीं था। हर दीवार में एक-एक यानी चार टेलीस्तीन थे।

उसके पेट में हल्का-हल्का दर्द हो रहा था। यह दर्द तब से ही था जब से उसे बंडल बनाकर चारों तरफ़ से बन्द मोटर में पटककर कहीं ले जाया गया था। परन्तु उसे भूख भी लगी थी। शायद उसे अन्तिम बार भोजन किए चौबीस घंटे गुज़र चुके थे या शायद छत्तीस घंटे हो गए हों। परन्तु जब से उसे गिरफ़्तार किया गया था, उसे कुछ खाने को नहीं दिया गया था।

वह अपने-भर चुपचाप घुटने पर हाथ रखे बेंच पर बैठा था। उसे चुपचाप बैठना आ गया था। जरा-सी भी हरकत करने पर टेलीस्क्रीन से पहरेदार चिल्लाना शुरू कर देते थे। परन्तु उसकी भूख बढ़ती जा रही थी। उसे रोटी के टुकड़े की ज़रूरत थी। उसे ख़याल आया कि उसकी जेब में कुछ रोटी के टुकड़े पड़े हैं क्योंकि उसकी पतलून की जेब में रखी कोई चीज़ उसकी टांगों से लग रही थी। आख़िरकार उसने डर छोड़कर रोटी के टुकड़े के लिए जेब में हाथ डाल दिया।

"स्मिथ", तुरन्त ही टेलीस्क्रीन से आवाज़ आई, "6079 स्मिथ डब्ल्यू। कोठरी में जेब में हाथ डालना मना है।"

वह चुपचाप बैठ गया। यहां लाने से पहले उसे कुछ समय के लिए हवालात में भी रखा गया था। उसे याद नहीं था कि उसे वहां कितनी देर रखा गया था। सम्भवतः कुछ घंटे, बिना घड़ी के समय का अन्दाज़ करना बड़ा कठिन था। दिन की रोशनी तक नहीं आने पाती थी। कोठरी में काफ़ी शोर था और अजब-सी बदबू आ रही थी। पहले ही जैसी कोठरी में अब भी उसे रखा गया था। परन्तु वह कोठरी बड़ी गन्दी थी और उसमें बराबर दस या पन्द्रह आदमी रहते थे। अधिकांश साधारण अपराधी थे, परन्तु कुछ राजनीतिक बन्दी भी थे, वह चुप हो दीवार का सहारा लेकर बेंच पर बैठ गया था। उसके पास सटकर और भी गन्दे लोग बैठे थे। वह बड़ा भयभीत था। उसके पेट में दर्द था ही। उसे अपने आसपास के वातावरण में कोई विशेष रुचि नहीं थी। परन्तु पार्टी-सदस्यों तथा अन्य साधारण बन्दियों के व्यवहार में बड़ी भिन्नता थी। पार्टी के बन्दी बड़े डरे-से थे, परन्तु साधारण अपराधी किसी की कोई परवाह नहीं करते थे। वे अपराधी गारद के सिपाहियों को गालियां देते थे और जब उनकी चीज़ छीनी जाती तो वे ज़ोरों से लड़ भी पड़ते। ज़मीन पर अश्लील वाक्य लिखते थे। चोरी से लाया गया खाना खाते थे। पता नहीं वे उसे अपने कपड़ों में छिपाकर जाने किस प्रकार ले आए थे। यदि टेलीस्क्रीन से सिपाही शान्ति स्थापित करने की चेष्टा करते तो वे उन पर ही उल्टे चिल्ला पड़ते थे। यही नहीं, कुछ की तो सिपाहियों से दोस्ती जान पड़ती थी। वे उन्हें उनके घर के नामों से बुलाते थे। दरवाज़े के छेद से सिगरेट लेने-देने की कोशिश भी करते थे। सिपाही भी इनके साथ अपेक्षाकृत अच्छा व्यवहार करते थे। मारपीट भी उतनी सख्ती से नहीं करते थे। इनमें से अधिकांश को बेगार कराने के लिए श्रम-शिविरों में भेजा जाता था। शिविरों में यदि परिचय और पहुंच हो तो कोई दिक्कत नहीं होती थी। रिश्वत, पक्षपात, हर तरह ही बेईमानी सभी-कुछ चलता था। व्यभिचार और वेश्यागमन भी होता था। यही नहीं, आलुओं से शराब भी बनाई जाती थी। बदमाशों और हत्यारों को ऊंचे पदों पर रखा जाता था। वही श्रम-शिविरों में

अभिजात्य-वर्ग के अधिकारी होते थे। कठिन और गन्दे काम राजनीतिक बन्दियों को करने पड़ते थे।

हवालात में हर तरह के बन्दियों का आना-जाना बराबर जारी रहता था — नशीली सामग्री चोरी से लानेवाले, चोर-डकैत, चोर-बजारिये, शराबी और वेश्याएं। कुछ शराबी तो इतने हिंसक होते कि कई बन्दियों को मिलकर उन पर काबू करना पड़ता था। एक साठ बरस की बुढ़िया को, जिसके बाल सफ़ेद हो गए थे और जिसके स्तन लटक गए थे, हाथ-पैर टांगकर चार सिपाही हवालात में अन्दर पटक गए। इस पर भी वह बराबर हाथ-पैर चला रही थी। उन्होंने बुढ़िया के जूते खींचकर उतार लिए जिनसे वह ठोकरें मार रही थी, ओर वे उसे विन्स्टन पर पटक गए। विन्स्टन को लगा कि उसकी जांघ की हड्डी टूट जाएगी। औरत फिर उठ खड़ी हुई और उन सिपाहियों की मां को गालियां देने लगी। इसके बाद वह विन्स्टन की गोद से सरककर बेंच पर बैठ गई थी।

"मुझे माफ़ करना," बुढ़िया ने कहा, "मैं जान-बूझकर तुम्हारे ऊपर नहीं गिरी। उन बदमाशों ने मुझे तुम पर पटका है। उन्हें ज़रा भी तमीज़ नहीं है।" वह ठहर गई। इसके बाद उसने छाती थपथपाकर डकार ली। "माफ़ करना," बुढ़िया ने कहा, "मुझे अपने-आप पर क़ाबू नहीं है।"

वह आगे झुक गई और उसने बड़े ज़ोर से क़ै कर दी।

"अब ठीक है।" यह कहती हुई वह दीवार का सहारा लेकर बैठ गई। उसने आंखें मूंद रखी थीं। "कै को रोकने की कभी कोशिश नहीं करनी चाहिए — मैं तो यही कहती हूं। यदि उल्टी आ रही हो तो वह अवश्य कर देनी चाहिए।"

उसने आंखें खोल लीं। एक बार मुड़कर देखा और फिर विन्स्टन में ख़ास तौर पर दिलचस्पी लेने लगी। उसने अपना लम्बा हाथ विन्स्टन के कन्धे पर रख दिया और उसे अपनी ओर खींचने लगी। उसके मुंह से बियर की दुर्गन्ध आ रही थी और वह विन्स्टन की नाक में घुसी जा रही थी।

"तुम्हारा नाम क्या है?" उसने प्यार से पूछा।

"स्मिथ।" विन्स्टन ने उत्तर दिया।

"स्मिथ?" वृद्धा ने ज़रा विस्मयपूर्वक कहा, "अजब बात है! मेरा नाम भी स्मिथ है। क्यों," इसके बाद वृद्धा ने भावुकतापूर्ण कंठ से कहा, "सम्भव है, मैं तुम्हारी मां हूं।"

विन्स्टन ने भी सोचा, शायद वह वृद्धा उसकी मां ही हो। उसकी मां की आयु भी इतनी ही होती और वह भी इतनी ही बुड्ढी दिखलाई पड़ती। लोग श्रम-शिविरों में बेगार के लिए जाने की वजह से बदल भी तो जाते हैं।

अन्य किसी ने उससे बात तक नहीं की। यह आश्चर्य की बात थी कि साधारण अपराधी भी पार्टी-बन्दियों की ओर कोई ध्यान नहीं देते थे। वे उन्हें 'राजबन्दी' कहते थे और बिना दिलचस्पी दिखलाए उनकी अवहेलना कर दते थे। पार्टी के बन्दी स्वयं किसी से बात करने तक में घबड़ाते थे। केवल एक बार, जब दो स्त्रियां पार्टी-बन्दियों के रूप में आईं और एक-दूसरे से सटकर बेंच पर बैठ गईं, तो उस शोर में विन्स्टन को यह फुसफुसाहट सुनाई दी, 'कमरा नम्बर एक सौ एक।' इसका मतलब उसकी समझ में नहीं आया।

शायद पुलिस उसे यहां दो-तीन घंटे पहले लाई थी। पेट का दर्द बिलकुल बन्द कभी नहीं हुआ। हां, कभी वह बढ़ जाता और कभी घट जाता था। जब दर्द बढ़ जाता तो वह केवल पेट के दर्द की बात और खाने की ही सोचता और जब वह घट जाता तो आतंकग्रस्त हो जाता। ऐसे भी क्षण आते जब वह स्पष्ट रूप से यह कल्पना कर लेता कि उसके साथ क्या व्यवहार किया जाएगा। यह कल्पनात्मक अनुभूति इतनी तीव्र होती कि उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगता और उसकी सांस रुक-सी जाती। उसे लगता कि हंटरों से उसकी कोहनी पर प्रहार किया जा रहा है और नालदार जूतों की आवाज़ पीछे से आ रही है। उसे ख़याल आया कि वह ज़मीन पर पड़ा तड़प रहा है। उसके दांत टूट गए हैं। और वह दया की भीख मांग रहा है। वह अक्सर ओ'ब्रायन के सम्बन्ध में सोचता

था। उसे कभी आशा बंधती और कभी उसकी वह आशा टूट जाती। ओ'ब्रायन को यह तो पता लग ही गया होगा कि वह पकड़ लिया गया है। उसने कह दिया था कि ब्रदरहुड अपने सदस्यों को बचाने की कभी कोई कोशिश नहीं करता, लेकिन वे रेज़र ब्लेड तो भेज सकते हैं। कोठरी में आने में सिपाहियों को पांच सेकेंड तो लग ही जाएंगे। ब्लेड उसे जलती हुई शीतलता से काट देगा और जो उंगलियां ब्लेड को पकड़े होंगी वे भी हड्डी तक कट जाएंगी। उसकी तबीयत बहुत ख़राब थी और ज़रा-सा दर्द होते ही वह कांपने लगता था। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह मिल जाने पर भी ब्लेड का इस्तेमाल करेगा। ज़रा-सी तकलीफ़ होते ही वह कांपने लगता था।

कभी वह दीवारों की ईंटें गिनता परन्तु वह पूरी गिनती करने के पहले ही भूल में पड़ जाता। वह बार-बार आश्चर्य करता कि आख़िर वह है कहां, और वक़्त क्या है। कभी वह सोचता कि बाहर अवश्य ही दिन होगा और फिर दूसरे क्षण ही वह अनुमान करता कि बाहर बिलकुल अंधेरी रात है। यहां, वह जानता था, इस कोठरी में बत्तियां कभी नहीं बुझाई जाएंगी। यह ऐसी जगह थी जहां कभी अंधेरा नहीं होता था। अब उसकी समझ में आ गया था कि ओ ब्रायन ने प्रसंग को किस प्रकार बिना बताए ही समझ लिया था। प्रेम मन्त्रालय में कहीं कोई खिड़की नहीं थी। उसकी कोई कोठरी इमारत के बीचोबीच भी हो सकती है या बाहरी दीवार की तरफ़ भी हो सकती है। यह भी सम्भव था कि वह ज़मीन के नीचे दसवें तल पर हो या तीस मंज़िल ऊपर हो। यह निश्चय करना चाहता था कि वह ज़मींदोज़ कर दिया गया है या हवा में लटका है।

बाहर से बूटों की आवाज़ आई। लोहे का दरवाज़ा आवाज़ करता हुआ खुल गया। एक तरुण अफ़सर फुर्ती से अन्दर आ गया। उसकी काली वर्दी पर पीतल के बटन और चमड़े की पट्टियां चमक रही थीं। उसका चेहरा मोम जैसा नकली लगता था। कुछ-कुछ पीला-सा। अन्दर आकर उसने क़ैदी को अन्दर लाने का इशारा किया। कवि एम्पिलफ़ोर्थ लड़खड़ाता हुआ अन्दर आया। दरवाज़ा फिर आवाज़ करता हुआ बन्द हो गया। एम्पिलफ़ोर्थ पहले तो दूसरे दरवाज़े से और आगे जाने की कोशिश करने

लगा फिर इधर-उधर टहलने लगा। अभी तक उसने विन्स्टन को देखा नहीं था। विन्स्टन के सिर से ऊपर वह दीवार की ओर देख रहा था। वह जूते भी नहीं पहने था। मोज़ों से उसके अंगूठे बाहर निकले थे। मोज़े फटे थे। दाढ़ी बनाए उसे कई दिन हो गए थे। दाढ़ी के बाल उसके गालों की उभरी हुई हड्डियों पर आ गए थे। ऐसा लगता था कि वह कोई गुंडा है। परन्तु उसके कमज़ोर शरीर को देखते हुए और उसके डरे हुए चेहरे को देखते हुए उसे गुंडा कहना जमता नहीं था।

विन्स्टन ने आलस छोड़ दिया। वह स्वयं एम्पिलफ़ोर्थ से बोलेगा। और इस प्रकार टेलीस्क्रीन से डांट खाने का ख़तरा उठाएगा। हो सकता है कि एम्पिलफोर्थ के पास ब्लेड हो।

"एम्पिलफ़ोर्थ!" उसने कहा।

टेलीस्क्रीन से कोई चिल्लाया नहीं। एम्पिलफ़ोर्थ रुका। कुछ चौंका। धीरे-धीरे उसकी निगाह विन्स्टन पर रुकी।

"एह, स्मिथ," उसने कहा, "तुम भी यहां हो?"

"तुम यहां कैसे लाए गए?"

"सच यह है कि" — वह सामने की बेंच पर विन्स्टन की ओर मुंह करके बैठ गया। "एक ही अपराध होता है — है न?"

"क्या तुमने वह अपराध किया है?"

"हां, लगता तो है।"

उसने अपनी कनपटियों पर हाथ रख लिया और कुछ सोचने लगा। ऐसा लगता था, वह कुछ याद कर रहा था।

"ये बातें हो जाती हैं," उसने निरुउद्देश्य कहना शुरू किया, "हो ही जाती हैं। मेरी बेवकूफ़ी थी, इसमें कोई शक नहीं। हम किपलिंग की कविताओं का संग्रह छाप रहे हैं। मैंने एक कविता के अन्त में गॉड शब्द रहने दिया। परन्तु मैं मज़बूर था। मुझे रॉड से तुक मिलानी थी। इसके लिए भाषा में केवल बारह ही शब्द हैं। मैंने बड़ी कोशिश की और सिर मारा। कोई और तुक मिली ही नहीं।" उसके चेहरे का भाव बदल गया।

क्षण-भर के लिए वह प्रसन्न-सा दिखलाई पड़ा। उसका चेहरा एक अध्यापक के चेहरे की भांति चमक रहा था। बाल और मुंह धूलि-धूसरित होते हुए भी भाव स्पष्ट था।

उसने कहा, "तुम्हारे दिमाग़ में कभी यह ख़याल आया है कि अंग्रेज़ी काव्य के इतिहास के रूप को जड़ करने में इस बात का बड़ा हाथ रहा है कि इस भाषा में तुकों की बड़ी कमी है।"

यह बात विन्स्टन के दिमाग़ में पहले कभी नहीं आई थी। वर्तमान परिस्थिति मे उसे यह ख़याल कोई बहुत दिलचस्प भी नहीं लगा।

"बता सकोगे, इस समय कितने बजे होंगे?" उसने पूछा। एम्पिलफोर्थ फिर चौंक गया। "ओह, इस बारे में तो मैंने सोचा ही नहीं। दो या शायद तीन दिन पहले पुलिस ने मुझे गिरफ़्तार किया था।" इसके बाद उसने दीवार में चारों तरफ़ नज़र डाली। वह खिड़की तलाश कर रहा था। "इस जगह दिन या रात होने से कोई अन्तर नहीं पड़ता। पता नहीं यहां वक़्त कैसे जाना जा सकता है।"

कुछ समय वे इधर-उधर की बातें करते रहे। इसके बाद अचानक टेलीस्क्रीन से किसी ने चिल्लाकर उनसे चुप हो जाने के लिए कहा। विन्स्टन हाथ-पर-हाथ रखकर चुप बैठ गया। एम्पिलफ़ोर्थ बेंच पर आराम से बैठ ही नहीं सकता। इसलिए वह कभी एक तरफ़ से सहारा लेकर तो कभी दूसरी तरफ़ से सहारा लेकर बैठ जाता था। फिर वह कोने में जाकर बैठ गया। टेलीस्क्रीन से फिर आज्ञा दी गई कि वह चुपचाप बैठ जाए। समय बीतता गया। बीस मिनट बीते या एक घंटा — यह तय करना कठिन था। एक बार फिर बाहर से जूतों की आवाज़ आई। विन्स्टन के रोएं खड़े हो गए। जल्दी, बहुत जल्दी शायद पांच मिनट बाद ही उसे पता लग जाएगा कि उसकी भी बारी आ गई है।

दरवाज़ा खुला। कठोर चेहरेवाले अफ़सर ने प्रवेश किया। एक छोटे-से संकेत से उसने एम्पिलफ़ोर्थ से कहा, "कमरा नम्बर 101"

एम्पिलफ़ोर्थ सिपाहियों के बीच धीरे-धीरे चलने लगा। वह कुछ परेशान ज़रूर था। परन्तु उसकी समझ में ज़्यादा कुछ नहीं आ रहा था।

विन्स्टन को लग रहा था, बहुत समय गुज़र गया है। उसके पेट में फिर दर्द हो रहा था। उसका दिमाग़ एक ही जगह चक्कर काट रहा था। उसके रोएं फिर खड़े हो गए। बाहर से जूतों की आवाज़ फिर आई। दरवाज़ा खुलते ही ठंडे पसीने की बदबू से कोठरी भर गई। पारसन्स अन्दर आ गया। वह खाकी पेंट और खाकी कमीज़ पहने था।

इस बार विन्स्टन अपने ही विचारों में खोया हुआ था। "तुम यहां!" उसने कहा। पारसन्स ने विन्स्टन की ओर देखा। इस निगाह में न तो कोई दिलचस्पी थी और न आश्चर्य ही। केवल दुख और पीड़ा ही थी। वह इधर-उधर टहलने लगा। उससे चुपचाप नहीं बैठा जा रहा था। हर बार जब भी वह घुटने सीधे करता, वे कांपते हुए लगते। उसकी आंखें पूरी तरह खुली थीं। वह एक दिशा में ही घूरता जा रहा था। वह कहीं दूर देख रहा था। उसका ध्यान बीच की तरफ़ जाता ही नहीं था।

"तुम्हें क्यों पकड़ा गया?" विन्स्टन ने पूछा।

"विचार-अपराध।" पारसन्स ने कहा। उसकी आवाज़ में अपने अपराध के लिए पूर्ण स्वीकारोक्ति का भाव था। एक प्रकार की त्रस्तता भी थी। कुछ देर उसने विन्स्टन की ओर देखा और फिर उत्सुकतापूर्वक कहने लगा, "वे मुझे गोली तो नहीं मारेंगे न, तुम्हारा क्या ख़याल है? वे शायद गोली तब तक नहीं मारते जब तक कोई यथार्थतः राजद्रोह का काम न किया हो। विचारों को दिमाग़ में आने से कोई नहीं रोक सकता। मैं यह तो जानता हूं कि वे सबकी बात पूरी तरह सुनते हैं। ओह, मैं तो इसी के आसरे हूं। वे मेरे बारे में अन्य बातें तो रिकॉर्ड से जान लेंगे। नहीं क्या? तुम तो जानते ही हो मैं कैसा आदमी था। अपनी स्थिति में कोई ख़राब नहीं था। मुझमें अक्ल तो कोई ज़्यादा नहीं थी लेकिन काम करने का उत्साह था। मैंने पार्टी की अधिक-से-अधिक सेवा करने की कोशिश की है। नहीं क्या? शायद पांच साल की कैद की सज़ा मुझे मिल जाए और मैं छूट जाऊं। तुम्हारा क्या ख़याल है? या शायद, दस वर्ष के लिए जेल भेजा जाऊं। मुझ जैसा आदमी तो श्रम-शिविर में भी काफ़ी लाभदायी सिद्ध होगा। एक बार की ग़लती के लिए वे मुझे गोली तो नहीं मार देंगे?"

"क्या तुम दोषी हो?" विन्स्टन ने कहा।

"बेशक। मैं मुजरिम हूं," टेलीस्क्रीन की ओर दासभाव से देखते हुए पारसन्स ने कहा। "पार्टी कभी किसी निर्दोष व्यक्ति को तो पकड़ती ही नहीं। क्यों?" उसका मेढ़क-सा चेहरा अब शान्त हो गया था। कुछ पवित्रता का-सा भाव भी उसके मुंह पर आ गया था। "विचार-अपराध बड़ी भयानक चीज़ है। वह आपके न जानते हुए दिमाग़ में घुस सकता है। जानते हो, मैं इसके चक्कर में कैसे आया? सोते में। बिलकुल सच है। मैं अपने काम में लगा था और मुझे पता भी नहीं कि अपराधपूर्ण विचार कब मेरे दिमाग़ में घर कर गए। इसके बाद मैंने सोते में बड़बड़ाना शुरू कर दिया। मालूम है लोगों ने मुझे क्या कहते सुना?"

वह इस प्रकार निढाल हो गया जैसे डॉक्टरी कारणों से कुछ अश्लील बात कहने को बाध्य हो गया हो।

"बड़े भाई का नाश हो। — हां! यही मैंने कहा। लगता है कि मैंने यह बात कई बार कही। मैं खुश हूं कि यह बात अन्य लोगों तक पहुंचने के पूर्व ही मुझे पकड़ लिया गया। जानते हो, मैं उनके सामने क्या कहूंगा? में कहूंगा — धन्यवाद, मैं आपको धन्यवाद देता हूं। आपने मुझे आगे अपराध करने से बचा लिया।"

"तुम्हें पकड़वाया किसने?"

"मेरी छोटी लड़की ने।" पारसन्स ने ज़रा गर्वपूर्वक कहा, "उसने मुझे चाबीवाले छेद से बड़बड़ाते हुए सुन लिया। सुनने के बाद दूसरे दिन ही उसने पुलिस के गश्ती दस्ते को इसकी सूचना दे दी। सात साल की बच्ची के लिए यह कोई छोटी बात नहीं है। मुझे कोई शिकायत नहीं है। सच तो यह है कि मुझे अपनी लड़की पर बड़ा अभिमान है। इससे साफ़ होता है कि मैंने उसका लालन-पालन ठीक किया।" वह फिर कुछ देर एक कोने से दूसरे कोने तक कांपता हुआ टहलता रहा। उसने कई बार शौच के पात्र को देखा। इसके बाद उसने हाफपैंट उतार दिया।

"भाई माफ़ करना," उसने कहा, "मैं अब और अधिक न रोक सकूंगा। मुझे बड़ी ज़ोर से हाजत हो रही है।"

वह कमॉड पर बैठ गया। विन्स्टन ने अपना मुंह हाथों में छिपा लिया।

"स्मिथ," तुरन्त ही टेलीस्क्रीन से आवाज़ आई, "6079 स्मिथ डब्ल्यू! अपने मुंह पर से हाथ हटाओ। मुंह को इस तरह छिपाना मना है।" विन्स्टन ने अपने हाथों को हटा लिया। पारसन्स के जाने के बाद पता लगा कि पानी नहीं आता जिससे कमॉड की सफ़ाई होती है। फलतः घंटों बदबू आती रही। और भी अपराधी इसी रहस्यमय तरीके से आए और चले गए। एक औरत को जब बतलाया गया कि उसे 101 नम्बर कमरे में ले जाया जाएगा, तो वह बुरी तरह कांप गई और उसके चेहरे का रंग एकदम बदल गया। समय बीत रहा था। यदि वह सुबह लाया गया होगा तो दोपहर हुई होगी और तीसरे पहर लाया गया होगा तो आधी रात होगी। विन्स्टन के ठीक सामने एक ऐसा आदमी बैठा था, जिसकी ठोड़ी थी ही नहीं। उसके दांत दिखाई पड़ते थे और वह मासूम चूहे या बन्दर-सा लगता था। उसके गाल इतने फूले हुए थे कि विश्वास नहीं होता था कि उनमें खाने की कोई चीज़ नहीं भरी है। वह अपनी छोटी-छोटी आंखों से बारी-बारी से हर एक हो देख रहा था। यदि किसी की आंख उससे मिल जाती थी तो वह अपना मुंह तुरन्त फेर लेता था।

दरवाज़ा खुला। एक और बन्दी लाया गया। उसे देखते ही एक बार तो विन्स्टन का ख़ून बर्फ़ की तरह जम गया। वह बहुत ही साधारण व्यक्ति था। इंजीनियर या कोई टेकनीशियन-सा लगता था। लेकिन उसका चेहरा देखने लाया था। बिलकुल मुर्दों जैसी खोपड़ी लगती थी। मुंह इतना पतला था कि होंठ तथा आंखें अनुपात से बड़ी दिखलाई पड़ती थीं। आंखों से हत्यारापन छलकता था और यह भी लगता था कि उसके दिल में ऐसी घृणा बस गई जो कभी ख़त्म नहीं हो सकती है।

वह विन्स्टन से कुछ हटकर बेंच पर बैठ गया। विन्स्टन ने उसकी तरफ़ दुबारा नहीं देखा। परन्तु उस आदमी का चेहरा विन्स्टन के दिमाग़ से एकदम कभी नहीं निकल पाया। उसे ऐसा लगा रहा था कि वह उसकी आंखों-में-आंख डालकर देख रहा है। अचानक उसने अनुमान किया कि मामला क्या है। उस आदमी की भूख से जान निकली जा रही थी। यही

विचार सब बन्दियों के मन में उत्पन्न हुआ। सब लोग अपनी-अपनी जगह से हिल गए। बिना ठोड़ी के आदमी ने मुर्दे की खोपड़ी जैसे आदमी को भी देखा। इसके बाद उसने अपना मुंह फेर लिया। वह अपनी जगह पर ही बार-बार आसन बदलने लगा। आखिरकार विन्स्टन उठकर खड़ा हो गया। टहलते हुए जाकर उसने अपनी जेब से रोटी का एक टुकड़ा निकालकर उस मुर्दे की शक्लवाले आदमी को दिखलाया।

टेलीस्क्रीन से भयानक शोर हुआ। गोल मुंहवाला आदमी एकदम घूम गया और उसने विन्स्टन के हाथ से रोटी छीन ली। जिस आदमी को डबलरोटी दिखलाई गई थी उसने अपना हाथ पीछे कर लिया। इस तरह जैसे उसने रोटी लेने से इंकार कर दिया हो।

"बमस्टीड," टेलीस्क्रीनवाली आवाज़ ने कहा, "2773, बमस्टीड जे। वह रोटी का टुकड़ा छोड़ दो!!"

गोल मुंहवाले आदमी ने रोटी का टुकड़ा गिरा दिया।

"जहां हो, वहीं खड़े रहो!" आवाज़ ने कहा, "दरवाज़े की ओर मुंह कर लो! ज़रा भी मत हिलो!"

बिना ठोड़ीवाले आदमी ने आज्ञा का अक्षरशः पालन किया। अब उसके गाल कांप रहे थे और वह अपने को नियन्त्रित नहीं रख पा रहा था। दरवाजा आवाज़ करता हुआ खुल गया। अफ़सर के साथ कुछ सशस्त्र सिपाही भी कोठरी में घुस आए। घुसते ही अफ़सर ने पूरी ताक़त से एक बूंसा बमस्टीड के मुंह पर मारा। चूंसे के प्रहार से वह बिलकुल ज़मीन पर गिर गया। और उसका शरीर धक्के से पाखाने के बरतन से जा लड़ा। वह कुछ क्षण के लिए मूर्छित हो गया और जहां का तहां पड़ा रहा। उसके मुंह और नाक से खून की धारा बह निकली थी। गले से केवल गरगराहट ही आ रही थी। शायद वह आवाज़ भी बेहोशी में ही निकल रही थी। उसके बाद वह घुटनों के बल उठकर बैठने लगा। ख़ून और लार के साथ उसके सारे दांत बाहर आ गए।

सब बन्दी चुपचाप बैठे थे। वे हाथों पर हाथ रखे थे। मोटा आदमी अपनी जगह पर आकर बैठ गया। उसका मुंह काले फल की तरह सूज

गया था। और वह पहचाना भी नहीं जा रहा था। एक तरफ़ का निकला हुआ मांस काला पड़ता जा रहा था। मुंह के नाम पर चेहरे में केवल एक छेद रह गया था। कभी-कभी उसके कपड़ों पर एकाध बूंद ख़ून गिर जाता था।

दरवाज़ा फिर खुला। मुर्दे जैसी खोपड़ी वाली शक्ल के आदमी की ओर इशारा करते हुए अफ़सर ने कहा, "कमरा नं॰ 1011"

विन्स्टन ने चीख़ की आवाज़ सुनी। वह आदमी कूदकर फर्श पर आ गया था। और घुटनों के बल बैठ गया था। उसने दोनों हाथों की मुट्ठियां बन्द कर रखी थीं।

"कॉमरेड, अफ़सर," उसने चिल्लाकर कहा, "मुझे वहां मत ले चलो। मैं ने क्या सब-कुछ आपको बता नहीं दिया, अब और क्या आप जानना चाहते हैं? ऐसी कोई बात नहीं है, जिसे मानने के लिए मैं तैयार नहीं। मुझे बताओ, क्या बात कहनी है मैं कह दूंगा, या लिख लो — मैं दस्तख़त कर दूंगा — कुछ भी लिख लो। पर 101 नम्बर में मत ले चलो।"

"कमरा नम्बर 101।" अफ़सर ने फिर दोहराया।

उस आदमी का चेहरा पहले ही पीला पड़ा था और अब तो वह इतना विकृत हो गया था कि विन्स्टन को विश्वास नहीं हो रहा था कि किसी आदमी का चेहरा इतना भी बिगड़ सकता है। निश्चित रूप से अब उसके चेहरे का रंग हलका हरा हो गया था।

वह फिर चीख़ा, "और चाहे जो करो। तुम मुझे हफ़्तों से भूखा मार रहे हो। मुझे मर जाने दो। मुझे गोली मार दो। फ़ांसी पर लटका दो। मुझे 25 साल के लिए जेल भेज दो। क्या तुम चाहते हो कि मैं किसी और आदमी का नाम ले दूं। तुम वह नाम बतलाओ, मैं उसका नाम भी ले दूंगा। मेरी पत्नी है। तीन बच्चे हैं। उनमें सबसे बड़ा छह साल का है। आप सबके गले मेरे सामने काट डालिए। मैं खड़ा-खड़ा देखता रहूंगा। कुछ न बोलूंगा। लेकिन 101 नम्बर के कमरे में मत ले चलिए।"

"कमरा नम्बर 101।" अफ़सर ने फिर दोहराया।

उस आदमी ने और लोगों की तरफ़ देखा। उसकी आंखें बिना ठोड़ी-वाले आदमी पर ठहर गईं। उसने अपना दुर्बल हाथ उठाकर उसकी तरफ़ इशारा किया।

"यह है वह आदमी, जिसे आपको ले जाना चाहिए, मुझे नहीं।" उसने चीखकर कहा, "आपने नहीं सुना कि मुंह पर घूंसा लगने के बाद यह क्या कह रहा था। मुझे मौक़ा दीजिए, मैं सब-कुछ बता दूंगा कि क्या कह रहा था। यही पार्टी के विरुद्ध है, मैं नहीं।"

दो मज़बूत सिपाही उसे बग़ल से पकड़कर उठा लेने के लिए झुक गए। लेकिन तभी वह फ़र्श पर धड़ाम से गिरकर लेट गया। उसने बेंच के लोहे का एक पाया पकड़ लिया। सिपाहियों ने उसे घसीटा, लेकिन वह जितनी ताक़त से उस लोहे की सलाख को पकड़े था उसे देखकर आश्चर्य हो रहा था। खींचतान कोई बीस सेकेंड चली होगी। और तब दूसरी तरह की दर्द भरी चीख़ उसके गले से निकली। एक सिपाही ने बूट से उसके हाथ में इतने जोरों से ठोकर मारी कि एक हाथ की उंगलियों की हड्डियां टूट गई थीं। अब उन्होंने उसके पैर पकड़कर उसे घसीट लिया।

"कमरा नम्बर 1011" अफ़सर ने कहा।

वह आदमी लड़खड़ाता हुआ सिपाहियों के सहारे बाहर चला गया। उसका सिर एक तरफ झुक गया था। वह अपने कुचले हाथ को सहला रहा था। उसका प्रतिशोध समाप्त हो गया था।

बहुत समय गुज़र गया। यदि उस आदमी को सिपाही आधी रात को ले गए थे तो सुबह हो गई थी और सुबह ले गए थे तो दोपहर बाद का समय हो गया था। विन्स्टन अकेला था और घंटों अकेला रहा था। पतली बेंच पर बैठे-बैठे जब कमर दुख जाती थी तो वह खड़ा हो जाता था। इधर-उधर टहल भी लेता था। रोटी का टुकड़ा अब वहीं पड़ा था। जहां उसे बिना ठोड़ीवाले आदमी ने गिराया था। लेकिन अब उसे भूख की जगह प्यास लग आई थी। उसका मुंह सूख गया था। और स्वाद बिगड़ गया था। हूंऽ हूंऽऽ की आवाज़ और सफ़ेद रोशनी में अब उसकी सोचने की ताक़त भी जाती रही थी। कुछ बेहोशी-सी आ रही थी। वह तभी

उठता था जब हड्डियां बुरी तरह दुखने लगती थीं। वह बैठता तब था जब उसे चक्कर आने लगते थे और उसे यह विश्वास नहीं होता था कि वह और अधिक खड़ा हो सकेगा। जब भी उसके दर्द में कमी होती उसे डर आकर दबा लेता था। कभी-कभी वह बड़ी आशा से ओ'ब्रायन और रेज़र ब्लेड की बात भी सोच लेता था। शायद उसे कभी खाना भेजा जाए तो ब्लेड उसके हाथ आ जाए। जूलिया के बारे में तो वह और भी कम सोच रहा था। कहीं-न-कहीं वह भी यन्त्रणा भोग रही होगी। क्या पता, वह भी पीड़ा से इस समय चिल्ला रही हो।

बूटों की आवाज़ फिर आई। उसका धैर्य समाप्त हो गया था। टेलीस्क्रीन की भी उसे परवाह नहीं रही थी।

वह चिल्ला पड़ा, "आख़िर आपको भी पकड़ ही लिया।"

"मुझे तो बहुत पहले पकड़ चुके हैं," ओ'ब्रायन ने कोमल स्वर से कहा। इसमें खेद और व्यंग्य का भाव मिश्रित था। ओ'ब्रायन के पीछे से चौड़ी छातीवाला वर्दीधारी सिपाही कोड़े लिए आगे बढ़ आया।

"इस बात को तुम जानते थे," विन्स्टन से ओ'ब्रायन ने कहा।

हां, वह अनुभव कर रहा था कि वह यह बात जानता था। लेकिन अब उन बातों को याद करने का वक़्त कहां था। अब तो उसका सारा ध्यान कोड़े पर था। कोड़ा कहीं भी पड़ सकता था, सिर पर, कान पर, बांह पर या कोहनी पर। वह घुटनों पर झुक गया। वह कोहनी के उस भाग को जहां कोड़ा पड़ा था, दूसरे हाथ से पकड़े था। एकबारगी हर चीज़ पीले प्रकाश से चमक उठी। एक बार ही में इतनी पीड़ा हो सकती है, इसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। दुनिया में शारीरिक पीड़ा से बुरी कोई वस्तु नहीं है। पीड़ा के समय सारी वीरता हवा हो जाती है। वह बार-बार यही सोच रहा था और फ़र्श पर अपनी कोहनी को पकड़े तड़प रहा था।

उसे ऐसा लग रहा था कि वह स्ट्रेचर पर पड़ा था। अन्तर था तो केवल यह कि ज़मीन से ज़रा ऊंचा था। वह इस तरह बंधा था कि हिल भी नहीं सकता था। उसके मुंह पर साधारण से अधिक तेज़ प्रकाश पड़ रहा था। ओ'ब्रायन उसके बगल में खड़ा था और बार-बार ध्यान से देख रहा था। दूसरी ओर एक आदमी सफ़ेद कोट पहने खड़ा था। उसके हाथ में इंजेक्शन था।

आंखें खुलने के बाद भी आसपास की चीजें देखने में और समझने में उसे कुछ समय लगा। उसे लग रहा था कि वह इस कमरे में दूसरी दुनिया से तैरता हुआ आ गया है। वह दुनिया जहां से वह आया है पानी के नीचे है। वह कब तक उस दुनिया में रहा उसे ज्ञात नहीं था। गिरफ़्तारी के बाद से उसने दिन या रात के दर्शन नहीं किए। इसके अलावा उसकी याददाश्त भी साथ नहीं दे रही थी। सोते समय भी जो चेतना आदमी में रहती है, वह भी ख़त्म हो गई थी और शायद दुबारा शुरू हुई थी। सुप्त चेतना के लम्बे भाग की कोई याद उसे नहीं रह गई थी।

कोहनी पर पहला कोड़ा पड़ने के बाद वह दुःस्वप्न शुरू हुआ था। बाद में उसने अनुभव किया कि उसके साथ जो हुआ वह साधारण और हर बन्दी के साथ की जानेवाली प्राथमिक पूछताछ थी। कितनी बार वह पीटा गया। कितनी देर पीटा गया, यह सब उसे कुछ भी याद नहीं था। उसे मारने के लिए हमेशा पांच या छह काली वर्दीधारी सिपाही जुटते थे। कभी घूसों से, कभी कोड़ों से, तो कभी लोहे के डंडे या नालदार जूतों से उसे पीटा जाता था। वह पशु की तरह फर्श पर लज्जा का परित्याग कर लोटा-लोटा फिरता था। कभी वह ठोकरें बचाने की कोशिश भी करता था। परन्तु इससे वह और मार खाता था। कभी पसली में, कभी पेट में, कभी कोहनी और कभी गुप्त अंगों पर ठोकरें मारी जाती थीं। और यह क्रम कभी-कभी तब तक चलता जब तक वह बेहोश नहीं हो जाता था। कभी-कभी तो पिटाई आरम्भ होने के पहले वह दया की भीख मांगने लगता था। वह घूसा देखते ही वास्तविक और कल्पित सभी अपराध स्वीकार करने लगता था। कभी यह तय कर लेता था कि वह कुछ भी

स्वीकार नहीं करेगा। कभी-कभी तो उसे इतना मारा जाता था कि वह खड़ा भी नहीं हो पाता था। उसे फिर आलू के बोरे की तरह कोठरी में पटक दिया जाता, कुछ घंटों अकेला छोड़कर होश में आने दिया जाता और फिर बाहर ले जाकर पीटा जाता। कभी-कभी होश आने में बहुत समय लग जाता था। उसे अपनी कोठरी की याद थी। उसमें लकड़ी का तख्त था। हाथ धोने के लिए टीन का एक पात्र था और खाने के लिए गरम शोरबा और रोटी या कॉफी दी जाती थी। उसकी दाढ़ी बनाने के लिए एक नाई भी आता था, जो बाल भी काट जाता था। काम से काम रखनेवाले तथा बिना किसी प्रकार की सहानुभूति के सफ़ेद कोट पहने लोग आते, उसकी नाड़ी देखते, उसकी पलकें उलटकर देखते, टूटी हड्डियों के लिए जगह-जगह बदन दबाते और नींद के लिए इंजेक्शन दे जाते थे।

अब उसका पीटा जाना कम हो गया था। पीटने की धमकियां ही दी जाती थीं। यदि किसी सवाल के जवाब को असन्तोषजनक समझा जाता तो कहा जाता कि क्या फिर पिटवाया जाए? वह इस धमकी से भी बहुत डरता था। अब उससे काली वर्दीधारी गुंडे सवाल नहीं करते थे, बल्कि पार्टी के बुद्धिवादी करते थे। ये ठिंगने, स्थूल और गोल-मटोल होते थे। उनके हाव-भावों में बड़ी फुर्ती होती थी और उनके चश्मे बहुत चमकते थे। प्रश्नों की झड़ी जब एक बार शुरू होती तो वह दस-बारह घंटे चलती रहती थी। ये प्रश्नकर्ता उसे बराबर कुछ-न-कुछ कष्ट देते रहते थे। कभी वे उसके मुंह पर थप्पड़ जड़ देते थे। कभी कानों को मल देते थे। पेशाब नहीं करने देते थे। मुंह पर इतनी तेज़ रोशनी डालते थे कि आंखों से पानी बह निकलता था। उनका उद्देश्य उसका इतना अपमान करना था कि उसकी तर्क और विवेक शक्ति बिलकुल नष्ट हो जाए। परन्तु उनका मुख्य शस्त्र था, प्रश्न। प्रश्नों की निर्मम झड़ी बराबर घंटों तक चलती जाती थी। वे ऐसे सवाल करते जिससे वह फंस जाए। अपनी ही बात का स्वयं खंडन कर दे। वे उसकी हर बात को तोड़ते-मरोड़ते थे। उस पर झूठा होने का आरोप लगाते थे। अन्त में वह तंग होकर और स्नायविक क्लान्ति तथा लज्जा के कारण रोने लगता था। प्रश्नकर्ताओं का अधिकांश समय चीख़ने में और गालियां बकने में बीतता था और यदि उत्तर देने में वह

तनिक भी हिचकिचाता तो वे उसे फिर सिपाहियों के हवाले कर देने की धमकी देते थे। कभी-कभी उनका स्वर अचानक बदल जाता। वे उसे कॉमरेड कहकर पुकारते। उससे वे इंगसोश और बड़े भाई के नाम पर अपीलें करते। खेदपूर्वक उससे पूछते कि क्या वह अब भी पार्टी के प्रति वफ़ादार हुआ है या कि नहीं और अपने पाप का प्रायश्चित्त उसने कर लिया है या नहीं। घंटों के प्रश्नों के बाद उसमें ज़रा-सा भी साहस नहीं रह जाता था और उत्तर में केवल उसकी आंखों में आंसू भर आते और जलधार बह निकलती। वह ऐसी सारी बातें तुरन्त स्वीकार कर लेता था जो वे उससे मनवाना चाहते थे। अब उसका काम यह था कि पहले पता लगा लेना कि वे क्या चाहते हैं और फिर तुरन्त जो कुछ वे कहें स्वीकार कर लेना और दस्तख़त कर देना, जिससे डांट-फटकार शुरू न होने पाए। उसने यह स्वीकार कर लिया था कि वह कई प्रमुख पार्टी-सदस्यों की हत्याएं कर चुका है। राजद्रोह-सम्बन्धी पर्चे उसने बांटे हैं। उसने सार्वजनिक धनराशि में से ग़बन किया है। सैनिक गुप्त रहस्यों को बेचा है। वह सन् 1968 से ईस्ट एशियाई सरकार से गुप्तचर का काम करने के लिए रुपया पाता रहा है। उसने यह भी मान लिया कि वह धार्मिकता में विश्वास करता है। पूंजीवाद का प्रशंसक है। व्यभिचारी है। उसने यह भी स्वीकार कर लिया कि उसने अपनी पत्नी की हत्या की है। हालांकि वह भी जानता था और उसके प्रश्नकर्ता भी जानते थे कि उसकी पत्नी अब भी ज़िन्दा है। उसने यह भी स्वीकार किया था कि वह वर्षों गोल्टस्टीन के सम्पर्क में रहा है और उसके गुप्तदल का सदस्य है। उसने उन सब आदमियों के भी नाम सदस्यों के रूप में ले दिए थे जिन्हें वह जानता था।

इसके अलावा उसे कुछ और भी बातें याद थीं। पर उनका एक-दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं था। यह याद ठीक इस तरह की थी जैसे कोई चित्र हो जो चमक रहा हो परन्तु उसके चारों ओर का और पास का सारा हिस्सा काला हो।

वह अपने तख़्त से आधा उठ गया क्योंकि उसे लग रहा था कि उसके कानों में ओ'ब्रायन की आवाज़ पड़ी है। ये शब्द उसके कानों में पड़े — "विन्स्टन, चिन्ता मत करो, तुम मेरे पास हो। सात साल से मैं तुम पर

निगाह रखे हूं। अब मौक़ा आ गया है। मैं तुम्हें बचा लूंगा। मैं तुम्हें बिलकुल ठीक कर दूंगा।" उसे यह ध्यान नहीं कि वह ओ'ब्रायन की ही आवाज़ थी। लेकिन उसे इतना ख़याल ज़रूर है कि यह स्वर उससे मिलता-जुलता था, जिसने यह कहा था कि "अब हम ऐसी जगह मिलेंगे जहां अंधेरा नहीं होता होगा। पहले उसकी आंखों के आगे अंधेरा छाया रहा। उसके बाद कोठरी या कमरे का दृश्य स्पष्ट हो गया। वह पीठ के बल लेटा था। ज़रा भी हिल-डुल नहीं सकता था। हर जगह वह बंधा था। उसकी खोपड़ी का पिछला हिस्सा तक बंधा था। ओ'ब्रायन गम्भीरता से उसके चेहरे को देख रहा था। उसके हाथों के नीचे एक डायल था जिसमें अंक लिखे थे। ऊपर एक लिवर था।

"मैंने तुमसे कह दिया था कि यदि हम मिले तो हमारे मिलने की जगह यही होगी।" ओ'ब्रायन ने कहा।

बिना किसी चेतावनी के ओ'ब्रायन का हाथ ज़रा-सा हिला और उसके शरीर में घोर पीड़ा की एक लहर दौड़ गई। भयानक दर्द था। उसके शरीर को तोड़ा जा रहा था। हर जोड़ खींच-खींचकर अलग किया जा रहा था। उसकी रीढ़ की हड्डी निकली जा रही थी। उसने दांत दबा लिए और ज़ोर-ज़ोर से सांस लेने लगा, जिससे वह जितना सम्भव हो चुप रह सके।

लिवर को ओ'ब्रायन ने ढीला छोड़ दिया। पीड़ा की लहर जितनी शीघ्रता से आई थी उतनी ही जल्दी गायब भी हो गई।

"यह चालीस था," ओ'ब्रयान ने कहा, "देख लो, इस डायल पर सो तक नम्बर लिखे हैं। अब यह बात हमेशा याद रखना कि मैं जिस क्षण चाहूंगा उसी क्षण मनचाही मात्रा में कष्ट दे सकूगा। अगर तुम झूठ बोले, या किसी भी कारण तुमने ठीक उत्तर न दिया या तुम्हारे उत्तर तुम्हारे सामान्य बौद्धिक स्तर से नीचे हुए तो समझ लेना तुम एकदम दर्द के मारे चीख़ उठोगे। समझ गए न?"

"हां!' विन्स्टन ने उत्तर दिया।

ओ'ब्रायन की कठोरता कम हो गई। उसने अपना चश्मा कुछ सोचते हुए ठीक कर लिया। एक-दो कदम इधर-उधर टहला। जब वह बोला तो

उसकी आवाज़ में कोमलता थी, धीरज था। वह डॉक्टर, अध्यापक या पादरी सा लग रहा था — जो बात को समझना चाहता है, शारीरिक दंड नहीं देना चाहता।

"तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम्हारी ख़राबी क्या है? तुम बहुत पहले से अपनी कमी जानते रहे हो। तुम पागल हो। तुम्हारी स्मरणशक्ति में दोष है। तुम यथार्थ घटनाओं को याद रखने के बजाय उन बातों को याद रखते हो जो कभी नहीं हुईं। सौभाग्यवश हमारे पास इसका इलाज है। तुम स्वयं इसका इलाज इसलिए नहीं कर सके क्योंकि तुमने स्वयं ऐसा करना पसन्द नहीं किया। तुम्हें अपनी इच्छा-शक्ति काम मे लानी चाहिए थी। परन्तु तुमने ऐसा नहीं किया। उदाहरण के लिए एक प्रश्न मैं तुमसे पूछता हूं। आजकल ओशनियां किससे युद्ध कर रहा है?"

"जब मैं पकड़ा गया था तब ओशनिया की लड़ाई ईस्ट एशिया से चल रही थी।"

"ईस्ट एशिया से! ठीक! और ओशनिया की लड़ाई हमेशा से ईस्ट एशिया से ही रही है। है न?"

विन्स्टन ने सांस ली। वह बोलना चाहता था लेकिन बोल नहीं सका। उसकी आंखें डायल पर थीं। वह उन्हें वहां से हटा नहीं पा रहा था।

"सच बोलना। मुझे वही बतलाओ जो तुम ठीक समझते हो, जो तुम्हें याद हो।"

"ईस्ट एशिया से लड़ाई होने की घोषणा के पहले हमारी उससे दोस्ती थी। युद्ध यूरेशिया के विरुद्ध चल रहा था। वह चार साल चला। इसके पूर्व ईस्ट एशिया के विरुद्ध चल रहा था। वह चार साल चला।"

"दूसरा उदाहरण," उसने कहा, "कुछ साल पूर्व तुम्हें एक और भ्रम हुआ था। तुम समझने लगे थे कि जोन्स, आरोन्सन और रदरफ़ोर्ड, जो पहले पार्टी के सदस्य थे और जो गद्दारी और तोड़-फोड़ के काम करने के लिए अपने बयानों के बाद फांसी पर चढ़ा दिए गए थे, वस्तुतः अपराधी नहीं थे। तुम्हारा ख़याल है कि तुमने ऐसा सबूत देखा था, जो ग़लत नहीं

हो सकता। तुमने एक फोटोग्राफ़ की कल्पना कर ली थी। तुम्हारा ख़याल है कि वह तुम्हारे हाथ में भी रहा है। वह फ़ोटोग्राफ़ ऐसा था।"

ओ'ब्रायन के हाथ में समाचारपत्र की कटिंग थी। उसमें वही फोटो था जो विन्स्टन ने देखा था। कोई पांच सेकेंड वह फ़ोटो को देखता रहा। यह वही फ़ोटो था जो किसी पार्टी समारोह में ग्यारह वर्ष पूर्व न्यूयार्क में लिया गया था। अखबार में छपा था और फिर उस संस्करण की समस्त प्रतियां नष्ट कर दी गई थीं। एक क्षण वह और फ़ोटो देखता रहा। इसके बाद वह फ़ोटो उसकी आंखों के सामने से हटा दिया गया। उसने अपने शरीर के ऊपरी भाग को ऊंचा करने की कोशिश की, किन्तु घोर पीड़ा के अलावा उसके हाथ और कुछ न लगा। किसी भी दिशा में ज़रा भी हिलना सम्भव नहीं था।

"है तो यह!" वह चिल्लाया।

"नहीं।" ओ'ब्रायन ने कहा।

वह कमरे के दूसरी ओर गया। वहां भट्ठीवाला छेद सामने की दीवार में था। ओ'ब्रायन ने उस छेद का मुंह खोला। वह फ़ोटोवाला काग़ज़ उसने भट्ठी में डाल दिया। और वह टुकड़ा गरम हवा के झोंके से बिना किसी के देखे अपने-आप भट्ठी में जलने के लिए उड़ता चला जा रहा था। ओ'ब्रायन लौट आया।

उसने कहा, "वह फोटो नहीं है। कभी नहीं था।"

"लेकिन वह है, वह था। वह स्मृति में है। मेरी स्मृति में। आपकी स्मृति में। आपको याद है।"

"मुझे याद नहीं है।" ओ'ब्रायन ने कहा।

विन्स्टन का दिल डूब गया। वह द्वैध विचार था।

ओ'ब्रायन उसकी ओर कुछ सोचता हुआ देख रहा था। वह ऐसा लग रहा था कि कोई मास्टर है जो शरारती किन्तु प्रतिभाशाली बच्चे को पढ़ा रहा है। "अतीत के नियन्त्रण के सम्बन्ध में पार्टी का नारा है। चाहो तो उसे दोहरा दो," ओ'ब्रायन ने कहा।

"पार्टी यथार्थ का नियन्त्रण करती है, वही भविष्य को भी नियन्त्रित करती है। जो वर्तमान को नियन्त्रित कर सकता है वह अतीत को भी अपने नियन्त्रण में रख सकता है।" विन्स्टन ने आज्ञाकारी की भांति नारे को दोहरा दिया।

"जो वर्तमान को नियन्त्रित कर सकता है, वह अतीत को भी नियन्त्रित कर सकता है।" बात का समर्थन करते हुए ओ'ब्रायन ने सिर हिलाया। "क्या विन्स्टन, तुम्हारा यह भी मत है कि अतीत का कोई यथार्थ अस्तित्व है?"

विन्स्टन फिर अपनी घोर असहाय स्थिति अनुभव करने लगा। उसकी आंखें डायल की ओर चली गईं। वह नहीं जानता था कि हां या ना कौन-सी बात कहने से वह डायल से बच सकता है। वह यह नहीं जानता था कि कौन-सा उत्तर ठीक है।

ओ'ब्रायन थोड़ा-सा हंस दिया। "तुम अध्यात्मवादी नहीं हो, विन्स्टन," उसने कहा, "मैं प्रश्न और भी स्पष्ट ढंग से पूछता हूं। क्या अतीत यहां या कहीं भी था और वह अब भी घट रहा है?"

"नहीं।"

"तो अतीत कहां है, यदि है तो?"

"रिकॉर्डों में — लिखा हुआ।"

"रिकॉर्डों में — और...?"

"दिमाग़ में। मानवीय स्मृति में।"

"स्मृति में। ठीक। तो पार्टी सारे रिकॉर्डों को नियन्त्रित करती है और हम स्मृति को अपनी मुट्ठी में रखते हैं। ऐसी दशा में अतीत हमारी मुट्ठी में हुआ या नहीं?"

लेकिन आप अन्य लोगों को याद रखने से कैसे रोक सकते हैं?" विन्स्टन ने चीखकर कहा। वह क्षण-भर के लिए डायल भूल गया। "अतीत की बातें तो अपने आप याद रहती हैं। वह आदमी के बस के बाहर है।

स्मृति-शक्ति आप कैसे नियन्त्रित करेंगे? आप मेरी स्मृति कहां नियन्त्रित कर पाए हैं?"

ओ'ब्रायन का चेहरा कठोर हो गया। उसने अपना हाथ डायल पर से लिवर पर रखा।

"उल्टी बात है," उसने कहा, "तुमने स्वयं अपनी स्मृति को अपने नियन्त्रण में नहीं रखा है। इसलिए तुमको यहां आना पड़ा है। तुम यहां क्यों लाए गए? इसलिए कि तुमने आत्म-नियन्त्रण नहीं किया। तुम समझते हो यथार्थता कोई भौतिक, बाहरी और ठोस चीज़ है। परन्तु विन्स्टन, यथार्थता केवल मानव-मस्तिष्क में रह सकती है। अन्यत्र कहीं भी नहीं। सो भी व्यक्ति के मस्तिष्क में नहीं, जो कि ग़लती कर सकता है, बल्टि पार्टी के मस्तिष्क में। पार्टी का मस्तिष्क सामूहिक है, अनश्वर है। यथार्थता को केवल पार्टी की दृष्टि से ही देखा जा सकता है। अन्यथा उसका देखना असम्भव है। यह तथ्य है जिसे तुम्हें सीखना पड़ेगा।"

वह कुछ सेकेंडों के लिए चुप हो गया। ओ'ब्रायन चाहता था कि उसने जो कुछ कहा है, उसे विन्स्टन आत्मसात कर ले।

तुम्हें याद है, विन्स्टन," ओ ब्रायन ने कहा, "तुमने डायरी में लिखा था कि दो और दो चार होते हैं — यह कहने का हक ही स्वतन्त्रता है?"

"हां।" विन्स्टन ने कहा।

ओ'ब्रायन ने अपना बायां हाथ ऊपर उठाया। हाथ का पिछला हिस्सा विन्स्टन की ओर था। अंगूठा दबा था और चारों अंगुलियां ऊपर की तरफ़ खुली थीं।

"मेरी कितनी अंगुलियां खड़ी है?" ओ'ब्रायन ने पूछा।

"चार।"

"और यदि पार्टी कहती है कि चार नहीं पांच हैं तो ये कितनी अंगुलियां हैं?"

"चार।"

उसका शब्द समाप्त होते-न होते उसके मुंह से दर्द भरी चीख़ निकल गई। डायल की सुई पचपन पर पहुंच गई थी। विन्स्टन का सारा शरीर पसीने-पसीने हो गया था। सांस के साथ वह कराह रहा था। दांतों को भींचकर भी उसकी कराहट नहीं रुक पा रही थी। भारी कठोर चेहरा और चार अंगुलियां ही उसे दिखलाई पड़ रही थीं। उसकी आंखों के आगे अंगुलियां खम्भों की तरह नाच रही थीं। वे बहुत बड़ी लग रही थीं, अस्पष्ट-सी, कुछ घूम रही थीं, लेकिन थीं चार ही।

"कितनी अंगुलियां हैं विन्स्टन?"-

"चार। रोको। इसे रोको। इतना कैसे कस सकते हो।"

"कितनी अंगुलियां हैं?"

"पांच। पांच। पांच।"

"नहीं, कोई फायदा नहीं विन्स्टन। तुम झूठ बोल रहे हो। तुम अब भी विश्वास नहीं करते कि ये पांच अंगुलियां हैं। कितनी अंगुलियां हैं?"

"चार। पांच। चार। जो आप चाहें। इसे रोको। दर्द रोको।"

अचानक उसने देखा कि वह ओ'ब्रायन के कन्धों के सहारे उठकर बैठा है। शायद कुछ सेकेंडों के लिए वह बेहोश हो गया था। जिन पट्टियों से वह बंधा था. वे भी ढीली कर दी गई थी। उसका सारा शरीर ठंडा था। परन्तु वह बुरी तरह कांप रहा था। उसके दांत बज रहे थे। आंसू गालों पर बह रहे थे। कुछ क्षण के लिए वह बच्चों की तरह ओ'ब्रायन से चिपक गया। हंसने की बात थी। ओ'ब्रायन भी उसे थपथपा रहा था। उसको यह लग रहा था कि ओ ब्रायन ही उसका रक्षक है। दर्द कहीं बाहर से मिला था। उसका कारण ओ'ब्रायन नहीं था। ओ'ब्रायन उसे बचा रहा था।

"तुम बहुत धीरे-धीरे सीखते हो,' ओ'ब्रायन ने जरा कोमलता से कहा।

"मैं क्या करूं तो?" वह बड़बड़ाया, "मैं जब अपने सामने दो और दो चार देख रहा हूं तो पांच कैसे कह दूं?"

"कभी-कभी विन्स्टन। कभी-कभी वे पांच होते हैं। और कभी-कभी तीन। कभी-कभी वे तीन, चार, पांच एक साथ होते हैं। तुम्हें और प्रयत्न करना होगा।"

विन्स्टन को उसने फिर लिटा दिया। उसके हाथ-पैर फिर शिकंजे में कसे गए। लेकिन दर्द नहीं था। कांपना भी रुक गया था। वह कमजोरी अनुभव कर रहा था। उसका सारा शरीर अभी भी ठंडा पड़ा था। ओ'ब्रायन ने सफ़ेद कोटवाले आदमी को इशारा किया। वह उस सारे कांड को निश्चल खड़ा हो देख रहा था। वह नीचे झुक गया। उसने समीप आकर विन्स्टन की आंखों को देखा। नाड़ी देखी। उसकी छाती में अपने कान लगाए। इधर-उधर अंगुलियों से बजाकर देखा। फिर ओ'ब्रायन की ओर देखकर सिर हिला दिया।

"फिर," ओ'ब्रायन ने कहा।

विन्स्टन के सारे शरीर में फिर पीड़ा की लहर दौड़ गई। सुई अवश्य ही सत्तर या पचहत्तर पर होगी। इस बार उसने अपनी आंखें बन्द कर ली थीं। अब उसे तब तक किसी तरह जीवित ही रहना था जब तक दर्द का यह दौर बीत न जाए। अब उसने इसकी भी फ़िक्र छोड़ दी कि वह चीख रहा है या नहीं। दर्द फिर गायब हो गया। लिवर ढीला कर दिया गया था। उसने आंखें खोल लीं।

"कितनी अंगुलियां हैं विन्स्टन?"

"चार। मैं पांच देखने की कोशिश करूंगा।"

"तुम मुझे विश्वास दिला रहे हो या स्वयं पांच देखने की कोशिश करोगे?"

"मैं स्वयं पांच देखने की कोशिश करूंगा।"

"फिर।"

इस बार सुई फिर अस्सी या शायद नब्बे तक चली गई थी। विन्स्टन को कभी-कभी याद आ जाता था कि दर्द क्यों हो रहा है। अंगुलियों का

जंगल उसके सामने नाच रहा था। असंख्य अंगुलियां, पेड़ों की भांति उसकी आंखों के सामने आ-जा रही थीं। उसने फिर आंखें बन्द कर ली।

"कितनी अंगुलियां हैं विन्स्टन?"

"मैं नहीं जानता। लेकिन यदि तुमने फिर कसा तो अबकी बार मैं मर ही जाऊंगा।"

"बेहतर।"

विन्स्टन की बांह में इंजेक्शन घुस गया। उसी समय विन्स्टन के सारे शरीर में विश्रामदायक उष्णता की लहर दौड़ गई। आधा दर्द जा चुका था। उसने आंखें खोली और ओ'ब्रायन की ओर कृतज्ञता से देखा।

"तुम जानते हो, विन्स्टन, इस समय कहां हो?"

"शायद प्रेम मन्त्रालय में। यह मेरा अनुमान है।"

"यहां हम क्यों लाते हैं लोगों को?"

"उनसे उनके अपराध स्वीकार कराने को।"

"नहीं, यह कारण नहीं है। और सोचो।"

"उनको सज़ा देने के लिए।"

"नहीं!" ओ'ब्रायन असाधारण रूप से चिल्ला पड़ा। उसका चेहरा क्रोध से लाल और कठोर हो गया। नहीं, केवल अपराध कुबूल करवाने और सज़ा देने के लिए नहीं। मैं बतलाऊं कि हम तुम्हें यहां क्यों लाए हैं। तुम्हारा इलाज करने। तुम्हें स्वस्थ बनाने। क्या तुम जानते हो, विन्स्टन, यहां जो आता है, वह हमारे हाथ से बिना अच्छा हुए कभी नहीं जाता? हम अपने दुश्मनों को नष्ट नहीं करते, हम उन्हें बदल देते हैं।"

ओ'ब्रायन मुड़ गया। एक या दो कदम आगे गया। इसके बाद जब वह फिर बोला तो ऐसा लगा कि ओ'ब्रायन का क्रोध काफ़ी कम हो गया है :

"सबसे पहली बात तो तुम यह समझ लो कि यहां कोई शहीद नहीं होता। तुमने शायद वे किस्से पढ़े होंगे जिनमें पादरी लोगों को यन्त्रणा

देते थे। यन्त्रणा का यह ढंग मध्ययुग में था। वह सफल नहीं हुआ। एक नास्तिक जलाया गया परन्तु उसकी जगह हज़ारों पैदा हो गए। क्यों? ऐसा क्यों हुआ? उसका कारण यह था कि पादरियों का न्यायालय खुले में विरोधियों को मारता था। उन्हें उस समय मारता था जब वे लोग अपने कर्मों पर पश्चात्ताप तक करने को तैयार नहीं होते थे। लोग अपने विश्वास का परित्याग नहीं करते थे और मर जाते थे। नतीजा यह होता था, जो मरता वह शहीद हो जाता था, और लोग पादरियों को धिक्कारते थे। बीसवीं शताब्दी में तानाशाह हुए। जर्मन नाजियों और रूसी साम्यवादियों का नाम लिया जा सकता है। रूसियों ने साम्यवाद-विरोधियों को मध्ययुग के पादरियों से कहीं अधिक निर्दयता से दबाया। वे यह जान गए थे कि लोगों को शहीद नहीं बनने दिया जाए। जिनको वे पकड़ते थे और जिन पर मुक़दमा चलाते थे, उनको सार्वजनिक रूप से लांछित और अपमानित पहले कर देते थे। वे उनको अकेले में तब तक बन्द रखते और तब तक यन्त्रणाएं देते थे जब तक वे रो-रोकर अपने सारे अपराध स्वीकार नहीं कर लेते थे, दया की भीख मांगने नहीं लगते थे। कुछ समय बाद फिर वही बात होती थी। मृत व्यक्ति शहीद माने जाते थे और उनके अपमान को भुला दिया जाता था। फिर सवाल उठता है — ऐसा क्यों होता था? इसका पहला कारण यह था कि जो अपराध वे स्वीकार करते थे, वे ज़बरदस्ती कराते थे और वे स्वीकारोक्तियां असत्य होती थीं। हम ऐसी कोई ग़लती नहीं करते। हम उन स्वीकारोक्तियों को सच्चा बना देते हैं। हम मृतकों को अपने ख़िलाफ़ कभी नहीं खड़ा होने देते। तुम यह कभी मत सोचना कि भावी पीढ़ी तुम्हारे दृष्टिकोण का समर्थन करेगी। भावी सन्तति तुम्हारा नाम तक नहीं जानेगी। तुम्हारा किसी रजिस्टर में नाम तक नहीं होगा और किसी जीवित व्यक्ति के दिमाग़ तक में तुम नहीं रहोगे। तुम अतीत और भविष्य दोनों में समाप्त कर दिए जाओगे। सब रिकॉर्ड इस तरह संशोधित कर दिए जाएंगे जैसे लगे कि तुम थे ही नहीं।"

"तो फिर मुझे ये कष्ट और यातना क्यों दी जा रही है?"

ओ'ब्रायन ज़रा-सा मुस्कुरा दिया। "विन्स्टन, तुम सफ़ेद चादर पर दाग़ की तरह हो। और इस दाग़ को हमें मिटाना ही पड़ेगा। क्या मैंने तुम्हें

यह नहीं बतलाया कि हम अतीत के यन्त्रणादाताओं से भिन्न हैं? जब तक कोई हमारा प्रतिरोध करता रहता है, तब तक हम उसे कभी नहीं मारते। हम उसको अपने मत का बना लेते हैं। हम उसके अन्तःकरण पर कब्ज़ा करते हैं। हम उसके मस्तिष्क को अपने अनकल बना देते हैं। हम उसकी सारी दुष्टता जला देते हैं। हम उसे अपने पक्ष में मिला लेते हैं, दिखावटी तौर पर नहीं बल्कि भीतर से। सचमुच वह व्यक्ति हमारी तरफ़ हो जाता है। जब वह हमारा- एक अंग बन जाता है, तब हम उसे मार डालते हैं। हमें यह सह्य नहीं है कि संसार में कहीं भी ग़लत विचार हों। चाहे वे विचार कितने ही गुप्त या शक्तिहीन क्यों न हों। प्राचीन समय में नास्तिक नास्तिकता का जप करते ही करते मर जाता था। रूसी लोग जब विरोधियों की सफाई करते थे तब भी उनके दिमाग़ में राजद्रोह और विद्रोह के विचार बन्द होते थे। हम दिमाग़ को बिलकुल ठीक बनाकर आदमी को मारते हैं।"

ओ'ब्रायन इस तरह बोल रहा था जैसे सपने में कोई बोल रहा हो। विन्स्टन सोच रहा था कि वह मक्कारी नहीं कर रहा है। ओ'ब्रायन पाखंडी नहीं है। वह जो कुछ कह रहा है उसके. हर शब्द में उसका विश्वास है। परन्तु वह स्वयं अपनी मानसिक और बौद्धिक हीनता से दबा जा रहा था। ओ'ब्रायन हमेशा उससे बड़ा था। ऐसा कोई विचार न था जो ओ'ब्रायन के दिमाग़ में बहुत पहले ही न आ चुका हो और उसकी भली- भांति उसने परीक्षा न कर ली हो और फिर उसे उसने अस्वीकार न कर दिया हो। लेकिन वह किस प्रकार सिद्ध कर सकता था कि ओ'ब्रायन पागल है? अवश्य ही विन्स्टन पागल रहा होगा।

"यह मत सोचना कि तुम पूर्ण आत्म-समर्पण के बाद आत्मरक्षा में सफल हो जाओगे। यहां जो कुछ होगा वह हमेशा के लिए होगा। यह बात पहले ही भली-भांति समझ लो। हम तुम्हें इतना कुचल देंगे कि फिर तुम कभी उठ ही नहीं सकोगे। चाहे तुम हज़ार बरस क्यों न जियो। सामान्य मानवीय भावनाएं तुममें कभी नहीं उत्पन्न हो सकेंगी। तुम्हारे अन्दर की हर चीज़ मर चुकेगी। तुम न तो प्रेम कर सकोगे, न हंस सकोगे, न तुममें जिज्ञासा होगी, न साहस और न ईमानदारी ही। तुम एकदम रिक्त

रहोगे। हम तुम्हें निचोड़कर एकदम रिक्त -कर देंगे। इसके बाद हम तुममें अपनी भावनाएं भर देंगे।"

वह रुका और उसने सफ़ेद कोटवाले व्यक्ति को इशारा किया। विन्स्टन ने अनुभव किया कि उसके सिर के नीचे कोई भारी यन्त्र खिसका दिया गया। ओ'ब्रायन विन्स्टन के बग़ल में बैठ गया। अब उसका चेहरा विन्स्टन के चेहरे के बराबर था।

"तीन हज़ार।" ओ'ब्रायन ने सफ़ेद कोटवाले आदमी से कहा।

दो कोमल पैड उसकी कनपटियों से चिपक गए। वह चिल्ला पड़ा। अब एक नई तरह का दर्द हो रहा था। ओ'ब्रायन ने आश्वस्त करते हुए एक हाथ दिखलाया।

"इस बार तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा," ओ'ब्रायन ने कहा, "तुम अपनी आंखों से मेरी आंखों में देखो।"

उसी समय बड़े ज़ोरों का धमाका हुआ। या उसे लगा कि विस्फोट-सा हुआ है। लेकिन कोई लपट-सी अवश्य चमकी जिससे उसकी आंखें चौंधिया गईं। वह पहले ही पीठ के बल लेटा था, लेकिन उसे लगा कि वह धमाके के बाद और सीधा हो गया है। परन्तु दर्द नहीं हुआ। उसके दिमाग़ में अभी अन्दर कुछ हो गया था। जब पुनः वह देख सका तो उसे अनुभव हुआ कि वह कहां है और वह उस चेहरे को भी पहचान गया जो उसे घूर रहा था। परन्तु उसके दिमाग़ में एक अजीब प्रकार की रिक्तता थी। ऐसा लगता था कि उसके दिमाग़ से कुछ निकाल लिया गया है।

"यह असर देर तक नहीं रहेगा," ओ'ब्रायन ने कहा, "मुझे देखो। ओशनिया किस देश से लड़ रहा है?"

विन्स्टन जानता था कि ओशनिया से क्या मतलब है। वह स्वयं ओशनिया का नागरिक था। वह ईस्ट एशिया और यूरेशिया के नाम भी जानता था। परन्तु उसे यह याद नहीं था कि कौन किससे युद्ध कर रहा है। सच तो यह है कि उसे युद्ध के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था।

"मुझे याद नहीं।"

"ओशनिया का ईस्ट एशिया से युद्ध चल रहा है। यह रहेगा न?"

"हां"

"ओशनिया की हमेशा से ईस्ट ऐशिया से लड़ाई रही है। जब से तुम पैदा हुए, जब से पार्टी बनी, जब से इतिहास आरम्भ हुआ, तब से अब तक बराबर लड़ाई होती रही है। वह कभी रुकी नहीं। यह याद है तुम्हें?"

"हां"

"ग्यारह वर्ष पूर्व तुमने तीन राजद्रोहियों के बारे में यह कहानी गढ़ी थी कि वे निर्दोष हैं। गद्दार नहीं हैं। तुम्हारा ख़याल था कि तुमने ऐसा काग़ज़ देखा है जिसमें उनकी निर्दोषिता प्रमाणित हो जाती है। ऐसा काग़ज़ या चित्र कभी नहीं था। यह तुम्हारी मनगढन्त बात थी। याद है तुम्हें?"

"हां।"

"अभी मैंने अपने बाएं हाथ की अंगुलियां उठाई थीं। वे पांच थीं। याद हैं?"

"हां।"

ओ'ब्रायन ने फिर हाथ उठा दिया। अंगूठा दबा रहा।

"ये पांच अंगुलियां हैं। क्या तुम्हें पांच अंगुलियां दिखलाई पड़ रही हैं?

"हां।"

और उसे पांच अंगुलियां दिखलाई पड़ रही थीं। उनमें कोई विकृति नहीं थी। इसके बाद फिर हर चीज़ पहले जैसी हो गई। पुराना भय, घृणा, परेशानी, कोध सब-कुछ वापस लौट आया। परन्तु तीस सेकेंड के लिए उसे पांच अंगुलियां दिखलाई दी थीं। दो और दो पांच दिखलाई पड़े थे। ओ'ब्रायन के कथन से दिमाग़ का जो हिस्सा धमाके की वजह से गायब हुआ था वह भर गया था।

"अब तो तुमने देख लिया कि यह बात भी सम्भव है कि पांच अंगुलियां दिखलाई पड़ें?" ओ'ब्रायन ने कहा।

"हां।" विन्स्टन ने कहा।

ओ'ब्रायन के चेहरे पर सन्तोष था। पुराने ढंग से उसने अपना चश्मा फिर नाक पर रख लिया।

"तुम्हें याद है कि तुम डायरी लिखते थे," उसने कहा, "उसमें तुमने लिखा था कि मैं तुम्हारा दोस्त हूं या दुश्मन इससे कोई मतलब नहीं, लेकिन ऐसा आदमी अवश्य हूं जिससे बात की जा सकती है। आज की भेंट समाप्त होने से पूर्व यदि तुम कोई प्रश्न पूछना चाहो तो पूछ सकते हो।"

"कोई भी प्रश्न पूछ सकता हूं?"

"कोई भी।" ओ'ब्रायन ने देखा कि विन्स्टन की निगाहें डायल पर हैं। "डायल का स्विच ऑफ़ कर दिया गया है। वह काम नहीं करेगा, तुम्हारा पहला प्रश्न क्या है?"

"आपने जूलिया का क्या किया?" विन्स्टन ने पूछा। ओ'ब्रायन मुस्कुरा दिया। फिर बोला, "उसने तुम्हें धोखा दिया है, विन्स्टन। पकड़े जाने के बाद तुरन्त, बिना कुछ भी छिपाए हर बात उसने कह दी। मैंने ऐसे लोग बहुत कम देखे हैं जो इतनी जल्दी हमारे काबू में आ जाएं। यदि वह तुम्हारे सामने आ जाए तो शायद ही तुम उसे पहचान सकोगे। उसका सारा विद्रोह, उसका अभिमान, उसकी बेवकूफ़ियां और उसके गन्दे विचार सब-कुछ जला दिए गए। उसका मत परिवर्तन पूर्ण था, बिलकुल पाठ्य पुस्तक के उदाहरण लायक।"

"तुमने उसे यन्त्रणा दी होगी?"

ओ'ब्रायन ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। बोला, "अगला प्रश्न?"

"क्या बड़े भाई सचमुच हैं?"

"बेशक। पार्टी है, बड़े भाई हैं, वे तो पार्टी के प्रतीक हैं।"

"क्या वे उसी तरह हैं जिस प्रकार मैं हूं?"

"अब तुम नहीं हो।" ओ'ब्रायन ने कहा।

विन्स्टन ने क्लान्त भाव से कहा, "मैं पैदा हुआ था। मैं मरूंगा। मेरे हाथ और पैर हैं। मैं संसार में थोड़ी-सी जगह घेरे हूं। कोई भी ठोस पदार्थ

मेरे साथ उसी जगह में नहीं रखा जा सकता। क्या इन अर्थों में बड़े भाई का अस्तित्व है?"

"तुम्हारी बात का कोई महत्त्व नहीं है। बड़े भाई हैं।"

"क्या बड़े भाई की कभी मृत्यु होगी?"

"कभी नहीं। वे कैसे मर सकते हैं? अगला सवाल?"

"क्या ब्रदरहुड है?"

"यह विन्स्टन, तुम कभी नहीं जान सकोगे। अगर हम तुम्हें छोड़ भी दें और तुम नब्बे वर्ष की आयु तक भी जिओ, तो भी तुम्हें पता नहीं लग सकेगा। जब तक तुम ज़िन्दा रहोगे, यह पहेली अनबूझी ही रह जाएगी।"

विन्स्टन चुपचाप पड़ा रहा। उसकी छाती तेजी से ऊपर-नीचे होने लगी। उसके दिमाग़ में सबसे पहले जो सवाल आया था, उसे वह अभी तक पूछ नहीं पाया था। उसे पूछना ही था और फिर वह सवाल ज़बान पर नहीं आ रहा था। ओ'ब्रायन के चेहरे पर मनोरंजन का भाव था। उसके चश्मे की चमक तक में व्यंग्य था। शायद उसे, ओ'ब्रायन को, मालूम है कि वह क्या पूछने जा रहा है। इस विचार के आते ही उसके मुंह से शब्द निकल पड़े।

"कमरा नम्बर 101 क्या है?"

ओ'ब्रायन के चेहरे का भाव नहीं बदला। उसने शुष्क कंठ से उत्तर दिया :

"तुम जानते हो वह क्या है। हर आदमी जानता है कमरा नम्बर 101 क्या है।"

उसने सफ़ेद कोटवाले आदमी को उंगली दिखलाई। स्पष्ट था कि भेंट समाप्त हो गई थी। विन्स्टन की बांह में इंजेक्शन घुस गया। उसी क्षण वह गहरी निद्रा में खो गया।

"**असली** पार्टी-सदस्य बनने की तीन अवस्थाएं हैं — सीखना, समझना और स्वीकार करना। अब तुम दूसरी अवस्था में प्रवेश कर रहे हो।"

हमेशा की तरह विन्स्टन पीठ के बल सीधा लेटा था। परन्तु इधर कछ दिनों से उसकी पट्टियां खली रहने लगी थीं। वह बिस्तर पर अब भी बंधा था, लेकिन वह अपना घुटना या सिर थोड़ा-सा इधर-उधर घुमा सकता था। थोड़ा-सा हाथ भी उठा सकता था। डायल का डर भी घट गया था। यदि वह बुद्धि प्रयोग कर लेता था तो दर्द के दौरों से बच जाता था। बेवकूफ़ी करने पर ही ओ'ब्रायन डायल का लिवर दबाता था। कभी-कभी पूरी मुलाकात-भर में डायल की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। उसे याद नहीं कितनी ऐसी भेंटें हुईं। ऐसा लगता था कि जब एक बार क्रम शुरू हो जाता तो वह हफ़्तों चलता था। कभी कुछ घंटों या दो-एक दिन का मध्यान्तर भी पड़ जाता था।

ओ'ब्रायन कह रहा था, "इस बिस्तर पर पड़े-पड़े अक्सर तुम सोचते हो कि प्रेम मन्त्रालय तुम पर इतना समय और धन क्यों खर्च कर रहा है, जबकि वह जानता है कि तुमसे उसे कोई लाभ नहीं होना है। जब तुम स्वतन्त्र थे तब भी क़रीब-क़रीब ऐसा ही प्रश्न अपने-आप से पूछ-पूछकर हैरान होते थे।

"तुम वर्तमान सामाजिक व्यवस्था तो समझ गए थे, लेकिन तुम्हारी समझ में यह नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों है। तुम्हें याद है, तुमने अपनी डायरी में लिखा है — मैं यह तो जानता हूं कैसे, लेकिन, क्यों, यह नहीं? — जब तुमने क्यों लिखा बस तभी तुमने अपने पागलपन का प्रमाण दिया। तुमने गोल्डस्टीन की किताब पढ़ ली है। या कम-से-कम उसके कुछ भाग तो अवश्य ही पढ़ लिए हैं। क्या उनमें ऐसी कोई भी बात है जो तुम नहीं जानते?"

"तुमने भी उसे पढ़ा है?" विन्स्टन ने पूछा।

"मैंने उसे लिखा है। मेरा मतलब है कि मैने उसके लिखने में सहयोग दिया है। कोई भी पुस्तक व्यक्तिगत रूप से नहीं लिखी जा सकती, यह तो तुम जानते ही हो।"

"क्या उसमें जो कुछ लिखा है, वह सच है?" विन्स्टन ने पूछा।

"जहां तक वर्णनात्मक अंश का सम्बन्ध है, ठीक है। लेकिन उसमें जो कार्यक्रम रखा गया है, वह वाहियात है। ज्ञान का गुप्त संचय, ज्ञान का धीरे-धीरे विस्तार, अन्ततः मज़दूरवर्ग की क्रान्ति और पार्टी की सत्ता को उलट देना — ये सब बेकार की बातें हैं। यह तो तुमने कल्पना कर ही ली होगी कि उस किताब में क्या कार्यक्रम होगा। वह सारा कार्यक्रम वाहियात है। मज़दूर कभी विद्रोह नहीं करेंगे। हज़ार या लाख साल बाद भी नहीं। वे विद्रोह कर ही नहीं सकते। मुझे कारण बताने की ज़रूरत नहीं। तुम जानते हो। तुमने यदि कभी सशस्त्र विद्रोह के सपने देखे हों तो अब उनको छोड़ दो। पार्टी को सत्ता से हटाने का कोई उपाय नहीं है। पार्टी का शासन अमर है। इस विचार को मूलतत्त्व मानकर आगे सोचो।"

वह उसके बिस्तर के और नज़दीक आ गया। फिर बोला, "अमर है पार्टी, अमर है। यह तो तुम्हें ज्ञात ही हो गया कि पार्टी अपनी सत्ता को किस प्रकार बनाए रखती है। अब बतलाओ कि हम सत्ता को क्यों अपनाए हैं। हमारा क्या उद्देश्य है? हम ताक़त क्यों चाहते हैं? बोलो।"

विन्स्टन चुप था।

वह जानता था कि ओ'ब्रायन क्या कहेगा। वह कहेगा, पार्टी, ताक़त अपने लिए नहीं बल्कि बहुसंख्यकों के हित के लिए चाहती है। वह ताक़त इसलिए चाहती है कि जनता के सदस्य कमज़ोर हैं। जो कमजोर हैं, कायर हैं, जो स्वतन्त्रता की रक्षा नहीं कर सकते, सत्य को देख नहीं सकते, वे शासित होने चाहिए। ऐसे लोगों के शासन की समुचित व्यवस्था उन लोगों द्वारा होनी ही चाहिए जो उनसे अधिक बलवान हैं। आदमी के सामने दो लक्ष्य हैं — स्वतन्त्रता और सुख। अधिकांश व्यक्तियों के लिए स्वतन्त्रता नहीं सुख ज़रूरी है। पार्टी सशक्तों के लिए है। उसके सदस्य अपने सुख को बलिदान करते हैं जिनसे अन्य लोगों को सुख मिले। वे शासन-कार्य करते हैं जिससे अन्य लोगों का भला हो। अचानक उसके दिमाग़ में आया कि जब ओ'ब्रायन ये बातें कहेगा तो विन्स्टन उन पर विश्वास करने लगेगा।

"हमारे लाभ के लिए ही आप हम पर शासन कर रहे हैं।" उसने क्षीण स्वर में कहा, "आप समझते हैं कि हम अपना शासन स्वयं नहीं कर सकते और इसलिए..."

दर्द के मारे विन्स्टन की चीख निकल गई। आरम्भ करते ही ओ'ब्रायन ने डायल का लिवर दबा दिया। सुई पैंतीस तक गई होगी।

"बिलकुल बेवक़ूफ़ों का-सा उत्तर दिया, विन्स्टन तुमने, बिलकुल बेवक़ूफ़ों-सा। तुम जैसे आदमी को इस प्रश्न का उत्तर देने की भाषा आनी चाहिए।"

उसने लीवर छोड़ दिया और कहा :

"अब मैं तुम्हें बतलाता हूं कि इस प्रश्न का उत्तर किस प्रकार दिया जाना चाहिए। उत्तर यह है। पार्टी अपने लिए सारी ताक़त चाहती है। हम दूसरों की भलाई में कोई दिलचस्पी नहीं रखते। हमें सत्ता अपने लिए चाहिए। हमें धन, विलासिता, दीर्घ जीवन या सुख कुछ भी नहीं चाहिए। हमें सत्ता, शक्ति, विशुद्ध शक्ति चाहिए। हम अन्य शासक-वर्गों से इन अर्थों में भिन्न हैं कि हम जानते हैं कि हम क्या कर रहे हैं। और सब वर्ग, वे भी जो हम जैसे लगते हैं, हमसे भिन्न हैं। हमारा विचार है कि वे सब कायर और पाखंडी थे। जर्मन नाज़ी और रूसी कम्यूनिस्टों के हथकंडे हमसे अवश्य मिलते-जुलते थे लेकिन उनमें अपने लक्ष्य को पहचानने का साहस नहीं था। वे यह दिखलाते थे और शायद विश्वास भी करते थे कि उन्होंने केवल कुछ समय के लिए ही ताक़त अपने हाथ में ली है। वह भी अनिच्छा से। ज़रा आगे चलकर एक मोड़ के बाद कोने में स्वर्ग छिपा है, वहां पहुंचकर हर आदमी बराबरी का अधिकार पा सकेगा। हर आदमी स्वतन्त्र होगा। हम इन लोगों की तरह नहीं हैं। हम जानते हैं कि कोई कभी सत्ता को इस दृष्टि से नहीं हथियाता कि कुछ समय बाद वह उसे छोड़ देगा। सत्ता और शक्ति साधन नहीं हैं, साध्य हैं। क्रान्ति की रक्षा के लिए तानाशाही ज़रूरी साधन नहीं है। दमन का उद्देश्य दमन है और यन्त्रणा का उद्देश्य यन्त्रणा है। क्या अब तुम्हारी समझ में मेरी बात आ गई?"

विन्स्टन ओ'ब्रायन के चेहरे की क्लान्ति देखकर स्तब्ध रह गया। वह पहले भी इतना थका चेहरा देख चुका था। ओ'ब्रायन उसके ऊपर झुक गया। अपने चहेरे को विन्स्टन के चेहरे के और नज़दीक ले आया और कहने लगा :

"तुम सोच रहे हो, मेरा चेहरा क्लान्त है। उससे वृद्धता प्रकट होती है। तुम सोच रहे हो, मैं सत्ता की बात करता हूं, लेकिन अपने शरीर को जर्जर होने से नहीं रोक पाता। क्या तुम यह नहीं समझते विन्स्टन, कि आदमी समाज का एक अंग है। क्या नाखून काटने से तुम मर जाते हो?"

वह बिस्तर से हट गया और जेब में हाथ डालकर इधर-उधर टहलने लगा।

"हम सत्ता के पुरोहित हैं," ओ'ब्रायन कह रहा था, "सत्ता या शक्ति का अर्थ भली-भांति समझ लेना आवश्यक है। पहली बात तो यह है कि शक्ति सामूहिक चीज़ है। पार्टी का यह नारा तो तुम जानते ही हो कि दासता ही स्वतन्त्रता है। तुमने कभी यह भी सोचा है कि इसका उल्टा भी अर्थ हो सकता है। स्वतन्त्रता दासता है। अकेला आदमी, स्वतन्त्र आदमी, हमेशा हरा दिया जाता है। पराजय अनिवार्य है क्योंकि हर आदमी की मृत्यु अनिवार्य है जो स्वयं आदमी की सबसे बड़ी हार है। लेकिन यदि वह साहस करके अपना व्यक्तित्व पार्टी में लय कर दे तो वह भी अमर हो जाएगा। पार्टी तो अनश्वर रहेगी ही। दूसरी बात यह है कि शक्ति का अर्थ है दूसरे व्यक्तियों पर प्रभाव होना। शरीर पर ही नहीं, बल्कि उनके मस्तिष्कों पर भी पूरा क़ाबू होना।" ओ'ब्रायन फिर थोड़ा-सा मुस्कुराया और बोला :

"यथार्थ शक्ति, जिसको प्राप्त करने के लिए हम दिन-रात सतत प्रयत्न कर रहे हैं, वह भौतिक पदार्थों के स्वामित्व को प्राप्त करने की शक्ति नहीं है। अपितु वह शक्ति ऐसी है जिससे हम लोगों को मुट्ठी में रख सकें।" वह एक क्षण के लिए रुक गया और इस प्रकार प्रश्न पूछने लगा जैसे कोई अध्यापक किसी प्रतिभाशाली शिक्षार्थी से पूछता है : "एक आदमी दूसरे पर अपनी शक्ति का प्रयोग किस प्रकार करता है, विन्स्टन?"

विन्स्टन ने सोचा। इसके बाद बोला, "उसे कष्ट देकर।"

"बिलकुल ठीक। दूसरे को कष्ट देकर आदमी अपनी शक्ति दूसरे पर प्रदर्शित करता है। आज्ञाकारिता ही पर्याप्त नहीं है। जब तक वह कष्ट न पाए, तब तक तुम्हें कैसे पता लगेगा कि वह तुम्हारी बात मान रहा है या अपनी? शक्ति है — कष्ट पहुंचाना और अपमानित करना। शक्ति है — आदमी के दिमाग़ को चीरफाड़ देना और फिर दिमाग़ के उन टुकड़ों को अपने ढंग से सजा लेना। तो अब तुम यह अनुभव कर रहे हो न कि हम किस प्रकार की दुनिया बना रहे हैं? यह दुनिया पहले से सुखवादी विचारकों की कल्पना से बिलकुल उल्टी है, यह दुनिया है डर की, धोखे की और गद्दारी की, यन्त्रणा की, दमन की और दलितों की। ज्यों-ज्यों यह बढ़ती जाएगी त्यों-त्यों हमारी दुनिया और भी क्रूर होती जाएगी। पुरानी सभ्यताओं का दावा था कि उनकी नींव प्रेम तथा न्याय पर है। हमारी दुनिया की नींव घृणा है। हमारी दुनिया में भय, क्रोध, विजय और आत्म-पतन के सिवा अन्य कोई मानवीय भावना शेष नहीं रहेगी। अन्य हर एक चीज़ को हम नष्ट कर देंगे। हमने पुरानी आदतें छोड़ दी हैं। हमने माता-पिता तथा बच्चों के बीच का सम्बन्ध भंग कर दिया है। आदमी-आदमी का रिश्ता तोड़ दिया है। आदमी और औरत के बीच नाता ख़त्म कर दिया है। कोई भी व्यक्ति अपने मित्र, बच्चे या पत्नी पर विश्वास नहीं करता। भविष्य में न पत्नी होगी और न मित्र। बच्चे माताओं से जन्म के बाद ले लिए जाएंगे, ठीक उसी तरह जैसे मुर्गी के अंडे उठा लिए जाते हैं। यौन या काम-भावना समाप्त कर दी जाएगी। राशन कार्ड को जिस तरह तारीख डलवाकर नया कराया जाता है, उसी तरह सन्तानोत्पत्ति भी वार्षिक क्रिया हो जाएगी। हम शिश्न को भी नष्ट कर देंगे। हमारे स्नायुविद आजकल इसी प्रकार का शोध कर रहे हैं। पार्टी-भक्ति के सिवा कोई बात शेष नहीं रह जाएगी। बड़े भाई के सिवा कोई किसी से प्रेम नहीं करेगा। न कला रह जाएगी और न विज्ञान, न साहित्य। जब हम सर्वान्तर्यामी और सर्वशक्तिशाली होंगे तो विज्ञान की क्या ज़रूरत? कोई जिज्ञासा नहीं रह जाएगी और जीवन की आवश्यकता भी नहीं रहेगी। सभी शारीरिक सुखों को नष्ट कर दिया जाएगा। परन्तु शक्ति का डर

बराबर रहेगा — इस बात को मत भूलना, विन्स्टन, यह डर बराबर बढ़ता जाएगा। असहाय शत्रु को अपनी टांगों में दबा देख हम हमेशा हर्षित होते रहेंगे। भविष्य का चित्र यह है — "एक जूता हमेशा के लिए आदमी के मुंह पर रखा हुआ है।"

ओ'ब्रायन रुक गया, जैसे वह विन्स्टन को बोलने का अवसर देना चाहता था। विन्स्टन बिस्तर में और दब-सा गया। वह कुछ भी नहीं कह सकता था। उसका हृदय बर्फ की भांति जम गया था। ओ'ब्रायन का भाषण जारी था :

"और याद रखो, यह स्थिति शाश्वत रहेगी। मुंह हमेशा कुचला जाता रहेगा। विद्रोही, समाज का शत्रु हमेशा रहेगा। उसे हमेशा हराया जाता रहेगा, और बार-बार अपमानित किया जाता रहेगा। गोल्डस्टीन और उसकी बातें बराबर बनी रहेंगी। हर दिन, हर क्षण, विरोधी हराए जाएंगे, बदनाम किए जाएंगे, उनकी हंसी उड़ाई जाएगी, उन पर थूका जाएगा और फिर भी वे ज़िन्दा रहेंगे। जो नाटक मैंने सात साल तक तुम्हारे साथ खेला है, बार-बार खेला जाएगा, पीढ़ियां गुज़रती जाएंगी और उनके साथ यह नाटक भी अधिकाधिक सूक्ष्म और गुप्त रूप से खेला जाता रहेगा। हमेशा कोई-न-कोई विद्रोही हमसे दया की भीख मांगता रहेगा और पीड़ा से तड़पता रहेगा। उसमें ज़रा भी साहस नहीं रहेगा। उसे देखकर ठोकर मारने की तबीयत होगी और वह स्वेच्छा से घिसटता हुआ हमारे कदमों को छूने के लिए बढ़ेगा। यह दुनिया है जिसका हम निर्माण कर रहे हैं। ऐसी दुनिया जिसमें एक के बाद दूसरी विजय की जयमाला हमारे गले में पड़ती जाएगी और हम अधिक-से-अधिक और पहले से अधिक शक्ति का प्रयोग करते जाएंगे। अन्त में न केवल इस दुनिया के सम्बन्ध में तुम ज्ञान ही प्राप्त कर लोगे बल्कि तुम उसे स्वीकार करोगे, सिर-माथे लगाओगे, उसका स्वागत करोगे और उसके अंग बन जाओगे।"

यथापूर्व, विन्स्टन इस आवाज़ के सम्मुख पुनः असहाय हो गया था। दूसरे उसे डर था कि यदि वह बहस करता गया तो ओ'ब्रायन डायल का लिवर पुनः दबा देगा। फिर भी उससे चुप नहीं रहा जा रहा था। धीरे-धीरे

बिना किसी तर्क के सहारे, केवल ओ'ब्रायन के वक्तव्य से घबराकर, विन्स्टन फिर बोला :

"मैं नहीं जानता — न मैं परवाह करता हूं। बस इतना जानता हूं कि आप अपने काम में निश्चित ही असफल होंगे। कोई आपको हराएगा। जीवन आपको परास्त करेगा।"

"क्या ऐसा होने का कोई प्रमाण तुम्हारे पास है? या कोई कारण बता सकते हो, जिसकी वजह से ऐसा होना ज़रूरी है?"

"कुछ नहीं। परन्तु जो कुछ मैंने कहा है, अपने विश्वास के आधार पर कहा है। मैं जानता हूं, तुम हारोगे, पार्टी हारेगी। कोई ऐसी चीज़ आत्मा या सिद्धान्त इसी ब्रह्मांड में है, जिसे तुम जीत नहीं सकते।"

"क्या ईश्वर में तुम्हारा विश्वास है, जो हराएगा?"

"मैं नहीं जानता। शायद मानव की आत्मा।"

"और तुम अपने को मानव समझते हो?"

"हां"

"अगर तुम मानव हो विन्स्टन, तो समझ लो तुम अन्तिम मानव हो। बिस्तर से उठ पड़ो!" ओ'ब्रायन ने कहा।

जिन पट्टियों से वह बंधा था, वे खुल गईं। विन्स्टन धीरे-से फ़र्श पर उतरा और लड़खड़ाता हुआ खड़ा हो गया।

ओ'ब्रायन ने कहा, "तुम मानव हो। तुम मानव की आत्मा के रक्षक हो। अब तुम स्वयं देखोगे कि तुम क्या हो। अपने कपड़े उतार डालो।"

विन्स्टन ने वह तनी खोल दी जिससे कपड़े बंधे थे। उसे पता नहीं कि वे कब के फट चुके थे। उसे याद नहीं था कि गिरफ़्तारी के बाद उसने कभी पूरे कपड़े उतारे हों। वर्दी के नीचे कुछ पीले और फटे चिथड़े थे – वे उसकी बनियान और अंडरवियर के टुकड़े थे। कपड़े उतारने के बाद उसने देखा कि कमरे के एक कोने में तीन बड़े शीशे रखे हैं। वह उनकी तरफ़ बढ़ा। इसके बाद रुक गया। रोकते-रोकते उसके मुंह से चीख़ निकल गई।

"आगे बढ़ जाओ," ओ'ब्रायन ने कहा, "शीशों के बीच में खड़े हो जाओ।"

वह डर जाने की वजह से रुक गया था। झुकी कमर, सफ़ेद रंग का नरकंकाल उसकी तरफ़ बढ़ा आ रहा था। उसकी शक्ल बड़ी भयानक थी। फिर भी वह जान गया कि यह शक्ल उसी की है। वह शीशों की तरफ़ और बढ़ गया। उसका चेहरा नीचे की तरफ़ हो गया था। इसका कारण यह था कि उसकी कमर झुक गई थी। उसके सामने ऐसी शक्ल थी जिसने बरसों से आदमी का चेहरा नहीं देखा था। वर्षों जेल में गुज़र गए थे। माथा झुका और काला पड़ गया था। और सिर गंजा हो गया था। नाक टेढ़ी हो गई थी। गाल की हड्डियां टेढ़ी-मेढ़ी हो गई थीं। मुंह खिंच गया था। निश्चय ही वह उसका चेहरा था। लेकिन उसका चेहरा उसके अन्तःकरण से भी अधिक बदल गया था। उस पर वे भाव प्रकट नहीं होते थे, जो वह सोचता था। वह थोड़ा-थोड़ा गंजा भी हो गया था। पहले उसे लगा कि उसके सारे अंग सफ़ेद हो गए हैं। परन्तु उसकी खोपड़ी के बाल ही सफ़ेद हो गए थे। हाथों और मुंह को छोड़कर उसके शरीर पर सर्वत्र मैल भरा था, मैल के नीचे लाल घावों के निशान थे। टखने के नीचे नसवाला फोड़ा ख़ूब फूल गया था। लाल हो गया था और उस पर से खाल उधड़-उधड़कर गिरने को थी। लेकिन सबसे भयानक बात यह थी कि उसके शरीर में ख़ून ही नहीं था। पसलियों का दायरा तंग हो गया था। ठीक उसी तरह जिस तरह अस्थिपंजर का हो जाता है। पैर सूख गए थे। घुटने जांघों से अधिक मोटे दिखलाई पड़ते थे। रीढ़ की हड्डी बुरी तरह टेढ़ी हो गई थी। वह तो उसका टेढ़ापन देखकर आश्चर्य में पड़ गया। पतले कन्धे आगे की ओर बढ़कर झुक गए थे और छाती अन्दर की ओर धंस गई थी। गरदन सिर के बोझ से अन्दर झुकी जा रही थी। यदि वह किसी और की शक्ल होती तो वह कह देता कि यह कोई साठ साल का बुडा आदमी है, जो किसी बहुत ही बुरे रोग में फंसा है।

"अपनी हालत देखो।" ओ'ब्रायन ने कहा, "अपने शरीर पर जमे मैल को देखो। अपने गन्दे धूल-भरे पंजों को देखो। पैर के घृणास्पद फोड़े को

देखो। तुम जानते हो कि तुमसे भेड़ जैसी बदबू आ रही है, शायद तुम्हें अब अपने शरीर से बदबू आती ही नहीं। एक हाथ से मैं तुम्हारी पूरी गरदन पकड़ सकता हूं। मैं गाजर की तरह तुम्हारी गरदन उखाड़कर फेंक सकता हूं। तुम्हारे बाल मेरी मुट्ठी में आते ही उखड़ जाते हैं। देखो।" उसने थोड़े-से बाल हाथ से पकड़कर उखाड़ दिए। "अपना मुंह खोलो। नौ, दस ग्यारह दांत रह गए हैं। जो रह गए हैं वे भी गिरे जा रहे हैं। देखो।" उसने सामने के दांत अपने अंगूठे और उंगली से पकड़ लिए। दर्द की एक लहर विन्स्टन के जबड़े में दौड़ गई। ओ'ब्रायन ने एक दांत उखाड़कर ज़मीन पर फेंक दिया।

"तुम सड़ गए हो", ओ'ब्रायन कह रहा था, "तुम टुकड़े-टुकड़े होकर गिर रहे हो। क्या हो तुम, कूड़े का ढेर। यही आख़िरी आदमी है। यदि तुम मानव हो तो समझ लो यही मानवता है। अब कपड़े पहन लो।"

विन्स्टन ने धीरे-धीरे कपड़े पहनने शुरू कर दिए। अभी तक उसने यह नहीं सोचा था कि वह कितना निर्बल और क्षीण हो गया है। केवल एक ही बात उसके दिमाग़ में थी। तो इसका मतलब है कि उसे यहां उसकी कल्पना से अधिक समय गुज़र गया। अपने नष्ट-भ्रष्ट शरीर का ख़याल कर उसे अपने ऊपर तरस आने लगा। इसके पहले कि वह अपने-आप को संभाल सके, वह बिस्तर के बग़ल में पड़े एक स्टूल पर बैठ गया, और रोने लगा। वह मुट्ठी-भर हड्डियों का ढांचा था जो उस तेज़ सफ़ेद प्रकाश में रो रहा था।

"तुमने ऐसा किया है, विन्स्टन सिसकी भर रहा था, "तुम्हीं ने मेरी यह हालत की है।"

"नहीं, विन्स्टन। तुमने अपनी यह हालत ख़ुद बना रखी है। तुमने जब पार्टी के विरुद्ध सोचा, तभी तुमने यह स्थिति स्वीकार कर ली थी। यह सब पहले कदम में ही निहित था। कोई भी ऐसी बात नहीं हुई जिसकी कल्पना तुमने पहले न कर रखी हो।"

वह कुछ रुका और फिर बोला :

"हमने तुम्हें तोड़ दिया है। तुमने रो-रोकर दया की भीख मांगी है, तुमने हरेक के साथ गद्दारी की है। क्या तुम एक भी ऐसी बात सोच सकते हो, जो अपमानास्पद हो और तुमने न की हो?"

विन्स्टन का रोना थम गया था। आंसू अब भी झड़ रहे थे। उसने ओ'ब्रायन की ओर देखा।

"मैंने जूलिया को तो धोखा नहीं दिया।" विन्स्टन बोला।

ओ'ब्रायन ने कुछ सोचते हुए उसकी ओर देखा। "नहीं, नहीं। तुमने यह बात बिलकुल सच कही। तुमने जूलिया को धोखा नहीं दिया।"

"बतलाओ," उसने कहा, "मुझे कब गोली मारी जाएगी?"

"काफ़ी समय लग सकता है," ओ'ब्रायन ने कहा, "तुम्हारा मामला बड़ा कठिन है। लेकिन आशा मत छोड़ो। देर-सवेर यहां सबका इलाज़ हो जाता है। अन्त में हम तुम्हें अवश्य ही गोली मार देंगे।"

अब वह पहले से बहुत अच्छा था। यदि दिनों की बात की जा सके तो वह हर रोज़ तगड़ा होता जा रहा था।

कमरे में सफ़ेद प्रकाश वैसा ही था। सूं-सूं की आवाज़ भी कोठरी में वैसी ही आती जा रही थी। लेकिन वह अन्य लोगों की अपेक्षा आराम से था। लकड़ी के तख्त पर तकिया और गद्दा था। उसे नहलाया जाता था। नहाने के लिए गरम पानी भी दिया जाता था। उसे नए बनियान और अंडरवियर तथा कपड़े दिए गए थे। उसके टखने के फोड़े को मरहम लगाकर पट्टी से बांध दिया गया था। जिससे उसे बड़ा आराम था। उसके बाक़ी दांत भी उखाड़ दिए गए थे और नए नकली दांत दे दिए गए थे।

नियमित रूप से चौबीस घंटों में उसे तीन बार भोजन दिया जाता था। वह कभी सोचता था कि उसे रात में खाने को दिया जाता है या दिन में। खाना बड़ा अच्छा था। हर तीसरे खाने के साथ उसे गोश्त मिलता था। हर बार उसे सिगरेट का पैकेट भी दिया गया। उसके पास दियासलाई

नहीं थी। लेकिन जो सिपाही खाना लेकर आते थे, वे बोलते बिलकुल नहीं थे। वे ही उसकी सिगरेट जला देते थे। पहले उसे सिगरेट पीने में कठिनाई हुई। लेकिन वह कोशिश करता रहा। वह पैकेट काफ़ी समय चला। वह हर खाने के बाद आधी सिगरेट पीता था।

उसे एक सफ़ेद स्लेट और पेंसिल भी दी गई थी। पहले उसने उसका कोई उपयोग नहीं किया। वह जागता होता तो भी निष्क्रिय पड़ा रहता। कभी तो वह खाना खाकर बिस्तर पर लेटता तो बिना हिले उस समय तक लेटा रहता जब तक कि अगले खाने का वक़्त नहीं हो जाता। कभी वह सो जाता, कभी वह दिन में सपने देखता। तेज़ रोशनी की ओर चेहरा करके उसकी सोने की आदत पड़ गई थी। इससे कोई भी अन्तर नहीं पड़ता। उसे लम्बे-लम्बे सपने लगातार दिखलाई पड़ते थे। वह स्वर्णलोक में पहुंच जाता था। वह कभी धूप में फैले खंडहरों में बैठा होता था। कभी मां के साथ, कभी जूलिया के, तो कभी ओ'ब्रायन के साथ। वे कुछ करते नहीं थे। केवल धूप में बैठे रहते और शान्ति से बातचीत करते। इसी तरह के विचार जागने पर उसके दिमाग़ में होते थे। अब बुद्धिपूर्वक सोचने की उसकी शक्ति लुप्त हो गई थी। अब उसको पीड़ा भी नहीं थी। वह एकान्त से तंग नहीं होता था। उसमें बातचीत करने की कोई इच्छा नहीं थी। केवल अकेला रहे। कोई मारे-पीटे नहीं, प्रश्न न पूछे, खाने को पेट-भर मिले और साफ़-सुथरा रह सके, वह इतने से ही पूर्ण सन्तुष्ट था।

धीरे-धीरे उसे नींद कम आने लगी। परन्तु फिर भी उसका बिस्तर से उठने को जी नहीं करता। वह चुपचाप पड़ा रहता था। कभी अपनी बांहों पर हाथ फेरकर बार-बार देखता कि उन पर मांस चढ रहा है या नहीं। अन्त में उसे निश्चय हो गया कि वह मोटा हो रहा है। घुटनों से जांघें अधिक मोटी हो गई थी। उसके झुके हुए कन्धे सीधे हो गए थे। लेकिन उसे पता लगा कि वह ज़्यादा दूर चल नहीं सकता था। वह एक हाथ की दूरी पर रखा स्टूल पकड़ नहीं सकता था। कुछ दिन के भोजन के बाद तथा कुछ और ताक़त आ जाने पर सम्भव था वह यह भी करने

लगे। उसे विश्वास होता जाता था कि उसका चेहरा अब पहले जैसा होता जा रहा था। हां, सिर पर बाल ज़रूर उड़ गए थे। वह गंजा था।

उसकी मानसिक क्रियाशीलता में वृद्धि हो रही थी। वह तख़्त के बिस्तर पर दीवार के सहारे बैठ जाता और स्लेट अपने घुटने पर रख लेता। इस प्रकार वह अपने-आप को पुनः शिक्षा देने का प्रयत्न करता।

उसने सीख लिया था कि पार्टी की शक्ति से लोहा लेना कितना बचपना है। वह जान गया था कि विचार-पुलिस सात वर्ष से उसे देख रही थी, ठीक उसी तरह जिस तरह दूरबीन से कोई सुपारी को देखता है। कोई भी ऐसा काम नहीं था, कोई भी ऐसा ज़ोर से बोला गया शब्द नहीं था, जो उनकी निगाह या कानों से छिपा रहा हो। उन्होंने उसके हर विचार को जान लिया था। वह पार्टी से टक्कर नहीं ले सकता था। दूसरे, पार्टी का विचार ठीक था। शाश्वत और सामूहिक मस्तिष्क किस प्रकार ग़लती कर सकता है? ऐसे कौन-से भौतिक प्रतिमान हैं जिनसे कोई उनकी ग़लती पकड़ सकता था? यह मामला तो केवल यह सीख लेने का है कि वे क्या चाहते हैं। जो चाहें वही किया जाए। केवल...

उसके हाथ में पेंसिल बड़ी मोटी और अजब-सी लग रही थी। वह उन विचारों को लिखने लगा जो उस समय उसके दिमाग़ में आ रहे थे। उसने बड़े-बड़े शब्दों में लिखा :

'दासता ही स्वतन्त्रता है।'

इसके बाद बिना रुके उसने लिखा :

'दो और दो पांच होते हैं।'

उसने हर बात स्वीकार कर ली थी। अतीत परिवर्तनीय था। अतीत कभी बदला नहीं गया। ओशनिया का ईस्ट एशिया से युद्ध चल रहा था। हमेशा ही दोनों के बीच लड़ाई रही थी। जोन्स, आरोन्सन और रदरफ़ोर्ड पर जो अभियोग लगाए गए थे, वे सच थे। उसने ऐसी कोई तस्वीर नहीं देखी जिससे उनकी निर्दोषिता सिद्ध होती हो। ऐसी तस्वीर कभी थी ही नहीं। यह सब कितना आसान था। केवल आत्म-समर्पण कर दो और बाकी बातें स्वयं हो जाएंगी। यह एक ऐसी धारा में तैरने के समान था कि आप

चाहें कितना आगे तैरें, वह आपको पीछे ही घसीटेगी; आगे नहीं बढ़ने देगी। और इसके बाद आप अचानक धारा-प्रवाह के अनुकूल हो जाएं और उसके साथ ही बहने लगें। अपने रुख को बदलने के सिवा और कुछ भी नहीं करना था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि आख़िर उसने विद्रोह किया ही क्यों, हर चीज़ आसान थी केवल –!

उसने यह भी अनुभव किया कि उसके दिमाग़ में शंका उत्पन्न ही नहीं होनी चाहिए। जहां भी ख़तरनाक विचार आए दिमाग़ को सोचना एकदम बन्द कर देना चाहिए। यह प्रक्रिया स्वयमेव होनी चाहिए। नई भाषा में इस प्रक्रिया का नाम अपराध रोकने की प्रक्रिया था। वह इस प्रक्रिया का अभ्यास करने लगा।

इसी बीच वह लगातार यह भी सोचता जा रहा था कि वे कब उसे गोली मारेंगे। अब से दस मिनट बाद भी गोली मारी जा सकती थी और दस साल बाद भी। वे उसे वर्षों जेल में एकान्तवास करा सकते थे। वे श्रम-शिविर में भी भेज सकते थे। वे उसे कुछ समय के लिए रिहा भी कर सकते थे। इतना निश्चित था कि अनुमानित समय पर मौत कभी नहीं आएगी। एक परम्परा थी, जो किसी ने बतलाई नहीं थी, लेकिन हरेक को मालूम था कि वे हमेशा पीछे से गोली मारते थे, बिना चेतावनी के, उस समय जब आप बरामदे में चल रहे हों या एक कोठरी से दूसरी में ले जाए जा रहे हों।

एक दिन उसे गोली मारने का फैसला कर देंगे। यह तो कोई नहीं कह सकता कि वह कौन-सा दिन होगा, लेकिन कुछ सेकेंड पहले यह भांप लेना कठिन न होगा। दस सेकेंड भी काफ़ी होंगे। बस इतने समय में ही उसके हृदय का विचार-जगत बदल सकता है और तब अचानक, वह अपना नक़ली रूप उतार फेंकेगा। उसकी घृणा प्रकट हो जाएगी। वह लपट की तरह जल उठेगा। उसी समय उसे गोली आकर लगेगी। उसका दिमाग़ ठीक होने के पूर्व ही टुकड़े-टुकड़े हो चुका होगा। वे उसे ठीक नहीं कर पाएंगे। उसके विद्रोही विचारों को कोई सजा नहीं दी जा सकेगी। वह स्वयं कोई पश्चात्ताप नहीं कर पाएगा और सदैव के लिए उनके हाथ के बाहर चला

जाएगा। अपनी पूर्णता में वे स्वयं छेद कर लेंगे। उनसे घृणा करते हुए मरना ही उसके लिए स्वतन्त्रता थी।

बाहर, भारी जूतोंवाले क़दमों की आहट सुनाई दी। खनखनाकर लोहे का दरवाज़ा खुल गया। ओ'ब्रायन कोठरी में घुस आया। उसके पीछे वही मोम जैसे रंगवाले चेहरे का अफ़सर था। काली वर्दीधारी सिपाही भी थे।

"खड़े हो जाओ," ओ'ब्रायन ने कहा, "यहां आओ।"

विन्स्टन उसके सामने खड़ा हो गया। ओ'ब्रायन ने अपने मज़बूत हाथों से विन्स्टन के कन्धे पकड़ लिए और पास से देखने लगा।

"अब तुम सुधर रहे हो। मानसिक दृष्टि से अब तुममें बहुत कम दोष रह गया है। भावनात्मक दृष्टि से तुमने अभी प्रगति नहीं की है। बतलाओ, बिना झूठ बोले मुझे सच-सच बतलाओ विन्स्टन। तुम जानते हो मैं झूठ हमेशा पकड़ लेता हूं। तुम बड़े भाई के बारे में क्या सोचते हो?"

"मैं घृणा करता हूं, उनसे।"

"घृणा करते हो, ठीक। अब समय आ गया है कि तुम अन्तिम कदम उठाओ। बड़े भाई से तुम्हें प्रेम करना ही चाहिए।"

उसने धीरे-से धक्का देकर काली वर्दीधारी सिपाहियों की तरफ़ कर दिया।

"कमरा नम्बर 101," ओ'ब्रायन ने कहा।

यह कोठरी, अब तक की जेल की उन सारी कोठरियों से बड़ी थी, जिनमें वह रखा गया था। उसके ठीक सामने दो मेजें थीं, जिन पर हरे मेज़पोश बिछे थे। एक मेज़ तो उससे एक या दो मीटर की दूरी पर थी। दूसरी ज़रा दूर दरवाज़े के पास थी। वह एक कुर्सी से बंधा था। पट्टियां इतनी कसी थीं कि वह हिल भी नहीं सकता था। सिर तक इधर-उधर नहीं कर सकता था। पीछे से एक पैड बंधा था, जिसकी वजह से वह केवल अपने सामने ही देख सकता था।

एक क्षण के लिए वह कमरे में अकेला रह गया था। परन्तु कुछ ही क्षणों बाद ओ'ब्रायन दरवाजा खोलकर कमरे में घुस आया।

ओ'ब्रायन ने कहा, "तुमने एक बार मुझसे पूछा था कि 101 नम्बर के कमरे में क्या है। मैंने उत्तर दिया था कि तुम जानते हो।"

"सच यह है कि दुनिया में यह कमरा सबसे भयानक है।"

दरवाज़ा फिर खुला। अबकी बार एक सिपाही घुसा। उसके हाथ में तार की जाली से बना छोटा-सा बक्स था। उसने उसे कुछ दूरी पर मेज़ पर रख दिया। ओ'ब्रायन इस तरह खड़ा था कि विन्स्टन देख नहीं पाया कि उस बक्स में क्या है।

ओ'ब्रायन कह रहा था, "दुनिया की भयानक वस्तु हर आदमी के लिए अलग-अलग होती है। कुछ लोगों को ज़िन्दा दफ़ना दिए जाने से सबसे अधिक डर लगता है तो कुछ को आग में जिन्दा जला दिए जाने से। कुछ डूबने से भय खाते हैं तो कुछ अन्य को किसी प्रकार-विशेष से मारने में भय लगता है। कभी-कभी लोगों को बड़ी मामूली बातों से ही मौत से भी अधिक डर लगता है।"

अब ओ'ब्रायन कुछ हट गया था। अब उसे मेज़ पर रखी चीज़ स्पष्ट दिखलाई पड़ रही थी। यह एक जाली थी जिसे ऊपर से पकड़ने के लिए तार था। यह जाली दो भागों में बंटी थी। हर खाने में कोई जीव था। ये जीव चूहे थे।

"तुम्हें दुनिया में सबसे अधिक डर चूहों से लगता है," ओ'ब्रायन ने कहा।

चूहेदानी देखते ही विन्स्टन डर के मारे कांप गया था। चूहों को देखकर उसके पेट में पानी-ही-पानी हो गया था।

"ओ'ब्रायन," विन्स्टन ने अपने-आप को संभालते हुए कहा, "तुम जानते हो यह सब आवश्यक नहीं है। अब तुम मुझसे क्या चाहते हो?"

ओ'ब्रायन ने कहा, "अपने-आप में दर्द कुछ भी नहीं है। ऐसे भी मौके आए हैं, जब लोगों को मर्मान्तक पीड़ा दी गई है लेकिन वे उसे सह गए

हैं। लेकिन हर व्यक्ति के स्वभाव की कोई एक ऐसी कमज़ोरी होती है, जिसे वह सह नहीं सकता। इसमें साहस या कायरता का प्रश्न नहीं है। यदि आप ऊंचे से नीचे गिर रहे हो और रास्ते में दिखलाई पड़ी रस्सी को जान बचाने के लिए पकड़ लें, तो वह कायरता नहीं होगी। यदि पानी में देर तक डुबकी लगाने के बाद सतह पर आकर आप सांस ले लें तो वह भी कायरता नहीं होगी। यह केवल अन्तप्रेरणा है। यही बात चूहों के साथ है। तुम उन्हें बरदाश्त नहीं कर सकते। इसलिए तुमसे जो कुछ आशा की जाती है तुम वही करोगे।"

"लेकिन मुझसे क्या आशा की जाती है, मैं क्या करूं? क्या करूं, मैं बिना जाने कैसे वह काम कर सकता हूं जो आप चाहते हैं?"

ओ'ब्रायन चूहेदानी को उठाकर पास ले आया। उसमें बन्द चूहे काफ़ी बड़े-बड़े थे। चूहेदानी में से चूहे चिचिया रहे थे। चूहे आपस में लड़ रहे थे।

ओ'ब्रायन ने चूहेदानी को उठा लिया। उठाते ही उसने कोई खटका दबाया। विन्स्टन ने अपने-आप को कुर्सी के बन्धनों से छुड़ाने की बेहद कोशिश की। लेकिन बेकार था। उसके शरीर का हर भाग यहां तक कि उसका सिर भी बड़ी सख्ती से बांधा गया था। ओ'ब्रायन चूहेदानी को और पास ले आया।

ओ'ब्रायन ने कहा, "मैंने अभी पहला खटका दबाया है। इसका अगला भाग तुम्हारे चेहरे पर बिलकुल ठीक बैठ जाएगा। कहीं से सिर हटाने की ज़रा-सी भी जगह नहीं रह जाएगी। जब मैं यह खटका दबाऊंगा तो वह दरवाज़ा खुल जाएगा जिसके उस पार चूहे हैं। ये भूखे जानवर तुम पर बन्दूक की गोली की तरह टूट पड़ेंगे। तुमने कभी चूहे को हवा में छलांग मारते देखा है? वे तुम्हारे मुंह पर उछलकर बैठ जाएंगे और कुतर-कुतरकर छेद कर देंगे। कभी वे पहले आंखों पर हमला करते हैं और कभी वे गोलों में छेद कर जीभ को खा जाते हैं।"

अब चूहेदानी और निकट आ गई थी। लेकिन वह अपने आतंक के विरुद्ध संघर्ष कर रहा था। अचानक उन चूहों की गन्दी बदबू उसकी नाक

में घुस गई। उसे कै आने लगी। एक क्षण के लिए वह जानवरों की तरह चिल्ला रहा था। वह पागल हो गया था। सहसा उसे एक ख़याल आया। एक ही उम्मीद बचने की थी। वह अपनी जगह किसी और को रखवा दे। उसके तथा चूहों के बीच किसी और आदमी का शरीर आ जाए।

चूहेदानी के नकाब की वजह से अब कमरे की और कोई चीज़ नहीं दिखलाई पड़ रही थी। तारोंवाला दरवाज़ा कुछ अंगुल दूर रह गया था। चूहे जानते थे कि उन्हें क्या मिलनेवाला था। एक मोटा चूहा तार के सहारे खड़ा हो गया था। वह बार-बार फुसकार-सी मार रहा था। विन्स्टन को उसके मुंह के नीचे के बाल दिखलाई पड़ रहे थे। पीले और गन्दे दांत भी दिखलाई दे रहे थे। भय के कारण उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया था। वह अन्धा हो गया था। वह असहाय था। उसका दिमाग़ ख़राब हो गया था।

अपने आसपास के वातावरण से बिलकुल अनभिज्ञ व्यक्ति की भांति ओ'ब्रायन कह रहा था, "सम्राटों के युग में चीन में यह दंड बड़ा सामान्य समझा जाता था।"

चूहेदानी उसके मुंह पर आ गई थी। चूहेदानी के तार उसके गालों से लड़ रहे थे। और अब नहीं, कोई आशा नहीं थी। लेकिन फिर भी बचने की आशा, क्षीण आशा थी। शायद अब देर हो गई थी। बहुत देर हो गई थी। वह जानता था कि दुनिया में एक ही आदमी है जिसे वह अपनी जगह सजा दिलवा सकता है। एक ही व्यक्ति है जो उसके तथा चूहों के बीच आ सकता है। वह बार-बार चिल्ला रहा था :

"मेरी जगह जूलिया को बुलाओ। मेरा नहीं उसका सिर फंसाओ। मेरा सिर इसमें मत फंसाओ। उसका चेहरा फाड़ डालो। उसकी हड्डियां तक कुतरवा दो। मुझे मत कुतरवाओ। जूलिया को बुलाओ। मुझे नहीं।"।

चूहेदानी की जाली के ठंडे तार अब भी उसके गालों को स्पर्श कर रहे थे। तभी उसने किसी खटके के दबने की आवाज़ सुनी। वह जान गया था कि इस बार चूहेदानी का दरवाज़ा खुलने के लिए नहीं, बल्कि बन्द करने के लिए खटका दबाया गया है।

चेस्टनट कैफ़े बिलकुल खाली हो गया था। एक खिड़की से तिरछी होकर डूबते सूरज की किरणें मेज़ पर पड़ रही थीं। दिन के तीन (पन्द्रह) बजे थे। टेलीस्क्रीन से मधुर संगीत की आवाज़ आ रही थी।

विन्स्टन अपने रोज़वाले कोने में बैठा था। वह ख़ाली गिलास को देख रहा था। वह बार-बार बड़े भाई के पोस्टरवाले घूरते हुए चेहरे को निगाह उठाकर देख लेता था। नीचे लिखा था — बड़े भाई तुम्हें देख रहे हैं। बिना बुलाए वेटर आकर उसका शराब का गिलास भर देता था, और साथ ही दूसरी बोतल से शराब में कुछ छिड़क भी देता था। यह सैकरीन थी जिसमें लौंग की ख़ुशबू होती थी। यही कैफ़े की विशेषता थी।

विन्स्टन टेलीस्क्रीन सुन रहा था। केवल संगीत आ रहा था। परन्तु सम्भावना थी कि शान्ति मन्त्रालय का विशेष बुलेटिन किसी भी समय आ जाए। अफ्रीका के मोर्चे से मिलनेवाले समाचार बड़े अशान्तिपूर्ण थे। उसे दिन में बार-बार उन समाचारों के कारण चिन्ता हो जाती थी। यूरेशियन सेना तेज़ी से आगे बढ़ रही थी। यह सेंट्रल अफ्रीका के ही हाथ से निकलने का सवाल नहीं था, बल्कि पूरी लड़ाई में पहली बार समस्त ओशनिया खतरे में था।

अचानक उसके हृदय में जो उत्तेजना और डर पैदा हुआ था वह थोड़ी देर बाद समाप्त हो गया। उसने युद्ध के सम्बन्ध में सोचना बन्द कर दिया। इन दिनों वह किसी भी चीज़ के बारे में कुछ क्षणों से अधिक नहीं सोच सकता था। उसने गिलास उठाया और एक घूंट में उसकी शराब समाप्त कर दी। हमेशा की तरह इस बार भी वह शराब पीने के बाद एकबारगी कांप गया। इस शराब की बू उन चूहों से इतनी अधिक मिलती थी।

वह उनका सपने में भी नाम नहीं लेता था। जहां तक सम्भव होता था, वह उनकी शक्ल की भी कल्पना नहीं करता था। अभी तक उसे लगता था कि वे उसके चेहरे के पास उछल रहे हैं और उनकी बदबू उसकी नाक में घुसी जा रही है। उसने शराब काफ़ी पी ली थी और उसे डकार आ रही थी। अपनी रिहाई के बाद से अब वह मोटा हो गया था। एक तरह से वह अब पहले से भी अधिक अच्छा हो गया था। नाक की खाल

तथा गालों की हड्डियों की त्वचा पर लालिमा आ गई थी। सिर का गंज तक लाल हो गया था। एक वेटर फिर बिना बुलाए शतरंज और टाइम्स के ताज़े अंक ले आया। इसके बाद विन्स्टन का गिलास ख़ाली देखकर उसने शराब फिर भर दी। ऑर्डर देने की ज़रूरत नहीं थी। वे उसकी आदत जानते थे। शतरंज की बाज़ी हमेशा लगी रहती थी। कोने में मेज़ हमेशा उसके लिए सुरक्षित रहती थी। जब सारा होटल भरा होता था, तब भी वह अकेला ही रहता था। उसके समीप कोई नहीं आता था। वह अपने शराब के गिलास तक नहीं गिनता था। कुछ दिनों बाद वे उसे बिल देते थे। लेकिन उसे हमेशा लगता था कि उससे पूरे पैसे नहीं लिए जाते थे। यदि वे ज़्यादा भी लेते तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता। उसके पास आजकल काफ़ी पैसा रहता था। वह नौकरी भी कर रहा था। उसकी यह जगह पुरानी जगह से ऊंची थी। पैसा भी पहले से अधिक मिलता था।

टेलीस्क्रीन से आनेवाली आवाज़ रुक गई। किसी अन्य उद्घोषक ने गम्भीर स्वर से ऐलान किया, "पन्द्रह तीस पर बहुत ही महत्त्वपूर्ण घोषणा होनेवाली है। आप उसे सुनने के लिए तैयार रहें। पन्द्रह तीस पर बहुत ही महत्त्वपूर्ण समाचार सुनाया जाएगा। तैयार रहें।" संगीत फिर टुनटुनाने लगा।

विन्स्टन का हृदय धड़कने लगा। अवश्य ही इस बुलेटिन में मोर्चे के समाचार सुनाए जाएंगे। उसे लग रहा था कि कोई बहुत ही ख़राब समाचार सुनाया जानेवाला है। अफ़्रीका में पराजय की आशंका उसके दिमाग़ में कई बार उत्पन्न हो चुकी थी। उसके विचार फिर खो गए। उसने मेज़ पर जमी धूल पर अंगुली से लिखा :

$$2 + 2 = 5$$

वह कहती थी, वे मन के अन्दर नहीं घुस सकते। लेकिन वे आदमी के अन्दर भी घुस सकते थे। ओ'ब्रायन का कहना था, यहां जो कुछ होता है, वह हमेशा के लिए होता है। यह सच था। कुछ ऐसी बातें हो जाती हैं, आप कुछ ऐसे काम कर बैठते हैं, जिनसे कभी नहीं संभल सकते। आपका हृदय कुचल दिया जाता है। जला दिया जाता है।

वह उससे मिला था। वह जूलिया से बोला भी था। वह जान गया था कि अब वे उसके काम में कोई दिलचस्पी नहीं लेते। यदि वे दोनों चाहते तो फिर भी मिल सकते थे। वास्तविकता यह थी कि उनकी मुलाक़ात संयोगवश हो गई थी। मार्च का बहुत ही ठंडा दिन था। ज़मीन लोहे की तरह सख़्त थी। इधर-उधर कुछ घास के सिवा फूल की एकाध कली तक कहीं नहीं थी। घास तक हवा के ज़ोर से उखड़ गई थी। वह तेज़ी से भागा आ रहा था। उसके हाथ ठंडे थे और ठंड के मारे आंखों से पानी निकल रहा था। तभी वह कोई 10 मीटर की दूरी पर उसे दिखलाई पड़ी। वे एक-दूसरे के पास से बिना किसी प्रकार का संकेत किए निकल गए। इसके बाद वह घूमा और उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। वह जानता था कि कोई ख़तरा नहीं है। परन्तु वह बोली नहीं। वह घास पर तिरछी-तिरछी इस तरह चलने लगी मानो उससे पिंड छुड़ाना चाहती है। इसके बाद वह उदासीन हो गई और उसने विन्स्टन को अपनी बग़ल के बराबर आ जाने दिया। उसने उसकी कमर अपनी बाहों में लपेट ली। उसने अपने-आप को छुड़ाने की भी कोशिश नहीं की। उसका चेहरा सूजा हुआ था। उसके बालों के नीचे एक लम्बा घाव था। यह घाव माथे पर और कनपटी के बीच में था। उसकी कमर पहले से अधिक स्थूल हो गई थी। उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह अब सख़्त हो गई है। एक बार उसने रॉकेट बम के गिरने से ढह गए मकान के नीचे से एक लाश निकाली थी। वह लाश पत्थर जैसी भारी लग रही थी। जूलिया का शरीर भी वैसा ही पत्थर-सा लग रहा था। उसकी त्वचा का रंग भी पहले से भिन्न हो गया था।

उसने उसका चुम्बन तक लेने का प्रयत्न नहीं किया। वे आपस में बोले तक नहीं। जब वे लौटने लगे तो उसने मुड़कर सीधे आंखों में आंखें डालकर उसे पहली बार देखा — क्षण-भर के लिए ही। परन्तु उस दृष्टि में घोर घृणा और तिरस्कार का भाव था।

"मैंने तुम्हारे साथ विश्वासघात किया है।" वह बोली।

"मैंने भी तुम्हारे साथ विश्वासघात किया है", विन्स्टन ने प्रत्युत्तर में कहा। उसने विन्स्टन पर एक घृणा-भरी दृष्टि डाली। फिर बोली, "कभी-कभी

वे ऐसी यातना देने की धमकी देते हैं कि बरबस मुंह से निकल जाता है, यह यातना मुझे नहीं मेरे बजाय अमुक व्यक्ति को दो। बचने का और कोई रास्ता ही नहीं सूझता। और आप अपनी जान बचाने को किसी भी मूल्य पर राजी हो जाते हैं। आप चाहते हैं कि वह कष्ट किसी दूसरे आदमी को दिया जाए। आपको और किसी की चिन्ता होती ही नहीं। बस आदमी अपनी ही फ़िक्र करता है।"

"बस आदमी अपनी ही फिक्र करता है।" उसने भी प्रतिध्वनि की भांति बात दोहरा दी।

"इसके बाद फिर आपकी वह प्रेम-भावना उस आदमी के प्रति नहीं रह जाती जिसका नाम उस समय आप ले देते हैं।"

"नहीं," वह बोला, "उस व्यक्ति के प्रति फिर वह प्रेम-भाव नहीं रह जाता।"

"हम फिर मिलेंगे।" उसने कहा।

"हां, हमें फिर अवश्य मिलना चाहिए।" वह भी बोली।

वह कुछ अनिश्चयात्मक ढंग से उसके पीछे कुछ क़दम आगे तक गया। वे फिर नहीं बोले।

टेलीस्क्रीन पर बज रहे संगीत का स्वर कुछ बदल गया था। और उसे यह गीत सुनाई पड़ा :

चेस्टनट के विशाल वृक्ष के नीच,

मैंने तुम्हें बेच दिया और तुमने मुझे

उसकी आंखों में आंसू भर आए। पास से गुजरते हुए एक वेटर ने उसका गिलास ख़ाली देखा। वह तुरन्त ही 'जिन' की नई बोतल ले आया।

उसने भरा गिलास उठाया। उसे छींक आ गई। वह ज्यों-ज्यों यह शराब पीता जाता था त्यों-त्यों उसके मुंह का स्वाद और बिगड़ता जाता था। लेकिन इसी के आधार पर तो वह ज़िन्दा था। हर रात वही शराब उसे बेहोशी में डुबो देती थी। वह दिन में ग्यारह के पूर्व कभी नहीं जागता

था, लेकिन जब जागता था तो उसकी आंखें चिपकी होती थीं। मुंह का स्वाद बेहद ख़राब होता था और उसे लगता था कि उसकी कमर तो एकदम टूट ही गई है। वह शायद उठ भी न पाता यदि उसके पास एक बोतल और चाय का प्याला बग़ल में न रखा होता। दोपहर तक वह बोतल हाथ में लिए टेलीस्क्रीन का संगीत सुनता हुआ बिस्तर पर ही बैठा रहता। दिन में तीन बजे से जब तक बन्द न हो जाए, उसका चेस्टनट कैफ़े में बैठे रहने का कार्यक्रम रहता था। वह क्या करता है, इसकी किसी को परवाह नहीं थी। टेलीस्क्रीन की सीटी भी अब उसे जगाती नहीं थी। टेलीस्क्रीन से डांट-फटकार भी नहीं की जाती थी। कभी-कभी शायद हफ़्ते में दो दिन वह सत्य मन्त्रालय जाकर थोड़ा-सा काम या काम करने का बहाना पूरा कर आता था। वह एक उपसमिति की उपसमिति का सदस्य था जो नई भाषा की डिक्शनरी के ग्यारहवें संस्करण में उत्पन्न होनेवाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए नियुक्त की गई थी। ऐसी अनगिनत उपसमितियां थीं।

तेज़ बिगुल बजा। बुलेटिन था। विजय। बिगुल की आवाज़ हमेशा जीत की ख़ुशी में ही टेलीस्क्रीन पर बजती थी। कैफ़े में बिजली-सी कौंध गई। वेटर भी कान लगाकर सुनने लगे।

बिगुल की वजह से शोर बहुत बढ़ गया था। अभी उद्घोषक की आवाज़ सुनाई भी नहीं पड़ी थी कि वह बाहर खड़े लोगों की हर्षध्वनि में डूब गई। ख़बर आग की तरह चारों तरफ़ फैल गई थी। समुद्र में एक जहाज़ी बेड़ा चुपके से इकट्ठा हो गया और उसने दुश्मन पर पीछे से हमला करके उसे तहस-नहस कर दिया। उसे ख़बर के कुछ शब्द सुनाई पड़ रहे थे। महान सामरिक चाल, सेना के विभिन्न अंगों में पूर्ण सहयोग, दुश्मन की फ़ौज में भगदड़, पांच लाख क़ैदी — पूरा अफ्रीका मुट्ठी में — पूरी जीत होने की शीघ्र ही सम्भावना। मानव-इतिहास की सबसे बड़ी विजय।

मेज़ के नीचे विन्स्टन के पैर तड़प रहे थे। वह अपनी कुर्सी से उठा तक नहीं था। लेकिन वह मानसिक रूप से बाहर भीड़ के साथ था। इतने ज़ोर-ज़ोर से हर्षध्वनि हो रही थी कि ऐसा लगता था, सब बहरे हो जाएंगे।

उसने फिर बड़े भाई की तस्वीर की ओर देखा। यही है वह भारी-भरकम पशु जो सारी दुनिया की छाती पर मूंग दल रहा है। यही है वह दीवार जिससे एशिया के आक्रमणकारी अपना सिर फोड़-फोड़कर वापस लौट जाते हैं। वह सोच रहा था — दस मिनट पूर्व ही, केवल दस मिनट पूर्व उसे शंका हो रही थी, पता नहीं मोर्चे से हार की ख़बर आएगी या जीत की। आह! यूरेशियन सेना ही अकेली नष्ट नहीं हुई थी। कुछ और भी नष्ट हुआ था।

टेलीस्क्रीन से अब भी बन्दियों की गिरफ़्तारी, लूट तथा शत्रु के वध-ब्यौरे की बातें आ रही थीं। लेकिन बाहर होनेवाला शोर कम हो गया था। वेटर अपने-अपने काम में लग गए थे। एक वेटर आकर उसका गिलास भरने लगा। लेकिन विन्स्टन अपने ही सपने में इतना डूबा था कि उसने इस तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया। वह प्रेम मन्त्रालय में था। उसका प्रत्येक अपराध क्षमा कर दिया गया था। उसकी आत्मा हिम ही भांति धवल थी। वह जनता के सामने था। अपने अपराध स्वीकार कर रहा था। हरेक पर आरोप लगा रहा था। उसके बाद उसे ख़याल आया कि वह सफ़ेद पत्थरों के फर्श पर चल रहा है। फर्श चारों ओर कांटोंवाले तारों से घिरा था। उसके पीछे बन्दूकधारी सिपाही हैं। जिस गोली के लिए वह तरस रहा था, अब उसके मस्तिष्क में पीछे से प्रवेश कर रही है।

उसने पोस्टर पर बनी भयानक शक्ल को फिर देखा। उन काली मूंछों के नीचे कैसी मुस्कुराहट छिपी है, इसे समझने में उसे पूरे चालीस वर्ष लग गए। उसकी आंखों से दो बड़े-बड़े आंसू निकल पड़े और नाक के इधर-उधर बह निकले। उसके आसपास शराब की गन्ध फैली हुई थी। लेकिन अब सब ठीक था। सब ठीक था। संघर्ष तो समाप्त हो ही चुका था। सब-कुछ समाप्त हो गया था। उसने अपने-आप को जीत लिया था। वह बड़े भाई से प्रेम करने लगा था।

□□□